## SHETH ETD LAMBHAI

देवचन्द ठाठभाई जैन पुस्तकोद्धार फण्ड

米

भौकानी वादाजी, सुम्नफा मारकीट, सुंबई, ३.

वाह्न्टर

िविक्रम संवत् १९९२ श्रीमन्मुक्तिकमलजैनमोहनमाला-कार्याधिकारी शाह लालचंद नन्दलाल वकील, कोठीपोळ-चडोदरा. त्समलङ्गतश्रोमद्गाधर्भगवत्स्रांत्रतं चान्द्कलोनाऽऽराध्यचर्णन सं;—परमाराष्ट्य-परमगीताथे-प्रवचनप्रभावकाचायेमहाराजश्रीमाद्रजयमहिनस्राक्षरपद्युप्रभ विधायक्ष्मीमदभयदेवाचार्यविहितश्रितिविभूषितं सच्छायम् सचारित्रचूडामणि-जैनाचायेश्रीमद्-विजयप्रतापसूरीशाः विपाकश्वतम् । स्थम अकार्शक:--द्वितीयात्रितः नीर संचत् १९६२ ]

भ्राधानामान्नामान्नामान्नामान्नामान्नामान्नामान्नामान्नामान्नामान्नामान्नामान्नामान्नामान्नामान्नामान्नामान्नामान्नामान्नामान्नामान्नामान्नामान्नामान्नामान्नामान्नामान्नामान्नामान्नामान्नामान्नामान्नामान्नामान्नामान्नामान्नामान्नामान्नामान्नामान्नामान्नामान्नामान्नामान्नामान्नामान्नामान्नामान्नामान्नामान्नामान्नामान्नामान्नामान्नामान्नामान्नामान्नामान्नामान्नामान्नामान्नामान्नामान्नामान्नामान्नामान्नामान्नामान्नामान्नामान्नामान्नामान्नामान्नामान्नामान्नामान्नामान्नामान्नामान्नामान्नामान्नामान्नामान्नामान्नामान्नामान्नामान्नामान्नामान्नामान्नामान्नामान्नामान्नामान्नामान्नामान्नामान्नामान्नामान्नामान्नामान्नामान्नामान्नामान्नामान्नामान्नामान्नामान्नामान्नामान्नामान्नामान्नामान्नामान्नामान्नामान्नामान्नामान्नामान्नामान्नामान्नामान्नामान्नामान्नामान्नामान्नामान्नामान्नामान्नामान्नामान्नामान्नामान्नामान्नामान्नामान्नामान्नामान्नामान्नामान्नामान्नामान्नामान्नामान्नामान्नामान्नामान्नामान्नामान्नामान्नामान्नामान्नामान्नामान्नामान्नामान्नामान्नामान्नामान्नामान्नामान्नामान्नामान्नामान्नामान्नामान्नामान्नामान्नामान्नामान्नामान्नामान्नामान्नामान्नामान्नामान्नामान्नामान्नामान्नामान्नामान्नामान्नामान्नामान्नामान्नामान्नामान्नामान्नामान्नामान्नामान्नामान्नामान्नामान्नामान्नामान्नामान्नामान्नामान्नामान्नामान्नामान्नामान्नामान्नामान्नामान्नामान्नामान्नामान्नामान्नामान्नामान्नामान्नामान्नामान्नामान्नामान्नामान्नामान्नामान्नामान्नामान्नामान्नामान्नामान्नामान्नामान्नामान्नामान्नामान्नामान्नामान्नामान्नामान्नामान्नामान्नामान्नामान्नामान्नामान्नामान्नामान्नामान्नामान्नामान्नामान्नामान्नामान्नामान्नामान्नामान्नामान्नामान्नामान्नामान्नामान्नामान्नामान्नामान्नामान्नामान्नामान्नामान्नामान्नामान्नामान्नामान्नामान्नामान्नामान्नामान्नामान्नामान्नामान्नामान्नामान्नामान्नामान्नामान्नामान्नामान्नामान्नामान्नामान्नामान्नामान्नामान्नामान्नामान्नामान्नामान्नामान्नामान्नामान्नामान्नामान्नामान्नामान्नामान्नामान्नामान्नामान्नामान्नामान्नामान्नामान्नामान्नामान्नामान्नामान्नामान्नामान्नामान्नामान्नामान्नामान्नामान्नामान्नामान्नामान्नामान्नामान्नामान्नामान्नामान्नामान्नामान्नामान्नामान्नामान्नामान्नामान्नामान्नामान्नामान्नामान्नामान्नामान्नामान्नामा 발치동기당시 발을 **녹을 발표되었다. 나는 보는 보고 있다. 나는 보고 있다. 나는 보고 있다. 나는 보고 보고 있다. 나는 보고 있다** श्री महोद्य प्रीन्टींग प्रेस, दाणापीठ-भावनगर. गन्थप्राप्तिस्थानम् : लल्खुमाइ, 影影 रावपुरा, महाजनगळी. वडोद्रा. -शाह लालचन्द नंदलाल वकील मुक्तिकमळजैनमोहनज्ञानमन्दिर. गुलाबचंद -1118 कु **₩** 影影場

ગ હિશ " संपादकीय निवेदन "

आजथी रुगभग पंदर वर्ष अगाउ श्रीमती मुक्तिकमरु जैन मोहनमाळा–चडोद्रा तरफथी

ारेखा विपाकसूत्र-मु**द्यि**कनुं छाया साथे सन्तम थता करनाय जिज्ञासु वर्ग तरफथी संख्यावंध प्रमाणमा चाछु हती. परिणामे द्वितीयाद्यति छपाववानो प्रारंभ थयो. अनेक प्राचीन प्रतोना पाठ मेळवीने-पू. परमोपकारी आचार्य महाराज श्रीमान् विज्ञयप्रतापसूरीस्वरजी महाराजश्रीए पुस्तक प्रुफादिकनुं संगोयन करी अमारा कार्यने मुख्म बनाब्यु. पुस्तक तैयार थतां आजे जिज्ञासुओनी मागणीओ पूर्ण करवा अमो शक्तिगाळी उपयुक्त होइ अल्प समयमां प्रथमाद्यात

प्रकाशन थयुं हतुं. साधु समाजमा आ सूत्रनु पठन–पाठन विशेष

समयथी आ पुस्तकनी मागणीओ

प्रत्येक पृष्ठमा जेटलुं मूलसूत्र, तेटलीज टीका, तेटलीज लगमग छाया आ प्रमाणे व्यवस्थित मुद्रण माटे तथा युफ संशोधन माटे

थया छीए ते माटे आनंद थाय ते सहज छे.

स्याल आपवामां आच्यो छे छतां पाठको स्त्रनी साथे टीका तथा छायानो संबंध मेळवी लेगा स्याल राखरो. तेमज छक्पस्य

सुरुम प्रमाद जन्य कांइपण स्ख्रारुना जणाय तो सहद्यभावे अमने जणावरो अने सूत्रनु विषिषूर्वेक पठन—पाठन करी आत्मकल्याणमां

उजमाळ वनशे एटले अमारो परिश्रम अमो सार्थक गणीछुं.

निवेदक:---मोहनप्रतापी-नंदचरणोपासक, ' लालचन्द

***************************************	
पूज्यपाद परमकारुणिक आचार्थ महाराज श्रीविजयमोहनस्रीश्वरजी महाराजना पष्टालंकार प्. आचार्थ महाराज श्रीविजयम- तापस्रीश्वरजी महाराजना शिष्य रत्न मुनिप्रवर श्रीमान् माणेकविजयजी महाराजना सदुपदेश्यथी 'जावाल' निवासी शा. नताजी थानमलजी तथा मखवारीयावाला शा. झवेरचंद कीसनाजी ( हस्ते शा. केशरीमलजी पद्माजी ) तरफथी आ ग्रंथ छपाववामां सम्पूण आर्थिक सहाय आपवानी धन्यवादाहे उदारता वताववामां आवी छे ते माटे उपदेशक मुनिश्रीनो तेमज उदार महाशय आर्थिक सहायकनो अमो आभार मानीए छीए.	॥ अध्ययनाभिधानम् सप्तममुम्बरद्ताल्यमध्ययनम् शोरिकद्ताल्यमध्यमस्ययनम् देवद्ताल्यं नवममध्ययनम् अञ्जु० सुताल्यं द्शाममध्ययनम् दितीयश्रुतस्कन्धे सुवाहुकुमाराख्यं प्रथममध्ययनम् ९१
भार—प्रदर्शन "ं: हिनस्रीश्वरजी महाराजना पट्टार्छ गोकविजयजी महाराजना सदुपदे गजी ( हस्ते शा. केश्वरीमलजी वामां आवी छे ते माटे उपदेशक क. जैन मोहनमाळा—कार्याधिकारी,	म् 
पुज्यपाद परमकारुणिक आचार्य महाराज श्रीविजयमोह तापस्रिश्वरजी महाराजना शिष्य रत्न मुनिप्रवर श्रीमान् माणे थानमलजी तथा मङ्वारीयावाला शा. झवेरचंद कीसनाऽ सम्पूर्ण आर्थिक सहाय आपवानी धन्यवादाह उदारता बताववा सहायकनो अमो आभार मानीए छोए.	
पुज्यपाद परमकारुणिक आचार्थ महाराज श्रीचिड तापस्रिथरजी महाराजना शिष्य रत्न मुनिप्रवर श्रीमान् थानमलजी तथा मङ्वारीयावाला शा. झवेरचंद क सम्पूर्ण आर्थिक सहाय आपवानी धन्यवादाह उदारता इ	अध्ययनाभिधानम् १ मृगाषुत्रीयाध्ययनम् २ अज्झतकाख्यं द्वितीयमध्ययनम् ३ हतीयमभग्नसेनाध्ययनम् ४ शकटाध्ययनम् ५ गृहस्पतिद्ताख्यं पञ्चममध्ययनम् ६ नन्दियधेनाख्यं षष्टमध्ययनम्

पठन-पाठन विशेष

पकाशन थयु हतु. साधु समाजमां आ सूत्रनु

" संपादकीय निवेदन "

अाजयी रुगभग पंदर वर्ष अगाउ श्रीमती मुक्तिकमर जैन मोहनमाठा-वडोद्रा तरफथी आ विपाकसूत्र-सटीकनुं छाया साथे

समयथी आ पुस्तकनी मांगणीओ जिज्ञासु वर्ग तरफथी सख्यावंघ प्रमाणमां चाछु हती. परिणामे द्वितीयाद्यति छपाववानो पारंभ उपयुक्त होइ अल्प समयमां प्रथमाद्यपि खलास थतां केटलाय थयो. अनेक प्राचीन प्रतोना पाठ मेळवीने-पू. परमोपकारी आचार्य महाराज श्रीमान् विजयप्रतापसूरीश्वरजी महाराजश्रीए पुस्तक युफादिकनुं सशोधन करी अमारा कार्यने सुलभ बनाव्युं. पुस्तक तैयार थतां आजे जिज्ञासुओनी मागणीओ पूर्ण करवा अमो शक्तिशाळी

प्रत्येक ग्रुप्तमा जेटछं मूलस्त्र, तेटलीज टीका, तेटलीज लगभग छाया आ प्रमाणे ज्यवस्थित मुद्रण माटे तथा घुफ सशोधन माटे

थया छीए ते माटे आनंद थाय ते सहज छे.

योग्य स्याल आपवामां आब्यो छे छतां पाठको सूत्रनी साथे टीका तथा छायानो संबंध मेळवी लेबा स्याल राखरो. तेमज छन्नस्थ

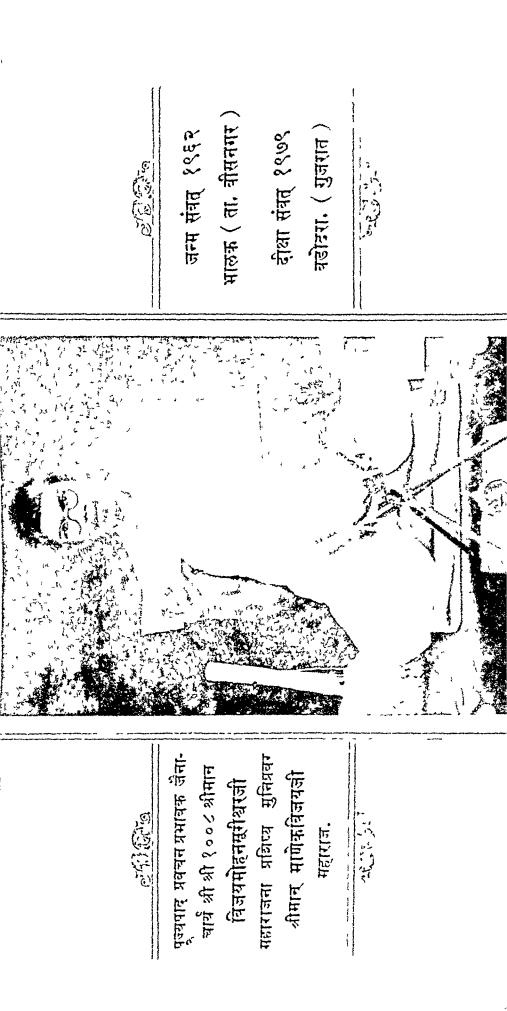
मुक्तम प्रमाद जन्य काइपण स्वकना वणाय तो सहदयभावे अमने जणावरो अने सूत्रनु विषिष्वैक पठन-पाठन करी आत्मक्र्याणमां

उजमाळ वनशे एटले अमारो परिश्रम अमो सार्थक गणीयं.

निवेदक:---मोहनप्रतापी-नंदचरणोपासक, ' लालचन्द

-	, <u>a</u>
इस्यामा एक्सामा एक वा	
***************************************	્ ા જ
नार्थ महाराज श्रीविजयप्र- ाल' निवासी शा. नताजी एकथी आ मथ छपानवामां एज उदार महाशय आर्थिक चंद नंदलाल वकील.	पत्रसंक्या- ६५ ७३ ७२ १८ इयं प्रथममच्ययनम् ९१
पुज्यपाद परमकारुणिक आचार्य महाराज <b>श्रीविजयमोहनसूरीश्वरजी म</b> हाराजना प <b>हालंकार पू. आचार्य महाराज श्रीविजयमोहनसूरीश्वरजी महाराजना पहालंकार पू. आचार्य महाराज श्रीविजयमोहनसूरीश्वरजी महाराजना पहालंकार पू. आचार्य महाराज श्रीविजयमंत्र सामकार्वा महाराजना सदुपदेशथी 'जावारु' निवासी शा. नताजी थानमलजी तथा मङवारीयावारा शा. झवेरचंद कीसनाजी (हस्ते शा. केशरीमलजी पद्माजी) तरफथी आ म्रथ छपाववामां सम्पूर्ण आर्थिक सहाय आपवानी घन्यवादाह उदारता बताववामां आवी छे ते माटे उपदेशक मुनिश्रीनो तेमज उदार महाशय आर्थिक सहायकनो अमे आभार मानीष् छीष्. श्री. मु. क. जैन मोहनमाळा—कार्याधिकारी, शाह लालचंद नंदलाल वकील.</b>	अनुक्रमः ॥ अध्ययनाभिधानम् ७ सप्तममुम्बरद् नाख्यमध्यनम् ८ शोरिकद् नाख्यमध्यमम् ८ हेवद्नाख्यं नव्यमध्यनम् ९ हेवद्नाख्यं नव्यमध्ययनम् १० अञ्जु० सुताख्यं दश्यमण्यनम् ११ द्वितीयश्रुतस्कन्धे सुवाहुकुमाराख्यं प्रथममध्ययनम् ११ द्वेवायश्रुतस्कन्धे सुवाहुकुमाराख्यं प्रथममध्ययनम् ११ द्वेवाणं नवाध्ययनानि
हाराज श्रीविजयमोहनसूरीश्वरः सिन्धन्त श्रीविजयमोहनसूरीश्वरः सिन्धनाजी ( हस्ते । स्वेरचंद कीसनाजी ( हस्ते । सिहेन श्री. मु. क. जैन मोहन श्री. मु. क. जैन मोहन	
पुज्यपाद परमकारुणिक आचार्थ महाराज श्रीविजयमोहनसूरीश्वरजी महाराजना पहालंकार पू. आचार्थ महाराज श्रीविजयप्र- तापसूरीश्वरजी महाराजना शिच्य रत्न मुनिप्रवर श्रीमान् साणेकविजयजी महाराजना सदुपदेशथी 'जावाल' निवासी शा. नताजी थानमलजी तथा मद्धवारीयावाला शा. झवेरचंद कीसनाजी (हस्ते शा. केशरीमलजी पद्माजी) तरफथी आ मथ छपाववामां सम्पूण आर्थिक सहाय आपवानी घन्यवादाह उदारता बताववामां आवी छे ते माटे उपदेशक मुनिश्रीनो तेमज उदार महाशय आर्थिक सहायकनो अमो आभार मानीष् छीष्. श्री. मु. क. जैन मोहनमाळा—कार्याधिकारी, श्राह लालचंद नंदलाल वकील.	अध्ययनाभिधानम् १ सृगापुत्रीयाध्ययनम् २ उज्झितकाख्यं द्वितीयमध्ययनम् ३ हतीयमभअसेनाध्ययनम् ४ शक्टाध्ययनम् ५ यहस्पतिद्ताख्यं पञ्चममध्ययनम् ६ नन्दिवधनाख्यं पञ्चममध्ययनम् १८ ह

THE COUNTY OF TH



III मू. आ. श्रीय-इसाभर-1. 3 4.0 9W सिरिक्त आनक्ष अरि उच्यते, विपाकः पुण्यपापरूपकममूष्ठं तत्प्रतिपाद्नपरं श्रुतमागमो विपाकश्रुतम्। इदं च द्वाद्शाङ्गस्य प्रचन्नपुरुषस्येकादशमङ्गम् । इह छाया-तांसम् काले तासमम् समये चम्पा नाम नगर्यभवत् । वर्णकः। पूर्णभद्रं चैत्यम् । वर्णकः । तस्मिम् काले तस्मिम् समये श्रमणस्य चास्य नाम्नैवाभिहितः। प्रयोजनमपि श्रोतृगतमनन्तरं कर्मविपाकावगमरूपं नाम्नैबोक्तम्। अस्य यत् किल कर्मेविपाकावेदकं श्रुतं । विपाकश्रुतशास्त्रस्य श्रतिकेयं विधास्यते॥१॥अथ'विपाकश्रुतम्' इति कः शब्दार्थः ' च शिष्टसमयपरिपालनाथँ मङ्गलसंबन्धाभिषेयप्रयोजनानि किल वाच्यानि भवन्ति । तत्र चाधिकृतशास्त्रस्यँय सॅकलकल्याणकारिसबेबे दिगणीतञ्जतरूपतया भावनन्दीरूपत्वेन मङ्गलरूपत्वात्र ततो भिन्नं मङ्गलमुपद्रश्नीयम्। अभिधेयं च ग्रुभाग्रुभकर्मणां विपाकः, स الماليمانيما व्यणञ्जा तेणं कालेणं तेणं समाएणं चंपा णामं णयरी होत्था। वण्णओ। पुण्णभहे चेईपै। ममग्वत्स्रात्रत नवाङ्गाष्टातकारचान्द्रकुलान-श्रीमदभयदेवाचार्यविनिर्मितया टीक्या छायया च विभूषितं सान तराह, अन्य नं .... का मा. श्री यन्द्रसागर विपाकश्रुतम् १ क्ष्रमुच चीनते, ख्रम चीतिए। २ कस्त्रमाङ्च-ए ते०। ३ स्वम कत्या० श्रीमद्वादशाङ्गीविरचयितृश्रीसुधमेरवार् टीका-नत्वा श्रीवर्धमानाय वर्धमान्थ्रताध्वने।

711111111111

पुत्रीया-ध्ययनो-र समान पुनस्तदेकदेशभूतः समय इति। अथवा, तेन कालेन हेतुभूतेन, समयेन हेतुभूतेनैव। 'होत्थ'त्ति अभवत्। यद्यपीदानीमप्यस्ति सा नगरी, तथाप्यवसर्पिणी कालस्वभावेन हीयमानत्वाद् वस्तुस्वभावानां, वर्णकग्रन्थोक्तस्वरूपा सुधर्मस्वामिकाले नास्तीति क्रत्वाऽ-इत्यादि। अस्य न्याख्या-'ते णं काले णं' 'ते णं समए णं' ति तस्मिन् काले तस्मिन् समये, णंकारोक्ष वाक्यालंकारार्थत्वात्, एका-रस्ये च प्राक्रतप्रभवत्वात्। अथ काल-समययोः को विशेषः? उच्यते, सामान्यो वर्तमानावसार्पणीचत्रथरिकलक्षणः कालः, विशिष्टः भगवतो महावीरस्थान्तेवासी आर्येसुधर्मा नामानगारो जातिसंपन्नः। वर्णेकः। चतुर्देशपूर्वी चतुर्हानीपगतः पञ्जभिरनगारशतैः सार्थ संपरिष्टतः १ घड़ -मि जाव। २ ख्रा -जाति। ३ ख -णो केसिव। -ग-णो किसिवण्णव०। ४ क चउद। च -चउदस। ५ ख्रा -गते। ६ क्राच -पुन्वीजा वण्णओ । चीहसपुद्वी चउणाणोवगैष् पंचिहिं अणगारसष्हिं सिद्धिं संपरिबुहे पुद्याणुर्पुष्टिं चरमाणे जाव तत् शुण्वतां प्रायः कमीविषाकावगमो भवत्येवेति । यत् निःश्रेयसावाप्तिरूपं परंपरप्रयोजनमस्य, तदाप्तप्रणीतत्येच प्रतीयते । न ह्याप्ता तथाहि-इदं शास्त्रमुपायः, कमेविपाकावगमस्त्रपेयमिति।यस्तु गुरुपवैक्रमलक्षणः संबन्धोऽस्य, तत्प्रतिपादनाँयेदमाह-'ते णं काले णं' तितनिदेंशः कृतः। 'वण्णउ'त्ति ''रिद्वैत्थिमियसमिद्ध—''इत्यादिवर्णकोऽस्य वक्तन्यः। स चौपपातिकवद् द्रष्टन्यः। 'पुण्णभद्दे चेइए'त्ति ात् कथंचिङ् निःश्रेयसार्थं न भवति तत्प्रणयनायोत्सहन्ते, आप्तत्वहानेरिति। संबन्धोऽप्युपायोपेयभावलक्षणो नाम्नेवास्य प्रतीयते, कालेणं तेणं समष्णं समणस्स भगवओं महावीरस्स अंतेवासी अज्ञसुह्रमें णामं अणगारे जाहैंसंपैणे \* णंकारस्य प्राकृते वाक्यालकारा थेत्वापेक्षया सप्तम्या. स्थाने प्राकृतन्याकरणनिष्यवास्तृतीयाया एव न्याख्या श्रेयसी, दश्यता हे० प्रा० ३-१३७ सूत्रस्य युत्तिः। -स्व-धुर्षि जा। ७ क -नायाह। ८ क -अस्य च। ९ क -स्य प्रा० १० स्वम -ऐस्टि। ११ कस्तम -पुन F| 292 | H| 292 | M 292 | % श्रेत-

पुण्णभद्दे चेइए अहापाडिरूचं जाव विहरइ । परिसा निग्गया । धम्मं सोचा निसम्म जामेव गुरुणभद्दे चेइए अहापाडिरूचं जाव विहरइ । परिसा निग्गया । धम्मं सोचा निसम्म जामेव	% नाम	च
पुणणमहे चेइए अहापडिरूचं जाव विहरइ । परिसा निग्गया । धम्मं सोचा ।	नेसम्म जामेव	-
पुणणभद्दे चेइए अहापडिरूवं जाव	थम्मं सोचा	
पुणणभद्दे चेइए अहापडिरूवं जाव	_	The manner of
पुषणभद्दे चेइए अहापडिरूचं	जाव विहरइ।	1 1 1 1 1
वुरवाभह	अहापिडिरूनं	किंग मिरिया
	ोव पुरणमहे चेइए	नं मार्ग्ड्या सम्पन

्णेमद्रामिथाने चैत्ये व्यन्तरायतने। 'अहापडिरूचं जाव विहरइ'ति अनेनेदं सचितं द्रष्टव्यम्-''अञ्जसुहम्मे थेरे अहापडिरूचं उग्गहं びりあり उग्गिणहड्, अहापाडिरूवं उग्गहं उग्गिणिहत्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहर्ड्" तत्र येन प्रकारेण प्रतिरूपः साथुचितस्ब-रूपो यथाग्रतिरूपोऽत्रत्त्म्, अवग्रहम् आश्रयमिति, विहरति आस्ते। 'जामेव दिसं पाउब्सूया' यस्या दिशः सकाशात् प्रादुर्भूता प्रकटीभूता आगतेत्यर्थः।'तामेव दिसं पडिगया' तस्यामेव दिशि प्रतिगतेत्यर्थः। 'सनुस्तेहे' ति सप्नोत्सेघः सप्तहस्तप्रमाण इत्यर्थः दिसं पाउन्मूया तामेव दिसं पिडेगया। तेणं कालेणं तेणं समएणं अज्ञसुहम्मस्स अंतेवासी

"झाणकोड्डोबगते" इत्येतत् पदं याबदित्यर्थः । स चायं वर्णकः-"समचङरंससंठाणसंठिए, वज्ञरिसहनारायसंघयणे" विशेषणद्रयमपी-पम्हति पद्मगर्भसतद्व गौरी यः स तथा "उज्जतेने" उप्रमप्रधृष्यं तपो यस्य स तथाः "दिनतते" दीमं हुताशन इव कर्मवनदाह-दिशं प्रतिगता । तस्मिन् काले तस्मिन् समये आर्यसुधर्मणोऽन्तेवासी आर्येजम्बूर्नामानगरः सप्नोत्सेघो यथा, गौतमस्वामी तथा यावद् ध्यान-पूर्वोत्तपूर्यो चरन् यावद् यत्रेव पूर्णभर्रं चैत्यं यथाप्रतिरूपं यावद् विहरति। परिपद् निर्गता। धर्मै श्रुत्वा निशम्य यस्या एव दिशः प्राद्धभूता तामेव दमागमसिद्धम् ; "कणगपुलगनिघसपम्हगोरे" कनकस्य सुवर्णस्य यः पुलको लबस्तस्य यो निकषः कपपट्टे रेखालक्षणः, तथा जहा गोयमसामी तहा' इति यथा गौतमो भगवत्यां वार्णितस्तथाऽयमिह वर्णनीयः । कियब्द्रं यावदित्याह-'जाव झाणकोद्घोत्ति स नायम

म स्थितिया स्थितिया स्थितिया

९ समा-पुत्रीया-व्ययनो-गेद्धातः! जनाहा छन्नाहा हिल्ट 1 Face of सन्तुपविश्यते (१ विश्वतीति ) ऊर्ध्व जानुनी यस्य स ऊर्ध्वजानुः; "अहोसिर्" अयोमुखो नोध्वै तिर्यम् वा विक्षिप्तदिषिरिति भावः; कोष्टोपगतः विहरति। तत आर्यजम्बूर्नामानगारो जातश्रद्धो यावद् यत्रैवार्यसुधमोऽनगारस्तत्रैवोपागतन्निराद्धिणप्रदक्षिणं करोति, कृत्वा वन्द्ते, अणगारे जायसङ्के जाव जेणेव अज्मसुहम्मे अणगारे तेणेव उवागए तिक्ब्नो आयाहिणँपयाहिणं करेति, ज्वलचेजस्तत् तयो यस्य स तथा। "तत्ततवे" तप्नं तापितं तपो येन स तथा, एवं हि तेन तत् तपस्तपं येन क्माणि संताप्य लिधिविशेषप्रभवा तेजोज्वाला यस्य स तथा; "उद्देजाणू" शुद्धपृथिव्यासनवर्जनात्, औषग्रहिकनिषद्याया अभावाच उत्कटुकासनः ं घोर्डल्पसन्बद्धनुचरत्वंन दारुणं ब्रह्मचये तेन तपसा स्वात्मापि तपोरूपः संतापितो यतोऽन्यस्यास्पुरुयमित्र जातमितिः "महातवे" प्रशस्ततपा बृहत्तपा बाः, "डराले" भीमः संक्षिप्ता शरीरान्तर्वेतिनीत्वात् , विषुळा च विस्तीर्णा अनेकयोजनप्रमाणक्षेत्राश्रितवस्तुद्हनसमर्थेत्वात् तेजोलेश्या विशिष्टतपोजन्य मंखिताविउलतेयलेस्से' इत्येवं दश्यम् अतिकष्टतपःकारितया पार्श्वतिनामल्पसच्वानां भयजनकत्वातः उदारो वा प्रधान इत्यर्थः, ''घोरे'' निर्घणः परीषहाद्यरातिविनाशे विहरति। तते णं अष्णजंबु । 'संजसेण तपसा अप्पाण भावमाण उच्छ्ढं उज्झितमिवोज्झितं श्रीरं येन, तत्प्रतिकमित्यागात्; 6 क - हिणं णामं अणगारे सतुस्सेहे जहा गोयमसामी तहा, जाव झाणकोट्रोवगए 'घोरगुणे'' अन्यैद्देरनुचरगुणः;''घोरतवस्सी'' घोरैस्तपोभिस्तपस्बी; ''घोरबंभचेरवासी'' नामे। ४ णामे - ध 'झाणकोड्डावगए" घ्यानमेव कोष्ठस्तम्रुपागतो यः स तथा। 'विहरइ'ति " नाम । गङ्च Q स्वग्यङ -गातम। २ क्यङ्च -व उन्ना०। ३ ास्तुं शीलं यस्य स तथाः, "उच्छुडसरीर्" ः न्द्रीय विस्ति विस्ति मिन्द्री म 第一下の出版 ~ श्रुत-

=3=

स्थित्त

学司

करेता वंदाते, नमंसाते वंदिता नमंसित्ता जाव पञ्जुवासीते। पञ्जुवासित्ता एवं वयासी;—[सू० १] 'जाते एकारसमस्स णं भेंते! अंगस्स विवागसुयस्स समणेणं जाव संपत्तेणं के अट्टे पण्णते?' तते णं अजासु-जायसङ्के' प्रचत्तिवाधितार्थश्रवणवाञ्छः; यावत्करणादिदं दश्यम्—''जायसंसए'' प्रचतानिघरितार्थप्रत्ययः; ''जायकोउह्छे'' प्रचुत्त-हम्मे अणगारे जंबू अणगारं एवं वयासी;-'एवं खळु जंबू ! समणेणं जाव संपत्तेणं एकारसमस्स तव्यथा-दुःखविपा-अयणौत्सुकगः; ''उप्पनसद्हे'' प्रागभयदुद्भृतअयणयाञ्छउत्पत्रअद्धत्वात् प्रधत्यद्ध् इत्येषं हेतुफलभावलक्षणाद् न पुनरुक्तता; एवं नमस्यति, वन्दित्वा नमस्यित्वा यावत्पर्येपास्ते । पर्युपास्यैवमवद्त्,--' यदि भद्नत ! 'अमणेन भगवता महावीरेण यावत्संप्राप्तेन द्शमस्याङ्गस णं भंते! समगणें भगवया महावीरेण जाव संपत्तेणं दसमस्स अंगस्स पण्हावागरणाणं अयमट्रे पण्णत्ते प्रअत्याकरणानामयमथः प्रज्ञास , एकाद्यस्य भद्न्त ! अङ्गस्य विपाकथुतस्य श्रमणेन यावत्सप्राप्तेन कोऽर्थः प्रज्ञासः <sup>१</sup> तत आर्येसुधर्माऽनगारो अंगस्स विवागसुयस्स दो सुँयखंथा पण्णत्ता, तं जहा-दुहविवाँगा य सुहविवाँगा यै। 'जित णं भंते। ''उप्पन्नसंसए, उप्पनकोउद्छे; संजायसङ्दे, संजायसंसए, संजायकोउद्छे; समुप्पनसङ्दे, समुप्पनसंसए, समुप्पनकोउद्छे" 1 समाय उन्च -मित ए०। र क्त -ते वि०। १ खग्र यन म्या । ४ कख -वागो या ५ स -वागो या ६ क्त य पउमस्म जम्नूमनगारमेवमवदत्,-' एषं खळु जम्यो । श्रमणेन यावत्संप्राप्तेनेकाद्शस्याङ्गस्य विपाकथुतस्य द्वी श्रुतस्कन्धो प्रज्ञाती,

1.10

१ मुगा-युत्रीया-पापकर्मणां विपाकास्ते यत्राभिषेयतया सन्त्यसौ 'बैरुणानगरम्' इति न्यायेन दुःखविपाकाः प्रथमश्रुतस्कन्धः । एवं द्वितीयः सुख-विपाकाः । 'तए णं' ति ततोऽनन्तरमित्यर्थः 'मियाउत्ते' इन्यादिगाथा तत्र मियाउत्तेत्ति मृगापुत्राभिधानराजसुतवक्तज्यताप्रतिब-मुखावेपाकाञ्च । प्रथमस्य भदन्त ! अतस्कन्धस्य दुःखविपाकानां श्रमणेन यावत्संप्राप्तेन कत्यध्ययनानि प्रज्ञप्नानि !' ततः आयेम्प्रधमीनगारो प्रदक्षिणोऽतस्तम् । 'वंद् । 'वंद् 'ति स्तुत्या 'नमंस 'ति नमस्यति प्रणामितः, इह यावत्करणादिदं हर्यम्-" सुरस्रमाणे नमंसमाणे विणएणं पंजलिउडे अभिमुहे" इति, ज्यक्तं च । 'दुहविवागा य' ति दुःखविपाकाः पापकर्मफलानि, दुःखानां वा दुःखहेतुत्वात् month of the contract of the c तिम्मुनो' ति त्रिकृत्वः त्रीन् वारान् । 'आयाहिण' ति आदक्षिणाद् दक्षिणपाश्वदिारभ्य प्रदक्षिणी दक्षिणपात्र्वेवतीं आदक्षिण-काश्च, सुखिषपाकाश्च । यदि भद्नत ! श्रमणेन यावत्संप्राप्नेनैकाद्शस्याङ्गस्य विपाकश्रुतस्य ह्रौ श्रुतस्कन्धौ प्रज्ञप्नौ, तद्यथा;-दुःखिषपाकाः समणेणं जाव संपत्तेणं एकारसमस्स अंगस्स विवागसुयस्स दो सुयकैलंधा पण्णता, तंजहा-दुहाविवागा य सुहविवागा य । पढमस्त णं भंते ! सुयरकंथस्त दुहविवागाणं समणेणं जाव संपत्तेणं कड् अज्झयणा व्यक्ताथीति; नवरमेतेषु पदेषु संशव्दः प्रक्यादिवचनः। अन्ये त्वाहुः-'जातश्रद्धो जातप्रश्रवाञ्छः, सोऽपि कुतः १ यतो जातसंश्यः, सोऽपि कुतः? यतो जातकुत्हलः अनेन पदत्रयेणावग्रह उक्तः, एवमन्येन पदानां त्रयेण २ ईहा-ऽवाय-धारणा उक्ता भवन्ति' इति प्रणाता १ ' तते णं अज्ञसुहम्मे अणगारे जंबू अणगारं एवं वयासी;-' एवं खछ जंबू ! च -यसंधा। २ क -ण आइगरेणं तित्थगरेण जाव। ३ कग -वरणा १ अत-विपाके

== == ==

यविगमावगम्य इति । 'एवं खलु' ति एवं वस्यमाणप्रकारेण, खलुविषयालंकारे । 'सन्बोउय० वण्णउ' ति सर्वतिककुसुमसंछन्ने द्धमच्ययनं मृगाषुत्र एव । एवं सर्वत्र । नवरं 'उज्झियए' ति उज्झितको नाम सार्थवाहपुत्रः २ 'अभग्ग' ति क्षत्रत्वादभग्रसेनो त्रुत्रः ५ 'नंदी' इति स्रतत्वादेव नन्दिवधनी नन्दीवधनी वा राजकुमारः, ६ 'उंबर' ति स्नत्वादेव उम्बर्दती नाम सार्थवाहसुतः विजयाभिधानचौरसेनापतिष्ठत्रः ३ 'सगडे' ति शकटाभिधानसार्थवाहसुतः ४ 'वहस्सइ' ति स्रतत्वादेव बृहस्पत्तिदत्तनामा पुरोहि-७ 'सोरियद्ते य' ति शौरिकद्तो नाम मत्स्यवन्यपुत्रः ८ चशब्दः समुचये । 'देवद्ता य' ति देवद्ता नाम गृहपतिमुता ९ मैं: समुचये ! 'अंज् य' नि अंज्नीम सार्थवाहसुता १० चशब्द: समुच्ये । इति गाथासमासार्थः, विस्तराथेस्तु यथास्वमध्यमा जम्बूमनगारमेवमवादीत् ,—' एवं ख**छ जम्बो** ! श्रमणेन यावत्संप्राप्तेन हुःखविपाकानां इंशाध्ययनानि प्रज्ञप्तानि, तद्यथा,— मियाँउत्ते १ उज्झियते २ अभग्ग ३ सगड़े ४ वेहस्सती ५ नंदी ६ । मुगापुत्रः १ उधिज्ञतकः २ अभग्नः ३ शकटः ४ बृहस्पतिः ५ नन्दी उंबर ७ सोरियद्ते य ८ देवद्ता य ९ अंजू य १०॥ उम्बर: ७ शौरिकद्तश्च ८ देवद्ता च ९ अञ्जूर्च १० ॥ e H संपत्तेणं दुहविवागाणं दस अञ्झयणा पण्णता, तं जहा;-क न्यापुते। २ क निवृत्ती। ३ म नने व०। ४ स्व चराब्द म च

१ समा-पुत्रीया-ध्ययन-ाारमध जाव अंजू य, पहमस्स णं भंते! अज्झयणस्स दुहविवागाणं समणेणं जाव संपत्तेणं के अट्ठे पण्णते?' तते णं से सुहम्मे अणगारे जंबू अणगारं एवं वयासी;—' एवं खद्ध जंबू! तेणं कालेणं तेणं समएणं मिये-गामे णामं णगरे होत्था। वण्णओ । तस्स मियग्गामस्स णगरस्स बहिया उत्तरपुरित्थिमे दिसीभाए चंद-जिति णं भंते ! समीणेणं जाव संपत्तेणं दृष्टविवागाणं दस अञ्झयणा पण्णता, तं जहा-भियाउत्ते णपायवे णामं उज्जाणे होत्था। सबोउय० वण्णओ। तत्थ णं सुहम्मस्स जक्खस्स जक्खाययणे होत्था, 'णंदणवणप्पगासे' इत्याद्यद्यानवर्णको वाच्य इत्यर्थः । 'चिराईए' ति चिरादिकं चिरकालीनप्रारम्भमित्यादिवर्णकोपेतं वाच्यं यथा यदि भदन्त ! अमणेन यावत्तंप्राप्तेन दुःखविपाकानां दशाध्ययनानि प्रज्ञप्तानि, तद्यथा——मृगापुत्रो यावदञ्ज्ञ्य, प्रथमस्य भदन्त अध्य-यनस्य दुःस्वविपाकानां श्रमणेन यावत्संप्राप्नेन कोऽर्थः प्रज्ञप्तः ! ततः स सुधर्माऽनगार्गे जम्बूमनगारमेवमवादीत्,—प्वं खळु जम्बो ' तस्मिन्काले सनेतुक वर्णक. । तत्र सुधर्मणो यक्षस्य यक्षायतनमभवत्, चिरादिकं, यथा पूर्णभद्म् । तत्र मृगाप्रामे नगरे विजयो नाम क्षत्रियो राजा चिरातीष्, जहा पुण्णभहे। तत्थ णं मियम्गामे णगरे विजष्णामं खात्तिष् राया परिबसति । वण्णओ । त्तिसम् समये मृगाप्रामी नाम नगरमभूत् । वर्णकः । तस्य मृगाप्रामस्य नगरस्य बहिरुत्तरपौरस्त्ये दिग्भागे चन्द्रनपाद्षं नामोद्यानमभवत्, अभिन्द्रीमा रिस्तीस रिस्तीमा रिस्तीमा रिस्तीमा रिस्ती 296

== &=

क -णं आयगरेण तित्थगरेण जाव। र क -मे णग०

制沙 जौतिअंधे जातिमूष् जातिवहिरे जातिपंगुले हुंहे य जातिमूको जातिवाधिरो जातिपक्रुको हुण्डञ्च वायवः। न स्तस्तस्य दारकस्य हस्तो वा पातौ वा कर्णो बाऽशिणी वा नासा वा । केवलं तस्य तेपामन्नोपाङ्गानामाङातिराङातिमात्रम् । ततः सा मृगादेवी तं मृगापुत्रं टारकं राहसिकं मूसिगृहे राह-. अहीण० वण्णओ। तस्स णं विजयस्स खित्रयस्स प्रता लाउन्त अङ्गाययवानामाक्रतिराकारः । किविघेत्याह-आक्रतिमात्रमाकारमात्रं नोचित 'वायवे' ति वायुरस्यास्तीति ति आत्मजः सुतः ना। केवलं स जातिअंध गरिवमति। वर्णेकः। तस्य विजयस्य क्षत्रियस्य मृगा नाम देन्यमवत्, अहीन० वर्णेकः। तस्य विजयस्य क्षत्रियस्य पुत्रो मृगादेन्या विहरति। तत्र मृगाप्रामे नगर एको जात्यन्थ. पुरुषः परिवसति । स एकेन सचक्षरकेण रहस्सयंसि 如- 6年 तत्थ णं मियग्गामे पगरे एगे अतार् वा नासा र्णमद्चैत्यमौपपातिके। 'अहीण० वण्णउ' त्ति, अहीनपुण्यपञ्चन्द्रियश्सीर इत्यादिवर्णको वाच्यः । ' । 'हुंडे य' नि हुण्डथ सर्वावयवप्रमाणविकलः । दिवी तं मियापुत्तं दारगं तते। ३ म बाइ। ४ डच - गिती। ५ म - स्मियेण। ६ म हत्था वा पाया वा कण्णा वा अच्छी मिया मियापुत्ते नामं दारए हात्या ः भत्तपाणएणं पिडजागरमाणी विहरति तते णं सा 四 但 तरस णं विजयस्त खातियस्त मिया णामं नाइअंघे नि जात्यन्धे जन्मकालादार्भ्यान्ध गयनो यातिक इत्यर्थः। 'आगिहं आगिहमेने' तस्स द्रारगस्स अंगोवंगाणं ऑगिई आगितिमित्ते -याते दें । २ समयडच नाम दारकोऽभवजात्यन्धो सिकेन भक्तपानकेन प्रतिजागर्यन्ती निर्धि पं र्मग्रीय क्रिय हासितियां मृगापुत्रो

1

ग्रुत्रीया-ध्ययने जात्य-खितिए इमीसे कहाए छद्धट्टे समाणे जहा क्रणिए तहा निग्गते जाव पञ्जुवासित तते णं से जातिअधे पुरिसे तं महयाजणसहं च जाव सुणेता तं पुरिसं एवं वयासी;—' किर्वेणं देवाणुष्पिया अज्ज मियंग्गामे तिसमम् काले तिसमम् समये श्रमणी भगवाम् महावीरो यावत्समवसृतः। यावत् पर्षेद् निर्गता। ततः स विजयः क्षत्रियोऽनया कथया लब्याथों सम् यथा कृणिकस्तथा निगेतो यावत्पयुपास्ते। ततः स जात्यन्थः पुरुपरतं महाजनशब्दं च यावत् श्रुत्वा तं पुरुपमेवमवद्त्,-' कि नतु ति अत्यर्थं शीपे शिरो यस्य स तथा । 'मच्छियाचडयरपहकरेणं' ति मक्षिकाणां प्रसिद्धानां चटकैरः प्रधानो विस्तरवान् यः प्रहकरः समूहः स तथाः अथवा, मक्षिकाणां चटकराणां तद्युन्दानां यः प्रहकरः स तथा तेन । 'अंत्रिज्जमाणमज्मे' ति अन्वीयमानमागोऽ-द्ण्डेन प्रक्रुष्यमाणः २ स्कुटितात्यर्थशीषों मक्षिकाप्रधानसमूहेनान्वीयमानमार्गो मुगाप्रामे नगरे गृहे गृहे कारुण्यघुत्या धुन्ति कल्पयम् विहरति। नुगम्यमानमागैः। मलाविलं हि वस्तु प्रायो मक्षिकाभिरनुगम्यत एवेति। 'कालुगवांडयाए' ति कारुण्यवृत्या। 'वित्तं कप्माणे' परिवसाति । से णं एगेणं सचक्खतेणं पुरिसेणं पुरतो दंडएणं पगिडिज्जमाणे २फुट्टहडाहडसीसे मच्छिया-तेणं कालेणं तेणं समएणं समणे भगवं महावीरे जाव समोसिरिते। जाव परिसा निग्गया। तते णं से विजये स्वरूपेत्यर्थः। 'रहस्मियंसि' ति राहसिके जनेनाविदिते। 'फुट्टहडाहडसीसे' नि 'फुट्टं' ति स्फुटितकेशसंचयत्वेन विकीर्णकेशं 'हडाहडं' बडगरपहकरेणं अिणजमाणममें सियमामे णगरे गिहे गिहे कालुणविड्याए विभि कप्माणे विहरति। १ स्त्रमधङ्च णिते। २ स्वगघङ्च किन। ३ क मियागा-। ४ कग करप्र। ५ -स्व अणिजा । ग आणिजा

१ अत-

平明時

विभारतीय रिस्तीय रिस्तीय विभारतीय विभारतीय । इंदमहेति वा जाव निगम्छिति ? तते णं से पूरिसे तं जातिअंधपुरिसं एवं वयासी;—'नो खद्ध देवा० एवं वयासी;--'गच्छामो णं देवाणुप्पिया अम्होत्रे समणं भगवं जाव पज्जु-हरुयः । तं महयाजणसदं च ' ति सुत्रत्वाद् महाजनशब्दं च; इह यावत्करणात् "जणबूहं च जणबोलं च" इत्यादि हरुयम् । तत्र वासामों'। तते णं से जातिअंधपुरिसे पुरतो दंडएणं पगाडिजमाणे २ जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागैते, उवागच्छिता तिक्ख्नो आयोहिणपयाहिणं करेति, करेता बंद्ति नमंसति, बंदिता नमंसित्त इति दश्यम् । इतो यद् वाक्यं तदेवमनुसर्तन्यम्, सत्रपुस्तके हि स्चाक्षराण्येव सन्तीति;-" तष् णं से प्रिसे तं जाइअंधपुरिसं एवं ' इत्यादियणेको इन्द्रोत्सचो वा, इह याघरकरणात् "खंदमहे वा कहमहे वा जाव उञ्जाणजत्ताइ वा, जञंबहवे उग्गा भोगा जाव एगदिसि एगाभिमुहा' एवं खन्ड देवानुप्रिय । श्रमणो यावद् विहरति, तत एते यावत्रिगेच्छन्ति'। ततः स जात्यन्धपुरूपस्तं पुरुपमेवमवादीत्,-'गच्छावो देवानुप्रिय देवानुपिय! अस मुगाप्रामे इन्द्रमहो वा यावत्रिगोच्छति ! ततः स पुरुषस्तं जात्यन्धपुरुषमेवमवदत्,—' नो खछ देवा० इन्द्रमहो यावन्निगोत समणे जाव विहरति, तते णं एए जाव निग्गच्छंति, नि जीविकां कुर्वाणः । 'जाव समोसिरिए' ति इह यावत्करणात "पुन्वाणुपुन्ति चरमाणे गामाणुगामं दूइज्जमाणे" जनन्यूह्थकाद्याकारः समूहः, तस्य शन्दस्तद्भेदाज्ञनन्युह् एषोच्यते, अतस्तम् ; 'षोठः' अन्यक्तवणंष्मनिरिति। णं से जातिअंघपुरिसेतं प्रिसं ह्यू इस म मन्द्रित। १ मच

一個では

पुत्रीया-ध्ययने जात्य-व्यस्य स्थ्यार्भे केइ पुरिसे जातिअंधे जाँगअंधारूवे !" 'हंता अरिथ'। 'कहिं णं भंते ! से पुरिसे जातिअंधे जांतेअधारूवे !' वयासी,-' नो सछ देवाणुरियया ! अज्ञ मियग्गामे गाँगरे इंदमहे वा जाव जनाइ वा जन्नं एए उग्गा जाव एगदिसि एगामिमुहा इति । 'विजयस्स तीसे य' ति इद्मेव द्व्यम्-"विजयस्स रण्णो तीसे य महइ्महालियाए परिसाए विजिनं धम्ममाइक्खर् जैहा जीवा आवामपि अमणं भगवन्तं यावत्पर्युपास्वहे'। ततः स जात्यन्धपुरुषः पुरतो दण्डेन प्रकृष्यमाणो २ यत्रेव अमणो भगवान् महाबीरस्तत्रेवो-ी क -गता। २ खाग गते। ३ कघडच्य जाव अ०। ४ खागघडच्य जाव ५ क, जाव अ०। ६ क, नगरे ग नयरे। ७ क, नयरे। ८ खाग मिम। । परिसा जाव पहिगैया । विज-एवि गैए। तेणं कालेणं तेणं समएणं समणस्स जेट्टे अंतेवासी इंदभूती णामं अणगारे जाव विहरति। तते णं से भगवं गोतमे तं जातिअंधपुरिसं पासति। पासिता जौयसङ्घे जाव एवं वयासी;—'अरिथ णं अंते! अहापिडिरूनं उग्गहं उग्गिणहर, उग्गिणिहत्ता संजमेणं तनसा अप्पाणं भानेमाणे विहर्षंड, तए णं से अंघपुरिसे तं पुरिसं एनं नयासी" पागतः । उपागत्य त्रिराद्किणप्रदक्षिणं करोति । कृत्वा वन्द्ते, नमस्यति । वन्दित्वा नमस्यित्वा यावत्पर्येपास्ते । ततः श्रमणो विजयाय तस्यै च धर्ममाख्याति परिपद् यावत् प्रतिगता। विजयोऽपि गतः। तस्मिन् काले तस्मिन् समये श्रमणस्य ज्येष्टोऽन्तेवासी इन्द्रभूतिनोमाऽनगारो यावद्विहरति । ततः स भगवान् गौतमस्तं जात्यन्धपुरुपं पर्यति। द्धा जातश्रद्धो यावदेवमवादीत्,—'अस्ति भदन्त । कश्चित्पुरुषो जात्यन्धां णिग्गच्छति, एवं खळ देवाणुप्पिया ! समणे भगवं महाबीरे जाव इह समागए, इह संपत्ते, इहेव मियग्गामे णैंगरे मिर्यवणुआणे पञ्जुवासाति। तते णं समणे विजयस्त तीसे य धम्ममाइक्षइ र स्तम -शति। १० क जह या हा । अन्या हा । अन्या हा । अन्य

१ अत-

विषाके

स्कान्धः।

w

'एवं खद्ध गोतमा! इहेव मियग्गामे णगरे विजयस्स पूने मियादेवीए अत्तए मियाउते णामं दारए जाति-' इच्छामि णं भंते ! अहं तुन्भेहिं अन्भणुषणाते[ समाणे ]मियापुत्तं दारयं पासित्तए । ' ' अहासुहं वज्झंति" इत्यादि परिषत् यावत् प्रतिगता । 'जाइअंघे' त्ति जातेरारभ्यान्घो जात्यन्धः । स च चक्करूपघाताद्पि भवतीत्यत आह— जातान्धकरूपः ?' 'हन्तास्ति ।' 'कुत्र भद्न्त ! स पुरुषो जात्यन्धो जातान्धकरूपः ?''एवं खळु गौतम! इहेव मृगाप्रामे नगरे विजयस्य पुत्रो 'जायअंघारूवे' सि जातमुत्पत्रमन्घकं नयनयोराहित एवानिष्पेतः कुत्सितान्धं रूपं यस्यासौ जातान्यकरूपः। 'अतुरिपं'ति मनःस्थैयिति; अंधे जातअंधारूचे, नित्य णं तस्स दारगस्स जाव आगितिमित्ते, तते णं सा मियादेवी जाव पांडेजागरमाणी मृगादेञ्या आत्मजो मृगापुत्रो नाम दारकः जात्यन्घो जातान्घकरूपः, न स्तस्तस्य दारकस्य यावदाछतिमात्रम्, ततः सा मृगादेवी यावत्यतिजाग-अहं युप्पामिरभ्यनुद्यातो मृगापुत्रं द्रारकं द्रघ्टुम् ।' 'ययामुखं देवानुप्रिय!।' ततः स भगवान् गीतमः श्रमणेन भगवताऽभ्यनुद्यातः सम् हृष्टतुष्टः २ विहरति।' तते णं से भगवं गोतमे समणं भगवं महावीरं वंदाति नमंसाति। वंदिता नमांसित्ता एवं वयासी;--देवाणुपिया!'। तते णं से भगवं गोतमे समणेणं भगवया अब्भणुण्णाते समाणे हहुतुहे रयन्ती २ विहरति'। ततः स भगवान् गौतमः श्रमणं भगवन्तं महावीरं वन्द्ते नमस्यति। वन्दित्वा नमस्यत्वैवमवदत्,-'इच्छामि भदन्त

를 의 मिस्वा-माधुत्रं हर्ष्ट् याबत्करणादिदं दृश्यम्—"अचबलमसंभेते अगंतरपलोयणाए दिहीए पुरओ रियं" इति; तत्र चपलं कायचापल्याभावात्; क्रिया-विशेषणे चैते; तथा, असंभ्रान्तो भ्रमरहितः; युगं यूपस्तत्प्रमाणी भूभागोऽपि युगं, तस्यान्तरे मध्ये प्रलोकनं यस्याः सा तथा तया पासिता हट्ट० जाव एवं वयासी, 'संदिसतु णं देवाणुप्पिया ! किमागमणपयोयणं ? ' तते णं भगवं गोतमे मिथं देविं एवं वयासी, 'अहणणं देवाणुप्पिए! तव पुत्तं पासितु हवमागते'। तते णं सा मिया-णगरे तेणेव उवागच्छति। उवागाच्छिता मियग्गामं णगरं मज्झंमज्झेणं अणुपविस्सइ । अणुप्पविस्तिता जेणेव मियाए देवीए गिहे तेणेव उवागच्छति। तते णं सा मियादेवी भगवं गोतमं एजमाणं पासति । अमणस्य भगवतोऽन्तिकात् प्रतिनिष्कामति। प्रतिनिष्कम्यात्वरितं यावच्छोधमानो २ यत्रैव मृगात्रामं नगरं तत्रैवोपागच्छति। डपागत्य मृगाप्रामं मृगापुत्रस्य दारकस्यानुमागेजातांश्रतुरः पुत्राम् सर्वोठंकारविभूषिताम् करोति । कृत्वा भगवतो हष्ट० यावदेवमवदत्-'संदिशतु देवानुप्रिय किमागमनप्रयोजनम् ?' ततो भगवान् गौतमो सृगां देवीमेवमवदत्, 'अहं देवानुप्रिये ! तव पुत्रं नगर् मध्यमध्येनानुप्रविशति । अनुप्रविश्य यत्रैव मृगाया देव्या गृहं तत्रैवोपागच्छति। ततः सा मृगादेवी भगवन्तं गौतममायन्तं पश्यति। द्रष्टा देवी मियापुत्तस्त दारगस्त अणुमग्गजायष् चतारि पुत्ते सबालंकारविभूसिष् करेति । करेता भगवतो समणस्स भगवओ अतितातो पिडिनिस्कमई। पिडिनिस्कमिता अतुरियं जाव सोहेमाणे २ जेणेव मियागामे शीव्रमागतः । ' ततः सा मृगादेवी 学

मियं दछ्या चक्षुपा, 'सियं' इति ईयी गमनं तिष्टपयी मागौऽपीयिऽतस्ताम् । 'जेणेव'सि यस्मिन् देशे। ' हड्ड॰ जाव'ति इह " हडुतुडु-णं जे से तव जेट्टे पुने मियापुने दारए जातिअंधे जाव अंधारूवे, जणणं तुमं रहस्सियांसि भूमिघरांसि रहस्सिएणं भत्तपाणेणं पडिजागरमाणी २ विहरसि, तं नं अहं पासिउं हव्वमागते '। तते णं सा मियादेवी भगवं गोतमं एवं वयासी;—'से के णं गोतमा! से तहारूवे णाणी वा तवस्ती वा जेणं तव 'नो तछ देवानुप्रिये । अहमेतांस्तव पुत्रान् दृष्टुं शीप्रमागतः, तत्र यः स तव ब्येष्ठः पुत्रो मृगापुत्रो दारको जासन्धो यावद्नधकरूपः, यं लं वर्त,—' को गोतम । स तथारूपो ज्ञानी वा तपस्वी वा येन तवैपोऽथों मम तावद् रहस्यक्ठतस्तुभ्यं शीघ्रमाख्यातो यतो युयं जानीय ११ गौतमस्य पाद्योः पातयति । पातयित्वैवमवद्त्,-एताम् भद्न्त ! मम पुत्राम् पर्यत । 'ततः स भगवाम् गौतमो मुगां देवीमेवमबद्त्, गडिसिके भूमिगृहे राहसिकेन भक्तपानेन प्रतिजागरयन्ती २ विहरिस तमहं द्रघ्टुं शीघ्रमागतः'। ततः सा मृगादेवी भगवन्तं गौतममेवम-गोतमस्स पाष्सु पाडोति । पाडेना एवं वयासी, 'एए णं भंते! मम पुने पासह'। तते णं से भगवं माणींदिअ "-इत्यादि टरमम्; एकाथिंशेते शब्दाः ' हवं ' ति शीघम्। ' जाओ णं ' ति यसात्। ' जाया यानि-होत्था ' एसमट्टे मम ताव रहस्सकते तुब्भं हव्वमक्खाते, जतो णं तुब्भे जाणह ?' तते णं भगवं गोतमे गोतमे मियं देविं एवं बयासी;-'नो खड़ देवाणुपिषए! अहं एए तब पुने पासिउं

= > = अध्यः मुगा-देव्या त्रीमगुहे पागच्छति । उपागस्य वस्त्रपरिवर्तै करोति । कृत्वा काष्ठशकदिकां गृह्वाति । गृहीत्वा विपुलेनाशनपानस्वाद्मिस्वादिम गीतममेवमवादीत्,—' युरं भदन्त! इहैव तिष्ठत, यावदृहं युष्मभ्यं मृगापुत्रं दारकमुपद्शीयामि ' इति क्रत्वा यत्रैव भक्तपानगृहं तत्रैवो-खातिमसातिमस्त भरेति २ तं कट्टसगडियं अणुकड्डमाणी २ जेणेव भगवं गोतमे तेणेव उवागच्छाति ततो भगवान् गौतमो मुगां देवीमेवमबदत्—' एवं खछ देवानुप्रिये! मम धर्माचार्थः अमणो भगवान् यावत् ततोऽहं जानामि।' यावच मुगादेगी भगवता गौतमेन सार्धमेतमर्थं संछपति तावच मृगापुत्रस्य दारकस्य भक्तवेछा जाता चाप्यभवत्। ततः सा मृगावती भगवन्तं उवागच्छति । उवागच्छिता वत्थपरियद्दं करेति । करेता कटुसगडियं गेण्हति २ विपुलस्त असणपाण-इह चेव चिट्टह जा णं अहं तुब्भं मियापुनं दारयं उवदंसीभ'नि कहु जेणेव भत्तपाणघरए तेणेव देविं एवं वयासी;--' एवं खहु देवाणुष्पिए! मम धम्मायरिए समणे भगवं जाव ततोणं अहं जाणामि '। जांबं च णं मियादेवी भगवया गोतमेणं सिष्टिं एवमट्टं संलवाति तावं च णं मियापुत्तरस दारगरस भत्तवेला जाया यावि होत्था । तते णं सा मियादेवी भगवं गोयमे एवं वयासी;-'तुब्भे णं भंते चाप्यभवदित्यर्थः ' बत्थपरियट्टं 'ति वस्तपरिवर्तनम् ।

यावत् ततोऽपि चानिष्ठत्रश्रेव तां माष्ट्रामिटिकामनुकर्नेन्ती २ यदैव भूमिगुहं तत्रैबोपागच्छति । उपागस चतुष्पुटेन बस्नेण मुखं बध्नती भगवन्तं गौतममेबमबादीत्,--बत्थेणं मुहं वंधमाण मुखं यन्तीत '। ततो भगवान् गौतमो मृगादेञ्येवमुक्तः सन् मुखवस्तिकया मुखं यन्ताति । ततः ' ततोवि णं ' ति ततोऽपि अहिकडेचरादिगन्धाद्पि ' अणिडुतराष् चेत्र ' नि इंह याचल्कर्णात " तते णं भगवं माष्ट्रजकदिकामनुकर्पन्ती २ यत्रैव भगवान् गौतमस्तत्रैबोपागच्छति । उपागत्य भगवन्तं गौतममेवमवद्त्,--' एत यूयं भदन्त पृष्ठतः समनुगच्छति। ततः सा ! ममं [मए सिंहे] अणुगच्छह जा णं अहं तुब्भं ! तेणेव उवागच्छति २ चउप्पुडेणं तिवाजाव भूमीगृहस्य द्वारं विषाटयति । ततो गन्यो निर्गन्छति । स यथानामाऽहिमृतकस्य वा मुहपोतियाए मुहं वंधह समणुगच्छात अहिमडे इया सप्पकडेवरे इया मियाद्वांए एवं बुत्ते समाणे मुहपोत्तियाए मुहं वंधंति [वंधइ]।तते णं सा वारं विहाडेति । तते णं गंथो निगच्छति । से जहानामए अहिमहे गच्ऊत यावद्हं युष्मभ्यं मृगापुत्रं दारकमुपद्शंयामि '। ततः स भगवान् गीतमो मृगादेवीं २ भगवं गोतमं एवं वयासी;—' एह णं तुब्से भंते । भामियरे ' ति तद्यथानामेति वाक्यालंकारे तुन्मेवि १ तते णं से भगवं इवा सुणहमडे इवा " इत्यादि द्रष्टन्यम् । गोतमं एवं नयासी:-कट्रसगाडेयं अणुकद्वमाणी । मुरावक्षिकया से जहानामए मृगाद्वी पराइयुखी ' य्यमि च भटन्त यामान्द्रशायान्द्रशायान्द्रशाया

अध्यं०, दृगापुत्र स्याऽऽ-हारः ॥ **= ≥ =** य णं पूर्यं च सोणियं च आहारेति। तते णं भगवतो गोतेमस्स तं भियापुत्तं दारयं पासित्ता अयमेया-रूवे अञ्झरियते ४ समुप्पज्ञित्था,—अहो णं इसे दारष् पुरा पोराणाणं दुच्चिण्णाणं दुप्पडिकंताणं असु-हतर एव 'गन्धः' इति गम्यते; इह यावत्करणात "अकंततराए चेव अपियतराए चेव अमणुन्नतराए चेव अमणुन्नतराए चेव अमणामतराए चेव" इति इत्यम्, एकाथश्चिते। 'मुच्छिए' इत्यत्र "गहिते गिद्धे अञ्झोवयने" इति पद्त्रयमन्यद् हत्यम्; एकाथिन्येतानि चत्वार्यपीति। 'अञ्झित्थए' इत्यत्र "चितिए कपिष्ए परिथए मणोग्य संकत्पे" इति हत्यम्; एतान्यप्येकाथीनि। ' पुरा पुराणाणं दुचिनाणं इहाक्षरघटना-पुराणानां जरठानां कक्तव्हीभूतानामित्यर्थः पुरा पूर्वकाले दुश्चीणानां प्राणातिपातादिदुश्चरितहेतुकानाम्। 'दुप्प-यावद् गन्धः प्रज्ञप्तः स मृगापुत्रो दारकस्तस्य विपुळस्याशनपानखादिमस्वादिन्तो गन्धेनाभिभूतः संस्तरिमम् विपुछेऽशनपानखादिमस्वा-तराष् चेव जाव गंधे पण्णते। तते णं से मियापुत्ते दारष् तस्स विपुलस्त असणपाणवाइमसाइमस्स गंधेणं अभिभूते समाणे तंसि विपुलंसि असणपाणवाइमसाइमंसि मुच्छिते ४ तं विपुलं असणं ४ आ-सष्णं आहारेति २ खिष्पामेव विद्धेसीति। ततो पच्छा पूयताष् य सोणियताष् य परिणामेति। तापि डिक्ताणं'ति दुःशब्दोऽभावार्थः, तेन प्रायश्चित्तप्रतिपन्यादिनाऽप्रतिकान्तानामनिवार्तेतविषाकानामित्यर्थः ' असुभाणं 'ति असु-शोणितं चाहरति। ततो भगवतो गौतमस्य तं मृगापुत्रं दारकं द्याऽयमेतदूप आध्यारिमकः ४ समुद्पद्यत, 'अहो अयं दारकः द्मिन मूच्छितः ४ तं विपुष्ठमश्रनं ४ आस्येनाहरति, आहत्य क्षिप्रमेव विध्वंसयति। ततः पञ्चात् पूयतया च शोणेततया च परिणमयति । तद्पि च पूर्यं च F|| 564 || 61 || 564 || 51 || 564 || 51 || 51 || 51 || 51 || 51 || 51 || 51 || 51 || 51 || 51 || 51 || 51 || 51 || 51 || 51 || 51 || 51 || 51 || 51 || 51 || 51 || 51 || 51 || 51 || 51 || 51 || 51 || 51 || 51 || 51 || 51 || 51 || 51 || 51 || 51 || 51 || 51 || 51 || 51 || 51 || 51 || 51 || 51 || 51 || 51 || 51 || 51 || 51 || 51 || 51 || 51 || 51 || 51 || 51 || 51 || 51 || 51 || 51 || 51 || 51 || 51 || 51 || 51 || 51 || 51 || 51 || 51 || 51 || 51 || 51 || 51 || 51 || 51 || 51 || 51 || 51 || 51 || 51 || 51 || 51 || 51 || 51 || 51 || 51 || 51 || 51 || 51 || 51 || 51 || 51 || 51 || 51 || 51 || 51 || 51 || 51 || 51 || 51 || 51 || 51 || 51 || 51 || 51 || 51 || 51 || 51 || 51 || 51 || 51 || 51 || 51 || 51 || 51 || 51 || 51 || 51 || 51 || 51 || 51 || 51 || 51 || 51 || 51 || 51 || 51 || 51 || 51 || 51 || 51 || 51 || 51 || 51 || 51 || 51 || 51 || 51 || 51 || 51 || 51 || 51 || 51 || 51 || 51 || 51 || 51 || 51 || 51 || 51 || 51 || 51 || 51 || 51 || 51 || 51 || 51 || 51 || 51 || 51 || 51 || 51 || 51 || 51 || 51 || 51 || 51 || 51 || 51 || 51 || 51 || 51 || 51 || 51 || 51 || 51 || 51 || 51 || 51 || 51 || 51 || 51 || 51 || 51 || 51 || 51 || 51 || 51 || 51 || 51 || 51 || 51 || 51 || 51 || 51 || 51 || 51 || 51 || 51 || 51 || 51 || 51 || 51 || 51 || 51 || 51 || 51 || 51 || 51 || 51 || 51 || 51 || 51 || 51 || 51 || 51 || 51 || 51 || 51 || 51 || 51 || 51 || 51 || 51 || 51 || 51 || 51 || 51 || 51 || 51 || 51 || 51 || 51 || 51 || 51 || 51 || 51 || 51 || 51 || 51 || 51 || 51 || 51 || 51 || 51 || 51 || 51 || 51 || 51 || 51 || 51 || 51 || 51 || 51 || 51 || 51 || 51 || 51 || 51 || 51 || 51 || 51 || 51 || 51 || 51 || 51 || 51 || 51 || 51 || 51 || 51 || 51 || 51 || 51 || 51 || 51 || 51 || 51 || 51 || 51 || 51 || 51 || 51 || 51 || 51 || 51 || 51 || 51 || 51 || 51 || 51 || 51 || 51 || 51 || 51 || 51 || 51 || 51 || 51 || 51 || 51 || 51 || 51 || 51 || 51 || 51 || 51 || 51 || 51 || 51 || 51 || 51 || 51 || 51 || 51 || 51 || 51 || 51 || 51 || 51 || 51 || 51 || 51 || 51 || 51 || 51 || 51 || 51 || 51 || 51 || 51 || 51 || 51 || 51 || 51 || 51 || 51 || % श्रुत-श्री-विषके स्क्रम्

एवं वयासी;—'एवं खद्ध अहं तुन्भेहिं स्तामि २ जेणेव मियाए देवीए गिहे तेणेव इ० तं चेव सबं जाव पूर्य च सोणियं च या नैरयिका या, प्रत्यक्षं सन्वयं पुरुपो नरकप्रतिरूपिकां वेदनां वेदयति' इति छत्वा मृगां देवीमापृच्छते। आपृच्छय मृगाया देव्या गृहात् अमणं भगवन्तं महावीर त्रिराद्षिणप्रदक्षिणं करोति । कुत्वा वन्द्ते नमस्यति । वन्दित्वा नमस्यत्वैवमवादीत्,--'एवं खन्वहं युष्मामिरभ्य-पुरा पुराणानां दुश्चीर्णोनां दुप्प्रतिक्रान्तानामग्रुभानां पापानां क्रतानां कर्मणां पापं फल्ब्बत्तिविशेषे प्रस्यनुभवन् विहरित, न मया दृष्टा नरका नुशातः सन् सुगाप्रामं नगरं मध्यमध्येनानुप्राविशम्, अनुप्रविश्य यत्रैव सृगाया देन्या गृहं तत्रैवोपागतः। ततः सा सुगादेवी मामेयमानं प्रतिनिष्कामित, प्रतिनिष्कम्य मृगाप्रामात्रगरान्मध्यमध्येन निर्गेच्छति, निर्गम्य यत्रेव श्रमणी भगवान् महावीरस्तेत्रेवोषागच्छति । उपागत्य । उवागिन्छेता समणं भगवं महावीरं तिक्ख्तो आयाहिण पचणुभवमाणे विहराति, ण मे दिट्टा णरगा उवागतें। तते णं सा मियादेवी ममं एजमाणं पासति २ हट्ट० तं चेव सबं जाव पूयं च वेयणं वेएति' नि कट्ड । अञ्मणुण्णाष् समाणे मियग्गामं नगरं मञ्झंमञ्झेणं अणुपिनसामि दुष्टस्वभावानाम् । 'कम्माणं'ति ज्ञानावरणादीनाम् । बंदिता नमंसिता गेरइया वा, पचक्लं खछु अयं पुरिसे नरयपाङिरूवियं वेय र मियाए देवीए गिहाओ पिडेनिक्लमति र मियग्गामं साण पावाणं कडाणं कस्माणं पावगं फलवित्तिविसेसं पयाहिणं करेति । करेता बंद्ति नमंसाति । समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छति। खहेत्रुनाम् । ' पायाणं'ति पापानां ं मियाए देवीए मिल्लामा जिल्लामा जिल

4

अध्य॰, मगवद्री तमस्य प्रभु-पाञ्चे आगम् नम् ॥ वा द्वा कि वा भोचा कि वा समायरिता केसिं वा पुरा पोराणाणं जाव विहरति ?' गोयमाई समणे आहारेति। तते णं मम इमे अज्झारिथते ४ समुप्पिजित्था;—'अहो णं इमे दारष् पुरा जाव विहरति'। (सू० ४) 'पुवभवे के आसि' इत्यत एवमध्येयम्—"किंनामए वा किंगोत्तए वा" तत्र नाम याद्दिछकमभिधानम्, गोत्रं तु यथार्थम्, से णं भंते ! युरिसे पुबभवे के आसि, किनामए वा किगोत्तए वा कयरंसि गामांसि वा नगरंसि वा समायरिता केसि वा पुरा पीराणाणं कुलं वाः, "कयरंसि गामंसि वा नगरंसि वां किं वा दचा किं वा भोचा किं वा 

% श्रुत-

यावत्करणादिदं 'ति नगरवर्षकः । स चौपपातिकवद् तेसं पचणुङभवमाणे विहर्ह" इति। 'गोयम' ति गौतम इत्येवं 'आमन्त्रय' इति द्रघन्यम् 'खेडे'नि घूलिप्राकारम् । 'रिद्ध'नि "'रिद्धात्थिमियसमिद्धे" : 'आभोए'त्ति विस्तरः। 'रहुउडे'त्ति राष्ट्कूटो मण्डलोपजीवी राजनियोगिकः। ' अहम्मिए ' ति अघामिकः, ः • चण्णाङ इति गम्यते। 'रिद्धारिथमिए'नि ऋद्धिप्रधानं स्तिमितं च निर्भयं यत् तत् तथा। दुप्पिडिकंतांणं असुहाणं पावाणं कम्माणं पावगं फलवित्तिविसे

|| || ||

यावद्

वा पुरा पुराणानां यावद् विहरति १, ' गौतम ' इति ' अमणो भगवान्महावीरो भगवन्तं गौतममेवमवदत्त ;---' एवं खछ

केषां

विहरति'। स भदन्त ' पुरुषः पूर्वभवे क आसीत्, किनामा वा किगोत्रो वा कतरसिमन् शामे वा नगरे वा कि वा दुन्वा कि वा भुक्त्वा कि वा

द्धा हुछ० तदेव सर्व यावत्पूयं च शोणितं चाहरति । ततो ममायमाध्यात्मिकः ४ समुद्पद्यत,- अहो अयं दारकः पुरा

हर्यमू—"अधम्माणुए अधम्मिट्टे अधम्मक्लाई अधम्मपलोई अधम्मपलञ्जणे अधम्मसमुदाचारे अधम्मेणं चेव ।

ोतम ' तिसम् काले तिसम् समये उहेव जम्बूद्वीपे द्वीपे भारते वर्षे शतद्वारं नाम नगरमभवद् ऋद्वत्तिमित० वर्णकः। तत्र शतद्वारे नगरे थनपतिनाम राजाऽभवत । तस्य शतद्वारस्य नगरस्यादूरासन्ने दक्षिणपौरस्त्ये दिग्भागे विजयवर्धमानो नाम खेटोऽभवद् ऋछ० । तस्य विजय-विजयवन्द्रमाणे णामं खेडे होत्था रिद्ध०। तस्त णं विजयवद्दमाणेस्स खेडस्स पंच गामसयाइं आभोष मित्याह-अधमे एवेष्टो ब्रह्ममः पूजितो वा यस्य सोऽधमेष्टः; अतिशयेन वाऽधमी धर्मबर्जित इत्यधमिष्ठः । अत एवाऽधमित्यायी अत एवाधमेप्ररजनोऽधमेरागी। अत एवाधमेः समुदाचारः समाचारो यस्य स तथा। अत एवाधमेण हिंसादिना बृत्ति जीविकां वर्धेगानस्य रोटस्य पद्य यामरातान्यामोगात्राप्यभवत्। तत्र विजयवर्धमाने खेट एकाहिनीम राष्ट्कूटोऽभवद्धार्मिको यावद् हुष्यत्यानन्दः। रतीले दुन्यए" इति । तत्राधामिकत्वप्रपञ्चनायोच्यते 'अधम्माणुए' अधमे श्रुतचारित्रामावमनुगच्छतीत्यधम निगः। कुत एतदेव अयमेग्रतिपादकः । अयमेख्यातिः 'अविद्यमानघमोऽपम्' इत्येवं प्रसिद्धिकः। तथा, अधमै प्रलोकपत्युपादेयतया प्रेक्षते यः स तथा होत्या। तत्य णं विजयवद्यमाणे खेडे एकाई नाम रटुकूडे हात्या अहाम्मएजाव दुप्पाडियाणंदे भगवं महावीरे भगवं गोतमं एवं वयासी;-'एवं ख़ि गोतमा ! तेणं कालेणं तेणं समएणं इहेव दीने भारहे नासे सयद्वारे णामं णगरे होत्था रिद्धात्थिमिते० वणणओ। तत्थ णं सयद्वारे णिवती नाम राया होत्या । तस्त णं सयदुवारस्स णगरस्स अदूरसामंते दाहिणपुरित्यमे । कन्पयम् मम् । दुःशीलः ग्रुभस्यभावहीनः । दुत्रेतश्र यतग्रितः । दुष्पत्यानन्दः साधुद्श्नादिना नाऽऽनन्द्यत इति यानि

	श्रम्भार	<del> </del>	शतद्वार		म
		स्स पंच गामसयाइं बहाहें करेहि य भरेहि य विद्धाहि	र य कुतिहि य लंखपोसिहि य आलीवणोहि य पंथको-	म्,-"पोरेवचं सामितं भट्टितं महत्तरगतं आणाईसरसेणावचं कारेमाणे"	इति। तत्र पुरावात्तत्वसग्रसरता, स्वामित्व नायकत्वम् , मतृत्व पाषकत्वम् , महत्तरकत्वम् उत्तमत्वम् , आज्ञश्वरस्याज्ञाप्रधानस्य यत् 🔌 सेनापतित्वं तदाज्ञेश्वरसेनापतित्वम्। कारयन् नियोगिकैविधापयन् ;पालयन् स्वयमेवेति। 'करेहि य' त्ति करेः क्षेत्राद्याश्रित्य राजदेय- 🚞
				} 	
- 15			४ श्रुत- स्कन्धः।	118811	<u> </u>
	ar .	कि ५	~ 惊		

7

" शिनिमिः " कौटुम्बिकान् । 'विद्योहि य' ति ब्रिझिमिः कुद्धिम्बनां वितीर्णस्य घान्यस्य द्विगुणादेश्रेहणैः, " iं जीविकाः । 'उक्कोडाहि य'त्ति लश्चाभिः। पराभएहि य' ति पराभवैः । दिनोड्ग्राह्मने तानि मेद्यानिः अतस्तैः । कुतिहि य ' ति कुतकं ' एतावह् इन्यं त्वया देयम् ' अनाभवहातन्यैः । 'मेज्जोहे य' ति यानि पुरुषमारणाद्यपराधमाश्रित्य ग्रामादिषु दण्डद्रन्याां इति क्वचित् तत्र द्यत्तयो राजादेशकारिणां द्रच्यैः । 'मरेहि य' ति तेषामेव प्राचुर्यैः ।

। ततः स एकादिविजयवर्धमानस्य

खेटस्य पद्ध ग्रामशतानि बहुभिः करेश्र भरेश गुड़िभिश्च लब्जाभिश्च प्राभवेश्च देवैश्च भेवैश्च कुतकेश्च लञ्छपोषेश्चादीपनेश्च सार्थघातेश्चावपीडयन् २

स एकादी राष्ट्रकूटो विजयवर्षमानस्य खेटस्य पञ्चानां शामशतानामाधिपत्यं यावत् पालयमानो विहरति।

' लंछापोसेहि य 'त्ति लञ्छारचौरविशेषाः

まると

हेहि य ओवीलेमाणे २ विहम्मेमाणे २ तज्ञेमाणे २ तालेमाणे २ निद्धणे करेमाणे २ विहराति। तते णं रहकूडे विजयवड्डमाणस्स खेडस्स बहुणं राइसर० जाव सत्थवाहाणं अण्णेसि च बहुणं गामेह्नग-हिम्मेमाणे' ति वियमेयन् स्वाचारअष्टान् कुर्वन् । 'तज्जमाणे' ति कृतावष्टमभार्तजेयन् 'ज्ञास्यथ रे मम इदं इदं च न दत्थ' इत्येवं 'कारणेसु' नि सिसाधियिषितप्रयोजनोपायेषु विषयभूतेषु ये मचादयो व्यवहारान्तास्तेषु; यियमैयन् २ तजीयन् २ ताडयन् २ निर्धनान् कुर्वेन् २ तिहरति । ततः स एकाकी राष्ट्रकूटो विजयवर्षमानस्य खेटस्य वहूनां राजेश्रर० भ्रणोति, अभ्रण्यम् भणति मृणोपि एवं पत्र्यम् भाषमाणो गृत्म् जानम्।ततः स एकादी राष्ट्रकूट एतत्क्रमाँ एतत्प्रधानं एतदिघ एतत्समाचारः 'ति न्याकुललोकानां मोषणार्थे ग्रामादिप्रदीपनकैः । 'पंथकोट्टेहि य ' ति सार्थघातैः । 'ओवीलेमाणे ' ति अवपीलयन् बाधयन् त्यासनिकाः, माडम्बिका मडम्बाधिपतयः, मडम्बं च योजनद्याभ्यन्तरेऽविद्यमानग्रामादिनिवेशाः संनिवेशविशेषाः ग्रसिद्धाः विजयवद्धमाणस्स खेडस्स' सत्कानाम् ' बहूणं राईसरतलवरमाङंवियकोडंवियसत्थवाहाणं ' इह तलवरा राजप्रसादवन्तो एकाई यायत् मार्थवाहानामन्येयां च वहूना श्रामेयकपुरुपाणां वहुषु कार्येषु कार्णेषु च मन्त्रेषु गुह्येषु निश्चयेषु व्यवहारेषु च श्रुण्बन् ः वहूस कजेस कारणेस य मंतेस गुन्झेस निच्छएस ववहारेस य सुणमाणे भणति 品品品 । 'तालेमाणे' ति कंपचपेटादिभिस्ताडयन् । 'निद्धणे करेमाणे' ति निर्धनान् कुर्वाणो विहरति । 'तए ष असुणमाणे भेणति सुणेमि एवं पस्तमाणे भासमाणे गेणहमाणे जाणमाणे । 'कजेस य' ति कायेषु प्रयोजनेषु निष्पनेषु, ' से एकाई व पुरिसाण मेपयन् ।

ټ,

ाष्ट्रक्रट बधुषि मातक्क प्राहु-954 40 1 १० अकारए ११॥१॥ अच्छिवेयणा १२ कण्णवेयणा १३ कंडू १४ दओद्रे १५ कोहे १६। तते णं से एक्काई रहकूडे सोलसिंह रोगातंकेहिं अभिभूते समाणे कोडुंवियपुरिसे सहावेति २ एव वयासी;—'गच्छहें णं तुब्से देवाणुप्पिया! विजयवड्डमाणे खेडे सिंघाडग-तिय-चउक्क-चचर-महापहपहेसु महया २ सहेणं तत्र मन्नः पयीलोचनानि, गुह्यानि रहस्यानि, निश्चया वस्तुनिर्णयाः, न्यवहारा विवादास्तेषु विषये। 'एयकम्मे' ति एतद्न्यापारः, ययति । शब्दायियत्वेवमवद्त्,-'गच्छत यूयं देवानुप्रियाः ! विजयवर्धमाने विदे श्रङ्गाटक-त्रिक-चतुष्क-चत्वर-महापथपथेषु महताशब्देन १२ कणेंवेदना १३ कण्डू: १४ दकोदर: १५ कुष्ट: १६ | तत: स एकादी राष्ट्रकूट: षोडशभी रोगातङ्केरभिभूत: सम् कौद्धम्बिकपुरुषाम् शब्दा-सुबहु पापं कर्मे कछिकछुपं समर्जयम् विहरति। ततस्तास्यैकादे राष्ट्रकूटस्यान्यदा कदाचिच्छरीरे युगपदेव षोड्य रोगातङ्काः प्रादुभूताः तद्यथा,-आसः १ कासः २ ज्वरः ३ दाहः ४ कुक्षित्र्ह्लम् ५ भगन्दरः ६ अशेंः ७ अजीर्णम् ८ दृष्टि–मूर्धेत्र्हे ९–१० अरोचकः ११ अक्षिवेदना एतदेव वा काम्यं कमनीयं यस्य स तथा। 'एयप्पहाणे' नि एतत्प्रधान एतनिष्ठ इत्यर्थः 'एयविजे' नि, ' एषेव विद्या विज्ञानं यस्य स तथा। 'एयसमायारे' नि एतज्ञीतकल्प इत्यर्थः। 'पावं कम्मं' ति अशुभं ज्ञानावरणादि । 'कलिकछुसं'ति कलहहेतुकछुषं मलीमसमित्यर्थः एयप्यहाणे एयविके एयसमायारे सुबहुं पावं कम्मं कलिकछुमं समाजिणमाणे विहरति। तते एगाइयस्स रट्टकूडस्स अण्णया कयाइ सॅरीरगांसि जमगसमगमेव सोलस रोयांतका पाउब्भूया तं जहा; –सासे १ कासे २ जरे ३ दाहे ८ कुच्छिसूले ५ भगंदरे ६ अरिसे ७ अजीरते ८ दिद्वी ९ र निस्ताम विस्ताप्त विस्तास १ थ्रित-निपाके

उद्घोषयन्तः २ एवं वदत,–'एवं खळु देवानुप्रियाः ! एकादिश्रीरे पोडश रोगातद्धाः प्रादुभूताः, तद्यथा,–श्वासः १ कासः २ ज्वरः चिकित्सकश्चिकित्सकपुत्रो वैका-! वेष्णो वा वेष्णपुत्त उग्घोसेमाणा २ एवं [इह] वयह;—'एवं ख़ि देवाणुषिया ! एक्नाई० सरीरगंसि सोलस रोगातंका पाउ स्तेपां पोड्यानां रोगातङ्कानामेकमपि रोगातङ्कमुप्यमिष्युम्, तस्यैकादी राष्ट्रकूटो विपुलमर्थसंप्रदानं करोति, द्विरिष त्रिरप्युद्घोषयत, जमगसमगं'ति युगपत्। 'रोगायंक'त्ति रोगा व्याधयस्त एवातङ्काः कष्टजीवितकारिणः। 'सासे' इत्यादिश्लोकः।'जोणीष्रले'ति अपपाठः, त्ति जलोदरम् । शुङ्गाटकाद्यः स्थानविशेषाः। 'वेजो व' ति वैद्यशास्त्रे चिकित्सायां च कुशलः।'वेजपुत्तो व' ति तत्पुत्रः। 'जाणुजे कुच्छिस्रहे' इत्यस्यान्यत्र दर्शनात्।'भगंद्हे'ति भगन्द्रः। 'अकार्ए'ति अरोचकः। 'अच्छीवेयणा' इत्यादि श्रीकातिरिक्तम्। 'दओदरे त्ति ज्ञायकः केनलगालक्रगलः। 'तेशिन्छिओ न'ति चिकित्सामात्रकृगलः। 'अत्थसंपयाणं दलपड्' ति अथेदानं करोतीत्ययेः पञ्चितियणांति दलयात. मोलसण्हं स्य ञ्मूता, जहा, -सासे १ कासे २ जरे ३ जाव कोहे १६; तं जो णं इच्छाति देवाणुष्पिया! तस्स णं एकाई रट्टकूडे विपुले अत्थसंपयाणं । तते णं ते कोडं वियपुरिसा ३ यायन् सुष्टः १६, तद् य इच्छति देवानुप्रियाः ! वैद्यो वा वैद्यपुत्रो वा जायको वा ज्ञायकपूत्रो वा उद्गोप्यैतामाद्यप्ति प्रत्यपैयत' । ततस्ते कौद्रम्बिकपुरुषा यावत् प्रत्यपैयन्ति पचाित्पणहरं एगमिन रोयायंकं उबसामित्तते, तज्ञीप उग्घोसेह २ ता एयमाणातियं जाणयपुत्ता **このこうこくしょくいいしょくいくしょくいしょくしゃくしゃくいっしょくいく** वा जाणओं वा || इन्द्रामा किया || इन्द्रामा किया || इन्द्रामा ||

१ समा० पुत्रीय-प्रथमाऽ ध्ययने साब्द्र-ह्मटस्य वैद्य-क्रतानि-अभा भिक्रिया को भिक्र खेट इमामेतदूपामुद्घोषणां श्रुत्वा निशम्य बहवो वैद्यात्रच ६ शत्नकोशहस्ताताः स्वेभ्यो स्वेभ्यः गृहेभ्यः प्रति-निष्कामन्ति, प्रतिनिष्कम्य विजयवधमानस्य खेटस्य मध्यमध्येन यत्रैवैकादिराष्ट्रकूटस्य गृहं तत्रैवोपागच्छन्ति; उपागत्यैकादिशरीरं परा-गहिय अवहाह-सिरोवेधेश्र तक्षणेश्र प्रतक्षणेश्र शिरोबस्तिभिश्र तर्पणेश्र प्रपाकेश तेणेव उवागच्छंति २ ता एगाइसरीरयं परामुसंति २ ता तेसि रोगाणं निदाणं पुच्छंति २ ता एक्काती-'सत्थकोसहत्थगय' नि शक्तकोशो नखरदानादिभाजनं हस्ते गतो व्यवस्थितो येषां ते तथा। 'अवहाहणाहि य' नि दम्भेनैः। 'अवण्हाणेहि य' नि तथाविघद्रव्यसंस्कृतजलेन स्नानैः। 'अणुवासणाहि य' नि अपानेन जठरे तैलप्रवेशनैः। 'वित्थिकम्मेहि य'नि मुशन्ति, परामुक्य तेषां रोगाणां निदानं पुच्छन्ति पुष्ट्वैकादिराष्ट्कूटस्य बहुभिरभ्यक्षेश्रोद्वतैनाभिश्र सेहपानैश्र विमेचनाभिश्र सेच-ा नि निरुद्दः अनुवासः एव, केवलं द्रव्यक्रतो ग सिरावेधेहि य तच्छणेहि य पच्छणेहि य झेण जेणेव एगाइरट्रकूडरस तते णं से विजयबद्धमाणे खेडे इमं एयारूबं उग्घोसणं सोचा णिसम्म बहवे वेजा य ६ सत्थकोसहत्थगया विशेषः। 'सिरावेहेहि य' नि नाडीवेघैः। 'तच्छणेहि य'नि श्चरादिना त्वचस्तनूकरणैः। 'पच्छणेहि य' नि ह्रस्वैस्त्वचो ि 13 रटुकूडस्स बहूहि अन्मंगेहि य उब्रहणाहि य सिणेहपाणेहि य वसणेहि य विरेयणाहि य सेयण सप्हें सप्हें गेहे हिंतो पडिनिक्षमंति २ ता विजयवद्माणस्त खेडस्त मडझंमड चर्मवेष्टनप्रयोगेण शिरःप्रभृतीनां स्नेहपूर्णैः, गुदे वा वत्यादिक्षेपणैः। ' निरुदेहि य' णाहि च अवणहाणेहि च अणुवासणाहि च विधिकम्मेहि च नामिश्रावदाहनामिश्रावस्नानैश्रानुवासनामिश्र वस्तिकमेभिश्र निरुहैश्र ततो विजयवधमाने १ अत् विपाके

'सिरवत्थीहि य' सि शिरोवस्तिमिः शिरसि बद्धस्य चर्मकीशस्य द्रव्यसंस्कृततैलाद्यापूरणलक्षणामिः। प्रामुक्तवस्तिकमणि सामा-न्यानि, अनुवास-निरुह-शिरोबस्तयस्तद्भेदाः। ' तप्पणेहि य' त्ति तर्पणैः स्नेहादिभिः श्ररीरस्य बृहणैः। 'पुडपागेहि य' त्ति य बीएहि य सिलियाहि य ग्रेलियाहि य ओसहेहि य मेसजोहि य इच्छंति, तेसि सोलसण्हं रोयातं-काणं एगमि रोयायंकं उवसामित्तप्, णो चेव णं संचाएंति उवसामित्ते। तते णंते बहवे बेज्जाय बेज्ज-सिरोबरथीहि य तप्पणोहि य पुडपागेहि य छन्डीहि य मूलेहि य कंदेहि य पत्तेहि य पुप्फेहि य फलेहि पुटपाकाः पाकविशेपनिष्पन्ना औपघविशेषाः । 'छहीहि य' ति छहयो गेहिणीप्रभृतयः । 'सिलियाहि य' ति शिलिकाः कित्त-रुमिभित्र मुसेश करोश्च पत्रेश्च पुरपेश्च क्लेश्च वीजेश्च शिक्षिकाभित्र्य गुडिकाभित्रौपधेश्च भैषद्यैश्चेत्रज्ञात्त तेषां पोडशानां रोगातङ्का-मुनाय ६ जाहे नो संचाएंति तेसिं सोलसण्हं रोयातंकाणं एगमिव रोयायंकं उबसामिनए, ताहे संता नामेकमपि रोगातद्वगुपश्मायितुम्, नो एव संशक्तुवन्त्युपशमयितुम्। ततस्ते वहवो वैद्या वैद्यपुत्राः ५ यदा नो संशक्तुवन्ति तेषां ततिन्तकप्रमृतयः । 'गुलियाहि य' ति द्रन्यवटिकाः। 'ओसहेहि य' ति औषधानि एकद्रन्यरूपाणि। 'मेसओहि य' ति भैषज्यानि अनेकद्रज्ययोगरूपाणि, पथ्यानि वेति । 'संत'ति आन्ता देहखेदेन । 'तंत' ति तान्ता मनःखेदेन । 'परितंत' नि उभयखेदेनेति गोउंशाना रोगानद्वानामेकमपि रोगानद्वमुपशमथितुम्, तदा श्रान्तास्तान्ताः परितान्ता यस्या एव दिशः प्राद्धभूतास्तामेच दिशं प्रतिगताः परितंता जामेन दिसं पाउब्भूता तामेन दिसं पिड्गिता

t]

11-26-4

स्या-प्रत्रीय ध्ययमे ध्ययमे स्रिट्स गुपपातः दुःखितः, तत एकाहिवैधिश्च प्रत्याख्यातः परिचारकपरित्यक्तो निर्विण्णीषधभैषज्यः षोड्शरोगातङ्गधाऽभिभूतः सन् राज्ये च राष्ट्रे च यावदन्तःपुरे 'रज़े य रहे य' इत्यत्र यावत्करणादिदं दृश्यम्,--" कोसे य कोद्ठागारे य बले य वाहणे य पुरे य " इति। ' मुच्छिए च मूच्छितः ४ राज्यं च २ आशासत् प्रार्थयमानः प्रेहमानोऽभिलषमाण आतेदुःखातैवशाते अधेतृतीयानि वर्षशतानि परमायुः पालिथित्वा कालमासे काळं क्रत्वाऽस्यां रत्नप्रमायां पृथिन्यामुत्क्रष्टसागरोपमस्थितिकेषु नैरियिकेषु नैरियिकतयोपपन्नः। स ततोऽनन्तरमुद्गुत्येहैव मृगाप्रामे विजयस्य क्षत्रियस्य सुगाया देव्याः कुक्षौ पुत्रतयोपपत्रः। ततस्तस्या मृगाया देव्याः श्रीरे वेदना प्रादुभूतोज्ज्वला यावज्ज्वलन्ती सरीरे वेयणा पाउन्भूया उजाला जाव जलता नंरइष्सु णेरइयनाए उनवणे। पालिथिता कालमासे मियाए देवीए निविचणोसहभेसज् ः ति आतों मनसा तते णं एक्काई० विज्ञेहियपडियाईकिवए परियारगपरिचते निटिवण्णोसहभेसजे ॥तंकेहिं अभिभूते समाणे रज्जे य रट्टे य जाव अंतेउरे य मुच्छिते रज्जं च र आसाएमाणे दुःखातों देहेन, बशार्तस्तु इन्द्रियवशेन पीडितः, ततः कर्मधारयः । 'उज्जला' इह यावत्करणादिदं दश्यम् ,---गिहए गिद्धे अज्ज्ञीववन्त्रे " ति एकाथाः । ' आसाएमाणे ' इत्याद्य एकाथाः । ' अद्रदुहट्टवसट्टे ' खितियस्स रयणप्यभाष् पुढवीष् उक्षोससागरोवमाट्टितीष्सु विजयस्स गीहेमाणे अहिलसमाणे अहुतृहहुवसहे अङ्बाइजाइं मियाए देवीए मियग्गामे पूननाए उनवण्णे। तते णं तीसे णं ततो अंणतरं उन्बंधिता इहेव रि % अतं-

अङ्ग्राधिते समुप्पणणे;—'एवं खट्ट अहं विजयस्त खितियस्त पुष्टिंव इट्टा ६ घेजा वेसासिया अणुमया आसि; "विउला कक्कसा पगाता चंडा दुहा तिन्या दुरहियासा" इति, एकाथि एव । 'अणिद्ठा अकंता अप्पिया अमणुत्रा अमणामा' एतेऽपि तथैव । 'पुन्यरतावरतकालसमयंसि'ति पूर्वरात्रो रात्रेः पूर्वभागः, अपररात्रो रात्रेः पश्चिमी भागस्तछक्षणो यः कालसमयः कालरूपः समयः स तथा तत्र । 'कुडुंत्रजागरियाए' ति कुटुम्चिन्तयैत्यथेः । 'अज्झिरिथए' ति आध्यात्मिक आत्म-गतप्रमृति च मृगापुत्रो दारको मृगाया देव्याः कुन्नौ गर्भतयोपपन्नः, तत्प्रभृति च मृगादेवी विजयस्य श्रत्रियस्यानिष्टाऽकान्ताऽ-कुटुम्बजागयेया विषयः । इहान्यान्यपि पदानि दृश्यानि, तद्यथा,—'चितिष्' ति स्मृतिरूपः, कप्पिष्' ति बुद्धघा न्यवस्थापितः, ' परिथष् ' ति आध्यात्मिकः ५ समुत्पत्रः,---'एवं सहबहं विजयस्य क्षत्रियस्य प्वेमिष्टा ५ ध्येया, विश्वाऽनुमताऽऽसम् ; जन्पभितिं च णं मियापुने दारए मियाए देवीए कुन्छिति गब्भत्ताए उववण्णे, तप्पभितिं च णं मियादेवी मेयाए देवीए अण्णया कयाइ पुब्बरत्तावरत्तकालसमृयंसि कुडुंबजागरियाए जागरमाणीए इमे एयारूबे गाथितः प्रार्थनारूपः, 'मणोगए' ति मनस्येव बतो बहिरप्रकाशितः, संकल्पः पयलिनः। 'इड्डा' इत्यादीनि पञ्जकाथिकानि प्राग्बत् वेजयस्स खितियस्स अणिट्टा अकंता अप्पिया अमणुण्णा अमणामा जाया यावि होत्या । तते णं जाता चाग्यभवत् । ततस्तस्या मृगाया देन्या अन्यदा कदाचित्पूषेरात्रापर्रात्रकालसमये 'वेज' ति घ्वेया । 'वेसासिय' ति विश्वसनीया। 'अणुमय' ति विग्रियदर्शनस्य पश्चाद्पि मताऽन्नुमतेति प्रयाऽमनोद्धाऽमनआपा अयमेतद्रप

गव्मं दुहंदुहेणं परिवहाती तस्स णं दारगस्स गव्मगयस्स चेत्र अटु णालीओ अव्मंतरप्पवहाओ, अट्र ना-

ठीओ बाहिरप्पबहाओ, अट्ट प्र्यप्पवहाओ, अट्ट सोणियप्पवहाओ, दुवे दुवे कपणंतरेसु, दुवे २ अ<del>डि</del>छत्रेसु,

तस्स णं दारगस्स गडभगयस्स चेव अग्गिष् नामं बाही पाउडभूते।जेणं से दारष् आहारोति सेणं खिष्प

दुवे २ नक्रंतरेसुदुवे २ धमणिअंतरेसु अभिक्खणं २ प्रयं च सोणियं च

अड नालीउ' ति अधौ नाडचः शिराः । 'अञ्मंतरप्पवहाउ' ति श्ररीरस्याभ्यन्तर एव रुधिरादि स्वनित यास्तास्तथोच्यन्ते

ज्याख्येयाः, नवरं धमन्यः कोष्ठकहुडान्तराणि । 'अग्गिए' ति अग्निको भरमकाभिधानो वायुविकारः

यामान्द्र

विद्धंसमागच्छति, पूयक्ताए य सोगियक्ताए य परिणमति । तापि य से पूर्यं च सोगियं च आहारोति

' वाहिरप्पवहाउ ' ति भ्ररीराद् बहिः पूयादि क्षरन्ति यास्तात्त्रथोक्ताः । एता एव पोड्म विभज्यन्ते-अट्टेत्यादि । कथामित्याह-'दुवे दुवे' ति द्रे पूयप्रवहे द्वे च ग्रोणितप्रवहे । ते च क्वेत्याह ' कण्णंतरेसु ' श्रोत्ररन्प्रयोः, एवमेताश्रतसः, एवमन्या अपि

न्तरगोरमीक्ष्णं २ पूर्वं च शोणितं परिम्नवन्त्यः २ तिष्ठन्ति । तस्य दारकस्य गर्भगतस्यैवानिनक्षे नाम व्यायिः प्रादुर्भूतः । यत् स दारक ४, तदा आन्ता तान्ता परितान्ताऽमामाऽरवयंवशा तं गर्भ दुःखदुःखेन परिवहति । तस्य टारकस्य गर्भगतस्यैनाष्ट नाड्योऽभ्यन्तर्प्रवहाः, अष्ट नाडगो बहिष्पबहाः, अष्ट पूयप्रबहाः, अष्ट शोणितप्रबहाः, हे हे कर्णान्तरयोः, हे २ अक्यन्तरयोः, हे २ नासान्तरयोः, हे धमन्य-

आहरति तरिक्षममेत्र विध्वंसमागच्छति, पूयतया शोणिततया च परिणमति । तर्गि च स पूरं च शोणितं चाहरति

मृगा० धुत्रीया ध्ययने स्गा-देल्या विहित मम्बधा-जातिअंधे करतलपारेगृहीतं यावदेवमवदत्;-'एवं खलु स्वामिन् । मृगादेवी नवसु यावदाकृतिमात्रं, ततः सा मृगादेवी तं हुण्डमन्धं पश्यति ग्रिचराशाबुज्झ'। ततः सा अम्बाधात्री मृगाया देव्याः 'तथा' इत्येतमथं प्रतिस्थणोति । प्रतिश्रुत्य यत्रेव विजयः क्षत्रियस्तैत्रेवोपागच्छति विजाए खांतीए तेणेव उवागच्छड मृगादेन्यन्यदा कदाचिद् नवसु मासेषु बहुपरिपूर्णेषु दारकं प्रजाता जात्यन्धं यावदाछतिमात्रम् । ततः सा मृगादेवी दारकं हुण्डमन्धकरूपं पर्यति, दृष्ट्वा भीता ४ अम्बाधात्री राष्ट्यति, राष्ट्यियेलेषमवादीत्,-'गच्छ त्वं देवा० एतं मत्थए कट्डु" इत्यादि दश्यम्। 'नवण्हुं' इत्यत्र ''मासाणं बहुपडिपुण्णाणं'' इत्यादि दश्यम् , तथा ' एवं खट्ट सामी णवण्हं मासाण Œ ततः 質で多三百 354 4 555 4 1 555 श्र-विषके १ श्रुत-स्कन्धः

तते णं सा मियादेवी विजयस्स खितियस्स तहाति एयमट्टं विणएणं पिडसुणेति २ ता तं दारगं रह० भूमि-गच्छ ३ णं तुमं देवा० एयं दारगं एगंते उक्कुरुडियाए उज्झाहि"; तं संदिसह णं सामी ! तं दारगं अहं हन्द्वा भीता ४ मां शब्द्यति शब्द्यियमवदत्, 'गच्छ, ३त्वं देवा० एतं दारकमेकान्तेऽशुचिराशाबुज्ज' तत् संदिशत स्वामिन् ! तं दारक-महमेकान्त उन्झामि उताहो मा !' ततः स विजयस्तस्या अम्बा० अन्तिकात् श्रुत्वा तथैव संभ्रान्त उत्थायोत्तिष्ठति। उत्थाय यंत्रैव मृगादेवी ततः मा मृगादेवी विजयस्य स्रवियस्य 'तथा' इत्येतमर्थं विनयेन प्रतिश्रणोति, प्रतिश्रत्य तं श्रारकं राहरियके भूमीगृहे राहसिकेन भक्तपानेन एगंते उच्झामि उदाहु मा ?'तते णं से विजय तीसे अम्म० अंतिते सोचा तहेव संभंते उद्घाते उद्देति, उद्देना ा मियादेवी तेणेव उवागच्छाते २ मियं देविं एवं वयासी; 'देवाणु० तुज्झं पढमगटभे, तंजड़ णं तुमं एगंते उक्कुरुडियाए उज्झिस, तो णं तुज्झ पया नो थिरा भविस्संति; तेणं तुमं एयं दारगं रहस्सि तथेयोपागच्छति, उपागत्य मृगां देवीमेवमवद्त्,–'देवानु० तव प्रथमगर्भः, तद् यदि त्वमेतमेकान्तेऽश्रुचिराशाबुज्झसि, ततस्तव प्रजा नो स्थिरा ासि भूमीघरांसि रहस्सितेणं भत्तपाणेणं पडिजागरमाणी २ विहराहि, तो णं तुष्झ पयाथिरा भविस्तंति' भविष्यन्ति, तेन त्यमेत दारकं राहरियके भूमिगुहे राहसिकेन भक्तपानेन प्रतिजागरयन्ती २ विहर, ततस्तव प्रजाः रिथरा भविष्यन्ति, गोराणाणं'ति पुरा पूर्वकाले 'कतानाम्' इति गम्यम् , अत एव पुराणानां चिरन्तनानाम् , इह च यावत्करणात् ''दुचित्राणं दुप्पडिक्षंताणं' संमंते'मि उत्सुकः। 'उद्घाए उद्देइ'मि ऊर्ध्वस्थानेनोत्तिष्ठति। 'पय'ति प्रजा अपत्यानि। 'रहस्सियंसि' राहस्यिके विजन इत्यर्थः।

**≣**ছ%≅ प्रथममृगाः
पुत्रीया
मृगाः
सुगाः-\* अहांमेमए ' इत्यत्र यावत्करणादिदं हर्यम्-"महुनगरांनेग्गयजसे सरे मियापुत्ते णं भंते! दारए इओ कालमासे कालं किचा कहिं गमिहिति ! कहिं उववाजाहिति !" जाव साहिसिते, सुबहु पावं कम्मं समजिणाति। से २ कालमासे कालं किचा इमीसे रयणप्पभाए भारहे वासे वेयड्डिगिरिपायमूळे सीहकुळांसि सीहत्ताए पचायाहिति। से णं तत्थ सीहे भविस्सिति अहिमिए ! मियापुते दारए छव्वीसं वासातिं परमाउयं पालइता कालमासे कालं किचा इहेव जंबुदीवे २ सागरोवमाझ्डएस नेरइएस नेरइयचाए' द्रष्टन्यम् घर० भत्त० पहिजागरमाणी विहरति । एवं खळु गोतमा! मियापुत्ते दारए पुरा पोराणाणं जाव पचणु-भदन्त भ्गापुत्रो दारक इतः कालमासे कांछे क्रत्वा क्रुत्र गिभेष्यति १ कुत्रोपपत्स्यते १ ' 'गौतम ! मृगापुत्रो दारकः षड्विंशति वपीणि परमायुः कांछे कुत्वेहैंच जम्बूद्वीपे २ भारते वर्षे वैताह्यगिरिपाद्मूले सिंहकुले सिंहतया प्रत्यायास्यति । स तत्र सिंहो । से णं ततो अणंतरं उव्बाहिता प्रतिजागरयन्ती विहरति। एवं खळु गौतम । मृगापुत्रो दारकः पुरा पुराणानां यावत् प्रत्यनुभवन् विहरति द्हप्पहारी" इति, व्यक्तं च । 'कालमासे'नि मरणावसरे । 'सागरो० जाव'नि 'ः पुढवीए उक्नोससागरोवमट्टिइंष्सु जाव उवविजिहिति। इत्यादि " पावगं फलवित्तिविसेसं" इत्यन्तं द्रष्टव्यम् । X | F | >55 X | स्कर्य:

जाइकुलकोडीजोणिष्पमुहसयसहस्साइं ' चि जातौ पञ्चन्द्रियजातौ कुलकोटीनां योनिप्रमुखानि योनिद्वारकाणि यानि शतसहस्राणि अणंतरं उब्रिह्मा से जाइं इमाइं जलयरपंचिंदियातिरिक्खजोणियाणं मच्छकच्छभगाहमगरसुंसुमाराद्णिं अद्वतेरसजातिकुळकोडीजोणिपमुहसतसहस्ताइं, तत्थ णं ष्गमेगांसि जोणीविहाणांसि अणेगसयसहस्त-महात्तो उदाइता २ तत्थेव भुज्जो २ पचायाइस्ताति । से णं ततो उब्रिटिता एवं चउपपस्स, उरपरिसप्ते-अभाभिको यावत् साहसिकः, सुबहु पापं कमे यावत् समजीयिष्यति । स तत्र कालमासे कालं कृत्वाऽस्यां रत्नप्रमायां पृथिच्यामुत्क्रप्टसाग-ततो सीहेसु । तयाणंतरं चउत्थीए । उरगो ।पंचमीए । इत्थी । छट्टीए।मणुओ । अहे सन्नमाए । तत्तो रोपमस्थितिमेगु यायदुपपस्यते । स ततोऽनन्तरमुद्युत्य सरीस्रुपेपूपपत्स्यते । तत्र कालं क्रत्वा द्वितीयायां प्रथिन्यामृत्क्रष्टतया त्रिसागरोपम-पञ्चनाम् । जो । पछाम् । मनुजः । अयः सप्तम्याम् । ततोऽनन्तरमुद्ध्यः स यानीमानि जलचरपञ्चन्द्रियतियेग्योनिकानां मत्त्यकच्छप्रा-रेगतिमपपत्स्यते । स ततोऽनन्तरसुद्गुस्य पक्षिपूपपत्स्यते । तत्रापि काळं क्रत्या हतीयायां घृथिन्यां सप्तसागरो० । ततः सिहेषु । तद्मन्तरं से णं ततो अणंतरं उञ्बाष्टिता पक्खीसु उबबाजिहिति। तत्थिवि कालं किचा तचाष् पुढवीष् सत्तत्तागरो० मृतिकामिति उववाजिहिति। तत्य गं कालं किचा दोचाए पुढवीए उक्कांसियाए तिन्निसागरोवमाट्टेई उववजिहिति तानि तथा। ' जोणीविहाणंसि 'नि योनि मेदे । ' खळीणमष्टियंति खळीनामाकाशस्थां छित्रतटोपरिवर्तिनीं ' उम्पुक्तः जाव' ति 'उम्मुक्तवालमावे विष्णाय परिणयमिने जोञ्चणमणुपने ' इति दृश्यम् ,

तत्र विज्ञ एव विज्ञकः, स चासौपरि णतमात्रश्र बुद्ध्यादिपरिमाणपत्र एव च विज्ञकपरिणतमात्रः।' अणतरं चयं चह्ता'ति हमकरसुंसुमारादीनामधेत्रयोद्शजातिकुलकोटियोनिप्रमुखशतसहस्राणि, तत्रैकैकस्मिन् योनिविधानेऽनेकशतसहस्रकृत्वो मृत्वा २ तत्रैव भूयो भूयः प्रत्यायास्यति । स तत उद्घृत्यैवं चतुष्पदेषु, उरःपरिसपेषु, भुजपरिसपेसु, सन्नरेषु, चतुरिन्द्रियेषु, न्नीन्द्रियेषु, द्वीन्द्रियेषु, वनस्पति-कहुकश्केषु, कहुकहुग्वेषु, वायुषु, तेजस्मु, थप्सु, प्रथिवीष्वनेकशतसहस्रकुत्वः । स ततोऽनन्तरमुद्शत्य सुप्रतिष्ठपुरे नगरे गोतया प्रत्या-सुप्रतिष्ठपुरे नगरे श्रेष्टिकुले पुत्रतया प्रत्यायास्यति स तत्रोन्मुक्त० यावद् योवनमनुप्राप्तस्तथारूपाणां स्थविराणामन्तिके धर्मे श्रुत्वा निशम्य अमन्तरं श्रारीरं त्यक्त्वा च्यवनं वा क्रत्वा। 'जहा दृढपङ्णो' ति औपपातिके यथा हृढप्रतिज्ञाभियानी भन्यो वर्णितस्तथाऽयमपि यास्यति । स तत्रोन्मुक्तवालभावोऽन्यदा कदाचित् प्रथमप्राद्यपि गङ्गाया महानद्याः खलीनमृत्तिकां स्वनंसाट्या प्रेरितः सन् कालगतस्तत्रैव नाए पञ्चायाइस्साति। से णं तत्थ उम्मुक्क० जाव जोठवणमणुष्पने तहारूवाणं थेराणं अंतिष् बलीणमहियं खणमाणे तडीए पेछिते समाणे कालगते तत्थेव सुपइद्रपुरे [ नगरे ] सिट्टिकुलंसि पुन-गोणताष् पद्मायाहिति। से णं तत्थ उम्मुक्कबालभावे अण्णया कयाती पहमपाउसंसि गंगाष् महाणदीष् प्त, भुयपरिप्सपसु, खहयरेसु, चडिरिंदिष्सु, तेइंदिष्सु, बेइंदिष्सु, बणाप्फतिकडुयरुक्लेसु कडुयदुधिष्सु गाउ० तेउ० आउ० पुढिवि० अणेगसतसहस्तव्युत्तो०। से णंततो अणंतरं उब्रिट्टिता सुपतिद्रुपुरे [नगरे] मुण्डो भूत्वाऽगारादनगारतां प्रत्रजिष्यति । स तत्रानगारो भविष्यतीयौसमितो यावद् त्रह्मचारी । स तत्र वहूनि वर्षाणि विषाके

सोचा निसम्म मुंडे भवित्ता अगाराओं अणगारियं पबइस्ताति। से णं तत्थ अणगारे भविस्सति दुहविवागाणं पढमस्स अज्झयणस्स **स्मरयत्राह**–'कलाउ'नि किचा सोहम्मे कप्पे देवनाए उववाजिहिति। से णं ततो अणंतरं चयं चइमा अस्यो ! अस्योत कलास्तेन ग्रहोष्यन्ते दृढ्पांतेहोनेव, यावत्करणाच प्रवज्याग्रहणादि तस्येवास्य वार्च्य यावत् 'सेत्स्यति' इत्यादि पद्पश्चकमिति त्यकत्व गिनेदेहे वासे जाइं कुलाइं भवंति अड्डाइं० जहा द्हपतिणणे, सा चेव वत्तवया कलाउ जाव सिष्झिहिति। हिस्यति-सकलकमेक्रतसंतापरहितो भविष्यति, किम्रक्तं भवति ? सर्दुःखानामन्तं करिष्यतीति ॥ ॥ इति प्रथमाष्ययनार्वेचर दुःखिषिषाकानां प्रथमस्याध्ययनस्यायमर्थः प्रज्ञप्तः ' इति त्रवीमि ॥ ॥ प्रथमाध्ययनं समाप्तम् श्रहीरं सेत्स्यति–कृतकृत्यो भविष्यति, मोत्स्यते–केवलज्ञानेन सकलज्ञेयं ज्ञास्यति, मोक्ष्यति–सकलकर्मविधुक्तो भविष्यति, देवतयोपपत्त्यते । स ततोऽनन्तरं ক ব্ৰ यावत् सेत्स्यति'। ' एवं पाडीणेता तामेव वक्तर्यतेति सू० ७ ) ॥ १ ॥ ॥ पदम अज्झयण समन नासाइ सामण्णपारंयाग समणेण भगवता महावीरेण जाव संपत्तेण किक कर्ष रत्यतिज्ञसंत्रान्धनी अस्यापि सोधमे भवन्त्याद्यानि यथा हदप्रतिहाः, सेव बक्तन्यता, क्रत्वा वहुड क्रीक रियासमिते जाव बंभयारी। से णं तत्थ पालयित्वाऽऽलोनितमतिकान्तः समाधिप्राप्तः कालमासे संव संप्राप्तन हिपत्ते कालमासे कांछे। ेएव खिल्ल जम्बू! स अयमट्टे पण्णते' ति वेमि कस्मादेवमित्याह- सा महाविदेहे वर्षे यानि कुलानि महाबीरेण यावत् भगवता वान्त्रयः

作うも 音のの での での での でっている こうりょう

·le |

震震 नगरे होत्था रिद्धिः। तस्त णं वाणियग्गामस्त उत्तरपुरित्थमे दिसीभाष् दूतिपळासे नामं उज्जाणे होत्था। यदि भद्न्त ! अमणेन यावत्संप्राप्तेन दुःखविपाकानां प्रथमस्याध्ययनस्यायमथैः प्रज्ञप्तः, द्वितीयस्य भद्न्त ! अध्ययनस्य दुःखविपाकानां श्रमणेन यावत् संप्राप्तेन कोऽर्थः प्रज्ञप्तः १ ततः स सुधमीऽनगारो जम्बुमनगारमेवमवदत्-'एवं खळु जम्बो! तिसम् काले तिसम् समये यक्षस्य यक्षायतनमभूत्। तत्र वाणिजत्रामे मित्रं नाम राजाऽभवत्। वर्णकः तत्र मित्रस्य राज्ञः श्रीनौम देव्यभवत्। तत्र वाणिजप्रामे होत्था । बण्णओ । तत्थ णं मित्तस्त रण्णो सिरी नामं देवी होत्था । बण्णओ । तत्थ णं वाणियग्गामे वाणिजप्रामं नाम नगरमभवद्, ऋद्धि० । तस्य वाणिजप्रामस्योत्तरपौरस्त्ये दिग्भागे दूतिपछाशं नामोद्यानमभूत्। तत्र दूतिपछाशे सुधर्मणो अणगारे जंबू अणगारं एवं वयासी,-'एवं खद्ध जम्बू! तेणं कालेणं तेणं समष्णं वाणियग्गामे णाम राय कामञ्झया णामं गाणिया होत्था अहीण० जाव सुरूवा, बावत्तरीकलापंडिया, चउसद्विगाणियागुणोववेया तत्थ णं दूइपलासे सुहम्मस्स जक्खस्स जक्खायतणे होत्था। तत्थ णं वाणियग्गामे मित्ते नामं जित णं भंते! समणेण जाव संपत्तेणं दुहविवागाणं पढमस्स अज्झयणस्स अयमट्रे पणणते, त दुहविवागाणं समणेणं जाव०

> १ श्रुत-स्कन्यः

रुतपर्यन्ता गणितप्रधानाः कलाः प्रायः पुरुषाणामेवाभ्यासयोग्याः, स्रीणां तु विज्ञेया एव प्राय इति । चउसट्उिगणियागुणीववेया' गीतनूत्तादीनि (मृत्यादीनि) विशेषतः पण्यस्रीजनोचितानि यानि चतुःपष्टिविज्ञानानि ते गणिकागुणाः, अथवा, बात्स्यायनोकता-न्यालिङ्गनादीन्यष्टो वस्तूनि, तानि च प्रत्येकमष्टभेदत्वाचतुःपष्टिभेवन्ति चतुःपष्ट्या गणिकागुणैरुपेता या सा तथा। एकोनत्रिंशब् अट्टारसदेसीभासाविसारया, सिंगारागारचारुवेसा, गीयरातिगंथव्वनद्दकुसला, संगतगत० सुंद्रत्थण० ऊसियंधया सहस्सळंभा, विदिणणछत्तचामरवालावियाणिया, कण्णीरहप्पयाया वावि होत्था । वहूणं माणपङ्गिषणमुजायसव्यंगमुंदरंगी" इत्यादि द्रष्टव्यम् , तत्र लक्षणानि स्वस्तिकादीनि, व्यञ्जनानि मपतिलकादीनि, गुणाः सौभाग्या-द्वितीये किञ्चिछिच्यते । 'अहीणे'नि अहीणपुण्णपंचिदियसरीरा इत्यथेः, यावत्करणात् ''लक्त्वणवंजणगुणोवदेया माणुम्माणप्प-द्यः, मानं जलद्रोणमानता, उन्मानमधेभारप्रमाणता, प्रमाणमष्टोत्तरशताङ्गलोच्छ्यतेति। 'वावत्तरीकलापंडिय'ति लेखाद्याः शक्कत-गीतर्तिता-प्कूणतीसाविसेसे रममाणी, ष्क्रवीसरतिग्रुणप्पहाणा, वत्तीसपुरिसोवयारकुसला, णवंगसुत्तपडिचोहिया कामध्य**ला नाम गणिका यभू**व । अहीन*०* यावत् सुरूपा, द्यासप्रतिकलापण्डिता, चतुःपष्टिगणिकागुणोपेता, एकोनत्रिंशद्विशेष्यां रममाणा न्यतेनाट्यकुश्छा, संगतगत०, सुन्द्रस्तन० उच्छितध्वजा, सहस्रलामा, वितीणेच्छत्रचामरबालञ्यजनिका, कर्णीरथप्रयाता चाप्यभवत विशेषाः, एकविंशती रतिगुणाः, द्रात्रिंशच पुरुषोपचाराः कामशास्त्रप्रसिद्धाः। 'णवंगसुत्तपडिनोहिय'त्ति द्रे श्रोत्रे, द्रे चक्षुषी, द्रे घाणे त्नविंगतिरतिगुणप्रधाना, द्वात्रिशत्पुरुपोषचारक्षशला, प्रतिवोधितसुत्वनवाद्वा, अष्टाद्शदेशीभाषाविशारदा, शृद्धाराचारुवेषा, गाणियासहस्साणं आहेवचं० जाव विहराति । ( सू० ८ मा जिल्लामा जिल्लामा न FIRST I

部。 30 ध्वजा रस्याचा प्रस्था से प्रस्था वे प्रस्थ DI SOCI 'मट्टितं" मर्तृत्वं पोषकत्वम् "सामितं" स्वस्वामिसम्बन्धमात्रम् , "महत्तरगतं" महत्तरगन्वं शेषवेश्याजनापेक्षया महत्त्तमताम् , "आ-गिईसरसेणावचं" आज्ञेश्वर् आज्ञाप्रधानी यः सेनापतिः सैन्यनायकस्तस्य भावः कर्म वा आज्ञेश्वरसेनापत्यम् , आज्ञेश्वरसेनापत्यमि-न्यक्तम् , नवरं जघनं पूर्वेः कटीमागः, लावण्यमाकारस्य स्पृहणीयता, विलासः स्नीणां चेष्टाविशेषः । 'ऊसियझय'न्ति, ऊर्घ्वीकृतजयप् ताका । सहस्रलामेति न्यक्तम् । 'विदित्रछत्तचामरवालवियणिय'त्ति, वितीणै राज्ञा प्रसादतो दनं छत्रं च चामररूपा बालन्यजनिका ततः पदत्रयस्य कर्मधास्यः । ' सुंद्रथण'ति एतेनेदं दश्यम्—" सुंद्रथणजहणवयणकरचरणनयणलावण्णविलासकलिया " इति, ग तथा। 'अद्ठारसदेसीमासाविसारय'ति रूढिगम्यम् । 'सिंगारागारचारुवेस'ति श्रङ्कारस्य रसविशेषस्यागारमिव चारुवेषो यस्यः सा (च) यस्यै सा तथा । 'कत्रीरहपयायावि होत्थ'ति, कणीरथः प्रवहणं तेन प्रयातं गमनं यस्याः सा तथा, ' वापि ' इति समुच्ये सा तथा, सललिता प्रसन्नतीपेता ये संलापास्तेषु निषुणा या सा तथा, युक्ताः संगता ये उपचारा व्यवहारास्तेषु कुशला या सा तथा थितानि स्वार्थप्रहणपटुतां प्रापितानि यस्या तथा। 'गीयर्डगंधवनट्टकुसल'त्ति गीतरतिरुचासौ गन्धवैनाट्यकुसला चेति समासः, गन्धवै मृत्युक्तगीतम् , नाट्यं तु मृत्तमेवेति। 'संग बाज्ञेश्वरसेनापत्यम् , '' कारेमाणा'' कारयन्ती परैः, ''पालेमाणा'' पालयन्ती स्वयमिति । 'अहीण'ति अहीणपुत्रपंचिदियसरीरेति होत्य'ति, अभवदिति। 'आहेवचं'ति आधिपत्यम् , अधिपतिकमे, इह यावत्करणादिदं हरयम् , परिवचं' पुरीवर्तित्वमग्रेसरत्वामत्यथः पग्य'ति, "संगयगयभीणयविहियविकाससक्रियसंकावनिडणजुत्तीवयारकुसका" इति हत्यम्-संगतान्युचितानि लक्तवणवंजाणगुणोववेष्'' इत्यादि । 'इंदभूहे' इत्यत्र यावत्करणात् '' एका जिह्ना, एका त्वक्, एकं च मन इत्येतानि नवाङ्गानि सुप्तानीव सुप्तानि यौवनेन प हत्येतद्नत दुश्यम् रविधान रिक्स विधित्र । सिक्स । 1301

समणस्त भगवओं महावीरस्त जोट्टे अंतेवासी इदंभूती० जाव लेसे छट्छट्टेणं जहा पण्णत्तीष् पढमाए० ' छड्छट्टेणं जहा पन्नतीष् ' ति यथा भगवत्यां तथेदं वाच्यम्, तचैवम्, " छड्छद्रेणं अणिक्तितेणं तवी-कम्मेणं अप्पाणं भावेमाणे विहरइ, तए णं से भगवं गीयमे छड्कत्वमणपारणगंति " 'पढमाष् ' इत्यत्र यावत्करणा-दिदं दृश्यम्,—" पृत्याए पोरिसीए सन्झायं करेति, बीयाए पोरिसीए झाणं झियाति, तह्याए पोरिसीए अतुरियम-चबलमसंमंते मुहुपोत्तियं पिडेलेहेति, भायणबत्याणि पिडिलेहेति, भायणाणि पमज्जिते, भायणाणि उग्गाहेति, जेणेव समणे भगवं महाबीरे तेणेव उवागच्छिति २ समणं ३ वंद्ति २ एवं वयासी,—' इच्छामि णं भंते ! तुन्मेहिं अन्भणुण्णाते छड्डक्तम-मारिया होत्था अहीण०। तस्स णं विजयमेत्तस्स पुत्ते सुभद्दाष् भारियाष् अत्तष् उन्झितष् नामं दारष् बहूनां गणिकामङ्माणामाधिपत्यं० यावद् विहरति । तत्र वाणिजप्रामे विजयमित्रो नाम सार्थवाहः परिवसत्याढ्यः । तस्य विजयमित्रस्य सुभद्रा नाम मायोऽभवद्—अहीन० । तस्य विजयमित्रस्य पुत्रः सुभद्राया भायोया आत्मज डिइतको नाम दारकोऽभवद्—अहीन० यावत् तत्थ णं वाणियन्गामे विजयमित्ते नामं सत्थवाहे परिवसाति अड्डे०। तस्स णं विजयमित्तस्स सुभद्दा नाम एया निग्गओ जहा क्रुणिओ निग्गओ। धम्मो कहिओ। परिसा राया य पडिगओ। तेणं कालेणं तेणं समएण परिपत् राजा च प्रतिगतः। तरिमम् काले तरिमम् समये श्रमणस्य भगवतो महावीरस्य ज्येष्ठोऽन्तेवासीन्द्रभूतियंवित्० लेक्यः पष्ठपष्ठेन यथा प्रमारी सुरूपः। तस्मिन् काले तस्मिन् समये श्रमणो भगवान् महाबीरः समवसृतः। परिपद् निर्गता। राजा निरोतो यथा कृणिको निर्गतः। थमेंः कथितः होस्या अहीण० जाव सुरूवे। तेणं कालेणं तेणं समष्णं समणे भगवं महावीरे समोसहे। परिसा निग्गता

प्रयमायां० यावद् यत्रैव वाणिजप्रामं तत्रैबोपा०। वाणिजप्रामे उचनीच० अटम् यत्रैव राजमार्गस्तत्रैवावगाढः। तत्र बहूम् हस्तिनः पर्यति चद्रवमणिस्त एव बद्धवर्मिकाः, तथा, गुडा महांस्तनुत्राणविशेषः सा संजाता येषां ते गुडितास्ततः कर्मधारयोऽतस्तान् । ' उप्पी-लियकच्छे ' ति उत्पीडिता गाहतरं बद्धा कक्षा उरोवन्धनं येषां ते तथा तान् । ' उहामियघंटे ' ति उहामिता अपनीतवन्थनाः सत्रद्धवद्धवर्भिकगुडिताम् उत्पीडितकक्षाम् उद्दामितघण्टाम् नानामणिरत्नविविधयैवेयकोपरकञ्चुकिताम् प्रतिकरिपताम् ध्वजपताकावरपद्धा-पीडाऽऽरूढहस्यारोहान् गृहीतायुघप्रहरणान् । अन्यांश्च तत्र वहूनर्वान् परयति सन्नद्धवद्धवार्मेकगुडितान् आविद्धगुडान् अवसारिततनुत्राणान् णपारणगंति वाणियग्गामे णगरे उचणीयमन्त्रिमाइं कुलाइं घरसमुदाणस्त मिक्खायरियाए अङ्तिए ' गृहेषु मिक्षार्थं मिक्षाचर्यमा पुरओरियं सोहेमाणे " इति । 'सन्नद्भवद्वविमयगुडिए' ति संनद्धाः सन्नहत्या कृतसन्नाहाः तथा, बद्धं वर्म त्वक्त्राणविशेषो येषां ते भिक्षासमाचारेण अटितुमिति वाक्यार्थः, " अहा सुहं देवाणुप्पिया ! मा पडिवंधं " स्लळनां मा कुर्वित्यर्थः, तए णं भगवं णाणामणिरयणविविहगेविजउत्तरकंचुइजे पडिकप्पिते झयपडागवरपंचामेलआरूढहरथारोहे गहिया-उहपहरणे । अपणे य तत्थ बहवे आसे पासित सपणद्भबद्भवाभिमयगुडिते आविद्यगुडे ओसारियपक्षारे गीयमे समगोणं ३ अन्मणुण्णाते समाणे समणस्स ३ अंतियातो पिडिनिक्खमति अतुरियमचवलमसंभंते छुगंतरपलोयणाते । जाव जेणेव वाणियगामे तेणेव उवा० । वाणियग्गामे उच्चणीय० अडमाणे जेणेव रायमग्गे ओगाहे । तस्य णं वहचे हस्थी पासित सणणद्भवद्भविभियगुहिते उप्पीलियकच्छे अस्त विश्वास विश्व

विमलवरबद्धचिषष्टे गहियाउहपहरणे। तेसिं च णं युरिसाणं मञ्झगयं पुरिसं पासति अवओडग-उप्पीलियसरासणपद्दीष् पिणद्धगेत्रेजे प्रलिम्बिता इत्यर्थः घण्टा येषां ते तथा तान् । 'णाणामणिरयणविविह्गेविज्ञउत्तरकंजुईजे' ति नाना मणिरत्नानि, विविधानि ग्रैवेयकाणि गीवामरणानि, उत्तरकञ्चकाश्च तद्यताणविशेषाः सन्ति येषां ते तथा । अत एव ' पडिकप्षि ए ' ति क्रतसन्नाहादि-सामग्रीकान् । ' सयपडागवरपंचामेलआरूढहत्थारोहे ' घ्वजा गरुडादिघ्वजाः पताका गरुडादिवर्जितास्ताभिर्वरा ये ते, तथा, पञ्च आमेलकाः शेखरका येषां ते, तथा, आरूडा हस्त्यारोहा महामात्रा येषु ते तथा, ततः पदत्रयस्य कर्मधारयः अतस्तान् । ' महि-हस्तिनां तद्यताणे (णं ) रूढा, तथापि देशविशेषापेक्षयाऽश्वानामपि संभवतीति, अवसारिता अवलिनिताः पर्क्वरास्तनुत्राण-विशेषायेषां ते तथा, तान् । ' उत्तरकचुड्यंओचुलमुहचंडाघरचामरथासगपरिमंडियकडीए ' ति उत्तरकञ्चकस्तनुत्राणविशेष एव याउहप्पहरणे ' गृहीतान्यायुघानि प्रहरणार्थं येषु, अथवा, आयुघानि अक्षेप्याणि, प्रहरणानि तु क्षेप्याणीति । ' सन्नद्धवद्भवस्मिय-गुडियए ' नि, एतदेव व्याख्याति-' आविद्रगुडे ओसारियपक्खरे ' नि, आविद्धा परिहिता गुडा येषां ते तथा, गुडा च यद्यपि गान् पत्र्यति सञ्चद्रवसितकवचान् उत्पीडितशरासनपट्टिकान् पिनद्धपैवेयकान् विमछवरवद्धचिह्नपट्टान् गृहीतायुघप्रहरणान् । तेषां उत्तरकंचुइय—ओचूल मुहचंडाधर—चामरथासकपारीमंडियकडीष् आरूढअस्सारोहे गहियाउहपहरणे। वह न उत्तरकञ्चीनेताऽवनुत्रकमुखनपडधर—चाम्रस्थासकपरिमण्डितकटीकान् आरूढाच्चारोहान् गृहीतायुथप्रहरणान् । अन्यांश्च तत्र पुरिसे पासति सणणाड्यवह्यनिमयकवए अग्णे य तत्य वहवे

हेतीये-व्यित-नावस्था रेपामस्ति ते तथा, तथा अवचूलकैर्मुखं चण्डाधरं रौद्राधरोष्ठं येषां ते तथा, तथा चामरेः स्थासकैश्र दर्षणैः परिमण्डिता कटी येषां ते अथवा, वध्यस्य यत्करकाटकायुग तथा तम् । ' कंठे गुणरत्तमछदामं ' कण्ठे-गले गुण इव कण्ठस्त्रमिव स्कतं । अधोनयनेन बन्धनं यस्य स तथा पुरुपाणां मध्यगतं पुरुपं पर्यति अवकोटकवन्यनसुत्कृत्तकर्णनासं स्नेहस्नेहितगात्रं वध्यकरकटीयुगनिवसितं कण्ठे गुणर्कमाल्यं ः ं च्छं ) कंठे ग्रणरत्तमछदामं ते तथा तान् । 'पिणद्रगेवेज्जे' नि पिनद्रं परिहितं यैवेयकं यैस्ते तथा तान् । 'विमलवरचद्वार्चेषपट्टे' नि विमलो व त्ति उत्पीडिता कृत प्रत्यश्वारोपणाच्छरासनपद्टिका धनुयोष्टे प्स्वमास्त्वण्डाान् खाद्यमानम् । स तथा तम्। तिलं चेव छिजमाणं निवसित इच निवसितथोति पीयं'ति वच्या बाह्या वा प्राणा उच्छ्वासाद्यः प्रतीताः प्रिया पुष्पमाला यस्य स तथा तम् । ' चुणागुं डियगायं । 'उप्पीलियसरासणपद्यीए' । तिलं । निन्यचीवरिकाद्वयं तद् निवसितो यः स करयोहेस्तयोः कत्यां कटीदेशे युगं युगं ग्रंडियगातं वुपणयं वञ्झपाणपीयं । तया, ततः कमधारयोऽतस्तान्। मछदाम म्बर्धाया म्बर्धाया म्बर 123

नरगा वा नेरइया वा, पचक्लं खळु अयं पुरिसे निरयपडिरूवियं वेयणं वेएइत्ति कट्ड " इत्येतत् प्रथमाध्ययनोक्तं वाक्यमाश्रि-बाऽपराष्यति, आत्मनस्तस्य स्वकानि कमोण्यपराध्यन्ति ।' ततस्तस्य भगवतो गौतमस्य तं पुरुपं हष्ट्वाऽयमाध्यात्मिकः ४,-'अहो अयं तगात्रं संतरतं वध्यप्रीतप्राण तिरुं तिलमित्र च्छियमानं काकणीमांसानि खाद्यमानं पापं कर्नरतिहैन्यमानमनेकरनारीसंपरिष्टत चत्वरे चत्वरे हम्ममाणं अणेगनरनारिसंपरिबुडं चचरे चचरे खंडपडहएणं उग्घोसिज्जमाणं । इमं च णं एयारूबं नग्उपटहेनोद्योप्यमाणम् । इदं चैतद्क्षममुद्घोपणं त्र्योति,-'नो खळु देवानुप्रियाः ! उध्झितके दारके कश्चिद् राजा या राजपुत्रो नाविषयः; "मणोगए"ति अप्रकाशित इत्यर्थः, "संकप्पी" विकल्पः " समुप्पज्जित्था " समुत्पत्रवान् । " अहो णं इमे पुरिसे पुरा टब्यम् ,—" करिषष् " करिषतो मेदवान्, करिषको वा उचितः, "चितिष्" स्मृतिरूपः, " परिथष् " प्रार्थितो भगवद्रनरप्रार्थ आत्मगतः, इहेद्मन्यद्। खक्स्बरसएहिं हम्ममाणं 'ति खर्खरा अघोत्त्रासनाय चर्ममया वस्तुविशेषाः स्फुटितवंशा वा तैहेन्यमानं ताडघमानम् निरयपडिरूवियं वेयणं वेदोते ' नि तते णं से भगवओं गोतमस्स तं रिराणाणं दुचित्राणं दुप्पडिकंताणं असुभाणं पावाणं कडाणं कम्माणं पावगं फलवित्तिविसेसं पचणुञ्भवमाणे विहरइ, अप्पणी से सयाइं ति आत्मन आत्मीयानि 'से ' तस्य स्वकानि स्वकृतानि । 'अन्झित्थिए ' । उिझ्यगस्स दारगस्स केई राया (सु०९) गितता इमे अन्झाध्यते ५,- अहो णं इमे पुरिसे जाव ्ड्मति; अप्पणो से सयाइं कम्माइं अव्रुड्मांते ' रम्बोसणं सुणेति,-' नो खहु देनाणुष्पिया

113311 मज्झें मज्झेणं० जाव पडिदंसीति; समणं भगवं महावीरं वंदति णमंसति २ एवं वयासी,—' एवं खल्ड अहं भंते! तुन्भेहिं अन्भणुण्णाते समाणे वाणियन्णामे तहेवं जाव० वेष्ति; से णं भंते! पुरिसे पृवभवे के आसि० ! जाव पच्णुभवमाणे विहरति ! '। भयवाजितम्, समुद्धं धनादियुक्तमिति । ' मैहयाहि'ति इह "महयाहिमवंतमलयमंदिरमहिद्सारे" इत्यादि दृश्यम्, तत्र महाहिमव-नाणियग्गामे णगरे उच्चनीयकुले॰ जाव अडमाणे अहापज्जनं समुयाणं गेणहति, रत्ता वाणियग्गामं नगरं 'एवं खलु गोतमा! तेणं कालेणं तेणं समाएणं इहेव जंबुद्दीवे २ भारहे वासे हारियणाउरे नामं नयरे होत्था रिद्धि०। तत्थ णं हत्थिणाउरे णगरे सुणंदे नामं राया होत्था महयाहि०। तत्थ णं हत्थि-त्याधिकृताक्षराणि गमनीयानीति। 'रिद्ध'ति "रिद्धत्थिमयसमिद्धे" इत्यादि दृश्यं, तत्र ऋढं भवनादिभिधेद्धिपगतम्, स्तिमितं गृहीत्वा, वाणिजयामस्य नगरस्य मध्य मध्येन० यावत् प्रतिद्श्यति, श्रमणं भगवन्तं महावीरं वन्द्ते नमस्यति, वन्दित्वानमस्यित्वेवमवा-पुरुपो यावद् निरयप्रतिरूपां वेद्नां वेद्यति' इति क्रत्वा वाणिजप्रामे नगर उचनीचकुछे० यावद्टम् यथापयीमं समुदानं (भैक्षं) गृह्याति; दीत्,-' एवं खल्वहं भदन्त ! युष्माभिरभ्यनुज्ञातः सन् वाणिजप्रामे तथैव यावद्० वेदयति; स भदन्त ! पुरुषः पूर्वभवे क आसीत् नगर्मभवद् ऋद्व० एवं खछ गोतम ! तिसम् काले तिसम् समये इहेव जम्बूद्वीपे २ (द्वीपे ) भारते वर्षे हिस्तिनापुरं नाम गावत् प्रत्यनुभवम् विहरति ! ' 41-fatish 8 337-8 337-88-31:

य णगरवसमा य पउरतणपाणिया निन्मया निरुवसम्मा (ब्रिम्मा) सुहं सुहेण परिवसंति । तत्थ णं हत्थि-णाउरे नगरे वहुमज्झदेसभाए एत्थ णं महं एगे गोमंडवे होत्था अणेगखंभसयसंनिविद्रे पासाइ ४० तत्र दुस्निनापुरे नगरे सुनन्दो नाम राजा वभूव महाहि० । तत्र हस्तिनापुरे नगरे बहुमध्यदेशमागेऽत्र महानेको गोमण्डपो बभूवानेक-णाउरे नगरे भीमे नामं कूडग्गाहे होत्था अधिमाष् जाव दुप्पिडयाणंदे। तस्स णं भीमस्स कूडग्गाहस्स दादयः पर्वतासाद्यत् सारः प्रधानो यः स तथा। 'पासा' इत्यत्र "पासाइए दिसिणिज्ञे अभिरूवे पिडरूवे" नि द्यम् ; तत्र प्रासादीयो अधमनि पापलोकान् अनुगच्छतीत्यधर्मानुगः ''अधिमन्देरे'' अतिश्येनाऽधमों धर्मरहितोऽधर्मिष्ठः, ''अधम्मक्खाई'' अधर्मभाषण-जीलः, अघार्मिकप्रसिद्धिको वा, "अहम्मपलोई" अधमनिव परसंबन्धिदोपानेव प्रलोकपति प्रेक्षत इत्येवंशीलोऽधम्प्रलोकी, "अहम्म-बहां' इत्यादौ बलीवही बर्धितगवाः, 'पद्धिकां' हस्वमहिष्यो हस्वगोत्त्रियो वा, घुपभाः साण्डमवः । 'कूडज्गाहे'नि क्टेन जीवान् तत्य णं वहचे णगरगोरूवाणं सणाहा य अणाहा य णगरगावीओ य णगरवलीवहा य णगरपाङ्चियाओ स्तम्मशतसंत्रिविष्टःप्रासादीयः ४ । तत्र बहुवो नगरगोरूपाः सनाथात्रानाथात्र नगरगञ्यञ्च नगरवलीवद्षेत्र नगरपङ्काश्च नगरवृषभाञ्च पगुरकुणपानीया निभेया निकपसर्गोः (निकद्विग्नाः) सुखं सुखेन परिवसन्ति । तत्र हरितनापुरे नगरे भीमो नाम कूटमाहो वभूव, अयाासीको मनःप्रसनताहेतुः दर्शनीयो यं पश्यच्छने श्राम्यति, अभिरूपः अभिमतरूपः, प्रतिरूपः द्रष्टारं २ प्रति रूपं यस्येति । 'नैगस्बर्ती गुज्ञानीति क्टग्राहः । 'अहम्मिए'ति धमेंण चरति व्यवहरति वा घामिकस्तन्त्रिषेषाद्धामिकः, यावत्करणादिदं दृश्यम्–अधम्माणुए"

tel

त्य पूर्व-118211 अहीण'ति "अहीणतपुण्णपंचिदियसरीरा" इत्यादि दृश्यम् । 'आवनसत्त'ति गर्भे समापन्नजीवेत्यर्थः । धैनाओ णं ताओ 'अम्म-वहेश्र उप्पला नामं भारिया होत्या अहीण०। तते णं सा उप्पला कूडग्गाहिणी अण्णया कयाति आवण्ण-गं बहूणं नगरगोर्द्धवाणं सणाहाण य ५ जाव वसभाण य ऊहेहि य थणेहि य बसणेहि य छप्पाहि य कपलक्षणाओं णं ताओं अम्मयाओं, तासिं णं अम्मयाणं मुल्द्रे जम्माजीवियफ्ले " इति, ज्यक्तं च 'जहेहि य' ति गवादीनां यावद् दुष्प्रत्यानन्दः । तस्य भीमस्य कुटयाहस्योत्पला नाम भायोऽभवद्-अहीन० । ततः सोत्पला कुटप्राही अन्यदा कटाचिदापत्रसत्त्वा पळजाो" अयमे एव हिसादो प्रज्यतेऽनुरागवान् भवतीत्यधमेप्रजनः, "अहम्मसमुदाचारे" अधमेरूपः समुदाचारः समाचारो यस्य पुण्णाओं णं ताओं अम्मयाओं, क्यत्थाओं णं ताओं अम्मयाओं, स नथा, "अहम्मेण चेव वित्ति कष्मेमाणे" इति अधमेण पाषकमेणा यृत्ति जीविकां कल्पयमानः कुर्वाणस्तच्छील इत्यर्थः "दुस्सीले' दृष्ट्यीलः, "दुवए" अविद्यमाननियम इति, "दुष्पडियाणंदे" दुष्प्रत्यानन्दो बहुमिरिष संतोषकारणैरनुत्ययमानसंतोष इत्यर्थः मुलब्धम् जनमजीवितफलम्, या बहूनां नगरगोरूपाणां सनाथानां च ५ याबद् बुषभाणां चोधोभिश्च स्तनैश्च बुषणैश्च पुच्छैश्च ककदैश्च जाता नाष्यभवत् । ततस्तस्या उत्पत्नायाः कुट्याह्यास्त्रिषु मासेषु बहुपरिपूर्णेष्वयमेतदूपो होहदः प्राहुभूतः, ' धन्यास्ता अन्याः ४ तत्ता जाया यावि होत्या । तते णं तीसे उप्पलाए कूडग्गाहिणीए तिणहं मासाणं बहुपिंडेपुण्णाणं मेयारूने दोहले पाउन्मूते,—' घण्णाओं णं ताओं अम्मयाओं ४ जान सुलंहे गाउ' ति अम्बा जनन्यः, इह यावत्करणादिदं दृश्यम् EII-SAIEII-SAIEII-SAIEII-SAIEII-SAIEII-SAIEII-SAIEII-SAIEII-SAIEII-SAIEII-SAIEII-SAIEII-SAIEII-SAIEII-SAIEII-SA 事。 The state

मिन्द्रभाका भिन्द्रभाव b प ो दोहलं विणेति, तं जइं णं अहमवि सींघ च पत्तिण्ण भुक्ला स्तनोपरिभोगैः । 'थणोह य' नि व्यक्तम्। 'वसणेहिय'नि वृषणैरण्डैः । 'छ(छे)प्पाहि य' नि पुच्छैः । कक्रहेहि य' नि कक्रदै वहेहि य कन्नेहि य अच्छीहि य नासाहि य जिन्भाहि य ओट्रेहि य कंबलेहि य सुक्ला मेरगं च जातिं अविशिज्यमाणांसि मिलतिहि य परिसुक्केहि य लावणिएहि य सुरं च मधुं च परिभुंजेमाणीअ दोहलंसि बिसाएमाणीओ परिभाएमाणीओ विणेजामि' ति कहु तंसि बहुण नगर० जाव आसाएमाणीओ मानिस्यामान्द्रभामान्द्रभामान्द्रभामान्द्रभामान्द्रभामा

यावद् 'सोछिएहि य' नि पक्वैः। 'तिलएहि गुड्धाः स्नेहेन पक्टैाः ' मजिएहि य'त्ति भृष्टैः । 'पारेमुक्खेहि य'ति स्वतः शौषम्पपागतैः । 'लावणिएहि य'त्ति, लवणसंस्कृतैः। सुरा नुभुक्षा परिभुजेमाणीड'नि सबेमुप । 'आसाएमाणीउ' सि ईषत् स्वाद्यन्त्यो बहु च त्यजन्त्य इश्लसण्डादेरिव # नगर् <u> ज्हुलयवादिच्छक्षीनिष्पना । मधु च माक्षिकनिष्पत्रम्। मेरकं तालफलनिष्पत्रम्। जाांतेश्व जाांतेक्कमुमवर्णं मद्यमेव। सिधु च</u> शुष्केव शुष्का हथिरक्षयात्। 'भुक्ख'ित मोजनाकरणाद् हीनबलतया बुभुक्षायुक्तेव P (दा म वहना P 1 विनयनितः, तद् यद्यहमपि लानिणिकैर्च विसाएमाणीउ'सि विशेषेण स्वादयन्त्योऽल्पमेव त्यजन्त्यः खजूरादेरिव।परिभाएमाणंडि'सि ददत्यः।' परिशुष्कैर्च ' 'महेहि य' ति वहै: स्कन्धैः । कर्णादीनि व्यक्तानि । 'कंत्रलेहि य' ति सास्नाभिः। द्रीहेंद HER परिभाजयन्त्यः परिभुञ्जाना पक्षेत्र स्तेहपक्षेत्र तकासभवम् । प्रसन्ता द्राक्षादंद्रज्यजन्या मनःप्रसन्तिदंत्रिति । चास्त्रादन्त्यो विस्वादयन्त्यः जिह्नाभिष्योष्टेश कम्बलेश भुझाना अल्पमण्यपरित्यजन्त्यः । ग्रुष्का क्रियाशिमित्र नावामित्र प्रमञ्

पा

मुख

F

明

अत एव निमासा। 'उलुग्ग'नि अवरुग्णा भग्नमनोद्यन्तिः' 'उलुग्गसरीरा' भग्नदेहा 'नितेय'ति गतकान्तिः, 'दीणविमणहीण'नि दीना दैन्यवती विमनाः ग्रुन्यचिता हीणा च मीतेति कर्मथारयः 'दीणविमणवयण'ति पाठान्तरम्, तत्र विमनस इय विगतचेतस इय बदनं यस्याः सा तथा, दीना चासौ विमनोवदना चेति समासः। 'पंडछइयग्नही' पाण्डुरीभूतवदनेत्यर्थः। 'ओमंथियनयणवयणक-यावद् ध्यायिति ?! ततः सोत्पला भायी भीमं कृटमाहमेवमवादीत्,-'एवं खलु देवानुप्रिय ! मम त्रिपु मासेपु बहुपरिपूर्णेपु दोहदः इतरच भीमः क्रुटप्राहो यत्रेवोत्पला क्रुटप्राही तत्रेवोपा० २ अपहत० यावत् पर्यति, हष्ट्रवैवमवद्त्, ' कि त्वं देवानुप्रिये ! अपहत० विनयामि' इति छत्वा तरिमम् दोहदेऽविनीयमाने ग्रुष्का जुसुक्षा निमाँसाऽबक्ग्णाऽबक्गण्यरीरा निस्तेजस्का दीनविमनोवद्ना पाण्डुरितसुखी अवमधितनयनवद्नकमला यथोचितं पुष्पवस्त्रान्थमाल्यालङ्कारहारमपरिभुञ्जाता करतलमस्तिव कमलमालाऽपहत० याबद् ध्यायति। मल'ति ओमंथियति अघोमुखीक्रतानि नयनवद्नरूपाणि कमलानि यया सा तथा 'ओहय'ति ओहयमणसंकष्पा विगतयुक्तायुक्तविवे-चनेत्यर्थः, इह यावत्करणादिदं दृश्यम्, —"करतलपण्हत्थमुही" करतते पर्यस्तं निवेशितं मुखं यया सा तथा, "अङ्बज्झाणीवगया बयासी,-'किणां तुमं देवाणुष्पिष् ओहय० जाव ज्यियासि १, तते णं सा उप्पला भारिया भीमं कृड० च णं भीमे कूडम्माहे जेणेव उप्पला क्र्डम्माहिणी तेणेव उवा० २ ओह्य० जाव पासति २ ता एवं गुल्फवत्थगंधमह्यालंकारहारं अपरिभुंजमाणी कर्यलमलियव्य कमलमाला ओह्य० जाव िझ्याति। इमं उलुग्गा उलुग्गत्तरीरा निनेया दीणिवमणवयणा पंडुछियियमुही ओमंथियनयणवयणकमला जहोह्यं ्र अत्र-一に対

णं ८ जाओ णं वहूणं गो० ऊहोहि य० हावणिष् हिय० सुरं च० ५ आसा० ४ दोह छं विणिति'। तते णं उत्रागच्छति' उत्रागच्छिता उप्पलक्कडग्गाहिं ओहयमणसंकप्प' इत्यादिस्त्रं प्रागुक्तस्त्रानुसारेण परिषूणैं क्रत्वा ध्येयम् , स्चामात्रत्वा-दोहलंसि अविणिजमाणंसि॰ जाव हिझ्यामि।' तते णं से भीमे कूड॰ उप्पहं भारियं एवं वयासी,-'मा णं तुमं देवाणु० ओहय० जाव िंझयाहि; अहं णं तं तहा करिस्सामि ततः स भीमः कृटप्राहोऽधेरात्रसमय एकोऽद्वितीयः संनद्ध० यावत् प्रहरणः स्वस्माद् गृहात्रिगैच्छति, निगैत्य हस्तिनापुरं मध्येन० सुमीगयदिद्ठीया"। 'ज्झियाइ'नि घ्यायति चिन्तयतीति। 'इमं च णं'ति इत्येत्यथंः। भीमे क्रुडम्गाहे जेणेव उप्पला कूडमाही तेणेव एवं वयासी, एवं खद्ध देवाणुप्पिया ! ममं तिण्हं मासाणं बहुपडिपुण्णाणं दोहले पाउब्भूते,—'धण्णा तते णं से भीमे कूड० अड्डरत्तकालसमयांसि ष्गे अबीष् सणणद्ध० जाव पहरणे सयाओ गिहाओ अपहत्त गदुर्भूतः,-'धन्याः ४ या वहूनां गो० जधोभिञ्च० लावणिकैञ्च० सुरां च० ५ आस्वा० ४ दोहहं विनयन्ति'। ततोऽहं देवानुप्रिय (करिहामि) जहा णं तत्र दोहलस्स संपत्ती भविस्सइ'। ताहिं इट्टाहिं ५ जाव समासासेति। तिसम् दोह्देऽविनीयमाने० यावद् ध्यायामि' ततः स भीमः क्रूट० उत्पछां भायभिवमवद्त्,—'मा त्वं देवानुप्रिये ! यावद् ध्यामीः, अहं तत् तथा करिष्यामि यया तव दोहद्स्य संप्राप्तिभैविष्यति । ताभिरिष्टाभिर्योवत् ५ समाश्रासयति अहं देवाणु० तंसि

2634

56-411-11-6

निगमच्छति २ हरिथणाउरं मन्झंमन्झेणं० जेणेव गोमंडवे तेणेव उवागते २ वहूणं णगरगोरूवाणं जाव वसभाण य अप्पेगङ्याणं ऊहे छिद्ति जाव अप्पेगङ्याणं कंवलष् छिद्ति, अप्पेगङ्याणं अणणमण्णाइं अंगोवंगाइं वियंगेति २ जेणेव सए गिहे तेणेव उवागच्छति २ उप्पत्नाप् कूडगगाहिणीए उवणेति। तते तते णं सा उप्पत्ना भारिया तेहिं बहुहिं गोमंसेहिं सोछेहिं जाव सुरं च ५ आसा० ४ तं दोहरूं विणेति। तते त्युस्तकस्य। 'ताहि इडाहि' इत्यत्र पञ्चकलक्षणादङ्गादिदं दश्यम् ,- "कंताहि पियाहि मणुनाहि मणामाहि " इति, एकाथिते, "वग्गु" णं सा उप्पला कुडम्गाही संपुषणादोहला संमाणियदोहला विणीयदोहला वोच्छिषणादोहला संपन्नदोहला ~ \*\*\*\* 113611

华集

मोत्पला भायी तेर्नुभिगेमांसेः पक्नैयीवत् सुरां च ५ आस्वा० ४ तं दोहदं विनयति । ततः सोत्पला कूटप्राही संपूर्णदोहदा "संमानित-नति, अत्येत्रेषामन्यान्यान्यान्यानानि विक्रन्तति, विक्रत्य यत्रेव स्वं गृहं तत्रैवोपागच्छति, उपागत्योत्पलाये कृटमाधे उपनयति । ततः माञ्छितार्थसमानयनात् । 'विणीयदोहल'ति, वाञ्छाविनयनात् । 'विच्छित्रदोहल'ति विवक्षितार्थवाञ्छानुबन्धविच्छेदात् । 'संप-इति वागिमः। 'एमे' ति सहायताभावात्। 'अवीए' ति धर्मरूपसहायाभावात्। 'सत्रद्धवद्धवाम्मयकवए' पूर्ववत् यावत्करणात् "उप्पीलि-यमरामणपद्वीए" इत्यादि "महियाउहपहरणे" इत्येतदन्तं दृश्यम् । 'संपुष्णदोहरू' नि समस्तग्रिङ्गार्थपूरणात् 'सम्माणियदोहरू' नि यतेय गोमण्डपस्ततेवोपागतः, उपागत बहूनां नगरगोरूपाणां यावद् युपभाणां चात्येकेपामूषांसि च्छिनति यावद् अत्येकेपां कम्बलांदिछ-सर्हिल'ति विवक्षितार्थमोगसंपाद्यानन्द्रप्राप्नेरिति। 'मीया' इत्यंत्र "तत्था तसिया संजायभया" इति दृश्यम्, भयोत्कर्पप्रतिपाद्नपरा-

दारके प्रजाता। ततस्तेन दारकेण जातमात्रेणेव महता शब्देन विद्यष्टिश्चिस्वर आरसितः। ततस्तस्य दारकस्यारसित्गब्दं श्रुत्वा निशम्य हस्तिना-दोहदा विनीतदोहदा व्युच्छित्रदोहदा संपत्रदोहदा त गर्भ सुखं सुखेन परिवहति। ततः सोत्पला क्रूट० अन्यदा कदाचिद् नवसु मासेषु बहुपरिपूर्णेषु वेयं कुरुतः, यस्माटावयोरनेन दारकेण जातमात्रेणेव महता२ शब्देन विघुष्टश्चिचीस्वर आरसितः, तत एतस्य दारकस्यारसितशब्द श्रुत्वा निराम्य सोचा निसम्म हरिथणाउरे णगरे वहवे नगरगोरूवा जाव वसभा य भीया ४ पुरे नगरे बहवो नगरगोरूपा यावद् ग्रुपमाश्च मीताः ४ उद्विग्नाः सर्वेतः समंताद् विपलायांचक्रिरे।ततस्तस्य दारकस्थाम्वापितराविद्मेतद्रुपं नाम उिवयमा सब्बओ समंता विष्पलाइत्था। तते णं तस्स दारगस्स अम्मापियरो अयमेयारूवं नामधेज पैकार्थिकानि चैतानि। 'सबओ'नि सर्वदिछ । 'समंत'नि विदिह्य चेत्यर्थः। 'विपलाइत्थ'नि विपलायितयन्त इति 'अयमेयारून'नि, इंदमेंग्रकारं बस्यमाणस्वरूपमित्यथेः । 'महया महया चिचि आरसिष्'िना महता २ चिचीत्येवं चीत्कारेणेत्यर्थः । 'आरसिय'िन महया २ सहेणं विग्घुट्टे चिचीसरे आरासिते. हरिथणाउरे णगरे वहचे णगरगोरूवा य जाव तं गर्न्सं सुहंसुहेणं परिवहति। तते णं सा उप्पत्ना कृड० अण्णया कथाती णवण्हं मासाणं वहुपडिपुण्णाण दारमं पयाता। तते णं तेणं दारएणं जायमेतेणं चेत्र महया सहेणं विग्घुट्ठे चिचीसरे आरसिते। मह्या कराति; जम्हा णं अमहं इमेणं दारप्णं जायमेतेणं चेव तते णं एयस्स दारगस्स आरिसतसहं सोचा निसम्म गारसितमारोटेतम् । 'सोच'ति, आकण्यं । 'निसम्म'ति, अवधायं तस्त दारगस्त आरित्तयसहं । 主要な出事なる。 अल्यामा न्वित्यामा स्थ

三 三 三 う ご 三 दारए कूडम्गाहे जाए यावि होत्था अहाभ्मए जाव दुप्पाडियाणंदे। तते कूडम्गाहे (हिनाए) कछाकछि अडुरनकालसमयंसि एगे अवीए सणणद्ध-भीया ८ सवतो समंता विष्पळाइत्था, तम्हा णं होउ अम्हं दारष् गोनासष् नामेणं। तते णं से गोनासे दारण् उम्मुक्तवालभावे जाव जाते यावि होत्था। तते णं से भीमे कूडग्गाहे अण्णया कयाती कालधम्मुणा ततः स सुनन्दो राजा गोत्रासं दारकमन्यदा कदाचित् स्वयमेव क्रुटप्राह्तायां स्थापयति । ततः स गोत्रासो दारकः क्रुटप्राहो जात-आप्यभवद्यार्मिको यावद् दुष्प्रत्यानन्दः । ततः स गोत्रासो दारकः कुटप्राहः प्रतिद्निमधँरात्रकालसमये एकोऽद्वितीयः संनद्धयद्गक्वचो यावद् हरितनापुरे नगरे वडवो नगरगोरूपाश्च यावद् भीताः ४ सर्वतः समन्ताद् विपलायांचिक्ररे, तरमाद् भवत्वावयोद्रिको गोत्रासो नान्ना। ततः संजुत्ते। तते णं से गोत्तासे दारए वहूणं मित्तणाइणियगसयणसंबंधिपरिजणेणं सिद्धं संपरिबुडे रोअमाणे कंदमाणे विलयमाणे भीमस्स कूडग्गाहस्स नीहरणं करेति, (नीहरणं) करेता वहूडं लोइयमयिकिचाइं करेति। तते णं से सुनंदे राया गोत्तासं दारयं अण्णया कयाती सयमेव कूडग्गाहिताए ठवेति। दारको बहुना मित्रज्ञातिनिजकस्वजनसंवन्धिपरिजनेन सार्थं संपरिष्टतो रुद्न् कन्द्न् विल्पन् भीमस्य कूटप्राहस्य निस्तरणं करोति। कुत्वा स गोत्रासो दारक उन्मुक्तवालमावो यावजातश्राप्यभवत् । ततः स भीमः क्रुटपाहोऽन्यदा कदाचित् कालधर्मेण संयुक्तः । ततः स गोत्रासो यहान लैकिममुतकृत्यामि करोति। णं से गोतासे दारए तते णं से गोतासे न्त्यामान्स्यामान्स्यामानस्यामानस्याम 2000年

, कुड़ ० क्रुड़ कुड़ ० र्यकम्मे प० वि० स० सुबहुं पावं कम्मं समज्जिणिता पंचवाससयाइं परमाउं पालियिता अद्दुहद्दो-रुठीतायुध प्रहरणः स्वरमाद् गृहाद् नियोति, यत्रैव गोमण्डपस्तत्रैवोपा० वहूनां नगरगोरूपाणां सनाथानां यावद् विक्रन्तति, विक्रत्य यत्रैव स्वं गृहं तत्रैयोपा० । ततः स गोत्रामः क्रूट० तैर्वेह्रभिगोंमांसैः पक्षैयीवत् सुरां च ५ आस्व० ४ विहरति। ततः स गोत्रासः क्रूट० एतत्क्रमी प्र० (एतत्यधानः) वि० (एतद्विघः) स० (एतत्समाचारः) सुबहु पापं कमै समज्यै पञ्चवपैशतानि परमाष्टुः पालयित्वाऽऽतेद्धःखात्तोपगतः कालमासे वगते कालमासे कालं किचा दोचाए पुढवीए उक्नोसं तिसागरो० णेरइयत्ताए उववण्णे । ( सू० ११ ) तते णं सा विजयमेत्तस्स सत्थवाहस्स सुभद्दा भारिया जातनिंदुया यावि हेात्या । जाया जाया मालं क्रत्या द्वितीयायां प्रथिन्यामुस्क्रप्रतिसागरो० नैरचिकतयोपपन्नः। ततः सा विजयमित्रस्य साथेवाहस्य सुभद्रा भायो जातमिद्वता चाप्यभवत्। से गोतासे गोमंडबे तेणेव उवा० तते णं से गोत्तासे । 'अट्टदुहट्टीवगए'िं। आरोमार्गध्यानं, इंखिस्थगनीयं दुर्बार(ये)मित्यर्थः, उपगतः प्राप्तो यः स तथा । 'जायिनंदुया यावि'ित जातान्युत्पनान्यपत्यानि निर्देतानि । तते ाद्दकव्य जाव गाहेयाउहपहरणे सयातो गिहातो निज्जाति; जेणेव तेहिं वहूहिं गोमंसोहे सोछेहिं जाव सुरं च ५ आसा० ४ विहरति। ागरगोरूवाणं सणा० जाव वियंगेति २ जेणेव सए गिहे तेणेव उवा० । (एयकम्मे इत्यत्रदं दश्यम्,—"एयप्यहाणे एयविज्ञे एयसमायारे" इति । गिने मृतानीत्ययों यस्याः सा जातनिह्नेताः, चापीति समधनाथः।

·lt

। स्ट्रंसणं च जागरियं च महया इष्डिसकारसमुद्एणं करेति । तते णं तस्त दारगस्त अम्मापितरो एतदेवाह-जाता जाता टाका विविधातमाणको (---) द्रार्गा विनिहायमावजीता तते णं से गोत्तासे कूड० दोचाओ पुढवीओ अणंतरं उब्रिटिता इहेव वाणि-जाता जाता गरका विसिघातमापगन्ते। ततः म गोत्रासः क्रुटप्राह्मे द्वितीयातः प्रियीतोऽनन्तरमुद्ध्त्येहेव वाणिजप्रोमे नगरे विजयमित्रस्य सार्थ-बर्गाच्छाद्नगर्मगृहप्रवेशनादिभिः। 'छिड्बडियं च'चि, स्थितिपतितां कुलकमागतां बर्धमानकादिकां प्रत्रजन्मक्रियाम्। 'चंद्धरपा-यन्यामे पागरे विजयमित्तस्स सत्थवाहस्स सुभहाए भारियाए कुन्छिसि पुत्तताए उववण्णे। तते णं सा सुमहा सत्थवाही अण्णया कयाह नवण्हं मासाणं वहुपहिपुण्णाणं दारगं पयाया । तते णं सा सुमहा सत्थवाही तं दारगं जातमेत्तयं चेव एगंते उक्कुरुडियाए उज्झावेति २ दोंचपि गेण्हावेति २ आणुपु-पातस्य सुभद्राया भाषांचाः क्षस्रो पुत्रतयोपपत्रः। ततः सा सुभद्रा साथेवाह्यन्यद्ग कदाचित् नवसु मासेसु बहुपरिपूर्णपु दारकं प्रजाता । ततः मा गुमद्रा मार्गवाही तं दारकं जातमात्रमेचे हान्तेऽश्चविराहाबुब्झयति, उब्झियित्वा द्विरपि (पुनरिप) माह्यति, माह्यित्वाऽऽनुपूर्वं संरक्षन्ती संगोपयन्तो सबर्धयति। ततत्त्तस्य दारकस्याम्यापितरो स्थितिपतितां च चन्द्रसूर्येद्रशैनं च जागयी च महता ऋद्विसत्कारसमुद्येन क्रुरताः बेणं सार्कलमाणी संगोवेमाणी संबह्वेति। तते णं तस्स दारगस्त अम्मापियरो ठितिपडियं च मणियं'ति, अन्वर्थानुमारिणं मृतीयदिवसीत्सवम् । 'जागरियं च'िना, पष्ठीरात्रिजागरणप्रथानमुत्सवम् क्यामाक्यामाक्यामाक्या 印味

तते णं से उडिझयए दारए पंचधातीपरिग्गहिते, तंजहा, खीरघातीए १ मज्जण० २ मंडण० ३ कीलाण ४ अंकथातातीए ५ जहा द्डपतिण्णे जाव निवायनिवाघायगिरिकंद्रमछीणेव चंपयपायवे सुहं सुहेणं विहरति। वंद दारको वित्रति। ततः स विजयमित्रः सार्थवाहोऽन्यदा कदाचिद् गण्यं च थायैच मेयं च परिच्छेदां च चतुविधं भाण्डं गृहीत्वा लवणसमुद्रं पोतव-दिवसे निवसे, संपत्ते वारसाहे अयमेयारूवं गोणणं गुणानिष्फणणं नामधेजं करेंति, जम्हा णं तस्तथायमपीह बाच्यः। किमविषकं च तत्र तत्वत्रमित्याह-यावत् 'निवायनिवायापिरिकंद्रमछीणेव चंपगपायवे सुहं सुहेणं विहर-िनहं मंडं (डमं) गहाय लवणसमुहं पोयनहणेणं उवागते । तते णं से विजयमित्ते तत्थ लवणसमुहे क्षीरभाज्या मज्जन० मण्डन० क्रीडन०, अङ्गधाज्या०, यथा दृढप्रतिजो यावद् निर्वातनिज्यांचातगिरिकन्दरमालीन इव चम्पकपादप. सुखं सुखेस जानमात्र एवे फान्तेऽशुचिराश्चाबुष्झितः, तस्माब् भवत्वावयोद्रोरक उज्जितको नान्ना। ततः स उज्जितको दारकः पञ्जधात्रीपरिगृहीतः, तद्यथा, 'गोण्णंगुणनिष्फण्णं'ति, गौणमप्रधानमपि स्यादत उक्तम्–गुणनिष्पन्नमिति। 'जहा दहपङ्णो'ति, औपपातिके यथा दृहप्रतिज्ञो वर्णि श्रए जायमेत्तए चेव एगंते उक्करियाए उज्झिते, तम्हा णं होउ अम्हं दारए उज्झियए नामेणं तते णं से विजयमित्ते सत्थवाहे अन्नया क्याइ गणिमं च धारिमं च मेजं च परिच्छेजं च ततस्तरग दारकस्याम्बापितरावेकाद्रशे दिवसे निष्टेते, सप्राप्ते द्वाद्ञाह्नीद्मेतद्रपं गौणं गुणनिष्पन्नं नामधेषं कुरुतः, यस्मादावाभ्यामयं इ'िता 'लवणसम्रहे' 'कालघम्मुण'ति मर्पोन

पोतविपत्तिकं निममभाण्डसारं कालधमेंण संयुक्तं अणोति, अत्वा महता पतिशोकेनाकान्ता सती परग्रुनिक्कतेव चम्पकळता थसेति धरणितके पोतिविवतिए गिन्युनुभंडमारे अताणे असरणे कालधुम्मुणा संजुते। तते णं से विजयमितं सत्यवाहं इस्तिनिक्षेपम्। 'याहिरभंडमारं च' हस्तिनिक्षेपन्यतिरिक्तं च भाण्डसारं सारभाण्डं गृहीत्वा एकान्तं दूरमपक्रामिति-विजयमित्रसार्थ-हुनेनोपागतः । ततः स विजयमित्रस्तत्र छवणसमुद्रे पोतविपत्तिको निमप्रभाण्डसारोऽत्राणोऽश्ररणः कालधर्मेण संयुक्तः । ततस्तं विजयमित्रं सार्थपाएँ ये यया बहुच ईयरतलबरमाडिन्यिकनोटुन्विकेम्यथेष्टिसार्थवाहा लवणसमुरे पोतिविपत्तिकं सप्टं निममभाण्डसारं कालधर्मेण संयुक्तं श्रणकति, ते तथा हस्तनिस्रेपं च बाह्यभाण्डसारं च मृहीत्वैकान्तमपक्रामन्ति।ततः सा सुभद्रा सार्थवाही विजयमित्रं सार्थवाहं छवणममुद्रे मृतमित्यर्थः मुण्यन्ति ते तथेति 'थे यथा' इत्येतदपेक्ष्यम् । 'हत्थनिक्षेवं च'ना, हस्ते निक्षेपो न्यासः समर्पणं यस्य द्रन्यस्य तद् वाहमायियास्तरपुत्रस्य च दर्शनं दद्ति-तद्रथमपहरन्तीति यावत् । परसुनियना इव'िन,परशुनिक्रनेव कुठारिन्छनेव 'चम्पकलते'ित। निच्युउभंडसारं कालथम्मुणा संजुनं मुणेति, ते तहा हत्थानिक्खेवं च वाहिरभंडसारं च गहाय ऐगंतं अवक्रमाति। तते णं सा मुभहा सत्थवाही विजयमित्तं सत्थवाहं लवणसमुद्दे पोताविवातियं णिब्बुडुभंडसारं वीयविवनियं किवणसमुद्रे पोतिविषनिर्यस्य सतयातम्, 'निव्युड्डभंडसारं 'निममसारभाण्डमित्यर्थः । 'कालघम्मुणा संजुनं'ति काल्यम्मुणा संजुत्तं सुणेति २ ता महया पतिसोष्णं अष्फुणणा समाणी परसुनियताविव चंपगलता province or many the second of ने जहा बहुवे ईसरतलबरमाडंबितकोडुंबियड्डभसेट्रिसत्थबाह्य लवणसमुहे पोयविवातियं ( छूढं ) १ थ्रत-

West President Communications of the Communication Communi

वहूहिं मित्त० जाव परिबुडा रोयमाणी कंदमाणी विलवमाणी विजयमित्तरंस सत्थवाहरस लोइयाइं च (सत्यविणासं च) पोतविणासं च पतिमरणं च अणुचितेमाणी २ कालधम्मुणा संजुत्ता । (सू० १२) तते णं ते णगरग्रीतिया सुभइं सत्थ० कालगयं जाणिता उज्झियगं दारगं सातो गिहातो णिच्छु-मयिकिचाइं करोति। तते णं सा सुभद्दा सत्थवाही अण्णया कयाती लवणसमुद्दोत्तरणं च लिच्छिविणासं थसति धरणीतलंसि सब्बंगेहिं संनिबडिया। तते णं सा सुभहा सत्थवाही मुहुचंतरेणं आसत्था समाणी

भंति, णिच्छुभित्ता तं गिहं अण्णस्स द्लयंति । तते णं से उज्झियते दारष् सयातो गिहातो निच्छूढे संबन्धिनः-अगुरपाक्षिकाः।'रीयमाणी'ति अश्रूणि मुञ्जन्ती। 'कंदमाणीति' आक्रन्दं महाध्वनिं कुर्वाणा । 'विलवमाणी'ति आत्तेस्वर् 'मिनो' इत्यत्र यावत्करणादिदं टक्यम्,—"णाइणियगसंबंधि"िनो, तत्र मित्राणि सुहद्ः, ज्ञातयः समानजातयः, निजकाः-पितृब्याद्यः,

सर्वा नै: संनिपतिता। ततः सा सुभद्रा सार्थवाही मुहूत्तान्तरेणाय्वस्ता सती बहुभिभित्र० यावत् परिष्टता रुद्ती कन्दन्ती विलयन्ती विलय-मित्रस्य सार्थवाहस्य ठौकिकानि मृतकृत्यानि करोति । ततः सा सुभद्रा सार्थवाही अन्यद्रा कदाचिल्नवणसमुद्रावतरणं च लक्ष्मीविनाशं च (मार्थविनागं च) पौतिषिनाशं च पतिमरणं चात्रिषिन्तयन्ती २ कालधर्मेण संयुक्ता । ततस्ते नगरगोप्तिकाः सुभत्रां सार्थवाही कालगतां बात्वोष्डिमतकं दारकं स्वस्माद् गृहाद् निष्कासयन्ति, निष्कास्य तद् गृहमन्यस्मै

500 0 000

||30 ||30 | 事事事 गणियाग् सिद्धं संपलमे जाते यावि होत्या । कामज्झयाष् गणियाष् सिद्धं विउलाइं उरालाइं माणु-स्तगाइं भोगभोगाइं भुंजमाणे विहरति । ग़पगित । नतः स उिरातको दारकः स्वस्माद् गृहाद् निष्कासितः सन् वाणिजत्रामे नगरे शृङ्गाटक० यावत् ०पथेषु बूतागारेषु वेर्या-ततया प्रचारी यस स तथा, 'वेसदारप्पसंगी'ति, वेश्याप्रसङ्गी-कलत्रप्रसङ्गी चेत्यर्थः, अथवा वेश्यारूपा ये दारास्तरप्रसङ्गीति । 'भोग-गृक्षेत्र पानागारेषु प सुगं सुखेन परिवर्तते । ततः स उधिशतको दारकोऽनपवट्टकोऽनिवारकः स्वच्छन्दमतिः स्वैरप्रचारो मदाप्रसङ्गी चोर-रूतिरेयादारमसती जातभाष्यभूत् । ततः स उज्झितकोऽन्यदा कदाचित् कामध्यज्ञया गणिकया साधै सप्रलमो जातभ्राप्यभवत् । काम-तमाणे नाणियगामे नगरे सिंघाडग० जान पहेसु ज्यखलपसु नेसियाघरपसु पाणागारेसु य सुहं सुहेणं गोरजुयनेसदारप्यसंगी जाते यात्रि होत्या। तते णं से डाडेझयते अणणया कयाति कामच्झयाए नेपेयकरहितः, अत एव 'स्वच्छन्द्मतिः' खब्या स्वव्योन वा मतिरस्येति स्वच्छन्द्मतिः । अत एव 'सइरप्पयारे' स्वैरमनिवारि-प्रीती। 'अणोहरूए'ति यो बलाद् हत्तादो महीत्वा प्रवर्तमानं निवार्यति सोऽप्यर्डकस्तद्भावाद्नप्यर्डकः, 'अणिवार्ष् 'ति, गरिवटड् (इ)। तते णं से उिझतष् दारष् अणोहाष्टिष् अणिवारष् सच्छंद्मती सङ्रप्पयारे मज्जपसंगी मोगाइं ति, मोजनं मोगः-परिमोगः, अज्यन्त इति भोगाः-शब्दाद्यो भोगाहाँ मोगा मोगसोगा-मनोज्ञाः शब्दाद्य इत्यर्थः । रजिया गणिकवा सार्वम् विषुठानुदारान्मानुष्यकाम् भोगभोगान् भुज्ञानो विहरति। III-SA 2 × × ×

SAK! निच्छव्भमाण अज्झीववने कि, आधिक्येन तदेकाग्रतां गतोऽध्युषपन्नः। अत एवान्यत्र कुत्रापि वस्त्वन्तरे 'सुई च'ति, स्मृति स्मरणम् , 'रई च'ति रति शिया मुच्छितो-मूढो दोपेष्वपि गुणाष्यारोपात्, 'गिद्ध'त्ति, तदाकाङ्गावान्, 'गहिष्'त्ति, प्रथितस्ताद्वेषयस्नेहतन्तुसंदर्भित तते णं तस्स मित्तस्स रणणो अण्णया कयाड् सिरीए देवीए जोणिसूले पाउञ्मूते यावि होत्या कत्थड़ सुड़ं कामज्ञयार गांणगार To the ततसास्य मित्रस्य राज्ञोऽन्यदा कदाचित् श्रिया देन्या योनिश्कुलं पादुर्भूतं चाप्यभवत्। नो संशक्नोति विजयमित्रो द्रारष् कामज्झयाष् गणियाष् गिहातो अग्रामध्य राया अण्णया कयाती उन्झिययं दारयं कामन्झयाष् सिरीए देवीए सिंह उरालाइं माणुस्सगाइं भोगभ अवसावव्यण गणियं अधिभत्तियं ठावेति, २ त्ता गहिते 后版 विहरति । तते णं से उिड्सियए मन्छिते कामव्झय गणियाप रितए। तत्ते णं से विजयमित्ते संचाएति विजयमित्ते कामज्झयाए では उरालाइ जान क्षित्रप्ति, ग

नामान्द्रभामा

पेहरति। ततः म**ंड**िशतको टारकः कामध्वजाया गणिकायागृहाङ् निष्कास्यमानः सम् कामध्वजायां गणिकायां मूच्छितो गृद्धो **प्रथितोऽ**ध्यु-पपन्नोऽन्यत्र कुत्रापि स्मृति च पृति चाविन्द्मानस्तत्रित्तरतन्मनास्तहेर्यस्तद्ध्यवसानस्तद्यपित्रुक्तसत्त्रिषितकरणस्तद्राषनाभावितः काम-

गणिकाया गेडाद् निर्कासयति, निर्कास्य कामध्वज्ञां गणिकामभ्यन्तरे स्थापयति, स्थापयित्वा कामध्वजया गणिकया साथेमुदारान् यावद्

त्या सार्धमुतारान् मानुष्यकान् भोगभोगान् भुञ्जानो विह्तुम् । ततः स विजयमित्रो राजाऽन्यदा कदाचिद्धब्झितकं दारकं कामध्वजाया

अस्जित-भूष मुख्य में सन्दर्भ रति च थिति च अविद्माणे तिधिते तम्मणे तल्लेसे तद्ङ्झवसाणे तद्द्रोबउते तयिष्यकरणे तन्माब-याए गिहं रहस्सियगं अणुष्पविसङ् २ ता, कामज्झयाए गणियाए सिद्धं उरात्ठाइं माणुस्सगाइं भोगभोगाइं शासिक्ष् 'पिहं च'ति, ग्रति च-चित्तसास्थ्यम्, 'अविद्माणे'ति, अलभमानः 'तिचित्ने'ति, तस्यामेव चिनं भावमनः सामान्येन न-राजगमनस्यान्तराणि 'छिदाणि य'त्ति छिद्राणि राजपरिवारविरलत्वानि 'विवराणि य'ति, शेषजनविरहान् 'पडिजागरमाणे'ति, गवे-ततः स उधिरात हो यारकोऽन्यद् कदाचित् हामध्यजाया गणिकाया अन्तरं लभते । कामध्यजाया गणिकाया गृहं राहरियकमनु-प्रिशिति, अनुप्रियय कामध्यज्ञया गणिक्या सार्वेमुदारान् मानुष्यकान् भोगभोगान् मुञ्जानो विहरति। इतश्च मित्रो राजा स्नातो यावत् या मनो पस्य स तथा, 'तम्मणे'ति द्रव्यमनः प्रतीत्य विशेषोषयोगं वा। 'तहेसे'ति, कामध्वजागताऽशुभारमपरिणामविशेषः, लेक्या हि ताए णं से उिड अयप् दारए अपणया कयाति कामञ्जयाए गणियाए अंतरं लभेति। कामञ्जयाए गाणि-'नद्द्वीनउनो'नि, तद्यै-तत्प्राप्तवे उपयुक्तः-उपयोगवान् यः स तथा, 'तयप्पियकर्षे'नि तस्यामेवापितानि-डोकितानि करणानीन्द्रियाणि येन स तथा 'तब्मावणामात्रिए'ति तद्रावनया कामध्यजाचिन्तया मावितो-यासितो यः स तथा कामध्यजाया गणिकाया बहुन्यन्तराणि गामाविते कामञ्ज्ञयाए गणियाए बहूणि अंतराणि य छिहाणि य विवराणि य पङ्जागरमाणे २ विहरति क्रणादिद्रव्यसाचित्यजनित आत्मपरिणाम इति, 'तद्ज्झवसाणे'नि, तस्यामेवाध्यवसानं मोगक्रियाप्रयत्नविशेषरूपं यस्य स तथा प्रजाया गणिकाया बहुन्यन्नराणि न च्छिद्राणि च विवराणि च प्रतिजागरन् २ विहरति न्त्रियां मान्त्र्या मान्त्र्या मान्त्र्या र अत्र - in early

मंजमाणे विहरति। इमं च णं मित्ते राया पहाते जाव० पायि छित्ते सबाळंकारि विभू सिते मणुरसवम्पुरापिर-मेखते जेणेव कामज्झयाष् गणियाष् गिहे तेणेव उवागच्छति २ता तत्थणं उज्झिययं दारयं कामज्झ-

नेडाले साहद्व उज्झिययं दारयं पुरिसेहिं गेणहाबेति । गेणहाबित्ता अद्विसुद्विजाणुकोप्परपहारसंभग्गमहि-यतिति । 'इमं च णं'ति, इत×नेत्यर्थः। 'ण्हाए' इत्यत्र यावत्करणादिदं दश्यम् ,−''कयबलिकम्मे'' देवतानां विहितवलिघिधानः ''कय-गाए गणियाए सिंख उरालाइं ओगभोगाइं जाव विहरमाणं पासाति २ चा आसुरुने ४ तिवालेयभिउडिं सर्वतो भवनात् तया परिक्षितो यः स तथा । 'आसुरुने'िन, आशु-शीघं रुप्तः-क्रोधेन विमोहितो यः स आशुरुप्तः, आसुरं वा-(नीव) दुःस्वप्रादिप्रतिवातहेतुत्वेनावरुयंकरणीयत्वाद् येन स तथा, 'मणुस्सवग्गुरापरिक्खिने'िना, मन्जुष्या वागुरेव मुगबन्धनमिव कोउयमंगलपायन्छिने"िन कृतानि-विद्यितानि कौतुकानि च-मषिषुण्ड्रादीनि, मङ्गलानि च-सिद्धार्थकदध्यक्षतादीनि, प्रायश्चित्तानि च चंडिकिए'ित असुरसत्कं कोपेन दारुणत्वाद् उक्तं भणितं यस्य स आसुरोक्तः । रुष्टो-रोपवान् । "कुविष्"िना मनसा कोपवान्, "

चाणिडिक्यतो दारुणीभूतः । 'मिसिमिसीमाणे'नि, क्रोघच्चालया ज्वलन् । 'तिबलियभिडिङ निडाले साहङ्ग'नि, त्रिबलिकां भृकुटि कामध्यज्या गणिकया साथेमुदारान् यावद् विहरमाणं परयति । द्याऽऽग्रुक्तः ४ त्रिवलीभुकुटि ललाटे संहत्योज्जितकं दारकं पुरुषेत्री-०प्रायित्रात्तः सर्वोलैकारिषेमूपितो मनुष्यवागुरापरिक्षितो यत्रैव कामध्वजाया गणिकाया गृहं तत्रैयोपागच्छति।डपागस्य तत्रोष्झितकं दारकं त्यति । माह्यित्वाऽरियमुष्टिजानुकूपैरमहारसभममधितनात्रं करोति । कृत्वाऽवकोटकवन्षनं करोति । कृत्वैतेन विधानेन वध्यमाज्ञापयति

唐花 कण, समाणे कालमाणे कालं किचा इमीसे रचणप्पभाष् पुढवीष् पेरइचताष् उवविजिहिति। से णं ततो अणंतरं उन्नित्ता इहेच जंबुद्दीचे २ भारहे वासे नेयड्डिगिरिपायमूले वानर्कुलंसि वाणरत्ताष् उववाजिहिति, ली-ानिकारियों तलाटे संहत्य-विधावेति। 'अवओडमवंघणं'ति, अवकोटनेन च ग्रीवायाः पथाद्धापनयनेन बन्धनं यस्य स तथा 'बिद्यानों भद्रत ! दारक उतः काळमासे काळं कृत्वा कुत्र गमिष्यति ? कुत्रोपपस्त्यते ?' भौतम ! बिद्यतको दारकः पद्यचित्रति पगरसारी । स मनोऽनन्तरमुर्हस्येदेव जम्बुदीपे द्वीपे भारते वर्षे वैताळ्यगिरिपादमूले वानरतुले वानरतयोपपत्स्यते । स तत्रोन्मुक्तवाल-गोतमा । उभिन्नयए दारए पणवीसं वासाइं परमाउं पालइता अजेव तिभागावतेसे दिवसे सूलीभिणो र्गागि परमायुः पालियत्याऽगैव त्रिमागावयेषे विवसे ग्रुलिमित्रः कृतः सन् कालमासे कालं कृत्वाऽन्यां रत्नप्रमायां प्रथित्यां नेरियक्तयो-नगनं करेति करेना अवओडगवंयणं करेति। करेना पप्णं विहाणेणं वच्हां आणवेति। एवं खलु गोतमा। कहिं उनवाजिति। उज्जियम् दारम् पुरा पोराणाणं कम्माणं जाव पच्युभवमाणे विहराति ॥ ( सू० १३ उत्झियए णं भंते! दारए इओ कालमासे कालं किचा कहिं गिन्छिति ! ण्यं राज्य गीतम ! उन्जितको वारकः धुम पुराणाना कर्मगां यावन् प्रतानुभवन् विहरति। नम् । 'पुरा पोराणाणं', इत्यत्र यानत्करणाद् 'दुचिन्नाणं दुप्पडिक्नाणं' इत्यादि दश्यम् II FILE WAI FILE SAID STAIN FOR A

T 25 वेहिति। तते णं तस्स दारगस्स अम्मापितरो णिवचवारसाहस्स इमं एयारूवं णामधेजं करेहिति, होउ पियसोणे णामं णयुंसए । तते णं से पियसेणे णपुंसते उम्मुक्कबालमावे जोबणगमणुप्पने विण्णाय-भावरिन्धैगोगेषु मूच्छितो गृद्धो प्रथितोऽध्युपपन्नो जातान् जातान् वानरिङम्भान् हिनष्यति । तद् एतत्कमी ४ कालमासे कालं कुत्वेहेव जाते जाते वानरपेह्य पियसोणे जम्म्द्रीपै ध्रीपे भारते वर्षे उन्द्रपुरे नगरे गणिकाकुले पुत्रतया प्रत्यायास्यति । ततस्तं दारकमम्त्रापितरी जातमात्रकं वर्धिययतः, वर्षियत्वा नगुंस कक्षे जिश्रयिष्यतः । ततसास्य टारकस्याम्यापितरौ निष्टैनद्वाद्जाद्र इत्मेतद्रपं नामयेयं कारिष्यतः, भवतु प्रियसेनो नाम नपुंसकः ।ततः एयविन्ने एयस मुनायारेशि' 'मद्रेहिति' नि मधितकं कारिज्यतः। 'उक्टिडे' नि, उत्कर्षमान्, किमुक्तं भगति ? 'उक्टिइसरीरे' नि, निद्यामन्त्रचूर्णप्रयोगैः म पियमेनो मधुंस ह उन्मुक्तवालमावी यौचनमनुषात्रो विज्ञानपरिणतमात्रो रूपेण च यौवनेन च लावण्येन चोत्कृष्ट उत्कृष्ट्यारीरो भविष्यति उक्रिड्सरीरे भविस्सति, तते णं से लंसि पुत्तनाए पचायाहिति। तते णं तं दार्यं अम्मापितरो जायमेत्तकं बद्दोहीति २ नपुंसगकममं 'वानरपेछए'ति, वानरिडिम्भान्। 'तं एयकम्मे'ति, तिदिति तस्मात्, एतत्कमी, इहेदमण् दृश्यम्,-'एयप्पहाणे हिहिति । तं एयकम्मे ८ कालमासे कालं किचा इहेव जंबुहीवे २ भारहे वासे से णं तत्य उम्मुक्कवालभावे तिरियमोष्स मुच्छिते गिष्टे गहिते अन्झोववणो परिणयमेते रूबेण य जोबणेण य लाबण्णेण य डिक्केट्रे

भी- 1 णापुसमः इंद्रपुरे पागरे बहुने राईसर० जाव पभिवृत्यों वहूहिं विज्ञापत्रोगोहि य अभिशोगिता उराळाई माणुस्स- है उन्तिर गिराके में य नियहत्रणोहि य पण्डनमें है अभिशोगियाहि य अभिशोगिता उराळाई माणुस्स- है अस्प स्कन्म है सुन्दें पावं कम्म श्री भागभोगाई भुज्ञमाणे विद्वित्स्ति । तते णं से पियसेणे णापुंसए एयकम्मे ८ सुन्दुं पावं कम्म भागभागाई भुज्ञमाणे विद्वित्स्ति । ततो जिल्लामा काळं किचा इमीसे स्वणण्दाए पुढ्नीए कि कश्म स्कन्म स्कन्म स्कन्म हिन्दी स्वलावित्र स्कन्म स्वलावित्र स्वलावत्र स्वलावत्य स्वलावत्र स्वलावत्र स्वलावत्य स्वलावत

||33||

। हिस्सीको हिस्सी से हिस्सी को हिस्सी की हिस्सी के हिस्सी को हिस्सी के हिस्सी को हिस्सी के हिस्सी को हिस्सी के हिससी के हिस्सी के हिस्सी के हिससी के हिसस

से णं तओ अणंतरं उबिह्ना इहेब जंबुहीबे दीवे भारहे वासे चंपाए नयरीए महिसत्ताए पचायाहिति

से णं तत्थ अण्णया कयाति गोट्टिङ्किप्हिं जीवियाओं वबरोविष् समाणे तत्थेव चंपाए नयरीष् सेट्टि-कुलंसि पुत्तत्ताए पञ्चायाहिति । से णं तत्थ उम्मुक्कवालभावे तहारूवाणं थेराणं आंतिते केवलं वोहिं० अण्गारे० सोहम्मे कप्पे० जहा पढमे जाव अंतं काहित्ति निक्खेवो । ( सू० १४ )

स होड़ नायबी । द्वम्मि होति जीगा विज्ञा मंता य भावम्मि ॥ १ 'अभिओगिन्।'नि चशीकुत्य ।

॥ वितियं अज्झयणं समत् ॥

क्यांगाहरु । हा स्थान । हिस्सी मिर्ट्सी यो हिस्सी यो हिससी यो

'निक्सेवो'िन निगमनं वाच्यम्, तद्यथा,-"एवं खळु जंबू ! समणेणं भगवया महा० जाव संपनेणं दुहविवागाणं विह्यस्स अज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णनेिन वेमि'। अत्र च इतिशब्दः समाप्तौ, 'वेमि' इति च ब्रवीम्यहं भगवत उपश्चत्य न यथाकथंचित्॥ ॥ इति विषाकश्रुते द्वितीयाष्ययनांवेवर्णम् ॥

म ततोऽनन्तरमुद्दुत्येहैव जम्बूद्दीपे द्वीपे भारते वर्षे चम्पायां नगयाँ महिषतया प्रत्यायास्यति। स तत्रान्यदा कदाचिद् गौछिक्रेर्जाविताद् च्यप-

रोपितः संस्ततेव चम्पायां नगयां श्रेघिकुळे पुत्रतया प्रत्यायास्यति । स तत्रोन्मुक्तवाळभावस्तथारूपाणां स्थविराणामन्तिके केव**ं०** अनगार० मौयमें कत्पे० यथा प्रथमो यावदन्तं करिष्यतीति निक्षेपः । ' ॥ द्वितीयमध्ययनं समाप्तम् ॥

णं पुरिमतालस्स नगरस्स उत्तरपुरित्य(च्छि)मे दिसीभाए एत्थ णं अमोहद्सी उज्जाणे, तत्थ णं अमोह-गगरस्स उत्तरपुरियमे दिसीमाष् देसप्पंते अडबीसंठिया प्रथ णं सालाडबी णामं चोर्पाही होस्या विसम-ग्वीयस्गोर्ह्तमः । एवं मन्द्र जन्वो ! तिसम् काले तिसम् ममये पुरिमतालं नाम नगर्मभवद् ऋद्व० । तस्य पुरिमतालस्य नगर्-्रिमान्त्रस्य नगरस्योत्तरपोरस्त्ये दिग्भागे देश्यान्तेऽद्यीसश्रिताऽत्र शालादवी नाम चौरपल्ल्यमवत् विषमगिरिकन्दरकोळम्यसंनिविष्टा स्रोत्तरपीरस्ये दिग्यानेऽत्रामोषद्र्युवालम् । तत्रामोषद्र्धिनो यक्षस्यायतनमभवत् । तत्र पुरिमताले महावलो नाम राजाऽभूत् । तस्य जाय संपनेणं दृहितामाणं दोनस्त अन्त्यणस्त अयमेडे पण्णते, तचस्त णं भंते । के अडे पण्णते ?' 'एवं खळु' ति एवं वश्यमाणप्रका-गिंदरे: कन्दरं गुतरं तस्य यः कोलम्बः प्रान्तस्तत्र संनिविधा संनिवेशिता या सा तथा, कोलम्बो हि लोकेऽबनतं बुधशाखा्प्रमुच्यते, दंसिस्स जसवस्स आययणे होत्या, तत्यणं पुरिमताले महज्बले णामं राया होत्या, तस्स णं पुरिमतालस्स ्णायीः प्राप्ताः, सन्द-विक्यालद्वारे, 'जंबु'त्ति, आमन्वणम्। दिसप्तंते'त्ति, मण्डलप्रान्ते, 'विसमगिरिकंद्रकोलंबसण्णिविद्या' विषमं तचस्त उक्षेत्रो एतं खट्ट जंत्रू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं पुरिमताले णामं णगरे होत्था, रिद्ध०, तस्स अय उतीये किशिक्षिरूपते—'तबस्म उक्मेबी'क्ति, इतीयाध्ययनस्योत्क्षेपः प्रस्तावना वारुया, सा चैवम् ,-''जइ णं भंते समगोणं भगवया अथ त्तीयमभग्रसेनाध्ययनम् The state of the s が発 明治

सुन्दु दुर्लमं जलं पर्यन्तेषु यस्याः सा तथा । 'अणेगखंडी' अनेका नश्यतां नराणां मार्गमूताः खण्डयोऽपद्वाराणि यस्यां साऽनेक-कण्डीति । 'विदियजणदिन्ननिग्गमप्पवेसा' विदितानामेव प्रत्यभिज्ञातानां जनानां द्तो निर्गमः प्रवेशश्र यस्यां सा तथा, ' सुब-गिरिकंद्रकोऌंबसपिणविट्टा वंसीकॐकपागार्परिक्षिता छिपणसेळविसमप्पवायफरिहोवगूढा अञ्मितर-म्मक्वार्टं" अयमेमारूपातुं शीलं यस्य स तथा, ''अधम्माणुष्'' अधमेकतेन्वेऽनुज्ञाऽमीदनं यस्यासावधमोनुज्ञः, अधमोनुगो वा, 'अध-वंदी कल्क्ष्माकारपरिक्षिमा छित्रशैलविषममपातपरिखोपगूढाऽभ्यन्तरपानीया सुदुलेभजलपच्येन्ताऽनेकखण्डी विदितजनदत्तानेगमप्रवेशा सुब-होर्गि मोपन्यायत्रिज्ञनस्य दुप्प्रध्वस्या चाप्यभवत् । तत्र शालाटन्यां चोरपल्ल्यां विजयो नाम चोरसेनापतिः परिवसत्यधाभिको यावहो-॥णीया सुदुछभजलपेरंता अणेगखंडीविदितजणादेण्णानिग्गमप्यवेसा सुबहुयस्सावि क्रवियस्स जणस्स अहमिमए'ति, अयमेण चरतीत्यथामिकः; यावत्करणात् "अथमिमड्रे" अतिश्येन निर्धमः अधमिष्ठः, निष्ठिशकमेकारित्वात्, " अध-हुप्पहंसा यात्रि होत्या, तत्थ णं सालाडबीष् चोरपछीष् विजष् णामं चोरसेणावती परिवसाति, अहमिमष् <u>इ</u>होपचारतः कन्टरप्रान्तः कोलम्यो व्याख्यातः । 'वंसीकलंकपागारपरिक्षिता' यंशीकलङ्का यंजालीमया ब्रितिः सेव प्राकारस्तेन **हुयस्मिति कृषियजणस्स दुप्पहंसा यात्रि होत्थ'त्ति** सुबहोरिष ( कूबियजणस्स'त्ति ) मीषव्यावतेकलोकस्य दुष्प्रध्वस्या चाप्यभवत् , परिक्षिप्ता बेष्टिता या सा तथा, 'छिण्णसेलविसमप्पवायफरिहोवगूढा' छिन्नो-विभक्तोऽवयवान्तरापेक्षया यः ग्रैलस्तस्य संवन्धिनो ो विपमाः प्रपाता-गर्नास्त एव परिखा तयोषगूडा-बेष्टिता या सा तथाः, 'अञ्भितरपाषीय'त्ति, ज्यक्तम्, 'सुदुष्टभजलपेरन्ता

10

7

्रामान । जिस्से । भैसी । भीमान । 12/2 हेनपानिगंहनगरनिगंतप्राः यूरो इडप्रहारः माहमिकः शब्दवेषी ( परिवसति अधार्मकः ) अमिषष्टिप्रथममञ्जः । स तत्र शास्राटब्यां नियेषं परासिषे प्रत्यम् प्राणिनो विक्रन्ततीति हमच्छिन्दमिन्दविकर्षकः, हनेत्याद्यः शब्दाः संस्कृतेऽपि न विरुद्धाः, अनुकरणा-गारेषु निगीत-विश्वंत गशी यस्य स तथा, इती विशेषणचतुष्कं व्यक्तम् । 'शसिलद्विषडममछे' असियष्टिः खङ्गळता तस्यां प्रथम असिलद्विपडममछे। से णं तत्य सालाडबीए चोरपछीए पंचण्हं चोरसताणं आहेबचं० जाब माप्ते हैं। अभूमें न प्रजीकिष्ते गीलं यस्यासाव्यमीप्रलीकी, 'अधम्मपलडाणे' 'अधम्मीप्रायेषु कभैसु प्रकर्षेण स्वयत इत्यथमीप्रजनः, स तथा 'आम्मेण नेत्र चिति कर्णमाणे विहरड् अघमेण पापेन सावद्यानुष्ठानेनैव दहनाद्धननिरुञ्जिनादिना कर्मणा 'धुत्ति' वर्तनां रपत्रादेगाम् । 'लोहियपाणी' प्राणिविकतीन लोहितौ रक्तरकतया पाणी हस्तौ यस्य स तथा । 'बहुणगरणिज्यवजसे' बहुषु लगरिक्यमिति कृता रस्य स्थाने लकारः, 'अथम्मसीलसमुदायारे' अथमै एव शीलं-स्नभावः समुदाचार्थ यत्किचनानुष्ठानं यस्य हन्पयम् कृत्रीणो विद्रतीति आस्ते स्म, 'हणडिद्मिद्वियत्तए' हन=विनाश्य, छिन्धि=द्विषाकुरु, भिन्द=कुन्तादिना भेदं विषे-एतं आणाईमस्तेणावनं इति टब्यम्, न्याल्या च पूर्ववत् । गंठिमेयगाण य'ति घुष्ठुरादिना ये प्रन्थीितेछन्द्नित ते ग्रन्थिमेदकाः, गंगिरोगमाण य'ति, ये मिलिसन्धीन् मिन्द्नित ते संविच्छेद्काः, 'खंडपञ्चाण य'ति, खण्डो-अपरिषुणीः पद्यः-परिधानपट्टो येषां, परिवसइ -आनः प्रयान इत्पर्वः मछो-पोद्धा यः स तथा । 'आहेवचं'ति, अधिपतिकमें, यावत्करणात् "पोरेवचं सामिनं । जाब(हण०) होहियपाणी बहुणगरणिग्गतजसे सूरे द्डपहारे साहसिते THE A

से विजय चोरसेणावई पुरिमतालस्स णगरस्स उत्तरपुरित्थ(च्छि)भिछं जणवयं बहूहिं गामघातेहि य य नग-उपपीडयन्'। 'विहम्मेमाणे'नि विधर्मयन् विगतधमै कुर्वन्, अथपिहारे हि दानादिधमभिगवः स्यादेवेति। 'तझेमाणे' नि, विहरति (सू० १५)। तते णं से विजय चोरसेणावती बहूणं चोराण य पारदाारयाण य गंठिभेयनाण य संधिछेयगाण य खंडपद्दाण य अण्णेसि च बहूणं छिण्णांभिण्णबाहिराहियाणं कूडंगे यावि होत्था, तते णं पुरिमतालस्य नगरस्योत्तरपौरस्त्यं जनपदं वहुभिर्यामघातैश्च नगरघातैश्च गोप्रहणैश्च बन्दियहणैश्च सार्थघातैश्च खनित्रखननैश्चोत्पीडयन् २ द्रन्दः, ततस्तेषां 'कुडंगे'नि, 'कुडङ्गं वंशादिगहनं तद्द् यो दुर्गमत्वेन रक्षणार्थमाश्रयणीयत्वसायम्यति स तथा। 'ओवीलेमाणे'नि, नोरपल्ल्यां पद्घाना चौरशतानामाविपत्यं० यावद् विहरति । ततः स विजयश्रोरसेनापतिबेहूनां चोराणां च पारदारिकाणां च प्रन्थिभेदकानां च सिथच्छेदकानां च खण्डपट्टानां चान्येषां च बहुनां छित्रभित्रबहिष्क्रतानां कुडङ्गं चाप्यभवत्। तत स विजयश्रोरसेनापितिः २ तज्जेमाणे २ तालेमाणे २ नित्थाणे निद्धणे निक्षणे कप्पायं करेमाणे विहरति, महब्बलस्स रण्णो इत्यपरे, "संडिपाडयाणं" इति क्वचिदिति। 'छिन्नभिन्नवाहिराहियाणं' ति छिन्ना हस्तादिष्ठ, भिन्ना नासिकादिष्ठ 'बाहिराहिय'त्ति रघातेहि गोग्गहणेहि य वंदिग्गहणोहि य पंथकोटेहि य खत्तखणणेहि य ओवीलेमाणे २ विहम्मे(द्धंसे)माणे मद्यद्यतादिन्यसनामिभूततया परिषूर्णपरिधानाप्राप्तेः ते खण्डपट्टा-बूतकाराद्यः, "अन्यायन्यवहारिणः" इत्यन्ये, " यूत्तोः " नगरादेनींबाः कृताः, अथवा 'वाहिर'त्ति वाह्याः स्वाचारपरिअंशाद्विशिष्टजनबहिवेतिंनः 'अहिय'िन अहिता ग्रामादिदाहकत्वात्, अतो न्नामा-अन्नामा-

li-to

अभाग्र मसम्-लिगि । एस रिक्सिस नोस्नेनापतेः स्झ्यंनिम भार्याऽभवत्तीन० । तस्य विजयनोस्नेनापनेः पुतः स्कन्य्धिय भार्याया आत्मजोऽ-गिमान् काले तरियन समये असवो असवान् अप्रिमतोले सगर् समवस्तः। परिषद् निर्मता स्ता निर्मतः । अर्थः किषितः। परिषय् भता भ क्षांभाम र महोम् र माउनन र निस्मानान् नियेनान् निय्नणान् ( क्षामं ) कुबीणो विहास्त । महाबरुन्य सहोडभाष्ट्रां कन्पानं निद्रों। निर्मं गीमहित्यादिरहितम्, कुर्वतिति। 'कत्पायं'ति कल्प-उत्तिते य आयः प्रजातो द्रव्यकाभः स क्लायोऽ-तेणं समप्णं समणस्त भगवत्रो '! इत्यादिमणनतः । 'तालेमाणे'नि, ताडयम् कपादिवातेः 'नित्याणे'नि, प्राक्रतत्वाद् निःस्थानं-स्थानन-बंद्सिरी णामं भारिया होत्या 'जहींग' रून्यत्र 'अहींणपुन्यापंत्रिटियसरीरा लक्खणनंजणयुणोववेता' इत्नादि द्रष्टव्यम्। 'अवओड्य' इत्यत्र यानत्करणात् । 'पडमंसि चनमंसि'ति, प्रथमे परिसा निग्मया, राया पुने खंद्सिरीए भारियाए अत्तए अभग्गसेणे नामं والمارات والمارات والمراجعة والمراجع प्रिमितालनगरे समोसहे, ार्गाउगन्गणवर्तं उन्तान क्वनामं नेह्नुष्प्यमत् इत्यादि द्रष्टव्यम्, व्याख्या च प्राम्बिति। मेत जातुणगम्णपत् अभिकानमं २ कपायं मेण्डति । तस्त मं विजयस्त चोर्सेणावड्स ित्सिको नाम यारपोडभगग्नीय --- ( पूर्णपद्मित्रिययानीसे नितातपरिणतमात्रयोयनमनुप्राप्तः ) नेगाओ, धम्मी कहिओ, परिसा राया य पडिमाओ । तेणं कालेणं तेणं कालेणं तेणं समाएणं सम्रणे भगवं० अहीण । तस्स मं विजयचोरतेष र मास्याम् । 

世世

वाएंति २ कसप्पहारोहिं तालेमाणा २ कलुणं काकणिमंसाइं खावेंति (खावित्ता) रुहिरपाणं च पाएंति। तदाणंतरं च णं दोचंसि चचरांसि अट्ट चुछमाउयाओ अग्गओ घाएंति २। एवं तचे चचरे अट्ट महा-त्यादयन्ति, क्षिरपानं च पाययन्ति । तद्नन्तरं च द्वितीये चत्वरेऽष्टश्चद्रमातृरयतो घातयन्ति २ । एवं हृतीये चत्वरेऽष्ट महापिनृन्। चतुर्येऽष्ट-पासति अवओड्य० जाव उग्घोसे-चुछमाउयाउ'िंग, पित्रलघुआत्जायाः, अथवा मातुलेघुसपत्नीः। एवं 'तच्'िंग, तृतीये चर्चरे। 'अड्ड महापिउए'िंग, अष्टो महा-महामाउयाउ'िन याबद् राजमागै समबगाढः। तत्र यहून् ततमं पुरुपं गजपुरुपाः प्रथमे चत्वरे निपाद्यन्ति, निपाद्याष्ट्रो शुद्रपितृनप्रतो घातयन्ति धातयित्वा कपप्रहारेसाड्यमानाः कर्णं काकणिमांसं-अस्मध्य हस्तिनः पश्यति, बहूनश्राम् , पुरुषाम् , सत्रद्धबद्धकबचाम् । तेषां पुरुषाणां मध्यगतमेकं पुरुषं पश्यति अवकोटक० याबदुद्धोष्यमाणम् करणास्पदं तं पुरुषं, क्रियाविशेषणं-चेदम्,-'काकणिमंसाइं'ति, मांसश्वरूणखण्डानि । ' दोचंसि चचरंसि 'सि, द्वितीये चर्चर् महावीरस्स जेट्टे अंतेवासी गोयमे जाव रायमग्गं समोगाढे, तत्थ णं बहुवे हत्थी पासति, बहुवे निसियावेति २, अट्ट चुछपिउए इति वाच्यम् । 'चउरिथ'सि चतुर्थे चत्वरे। 'अडु रक्रे-स्थानिक्षेपे 'निसियावेति'नि, निवेशयन्ति, 'अड्ड चुछपिउए'नि, अधौ अधुपितृन् ,पितुलेघुआतृनित्यथं:। प्रतिगतः । तस्मिम् काले तस्मिन् समये श्रमणस्य भगवतो महावीरस्य ब्येघोऽन्तेवासी गौतमो पढमंसि चचरंसि सण्णाद्रवह्नकवप्, तेसि णं पुरिसाणं मञ्झगतं पितृन् पितुज्येष्टआतृन्, एवं यावत् करणात् 'अग्गड वाएंति' रायपुरिसा जमाणं। तते णं तं प्रसि

ප්චේ

1301 電車工事 र्गत्ति गोन, जायो 'प्याउ' ति, यृतियुः नवमे 'नतुय' ति, नत्तृम् पोत्रान् दोहित्रान् वा, द्यमे 'नचुहेड' ति नप्तृः गोनिहोतिती गो, एकाद्ये 'नपुणावह' ति नप्तृकापतीत् पौत्रीणां दोहित्तीणां वा भतेत्। द्राह्ये 'नमुणावह' ति नप्तृ-गिनीः पौत्रदोतित्रभागाः। प्रयोह्ये 'निडस्मियपह्य' ति पितृष्वस्पतिकान्, तत्र पितुः स्वमारो भिनन्यस्तामां पत्तय एव पतिका नरप्रमानीः । यनोद्देन निक्टमसूननीन् । नतुरेने पिक्टनमृः । पजाद्दे मात्रज्वस्तपनि । पोडसे मात्रज्वमृः । नप्तदेने मातुरजानीः । अष्टा-क्षेत्रकोपं मित्रमातिनित्त करातम् । निषयित्तममनो यातमनित, यातयित्य कपमत्।रेसाङ्गमानाः २ कर्णं काकणिमांस नाय्यनित, फिटम, चटरथे अह महामाउयाओ, पंनमे पुने, उंटे सुणहाओ, सत्तमे जामाउया, अहमे ज्याओ, पानमे त्या, रतमे णन्हेंओ, एकारमने णनुयावहै, बारसमे णन्हेंणीओ, तेरसमे फिटास्तयपतिया, नोह-। जतुर्व 'गिउस्मियाउ'ति पिरुस्यमुः-जनकभितिः, पञ्चद्ये 'माउस्मियापड्य'ति, मात्रानस्पतिकान्, जननीभिगिति-मगून, गाउने भाउसियाउ नि मातृष्यमुः जननीभितिनैः सप्तद्ये भामियाउ नि, मातुलभायाः, अष्ठाद्येऽत्रयेषं भिन्नाइनियम् गदामातुः । पत्रमे पुणान् । पष्टे म्तुपाः । मममे जामातृन् । अष्टमे दुहितृः । नवमे नष्तृन् । वजमे नष्तुः । एकाद्ये नष्ट्यापतीम् । बाद्ये भितुज्याष्ट्रजायः, जयना मातुज्येष्ठाः मपत्नीः, पत्रमे चत्वरे पुत्रानग्रतो घातयतित, पष्ठ म्तुपा-नप्ः। मप्तमे 'जामात्कान्'-णन्या, दत्तमं णन्द्रंओ, एकारममे पगुयावहे, नार्समे णन्द्रणीओ, तर्समे विडाहेतयपतिया, चोह तमे विडाहेतयाओ, पण्णरसमे माडितियापतिया, सोळसमे माडिसियाओ, सत्तरसमे मामियाओ, अद्रार्समं अवतिसं मिननाइनियगसयणसंगिषपरियणं अम्मओ घाति २ ता कत्तप्तारिहं तालेमाणे 

णिग्गते एवं वयासी;—एवं खेळु अहं भंते!तं चेव जाव से णं भंते! पुरिसे पुवभवे के आसी? जाव विहरित। एवं खेळु गोतमा! तेणं कालेणं तेणं समएणं इहेव जंबुहीवे २ भारहे वासे पुरिमताले नामं नगरे होत्था, रिष्ट०। तत्थ णं पुरिमताले अदिष नामं राया होत्था, महया०। तत्थ णं पुरिमताले निन्नए नामं अंडयवाणियए होत्था, अड्डे जाव अपरिभूते, अहिम्मए जाव दुप्पिडियाणंदे। तस्स णं णिणणयस्स तते णंसे भगवं गोतमे तं पुरिसं पासति २ ता अयं (इमं) एयारूवे अज्झारिथए० समुप्पणणे जाव तहेव सयणसंबंधिपरियण'ति, मित्राणि सुहदः, ज्ञातयः समानजातीयाः, निजकाः स्वजनाः मातुलपुत्रादयः, संबन्धिनः-श्रशुर्-किसपानं च पाययन्ति। ततः स भगवान् गौतमस्तं पुरुपं पर्यात दृष्टाऽयमेतदूप आध्यात्मिकः० समुत्पन्नो यावत् तथैच निर्गत एवमवदत्, – 'अंदू ' इह यावत्करणाद 'दिते विच्छाडियविपुलभत्तपाणे' इत्यादि 'बहुजणस्स अपरिभूए' इत्येतद्न्तं दृश्यम् । दिन्नभइभत्तवे-तत्र पुरिमताले यावद् दुष्प्रसानन्दः। ऋछ० उरितो नाम राजाऽभवद् महा० तत्र च पुरिमताले निर्णयो नामाण्डवाणिजोऽभूदाढयो यावदपरिभूतः, अधार्मिको 'एवं राखु गीतम । तरिमन् काले तस्मिन् समये इहैव जम्बूद्वीपे द्वीपे भारते वर्षे प्ररिमताले नाम नगरमभवद् एवं सल्यहं भदन्त ! तदेव यावत् स भदन्न ! पुरुषः पूर्वभवे क आसीद् यानेद् विहरति ! २ कलुणं काकणिमंसाइं खावेति, राहिरपाणं च पाएति (सू. १६)। गालादयः, परिजनः-दासीदासादिस्ततो द्वन्द्रः, अतस्ताच् ( तत् )। ( स्र० १६ )

अंद्रग्याणियगस्स यह्ने पुरिसा दिणणमतिमस्नेयणा कहाकहि कोहालियाओ य परिथयापिडण् य क्ष्य किंगमगण्डमणितस्य यद्ना पुरुषा द्नाभूनिभक्तदेतनाः कल्या हत्यि कु सङ्काध्यकापिटकानि च मृन्नित पुरिमतालम्य नगरस्य परि-सत्याणा सिन स्तोपनयन्ति । सत्तरम्य निर्णयसाण्ड्याणिजस्य बहुनः पुरुषा क्तमुति बहूनि काक्षणञ्जनि च यात्रम् क्रम्कुट्राण्डानि गर्भनोषु । गत्मः कारमण्यानि च मूस्मण्यानि च पारेपती-दिष्टिभी-यत्ती-मयूरी-कुमकुटमण्यानि च, अन्येणां चापि यहूनां अखनस्स्थलन् तते णं तस्स निन्नयस्स अंडवाणियगस्स वहवे पुरिसा दिणणभङ्० वहवे काइअंडए य जाव कुरकु-रना सारीनामण्यानि गुन्नन्ति । गुरीन्ता परियमापिटमानि भरन्ति, भुत्ना यत्रैय निर्णयोऽण्डवाणिजस्तत्रैयोपागच्छनि, उपागल निर्ण-गण'लि, दगं, भुनिमन्तद्यां वेतनं मृत्यं वेषां ने नथा, तत्र भृतिः-द्रम्मादिवत्तेनां, मन्तं तु घृतकणादि, 'कछाकछि'ति, कत्ये च कत्ये च कत्याकिण-अनुदिनमित्यर्थः, 'कुरालिका' भूखनित्रविशेषाः । 'परियकाषिटकानि' वंजमयमाजनविशेषाः, काकी घूकी गेगहानि, गुरिमतालस्त गगरस्त परिपेरंतेसु बहुचे काइअंडए य घूतिअंडए य पारेबङ्० टिहिभिचिन. मगूरि-कुम्कुडिअंडम् य, अगणेंसि चेव वहूणं जल्यर-थलयर-खह्यरमाईणं अंडाइं गेण्हंति गेण्हेत्ता पत्ययपिडमाइं भरेंति २ जेणेव निज्ञम् अंडवाणियम् तेणेव उवा० २ निन्नयस्स अंडवाणियगस्स उवणेंति। المعادية المراق المراقع المراق रेष्ट्रिगी यकी मयूरी सुम्कृटी च प्रमिद्धाः, अण्डाकानि च प्रतीतान्येवेति । 中国と \*\*\*

THE SALE OF THE SALE HES SALE IN SALE IN THE SALE IN T य इंगालेमु य तलेंति, भजेंति, सोक्षिति तलेंता भजेंता सोहंता य रायमम्मे अंतरावणींसि अंडयपणिएणं वित्तिं कप्पेमाणा विहरंति, अप्पणावि य णं से नित्रयष् अंडवाणियष् तेहिं वहूहिं काइअंडषहि य जावकुक्कुडिअंडषहि य सोह्येहिं तलिष्छि भज्जिषहिं मुरं च ५ आसाषमाणे ४ विहरित। तते णं से नित्रष् 'तवएसु य'ति, तवकानि-सुकुमारिकादितलनभाजनानि 'कब्छीसु य'ति, कबल्यो-गुडादिपाकभाजनानि 'कंदुसु य'िन नान्येयां न वारूनां जलस्थटखचरादीनामण्डानि तव्केषु च कवहीषु च कन्दुषु च भजेनकेषु चाङ्गारेषु च तळन्ति, भुज्जन्ति, पचन्ति । तछन्तो मुरान्तः पचन्तश्च राजमार्गेऽन्तरापणेऽण्डपण्येन द्यत्ति कल्पमाना विहर्गन्त । आत्मनापि च स निर्णयोऽण्डवाणिजस्तेवैह्नभिः काक्यण्डैश्च अंडवाणियए एयकम्मे ४ सुबहुं पावं कम्मं समाज्जिणिता एगं वाससहस्सं परमाउं पालइत्ता कालमासे यायत कुम्कुट्यण्डेश्र पक्वैस्तछितैभैष्टैः सुरां च ५ आस्वाद्यम् ४ विह्रति । ततः स निर्णयोऽण्डवाणिज एतत्कर्मो ४ सुबहु पापकम्मै डिअंडए य अपणेसि च बहुणं जलयरथलयरबहयरमाईणं अंडए तबएसु य कब्हीसु य कंदूसु य भज्जणएसु अग्रौ स्नेहेन 'मज्जेंति' मुज्जन्ति थानायत् पचन्ति 'सीछिति य'त्ति, ओद्नामिय राष्यन्ति, खण्डश्रो या कुर्वन्ति, अंतरायणंसि'त्ति, समग्रें हं वर्षसङमं परमायुः पाळिथित्वा काळमास काळं छत्वा हतीयायां प्रथिञ्यामुत्क्रष्टसप्तमागरोपमस्थितिकेषु नैर्ययेकतयोपपन्नः । कन्द्वो मण्डकादिपचनमाजनानि, 'मज्जणएसु य'नि मर्जनकानि कर्पराणि घानापाकभाजनानि, अङ्गाराश्र प्रतीताः, 'तलेति' राजमार्गमध्यभागवर्सिहट्टे, 'अंडयपणिएणं'ति 'अंण्डकपण्येन 'सुरं चे'त्यादि प्राग्वत् ॥ या रिश्वाया रिश्वाया रिश्वाया रिश्वाया रिश्वाया रिश्वाया

1361 गरम्पियो भागीमा अन्यक्ष क्यानित् तिषु मामेषु बहुपरिक्रोज्यमेतद्वो नोहदः प्राहुभूतः,—'धन्यास्ता अन्याः ४ या बहुभिनित् रित्राक्षणं पानं मादिम मादिम मुमं न ५ आस्वाद्यमानाः ४ विह्यनित। निर्मितमुस्तोत्तरामाताः पुरुपनेपण्याः मञ्जद्भः यात्रत् प्रहरू-महुपितपुणणाणं इमे एयारुवे दोहले पाउन्मूते,—'धणणाओ णं ताओ अम्मचाओ ४ जा णं चहुहिं मित-णाइतियमसवणसंबंधिपरियणमहिलाहिं अणणाहि य चोरमहिलाहिं सिंहें संपरिबुडाणहाया जाव० व्यक्तित्रारम्यान्यान्यान्यान्यान्यान्यत्यन्यान्यित्र नोर्याह्ळापिः मार्थं संपरिष्ठताः स्ताता यात्रत्य प्रायत्रिताः नवेळिद्वार्युणिता तिमियभुचुनरागयाओ पुरिसनेनिध्यम सणणह्य० जाव पहरणानरणा भरिष्हिं फलण्हिं जिक्किड्रार्हि 'तिमियम्मुतासामाउ'ति त्रेमिताः-फ्रतमोजनाः, मुक्तोत्तरं-भोजनामन्तरमागता उत्तिरथाने यास्तास्तथा। 'पुरिसनेय-भ मार्ग जनमहर्षात् सामादन्या नीरपन्त्यां विजयस्य नीरसेनापतेः स्कन्द्भियो भाषीयाः कुक्षी प्रजतयोपपन्नः । ततस्तर्याः पायिन्छना समालंकारभूसिता विउलं असणं पाणं खाइमं साइमं सुरं च ५ आसादेमाणा ४ विहर्गति। में मं नओ अमांतरं उन्नित्ता इहेन माळाडनीए नोरपछीए विजयस्त नोरसेणानइस्त खंद्रिसरीए भारि-काले किया तत्त्राम् गुडवीम् डकोससन्तमामरोगमहितीम्स जेरड्म्स जेरड्चनाम् उन्नणणे ॥ स्० (१७) याम् कुन्जित पुननाम् उनमणे । तते णं तीसे संद्तितिए भारियाष् अण्णया क्वाति तिण्हं मासाणं きこ

भिष्फ्रियण्याभिः, क्षिप्रतूरेण बाद्यमानेन महतोत्क्रष्ट० यावत् समुद्ररवभूतमिव कुर्वेखः शालाटच्यां चोरपल्ल्यां सर्वेतः समन्ताद्वकोकयन्त्यः डिमिटि णावरणा भूतैः करतेः, निष्क्रप्रेरसिभिः, अंसागतेणतूणैः, सजीवैर्धनुभिः समुस्थितैः शरैः, समुद्धासिताभिदोमभिः, अम्बिताभिरवसारिता जलाधशब्द डांकेडसंहिनायवोलफलफलरवेणं' तत्रोत्कृष्ट्यानन्द्महाध्वांनेः, सिहनाद्य-प्रांसद्धः, समुखासियाहि दामाहि 'दाहाहिं' इति काचित् , तत्र प्रहर्णावेशेषेद्रिववंशाप्रन्यस्तदात्ररूपंः। यावत्करणादिदं दृश्यम्-'सन्नद्धवद्ववस्मियकवृत्या उप्पीलियसरासणपट्टिया द्धततूर्येण वाद्यमानेन, 'महया आहिंदेमाणीओ 'भरिएहिं'ति, हस्तपाशितैः 'फलएहिंति 'नोजेहिंगि, समुह्रवभूयाप वर्गि, उक्किट्ट० जाव निषिड्राहिं/ति, कोशकादाकृष्टेः 'असीहिं'ति, खङ्गेः 'अंसागएहिं'ति स्कन्धदेशमागतैः पृष्ठदेशे बन्धनात् मणूहिं ति कोदण्डकैः । समुक्तिनोहिं सरेहिं ति, निसम्भिं गणैन्यक्तियजितो ध्वनिरेव, कलकल्थ न्यक्तवचनः स एव, तछक्षणो यो रवः स तथा तेन " सरोहे 'फरुयंटाहिं'ति, जङ्गाघिटकाभिः 'छिप्पतूरेणं वन्जमाणेणं महया गीवेज्जा विमलवराचिषपद्वा गहियाउहपहरणावरणा'रा,। ज्याख्या तु प्रागिषेति। समुक्तिबत्तेहि सबआ पाहिं'ति, समुछासिताभिः 'दामाहिं'ति, पाशकविशेषेः, ' करेमाणीओ सालाडवीए चोरपछीए असीहिं अंसागतेहिं तोणेहिं सजीवेहिं सजीवेहिं'ति सजीवै:-कोव्यारोपितप्रत्यञ्जै: 'ः इत्यत्र इत्यत्र याचरकरणादिद् दक्यम्-'मह्या त्यय'िन, क्रतपुरुषनेपथ्याः 'सन्नद्ध' रियाहिं'ति, ग्रलम्बिताभिः '

皇皇安定书 || c & | मा गरन् भिरियमंगमया भिन, —' एतं गन्ड देशतु० मम जिषु मासेषु वायत् ध्यायामि '। ततः स विज्ञायोरोनापतिः सन्त्यतीभागीर्ग ३ मार्ग्ययामाः २ रेग्टर् निवयन्ति । तद् यमार्गिष यात्रद् विनयामि र्जति कृत्या तम्मिन् येग्ट्रेडिनिनीयमाने यात्रद् प्णायसि । तपः त राजण्डोसमायितः महन्मनिम्मिनम्बन्ता वात्रम् पद्यति, ह्युवमनद्य,,-क्ति सं देनानुषिते ! अपात्त अनुसर् स्पानिति ? । माः इन्हें मिगोति, तं नड़ णं अहोपे जान निणिज्ञामिं' ति कद्ह तीस वोहलंसि अतिणिज्ञामाणांसि जान शिवानि । तते णं से विजय नोरसेणानती खंदासिरिभारिय ओहत० जान पातति, २ एवं नयासी,-देनाणु॰ मम तिण्डं मासाणं जाव टिश्चयामि' तते णं से विज्ञण् चोरसेणावती खंद्रिसीभारियाण् अंतिते पामित तन्तायितित्यत्ये, 'पानमण्डलम्' इति गम्यने । 'तं जह अहंपि'नि तत् तस्पात्, मध्यत्रमित, अं यावत्तरणादिदं रक्षम् गृहीः तिनमाजुणियमणगणासंधिपतियणमहिलाहि अन्नाहि य' इत्याहि.। दोहरु विणिज्जामीति दोहदं ज्यापनमामि ' नि कहु ', भृषितानटाष्ट्रिकामानिष्यानीष्यातां ध्यायन्तीं प्रथति, ट्यूनमबादीत्-'कि णं त्वं द्वासुप्रिये ! अफनमानःमङ्गल्पा' इत्यादि गिर्योण 'िक्षणं तुमं देवाणुं० ओहत्त० जाव वियासि !', तते णं सा खंद्रिसिरी विजयं एवं चयासी,-'एवं खत्रु श्री कुना शित हेनोः । 'सीम दोद्रलीम'नि, तस्मिन् दोहदे, इह यानत्करणात् ''अविणिड्जमाणीस सुक्रा भुक्रा णिम्मेमा उत्हरेगा इत्यादि, 'अद्वतानोत्ताया दिवाति' इत्येतदन्तं द्ययमिति । 'ततो णं से', विजयशोरसेनापतिः स्कन्द्शियं भागीमुप्तनमनसङ्ग्यो दोहलंस अविणिलमाणंसि 'एपागिति' उतीदं पारगमनुस्ति मूर्ग मूर्मानम् । 当一人ととこれない A CONTRACTOR OF THE PARTY OF TH THE STATE OF THE S

अण्गाहिय बहूहिं चोरमहिलाहिं सिन्धं संपरिबुडा पहाया जाव विभूसिता विपुलं असणं० ४ सुरं च ५ आसा-तते णं सा खंद्रिसीभारिया विजय्णं चोरसेणावतिणा अञ्भणुण्णाया समाणी हटुं० वहार्डि मित्त० जाव अन्तिक एतमर्थं अुत्वा निजम्य स्कन्त्श्रीभायमिवमवादीत्,—"यथामुखे देवानुप्रिये !' इत्येतमर्थं प्रतित्रणोति। ततः सा स्कन्द्श्रीभीयो विजयेन चोरमेनापतिनाऽम्यनुजाता सती हट्ट० वहुभिभित्रे यावद्न्यामित्र वहुभित्रोरमहिलाभिः सार्धं संपरिवृता स्नाता यावद् विभू-पिना विपुलमशन ४ सुरां च ५ आस्वादयन्ती ४ विहरति । जिमितभुक्तोत्तरागता पुरुषनेपथ्या सन्नद्धतद्भ० याबदाहिण्डमाना दोहदं तते णं साखंद्रसिरिभारिया संपुण्णद्रोहला संमाणियद्रोहला विणीयद्रोहला बोच्छिण्णद्रोहला संपन्नद्रोहला तं गन्मं सुहं सुहेणंपरिवहति । तते णं सा खंदसिरी चोरसेणावतिणी णवण्हं मासाणं बहुपिडपुण्णाण एयमट्टं सीचा निसम्म० खंद्रिसिर्मारियं एवं वयासी,-'अहासुहं देवाणुष्पिष्'ति एयमट्टं पिडिसुणेति विनयति । ततः मा स्कन्तर्शमायौ सपूर्णदोहता संमानीतदोहदा विनीतदोहदा ब्युच्छित्रदोहदा सपन्नदोहदा तं गर्म सुखं सुखेन देमाणी विहराति । जिमियभुत्तुत्तरागया युरिसणेवरिथया सण्णद्भवद्भ० जावं आहिंडमाणी डोहरुं । जिते। ततः सा स्कन्द्रशीओरसेनापतिपत्नी नवसु मासेषु बहुपरिपूर्णेषु दारकं प्रजाता दार्ग प्याता मान्त्रकामान्त्रवामान्त्रवामान्त्रवामान्त्रवामान्त्रवामान्त्रवामान्त्रवामान्त्रवामान्त्रवामान्त्रवामान्त्रवामा

कुर मर्वेशाएं दिवसे मियुष्टमहासं ५ उपस्थारती, मिन्नाति आमन्त्रयति, आमन्त्र यावन् तस्येव मिन्नाति पुरत एतम्बादीत्-रुमारा पत्र भागिर मारा परिग्नी। नमः तो इसम्मनंनहमार उत्मुक्त्यान्त्रमानोऽसम्स् । यद् त्रार्का यात्रपृक्षी यातो भान्त दिन्ता मं ति, द्यापापं मानम् दियतिपतितं- कुन्यमामानं पुत्रजनमानुष्ठानं तत् तथा 'शह दारियाउ'ति, अस्यामाथः-'ताः णं तस्य अभ ' अमासृभा हमसिम् अर्घ माभीने महम्मेत्रुणे टीह्नः, प्रहर्मुनः, तसाष्ट् भवत्वस्तानं वारकोऽभवतेनो वाम्ना । ततः मोऽभयगेतः न्ते गं से अभग्मतेणकुमारे उम्मुक्त्वालभावे यावि होत्या, अड दारियाओ जाव अडुओ दाओ मतो (रामकोरमेनापनिरास्य स्राह्म महन्त्र महन्त्र स्थान्त्र हिथनिपनितं कोति । नतः स विजयबोरमेनापनिसम् 'अद्वितामसमायुराएंगं नि, महत्या-वनमुनाणांदिसंपदा वन्कारः-पुजाविजेणस्तस्य समुद्यः समुदायो पः स तथा तेन, 'द्रमरनं संकि। मने मं में किता, नोरसेणावती तस्त दारगस्त एकार्त्तने दिनसे विपुछं असर्णं० ४ उनम्हा-ज्ञाति, मिननाति आमंति २ जावतस्तेव मिनानाति पुरओ एवं बयासी-'जम्हा णं अम्हं इमांति ने ण विज्ञण नेएनेणावनी नस्त व्यक्षास्त महत्या इत्तिसहाग्समुद्णणं दसरतं विह्वाहियं स्तमांसि मन्भगवंति समाणांसि इसे एयाक्वे दोहले पाउन्सूते, तम्हा णं होउ अम्हं दारए अभग्यासेणे णातिणं। तते णं से अन्मणतेणे कुमारे पंचयाई० जाव परिवद्यति। ( सु० १८ )

न्या व्यान्त्रिक विकास विता विकास वि उस्पिं॰ भुंजित । तते णं से विजय चोरसेणावती अण्णया कयाती कालधम्मुणा संजुसे । तते णं से सेणावइस्स महया इड्विसकारसमुद्यणं णीहरणं करेति २ बहुइं लोइयाइं मयकिचाइं करेति २ केवड् संपरिवृतो गारोणकुमारस्स अम्मापियरो अभग्गरोणं कुमारं सोहणंसितिहिकरणनक्खनामुहुनांसि अझहिं दारियाहिं सदिं एगदिवसेणं पाणि दाउ'िंग, अष्ट परिमाणमस्येति अष्टको दायो दानं 'वाच्य,' इति शेषः, स चैवम्–'अड्ड हिरणाकोडीओ अड्ड ' सुवन्नकोडीओ इत्यादि विजयस्त चार-गेण्हावेसु'िन यावत्करणाचेदं दृश्यम्–'तष् णं तस्स अभग्गसेणकुमारस्स अम्मापियरो इसं एयारूवं पीइदाणं दुलयंति' इति । 'अद्घओ भुंजइ'िन, अस्यायमर्थः-''तए णं से अभग्गसेणे कुमारे उिंपपासायवरगए फ़हमाणेहिं मुइंगमत्थएहिं वरतरुणीसंषउनेहिं बनीसइ-मद्रेहिं नाडएहिं उवगिजमाणे तिउले माणुस्सए कामभोगे पच्छभनमाणे विहर्द्, इति 'महत्थं'ति महाप्रयोजनम्। 'महग्यं'ति महा-लीकिकानि मृतकृत्यानि करोति, याबद् अड पेसणकारियाउ, अनं च विषुलघणकणगरययमणिमोनियसंखसिलप्वालर्गरयणमाइयं संतसारसावएअं ' इति । 'उत्पि कुमारः पञ्चभित्रोर्गतेः साध अभग्गसेणे कुमारे पंचहिं चोरसतेहिं सिद्धिं संपरिबुडे रोयमाणे कंद्माणे विलवमाणे । रदन् कन्दन् विलयन् विलयस्य चोरसेनापतेमेहता ऋद्धिसत्कारसमुद्येन निस्सरणं करोति क्रत्या बहूनि सुर्मते । ततः स चिजयत्रोग्सेनापतिरन्यदा कदाचित् कालघर्मेण संयुक्तः । ततो सोऽभग्नहेनः (महु)मूल्यम् । 'महरिहं'ति महतो योग्यमिति क्षिण्यामान्त्र्यामान्त्र्यामान्त्र्यामान्त्र

美丰丰富 **表** 30 31 गानितणा नहुम्पामवायावणाहि ताविया समाणा अवणमणणं सङ्ग्वंति, २ एवं नयाती—'एवं खुट्ट रेताणु० अभग्यतेणे नोरतेणावती पुरिमताळस्त णगरस्त उत्तरिष्ठं जणवयं बहूहिं गामघातेहिं जाव निद्रणे करेमाणे विहरति, ते सेवं खब्ड देवाणुष्पेया! पुरिमताले णगरे महञ्जलस्त राण्णे एतमहें त्र है गाइ० तममासेन्द्रनोर्सेनापतिः प्रिनातस्य नगर्स्योत्ताहं तनपदं नद्रानमांमगतितिन्द् निर्मान् कुर्यन् विद्यति । ततः पेत्रः हालेगं अप्पसोण् जाते याचि होत्या, तते णं ताइं पंच चोरसचाइं अत्रया क्याती अभग्मतेणं कुमारं नेक्सिनेन्ते, तते णं ने जाणवयपुरिसा एतमड् अण्णमणणं पित्रमुणेति २ महत्यं महत्यं महरिहं रायिहं राले जानप्ता पुराम आमनेसेन पोर्सेनापसिना गुआममाननामिस्थापियाः मन्तोऽन्तोन्तं अत्रात्मसित् २ मानम्त्र्-एष जालाड गीए चोरण श्रीए मह्या २ चोरसेणाबड्चाए अभिसिचिति। तते णं से अभग्मतेणे कुमारे नेरे-सेणायनी जाते अहमिमा, जाव कप्पायं मेणहति। तते णं ते जाणवाया पुरिसा अभग्यासेणेण चोरसे-र्गा कियम महिमानम्योको जानकायमयम् । कामानि पज्ञ नोष्यतान्यन्या क्यानिष्यन्त्येनं कुमारं सावहत्त्यां नोष्पन्त्नां भड़ता २ गोरमेनामिनिमामिनिमानिमा निमः मोडमन्येतः कुमारत्रोरतेनापिनित्रोत्रापिको त्राम कन्यापं ग्रह्मति । · 通知是我们的1-我们实际不知识的1-为一种 

सालाडांब । तते णं से महच्चले ततः स महावछो राजा तेपां जानपदानां पुरुपाणामन्तिक एतमथँ श्रुत्या निशम्याशुरुपो यावत् सुधा ज्वलंखिचिलिकां भुकुरि छळाटे संद्वत्य तिवालय न्यछ देवानुप्रियाः ! पुरिमताले नगरे महावलस्य राज्ञ एतमर्थं विज्ञपिष्युम् '।ततस्ते जानपद्पुरुपा एतमर्थेमन्योन्यं प्रतिश्रण्वन्ति २ महार्थं महायै महाहै राजाहै प्राभुतं गृहन्ति २ यत्रेव पुरिमताळं नगरं यत्रेव महावलो राजा तत्रेवोपागताः २ महावलाय राजे तद् महार्थ यायत ाहुडं गेणहंति २ ता जेणेव पुरिमताले णगरे जेणेव महब्बले राया तेणेव उवागते २ महब्बलस्स रण्णो निरुद्धिया. अभग्नसंन्यार्सना मुहसुहैण तिरम्माच बहुभिर्योमवातेत्र यावद् निर्धनान् कुर्वन् विहरति । तदिन्छामः स्वामिन् ! युष्माकं बाहुन्छायापरिगृहीता निर्भया पुरिसाणं अंतिए एयमट्टं सोचा निसम्म आसुरुते जाव मिसिमिसेमाणे पाहुडं उवणेंति २ करयलअजिं कहु महन्वलं रायं एवं वयासी, एवं खिट्ट देन्यापिया प्रामुतमुपनयनित २ करतलाञ्चलि कृत्वा महावळराजानमेवमवद्न्,—' एवं खळु स्वामिन् ' शालाटञ्यास्रोरपल्ल्या ! तुन्भं बाहुच्छायापारेगाहिया निन्भया णिरुविग्गा राज एतमट्टं विणावेति। सालाडवीए चोरपर्छाए अभग्गसेणे चोरसेणावती अम्हे बहुहि गामघातेहि य तमं. वयासी;-गच्छह णं मुतसुदेन परिबस्तुम् ' इति कृत्वा पाड्पतिताः प्राञ्जलिपुटा महावळं राजानमेनमर्थं विज्ञपयन्ति राय महञ्बल भेउडि निडाले साहट्टं दंडं सहावेति २ चा एवं पजालउडा विहरात, तं इच्छामि णं सामी ! कहु पाद्पांडेया जाणवयाण त महस्य जाव नित्तप् नि 渠 अध्यामा निस्ताम

双記中-| | 11年] | 17年: | | पुरिमताले णगरे महब्बलेणं रणणा महया भडचडगरेणं दंडे आणते-' गच्छह णं तुमे देवाणु॰ साला-भूते: फलकैयीवत् क्षिप्रतूरेण वाद्यमानेन महतोत्क्रष्ट० यावत् कुर्वन् पुरिमतालात्रगराद् मध्येन निर्गच्छति येनैव शालाटवी चोरपही तेनैव स्तजेबोपागताः, उपागत करतळ० यावदेवमवादिपुः,-'एवं खळु देवानुप्रिय! पुरिमताले नगरे महावलेन राज्ञा महता भटयुन्देन दण्ड आझप्तः हण्डं शत्दाययति २ ण्वमवाटीत्,-'गच्छ त्यं देवानुप्रिय ! शाळाटवीं चोरपहीं विछुम्प २ अभग्नतेनं चोरसेनापित जीवमाहं गृहाण २ मायमुपनय'। ततः स टण्डः 'तथा' इति विनयेनेनमर्थं प्रतिजृणोति। ततः स दण्डो बहुमिः पुरुपैः सन्नद्ध० यावत्प्रहरणेः सार्थं संपरिद्यतो प्रहारेच्छुकमनाः। ततस्तस्याभग्नसेनस्य चोरसेनापतेश्वारपुरुषा अनया कथया ळव्यार्थाः सन्तो यत्रेव शालाटवी चोरपछी, यत्रैवाभग्नसेनब्रोर-मतालं णगरं मडझंमडझेणं निग्गचछति २ ता जेणेव सालाडवी चोरपछीए तेणेव पहारेत्थगमणाप्, तते जेणेव अभग्गतेणे चोरे, तेणेव उवागच्छंति २ करचल० जाव एवं वयासी;—' एवं खळु देवाणुप्पिया, चोरपछि विद्यपार्टि २ अभग्गतेणं चोरतेणावइं जीवग्गाहं गेणहाहि २ मम उवणेहि, तते णं से दंहे गं तस्स अभग्गं० चोर्सेणावईस्स चार्पुरिसा इमीसे कहाए लद्धडा समाणा जेणेव सालाडवी चोरपछी, तह ' नि निणष्णं एयमट्टं पिटसुणेति, तते णं से दंडे नहिंहं पुरिसेहिं साणाद्य० जान पहरणीहें सिंह संपरिवुडे मगइएहिं फलएहिं जान छिप्तूरेणं बजासाणेणं मह्या २ जान उक्षिटिं० जान करेमाणे पुरि-द्यामा प्रत्यामा प्रत्यामा प्रत्याच 安息

णं से दंडे महया भडचडगरेणं जेणेव सालाडवी चोरपछी तेणेव पहारेत्थगमणाए '। तते णं से अभग्गसेणे चोरसेणावती तेसिं चारपुरिसाणं अंतिष् एयमट्टं सोचा निसम्म पंच चोर-सताइं सहाबेति सहावेता एवं वयासी;—'एवं खळु देवाणुष्पिया! पुरिमताले णगरे महच्चले जाव ते-णेव पहारेच्छगमणे ( णाष् ) आगते'। तते णं से अभग्गतेणे ताइं पंच चोरसताइं एवं वयासी— 'तं सेयं खछ देवाणु पिया ! अम्हं तं दंडं सालाडविं चोरपिं असंपत्तं अंतरा चेव, पिते तिते 'दंडं' ति, 'दण्डनायकम् । जीवग्गाहं गेण्हाहि' ति, जीवन्तं गृहाणेत्यर्थः। २ 'भडचडगरेणं ' ति, योघष्टन्देन। 'मगइएहिं' नियम्य पञ्च चोरशतानि शन्द्यति । शन्द्यित्वैवमवादीत्,-' एवं खङ् देवानुप्रियाः ! पुरिमताले नगरे महावलो यावतेनैव प्रहारेच्छु-हमना आगतः !। ततः सोऽभग्नसेनस्तानि पस्त्र चोरशतान्येवमबद्त्;-'तत् श्रेयः खछ देवानुप्रियाः ! अस्माकं तं दण्डं शाळाटवीं चोर-पहीमसग्रापमन्तरेव प्रतिपेद्धम्'। ततस्तानि पञ्च चोरशतान्यमग्नसेनम्य चोरस्य ' तथा ' इति यावत् प्रतिश्रुण्वन्ति । ततः सोऽभग्नसेन-डार्वे चोरपछि विद्यंपाहि २ अभग्गतेणं चोरतेणावति जीवग्गाहं गेणहाहि २ ता ममं उवणेहि। 'तते 'गन्छ त्वं देवानुप्रिय ' शालाटवीं चोरपहीं विछम्प, अभग्नसेनं चोरसेनापतिं जीवग्राहं गृहाण, गृहीत्वा मह्यमुपनय'। ततः स दण्डो महता भटयुन्देन येनेव शालाटवी चोरपही तेनेव प्रहारेच्छुकमनाः । ततः सोऽभन्नसेनश्रौरसेनापतिस्तेपां चारपुरुपाणामन्तिक एनमथं श्रुत्वा

अभग्न **XEU**-114年 11年 1 सणणद्ध० जाव पहरणेहि मगइतेहिं जाव ०रवेणं पुबावरण्हकालसमयंसि सालाडवीओ चोरपछीओ णिग्ग-च्छति २ ता विसमदुग्गगहणं ठिते गाहेयभत्तपाणिष् तं दंडं पडिवालेमाणे चिट्ठति। तते णं से दंडे जे-णं ताइं पंच चोरसताइं अभग्गसेणस्स चोर(सेणावइ)स्स 'तह' सि जाव पिडेसुणेंति, तते णं से अभ-ति, हस्तपाशितैयवित्करणात् 'फलप्ही' त्यादि दृश्यम् । 'विसमदुग्गगहणं' ति, विपमं निम्नोन्नति(त्रतं)भूमिकं दुर्ग-दुप्रष्वेशं गहनं-ग्रुक्षगह्नरम् । 'संपलग्गे ' ति, योद्धं समारत्यः । 'हयमहिय' ति, यावत्करणादिदं दृश्यम् ।-''हयमहियपवरवीरवाइयविवाडिय-ग्गसेणे चोरसेणावती विपुठं असणं पाणं खाइमं साइमं उवक्खडावेति २ ता पंचिहं चोरसतेहिं सिंहं णहाते जात्र पायि छिने भोयणमंडवंसि तं विषुळं असणं ८ सुरं ५ च आसाएमाणे ८ विहराते, जिमियभुनुत्त-गोरसेनापतिर्विपुलमशनं पानं खादिमस्वादिमोपस्कारयति । उपस्कार्य पञ्चमिश्चोर्रशतैः सार्धं स्नातो यावत् ०प्रायश्चितो भोजनमण्डपे तं रागतिवि य णं समाणे आयंते चोक्ले परमसुइभूते पंचिहिं चोरसतिहिं सिद्धिं अछं चम्मं दुरूहाति २ ता पिपुलमशनं ४ सुरां च ५ आस्वाद्यन् विहरति । जिमितभुक्तोत्तरागतोऽपि च सन्नाचान्तश्रोक्षः परमश्रुचिभूतः पक्रमिश्रोरशतेः सार्धमार्दं स्थितो गृहीतमक्तपानीयस्तं दण्डं प्रतीक्षमाणस्तिष्ठति । ततः स दण्डो यत्रैवाभग्नसेनर्चोरसेनापतिस्तत्रेवोपागच्छति, उपागत्याभग्नसेनेन चमें परिद्धाति २ सन्नद्ध० यावत् ०प्रहरणो भुतैर्यांबद् ० रवेण पूर्वापराहसमये आलाटवीतत्र्रोरपह्णीतो निर्गच्छति २ विषमहुर्गमहने उत्यामा अञ्चामा अञ्चामा अञ्चामा अञ्चा The 22:

सक्कारपरक्रमे अधारणिज्ञामित्तिकड्ड जेणेव पुरिमताले णगरे जेणेव महब्बले राया तेणेव उवा० २ कर-यल० जाव एवं वयासी;-'एवं खद्ध सामी! अभग्गसेणे चोरसे० विसमदुग्गगहणं ठिते गाहितभत्तपा-कृत्वा यत्रैव पुरिम-तालं नगरं यत्रैय महाबलो राजा तत्रैयोपागच्छति, उपागत्य करतल० याबदेवमवादीत्,-' एवं लाळ स्वामिन्! अभग्नसेनश्चोरसेना-तते गं से दंडे अभग्ग० चोरसे० हय० जाव पिडसेहिते समाणे अथामे अवले अबीरिष् अपुरि-गोरसेनापतिना सार्यं सप्रखग्नज्याप्यभवत् । ततः सोऽभग्नसेनज्योरसेनापतिस्त इण्टं क्षिप्रमेव हतमथित० यावत् प्रतिपेधति । ततः स 'अपुरिसकारपरक्रमे' त्ति, पुरुषकारः-पौरुषाभिमानः, स एव निष्पादितस्वप्रयोजनः पराक्रमः, तयोनिषे-णेव अभग्गतेणे चोरसेणावती तेणेव उवागच्छति २ ता अभग्गतेणेणं चोरसेणावइणा सिंह संपत्तगो चैंयज्झयपडागं" हतः−सैन्यस्य हतत्वात् , मथितो-मानस्य मन्थनात् , प्रवस्वीराः−सुभटा घातिता−विनाशिता यस्य स तथा, "दिसो दिसं विष्णडिसेहेति" सि सर्वतो रणाड् निवर्तयति । 'अथामे' सि तथाविधस्थामवर्जितः, 'अवले' सि, ग्रारीस्वलबर्जितः 'अबी गद्पुरुपकारपराक्रमः । 'अधारणिङामिति कट्डु' अधारणीयं घारयितुमशक्यं परवर्छं, स्थातुं बाऽशक्यमिति कृत्वा इति हेतोः । 'उरंउरेणं' यावि होत्या, तते णं से अभग्गसेणे चोरसे० तं दंडं खिष्पामेव हयमहिय० जाव पंडिसेहेति विपतिताथिह्नध्वजा गरुडादिचिह्नयुक्तकेतवः पताकाश्र यस्य स तथाः, ततः पद्चतुष्टयस्य कमधास्यः, अतस्तम् रण्डोऽभग्नसेनेन चोरसेनापतिना हत० यावत् प्रतिपिद्ध सन्नस्थामाऽवलोऽर्वायोंऽपुरुपकारपराक्रमोऽधारणीयमिति and the second s रिए' ति, जीवबीयेंग्हितः ।

गर्यणसंतसारसावतेलेणं भिंदति, अभग्गसेणस्त य चोरले० अभिक्खणं २ महत्याइं महग्दाइं महिरि हाइं रायारिहाइं पाहुडाइं पेसेति। अभग्गसेणं च चोरसे० वीसंभमाणेइ ॥ ( सू० १९ ) शिष्यश्रमाः, मित्रज्ञातिनिजकस्वजनसंबनिधपरिजनं च विप्छेन धनकनकरत्नसत्सारस्वापतेयेन मिनत्ति । अभग्नसेनस्य च चौरसेनापतेर-ति साथादित्यर्थः। 'सामेण य' ति साम प्रेमोत्पादकं बचनम्। ' भेदेण य' ति भेदः स्वामिनः पदातिषु, पदातीनां च स्वामि न्यविश्वासोत्पादनम्। 'उवप्याणेण य' ति उपप्रदानमभिमतार्थदानम्। 'जेवि य से अञ्मितरमा सीसमभम' ति येऽपि च 'से' ातिरिपमदुर्गगहने स्थितो गृहीतभक्तपानीयो नो खछ शक्यः केनचित् सुबहुनाप्यश्वबलेन् वा हस्तिबलेन वा योधबलेन वा रथबलेन वा तस्याग्रमसेनस्याभ्यन्तरका-आसन्ना मन्त्रिग्रभृतयः, किभूताः ?-'सीसगमम' ति, शिष्या एव शिष्यकास्तेषां अमी-आन्तियेषु ते चतुरङ्गणापि माक्षाद् ग्रहीतुम् 'तदा साम्ना च भेदेन चोपप्रदानेन च विश्रम्भमानेतुं प्रवृत्तश्चाप्यभवत् । येऽपि च तस्याभ्यन्तरकाः ॥ ते शिपिकअमाः, । इह 'ताच्' इति शेषः । ' भिनाता ' इति च योगः, तथा ' मित्तनाइनिअग ' इत्यादि प्राप्तत् । 'भिंदइ' चाउरंगेणंपि उरंउरेणं गेणिहत्तते' ताहे सामेण य मेदेण य उवप्पदाणेण य वीसंभमाणेउं प्यते यावि होत्या, जेवि य से अर्डिमतरमा सीसगमसा सित्तनातिनियगसयणसंबंधिपरियणं च विपूलेणं घणकण-शिष्यभ्रमा विनीततया शिष्यतुल्या इत्यर्थः, अथवा, शीपैकं शिर एव शिरः कवचं वा तस्य भ्रमोऽज्यभिचारितया शरीररक्षकत्वेन णिए नो खछ से सका केणइ सुवहूएणावि आसवलेण वा हरिथवलेण वा जोहवलेण वा रहबलेण वा

contraction and a second कयाति पुरि-तते णं से महन्बले राया अण्णया क्याति पूरिमताले णगरे एगं महं महतिमहालियं कूडागार-नि, चौरसेनापतौ स्नेहं मिननि, आत्मिन प्रतिबद्धान् करोतीत्यर्थः । 'महत्थाइं' ति, महाप्रयोजनानि ' महग्याइं' ति महामुल्या-मताले नगरे उस्सुंकं जाव दसरतं पमोयं उग्वोसावेति २ ता, कोडुंवियपुरिसे सद्दावेति २ एवं वयासी;-नि । ' महरिहाई ति महतां योग्यानि महं वा-पूजामहीन्ति. महान् वाऽहीः-पूजा येषां तानि तथा, प्रबंधिघानि च कानिचित् प्रशस्ताम् , महती चासौ आतेमहालिका च-गुर्यी महातीमहालिका ताम् , अत्यन्तगुरुकामित्यर्थः, 'कुडागारसालं' ति कूटस्येव र्मितिशिखंस्येवाकारो यस्याः सा तथा, सा चातौ शाला चेति समासः, अतस्ताम्।' अणेगखंभसयसंनिषिद्धं पासाइयं दरिसणिजं अभिरुवं पडिरुवंति, ज्याख्या प्राप्वत् । ' उस्सुंकं अविद्यमानशुल्कग्रहणं, यावत्करणादिदं दृश्यम्–'उक्करं' क्षेत्रगवादि प्रति अविद्य-मान्राजदेयद्रव्यम् , 'अमडप्पवेसं' कौद्धम्बिकगेहेषु राजवर्णवतां भटानामविद्यमानप्रवेशम् , 'अखंद्धिमकुढंद्धिमं' दण्डो निग्रहस्तेन निर्धेतं राजदेयतया व्यवस्थापितं दण्डिमम्, कुदण्डोऽसम्यम् निग्नहस्तेन निर्धतं ह्रव्यं कुदण्डिमं, ते अविद्यमाने यत्र प्रमीदेऽसाव-४ । ततः स महाबला कैपांचिद् योग्यानि भवन्तीत्यत आह्-' 'रायारिहाइंति, राज्ञामुचितानि ॥ ' महं महतिमहालियं कूडागारसालं ' ति, ा प्रासादीया त्तः सालं करेति अणेगखंभसतसंनिविट्टं पासाइयं ४। तते णं से महब्बले राया अण्णया मीक्णं महाश्रीनि महाघोणि महाहोणि राजाहोणि प्राभुताति प्रेषयति । अमग्नसेनं च चोरसेनापति विश्रम्भमानयति । राजाऽन्यदा फदाचिन पुरिमताले नगर एकां महतीं महातिमहालिकां क्रुटागारझालां करोत्यनेकस्तम्भशतसंनिविष्टां

गिरुक्त्रीमारिक्त्यामारिक्त्यामारिक्त्याचारक

त्तीये-अभग्न॰ 'गच्छह णं तुत्रमें देवाणु॰ सालाडवीए चोरपक्षीए तत्थ णं तुन्मे (म्हे) अभग्गसेणं चोरसे॰ करयल॰ जाव एवं वयह,—'एवं खल्ख देवा॰ पुरिमताले णगरे महन्बलस्स रण्णो उस्सुके जाव दसरने पमोदे उग्वो-सिते (सेति)। तं किण्णं देवाणु॰ विउलं असणं ४ पुष्फवत्थगंथमह्यालंकारे (रं) य इहं हवमाणिज्जउ, उयाहु सयमेव गन्छिजा'। तते णं कोडुंवियपुरिसा महब्बलस्स रणणो कर० जाव पुरिमतालाओ णगराओ पहि० २ णातिविकट्टहिं अद्धाणेहिं सुहेहिं बसाहिपायरासेहिं जेणेव सालाङवी चोरपछी तेणेव उवा० अभग्ग-दण्डिमकुदण्डिमोऽतस्तम् , 'अथरिमं' ति अविद्यमानं थरिमं-ऋ(त्रा)णद्रव्यं यत्र स तथा तम् ; 'अधारणिज्ञं' अविद्यमानाधमर्णम् ; 'अणुद्ध्यमुयंगं' अनुद्ध्ता-आनुरूप्वेण वादनार्थमुरिक्षप्ताः, अनुद्ध्ता वा-वादनार्थमेव वादकेरत्यक्ता सृद्जा यत्र स तथा तम् ; अमिलायमछदामं' अम्लामपुष्पमालम् , 'गणिकाबरनाडङ्जकलियं' गणिकाबरैनटिकीयैनटिकपात्रैः कलितो यः स तथा तम् 'अनेग-मारिलामारिलामारिलामारिलाम

ति, यथायोग्यम् । 'उदाहु सयमेव गच्छिआ' उताहो स्वयमेव गमिष्यतीत्वर्थः, 'णाइविगिड्रेति' ति अनत्यन्तदीयैः 'अद्भाणेहि' ति

नालाचराणुचित्यं ' अनेकैः प्रेयाकारिभिरासेवितिसित्यर्थः-'पग्रुइयपक्षीलियाभिरामं' प्रमुदितैश्र प्रकोडितेश्र जनेकाभिरम् , 'जहारिहं'

मवादीत्,-' गच्छत यूर्ये देवानुप्रियाः ' आलाटव्यां चोरपल्ल्यां, तत्र य्यमभग्नसेनं चोरसेनापति करतछ० याबदेवं वदत;-' एवं

रेवानुप्रिय ! पुरिमताले नगरे महाचलेन राज्ञोच्छुत्को यावद् दशरात्रः प्रमोद् उद्घोपितः तत् कि देवानुप्रिय ! विपुलमशनं ४

||X

17 20% नगरात् प्रतिनिप्कामन्ति २ नातिविक्र्षेटेः प्रयाणैः सुयेवस्किप्रातराजैयेजैव शालाटवी चोरपही तत्रैबोपागता अभग्नसेनं चोरसेनापति कर-सोऽमग्नमेनश्चोरमेनापतिस्तान् कोद्वम्विकपुरुपानेवमवरत्,-' अहं देवानुप्रियाः ' पुरिमताछं नगरं स्वयमेव गच्छामि '। तान् कोद्र-एवं वयासी,-एवं खलु देवाणु० पुरिमताले णगरे महब्बलस्स रण्णो प्तब्रालकार-मूसिते सालाडबीओ चोरपछीओ पडिनिक्खमति २ ता जेणेव पूरिमताले णगरे जेणेव महब्बले राया तेणेव ति अयेत नछ० यावदेवमवादिष्ठः,--' एव खछु देवानुप्रिय ! पुरिमताले नगरे महाबलेन राजोच्छुल्को यावद् उताहो स्वयमेव गमिष्यय १ ततः ,' तते णं से अभग्ग० चोरसे० ते कोड़ंवियपुरिसे एवं वयासी-वस्पान्यमाल्याळद्वारं चेत् शीव्यमानीयताम्, उताहो स्वयमेव गमिष्यथ। ततः कोद्धिन्विकपुरुषा महाबळस्य राज्ञः कर० यावत् पुरिमताळाद् म्यिकपूरुपान् सत्कारयति, प्रतिविद्यजति । ततः सोऽभग्नेसेनक्चोरसेनापतिवैह्यभिमित्र० यावत् परिष्ठतः स्नातो यावत् ०प्रायदिचतः उचा० २ ता करयल० महब्बल रायं जाएणं विजाएणं बद्धावेति, बद्धावेता महत्यं जाव पाहुदं उवणेति णगरं सयमेव गच्छामि'। ते कोड्डंवियपुरिसे सकारेति, पिडेविसजेति प्याणंतैः । 'सुहेहिति' सुखेः सुखहेतुभिः । 'वसहिपायरासेहिं' ति, वास(शि) कप्रातमोजनैः 'जएणं विजएणं बद्धावेहं' परिवुडे पहाते जाव पायिच्छिते मयोल द्वारभूपितः आखाटवीतऋोरपहीतः प्रतिनिष्कामति २ यत्रैव पूरिमतालं नगरं यत्रैव महावलो तते णं से अभग्गसेणे चोरसे॰ बहूहिं मिक् जाब गान्छ्जा धाव अहणण देनाणु० पुरमताल सयमेव चोरसेणावातिं करवलः उस्मुकं जाव उद्हि

হ্মানাহলাদাভনাদাভনাদাভনাদ

करतल

तंत्रेवोपागच्छिति

<u>न</u>

तते णं से महच्चले राया अभग्गसेणस्स चोरसे॰ तंमहत्थं जाव पिडच्छाते। अभग्गसेणं चोरं (चोरसेणा- है। रतीवे-गति) सकारेति २ संमाणेति २ (पिडि) विसज्जेति। कूडागारसेलं च से आवसहं दलयि। तते णं से हैं। अभा॰ 116811 अभग्गतेणे चोरतेणावती महच्वलेणं रण्णा विसाजिते समाणे जेणेव कूडाणारसाला तेणेव उवागच्छाति २ ना । तते णं से महच्वले राया कोडुंवियपुरिसे सहावेति २ ना एवं वयासी;--'गच्छह णं तुब्मे देवाणु० विउलं असणं ४ उनक्खडानेह २ तं विउलं असणं ४ सुरं च ५ सुचहुं पुप्फनस्थगंधमह्यालंकारं च अ-भग्गसेणस्स चोरसे० कूडागारसालाए उवणेह'। तते णं ते कोडुंबियपुरिसा करयल० जाव उवणेति। तते णं से अभग्गसेणे चोरसेणानई वहूहिं मित्त० सिंहं संपरिवुडे णहाते जाव सबालंकाराविभूसिते तं सुरां च ५ सुबहुं पूरपवलगन्यमाल्यालद्वारं चाभग्रसेनस्य चोरसे े क्टागारमालायासुपनयत '। ततस्ते कौटुम्यिकपुरुपाः करतल याव-डुपनयन्ति । ततः नोऽभग्नसेनश्रोरमेनापतित्रेहमिभित्र नार्षं सपरिष्टतः स्नातो याचत् सर्वालंकारविभूपितस्तद् विप्लमशनं ४ सुरां ५ राजा कीटुम्बिमपुमपाम् शन्द्यति २ ग्वमबादीत्,-' गन्छत् यूय देवानुप्रियाः ' विपुलमञनं ४ उपस्कार्यत २ तद् विपुलमञ्नं ४ महाबर्छ राजाने जयेन विजयेन वर्धमति, वर्धियत्वा महार्थं यावत् प्राभुतमुपनयति । ततः स महाबन्धे राजाऽभग्नसेनस्य चीरसेनापते-साद् मागुर्थं यावत् प्रतीच्छति । अभग्रसेनं चोरं सत्कारयति २ समानयति २ (प्रति) विस्वजिति । कूटागार्शालां च तस्यावराथं टापयिते । ततः सोऽभग्नमेनक्चोर्मेनापितमैहाबछेन राज्ञा विगर्जितः सन् यत्रैव कूटागार्ह्याला तत्रैवोपागच्छति २ । ततः स महाबस्रो किओ हो किया हो किया हो किया है किया है 

तते णं से महब्बले राया कोडुंवियपुरिसे सहावेति २ एवं वयासी;--'गच्छह णं तुब्मे देवाणु० सेणं चोरसे० जीवम्गाहं गेणहांति । महब्बलस्स रणणो उवणोंति । तते णं से महब्बले राया अभम्गसेणं चोरसे० एतेणं विहाणेणं वञ्झं आणवेति। एवं खद्ध गोतमा!अभग्गसेणे चोरसेणावती पुरा जाव विहरति। पुरिमतालस्स णगरस्स दुवाराइं पिघेह २ अभग्गसेणं वोरसेणा० जीवग्गाहं गेण्हह २ ममं उवणेह ततः स महावलो राजा कौटुम्विकपुरुपान् शब्दयति २ एवमवादीत् ;-' गच्छत यूय देवानुप्रियाः ! पुरिमतालस्य नगरस्य द्वाराणि पिथता २ अममसेनं चोरसेनापति जीवमाहं मृद्दीत मह्यमुपनयत '। ततस्ते कौटुम्बिकाः० करतछ० यावत् मतिभूण्बन्ति २ पुरिमतालस्य नगरस्य द्वाराणि पिद्धति । अभग्नमेनं चोरसेनापति जीवग्राहं गृहन्ति । महाबलाय राज्ञ उपनयन्ति । ततः स महाबलो राजाऽभग्नसेनं ' अभग्नसेनो भदन्त ' चोरसेनापतिः कालं कृत्वा कुत्र गमिष्यति १ कृत्रोपपत्त्यते १ ' गौतम ! अभग्नसेनत्र्योरसेनापतिः सप्तत्रिकातं तते गं ते कोडुंचिया० करयल० जाव पिडेसुणोंति २ पुरिमतालस्त नगरस्त दुवाराइं पिहोंति। चोरनेनापतिमेतेन विधानेन वध्यमाज्ञापयति । एवं खछ गौतम ! अमग्नमेनश्रोरसेनापतिः पुरा याबद् विहरति । ' विउछं असणं ४ सुरं च ५ आसाए० ४ पमने विहराति य आस्ताहयन् ४ यमत्तो विहर्ति।

अभग्न ラス || | || रमव हन्छा इति १ । अत्रीन्यते-सर्वामिदमथोनथजात प्राणिना स्वक्रतकमणाः सकाशाद्धभजापणः भन् न क्रा सार्वाचित्रमु निरुषक्रमकर्म यानि वैरादीनि सोषक्रमकर्मसंपाद्यानि तान्येव जिनातिशयादुपशाम्यन्ति, सदौषधात् साध्यव्याधित्रतः यानि तु निरुषक्रमकर्म-न्तरेण डाद्यानां मध्ये तीर्थकरातिययाद् न वैरादयोऽनयी भवन्ति, यदाह;—"पुञ्जुष्पना रोगा पसमंति ईइ-वहर-मारीओ । अह्युद्धि-अणाद्यिद्ध-न होह दुन्भिरकडमरं च" (पूर्वोत्पना रोगाः प्रशाम्यन्ति इति वैरमार्थः । अतिष्ट्यिरिनाष्ट्यिते भवति दुर्भिक्षं डमरं च)॥ १॥ इति; तत् कथं श्रीमन्महाबीरे भगवति पुरिमताले नगरे ज्यवस्थित एवामग्नसेनस्य पूर्ववणितो ज्यतिकरः संपन वर्गीण परमायुः पालियत्वाऽगेव विमागावशेषे हिवसे शूलिमनः कृतः सन् कालगतोऽस्यां रत्नप्रमाथा प्रथिन्यामुत्कर्षेण । नैरियकेषूषप-अमग्गतेणे णं भंत! चोरसेणावती कालमासे कालंकिचा कहिं गन्छिहिइ ! कहिं उववाजाहिति !? विजयेन च रिष्णां वर्षस्वेत्येवमाशिषं प्रयुक्ति इत्यर्थः । नतु तीर्थकरा यत्र विहरन्ति तत्र देशे पश्चविशतेयोजनानाम्, आदेशा-गौत्तरिंगीविताद् ज्यपरोपितः सस्तत्रैव वाराणस्यां नगयां श्रेष्टिकुठे पुत्रतया प्रत्यायास्यति । स तत्रोन्सुक्तवालभावः, एवं यथा प्रथमः, अणंतरं उबिहिता, एवं संसारो जहा पढमे जाव पुठवी। ततो उबिहिता वाणारसीए णगरीए सूयरताए त्स्यते । म ततोऽन्तरमुद्धस्य, एं संसारो यथा प्रथमो यावत् पृथिवी । तत उद्धुन्य वाराणस्यां नगयां शूकरतया प्रतायास्यति । स तत्र गेतमा ! अभग्गसेणे चोरसे० सत्ततीसं वासाइं परमाउयंती पालइत्ता अजेव तिभागावसेसे ि भेणणे कते समाणे कालगते इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए उक्नोसे० नेरइएसु उननजिहिति। इं शिक्स हा शिक्स हिला मा किसी हिला है। र थुत्त-

地

निक्षेवो।सू०२०॥ पचायाहिति । से णंतत्थ सोयरिऐहिं जीवियाउ वबरोविष् समाणे तत्थेव वाणारसीष् णगरीष् सोट्टेकुलांसि पुत्तताए पचायाहिति, से णं तत्य उम्मुक्कबालभावे, एवं जहा पढमे, जाव अंतं काहिति।

## | अथः

॥ ततियं अञ्झयणं समत् ॥

## गुकटाष्ट्यमध्ययनम् ॥

एवं खलु जम्बू! तेणं कालेणं तेणं समएणं साहंजणी 'जित गं मंते !०' चउत्थस्त उक्लेवो,

संपाद्यानि तान्यवश्यं विपाकतो वेद्यानि, नोपक्रमकारणविषयाणि, असाध्यन्याधिवत् । अत एव सर्वातिश्रयसंपत्समन्त्रितान जेनानामप्यतुष्शान्तवैरभावा गोशालकाद्य उपसर्गान् विहितवन्तः । ॥ इति विपाकश्चते अभग्नसेनार्च्यतृतीयाध्ययनविवर्णम्। णगरी होरथा रिद्धारिथमिय०, तीसे णं साहंजणीए णयरीए बहिया उत्तरपुरारिथमे ।

'यति भटन्त! ०' चतुर्थस्योत्क्षेपः। एवं सळ जम्बो! तस्मिन् काले तस्मिन् समये साभाञ्जनी नाम नगर्यभवद् ऋद्रस्तिमित०। तस्याः ॥ तृतीयमध्ययनं समाप्तम् यायदन्तं करिष्यतीति निक्षेपः

अथ चतुर्थे किञ्चिह्निरूच्यते । ' जइ णं मंते ! चउत्थस्स उक्तेवउ ति, ' जइ णं मंते ' इत्यादि चतुर्थाध्वयनस्योपक्षेपकः

माभाज्जन्या नगर्यो बहिनत्तरपीरस्त्ये दिग्भागे देनरमणं नामीद्यानमभवत् । तत्रामोघस्य यक्षस्य यक्षायतनमभून् पुराणम् । तत्र सामाझन्यां

118811 अने नगरी, महा-नग्रो-राजा, क्षिणा-प्रस्तावना 'वाच्यः' इति गम्यम्, स चायम्-' जह णं भंते ! समणेणं भगवया जाव संपनेणं दुहविवागाणं तचस्स अज्झयणस्स अयमेहे पणाने, चउत्थस्स णं भंते ! के अहे पण्णाने ?' इति । 'महता' इत्यनेन 'महता हिमवंतमहंतमलयमंदरमहिंदसारे' इत्यादि कि अयमेहे पण्णाने, चउत्थस्स णं भंते ! के अहे पण्णाने ?' इति । 'महता' इत्यनेन 'महता हिमवंतमहंतमलयमंदरमहिंदसारे' हत्यादि कि राजवणिको हत्यः, 'साम १ मेय २ दंड' ३ इत्येतत् पदमेवं दृत्यम्-' सामभेयदंडउवप्याणनीईस्पण्डननयविहण्ण् ' सामः- कि राजवणिको हत्यः, 'साम १ मेय २ दंड' ३ इत्येतत् पदमेवं दृत्यम्-' सामभेयदंडउवप्याणनीईस्पण्डनम्यविहण्ण् ' सामः- कि राजवणिको हत्यः, 'साम १ मेय २ दंड' ३ इत्येतत् पदमेवं दृत्यम्-' सामभेयदंडउवप्याणनीईस्पण्डनम्यविहण्ण् ' सामः- कि राजवणिको हत्यः, मेदः-नायकसेवकयोश्चित्तमेदकरणम्, दण्डः श्रीरथनयगेरयहारः-उपप्रदानमभिमतार्थदानम्, एतान्येव नीतयः ञ्जन्यां नगयी सुदरीना नाम गणिकाऽभवत् । वर्णकः । तत्र सामाञ्जन्यां नगयां सुभद्रो नाम सार्थवाहोऽभूदाढ्यः । तस्य सुभद्रस्य सार्थ-तत्थ णं साहंजणीए णयरीए सुभद्दे नामं सत्थवाहे होत्था (परिवसद् ) अड्डे, तस्स णं सुभद्दस्स सत्थवाहस्स भद्दा नामं भारिया होत्था अहीण०, तस्स णं सुभद्दस्स सत्थवाहस्स पुने भद्दाए भारि-नगर्यां महाचन्द्रो नाम राजाऽभूद् महा० । तस्य महाचन्द्रस्य राज्ञः सुषेणो नामामात्योऽभषत् सामभेदद्ण्डनिघह्कुश्लः । तत्र सामा-रमणे णामं उज्जाणे होत्था । तत्थ णं अमोहस्स जक्ष्यस्त जक्ष्वायतणे होत्था पुराणे, तत्थ णं साहं-सामभेयदंडनिग्गहकुसले, तत्थ णं साहंजणीए णगरीए सुद्रिसणा णामं गणिया होत्था, वण्णओं। जणीए णयरीए महचंदे नामं राया होत्था महता०, तस्स णं महचंद्स्स रणणो सुसेंणे णामं अमचे होत्था वाहस्य भद्रा नाम भार्योऽभूदहीन० । तस्य सुभद्रस्य सार्थवाहस्य पुत्रः सुभद्राया भायांया आत्मजः शकटो नाम दारकोऽभवदहीन० सुप्रयुक्ता येन स तथा, अत एव नयेषु विधाज्ञ:-प्रकारवेदिता यः स तथा, इत्यादिरमात्यवर्णको दृश्यः ॥

- XX

विवासे

भगवं वागरेति-' एवं खछु गोतमा! तेणं कालेणं तेणं समएणं इहेव जंबुहीवे दीवे भारहे वासे छग-छिणिए णामं छागालिए परिवसति अड्डे अहम्मिए जाव दुप्पिड्याणंदे । तस्स णं छाणेणयस्स छाग-दारए होत्था, अहीण० तेणं कालेणं तेणं समएणं समणे भगवं महाबीरे राजाऽभवद् मज्ञा० । तत्र च्छगलपुरे नगरे पण्णिको नाम च्छागलिकः परिवसति आढयोऽवाभिका यावद् दुष्प्रत्यानन्दः । तस्य पण्णि-तेणं कालेणं २ समणस्स० तिसम् काले २ श्रमणस्य ब्येघ्रोऽन्तेवासी यावद् राजमागेंऽवगाढः । तत्र हस्तिनः, अत्यान्, पुरुषान् । तेपां च पुरुषाणां मध्यगतं मध्सगत तहव जाव ' गर्वे खलु गौतम ! तिसम् काले तिसम् समय इहेव जम्बूद्वीपे द्वीपे भारते वर्षे छगलपुरं नाम नगरमभवत्। तत्र सिह्मिरिक्सिम तिसम् काले तिसम् समये अमणो भगवान् महावीरः समबसृतः । परिपद् राजा च निगेतः । धमेः कथितः । परिपद् प्रतिगता लपुरे णामं णगरे होत्या । तत्य सीहगिरि णामं राया होत्या, महया० । तत्य णं छगलपुरे । पश्यत्येकं मसीकं पुरुषमवकोटकबन्धनमुत्कृत्तकर्णनासं, याबद् उद्घोषणम् , चिन्ता, तथैव याबद् भगवाम् व्याकरोति;— उभिस्तनमणानासं, जाव उग्घोसणं । नेट्टे अंतेवासी जाव रायमग्गे ओगाहे, तत्थ णं हत्थी, आसे, पुरिसे०, तेंसि च णं ! ा निग्गते, धम्मो कहिओ परिसा पडिगया गासाति एगं सइत्थियं पुरिसं अवओडगवंथणं याए अत्तए सगडे

~~~

चतुथं-मुख्य-, मिझ-अगाहि-105 कस्य हिंसा-नतिः॥ ग्रुरिसा ताई बहुयाई अयमंसाई जाव महिसमंसाई य तवष्सु य कवछीसु य कंदूसु य भज्जणष्सु य महूनजांश्र यावद् महिषांश्र संरक्षन्त. संगोपयन्तरितष्ठन्ति । अन्ये च तस्य बहवः पुरुषा अजानां च यावद् महिषाणां च गृहे निरुद्धा-२ षण्णिकाय च्छागछिकायोपनयन्ति । अन्ये च तस्य बहवः पुरुषास्तान्यजमांसानि च यावद् महिषमांसानि च तबकेषु च कवहीषु च ोवंति २ मंसाइं कप्पणीकप्पियाइं करेंति २ छािणायस्स छागािलयस्स उवणेंति, अपणे य से बहुबे कस्य च्छागछिकस्य बहूनि अजानां चैडानां च गवयानां च वृषमाणां च राशकानां च मृगशिशूणां च शूकराणां च सिंहानां च हरिणानां च ग्युराणां च महिषाणां च शतबद्धानि च सहस्रबद्धानि च यूथानि बाटके संनिरुद्धानि तिष्ठन्ति। अन्ये च तत्र बहबः पुरुषा दत्तभूतिभक्त० रितष्ठन्ति। अन्ये च तस्य बहुचः पुरुषा दत्तमृति० बहूनजांश्च याबद् महिषांश्च जीविताद् च्यपरोपयन्ति २ मांसानि कर्तनीक्रतानि कुर्वन्ति लियस्त बहबे अयाण य प्लाण य रोज्झाण य बसभाण य संसयाण य पंतयाण य सूरयाण सिंघाण अण्णे य से बहवे पुरिसा दिण्णभति० बहवे अए य जाव महिसे य सयए य सहस्सए जीविताउ वव ाटुंति। अपणे य तत्थ बहवे पुरिसा दिपणमङ्भत्त० बहवे अए य जाव महिसे य सारक्खमाणा संगो निरुद्धा चिट्रति य हरिणाण य मऊराण य महिसाण य सतबद्धाणि य सहस्सबद्धाणि य जूहाणि वाडगंसि वेमाणा चिट्टीते, अण्णे य से बहवे पुरिसा अयाण य जाव महिसाण य गिहंसि ि % % ---ik-thi निपाके

इंगालेसु य तलेंति य मजोंति य सोखिति य, तलिंता य ३ रायमग्गंसि विसिं कप्पेमाणा विहरंति

ततः मा (तम्य) सुभद्रस्य माथेबाहस्य सुभद्रा भायो याबद् निट्टेता चाज्यभवत्। जाता जाता वारका विनियातमापद्यन्ते ततः स पण्णिकर्छम-

दारगा विणिहायमावजाति । तते णं से छिषणिष् छागलिष् चउत्थीष् पुढवीष् अणंतरं उठ्बिस इहेब

तते णं सा तस्स सुभइस्स सत्थवाहस्स सुभइ़ा भारिया जाव णिहुया यावि होत्था, जाता जाता

प० वि० स० सुबहुं पावकम्मं कलिकछुसं समज्जिणिता सत्त वाससयाइं परमाउं पाळइता कालमासे

अप्पणानि य णं से छिणियय् छागित्रिष् तेहिं बहूहिं अयमंसेहि य जाव महिसमंसेहि य तिलिष्हिं भिज्ञिष्हि सुरं च ५ आसादेमाणे ४ विहराति । तते णं से छिणिष् य छागिलेष्

कालं किचा चउरथींए पुढवीए उक्नोसेणं दससागरोवमठितीष्सु णेरइणसु णेरइयत्ताए उववण्णे। (सू० २१)

एयकस्म

स पण्णिमज्ञणितिकस्तेवेह्नमिरजमांसैश्र यावद् महिपमांसैश्र पक्वेस्तव्वितेभृष्टेः सुरां च ५ आस्वाद्यम् ४ विहरति । ततः स पण्णिकज्ञ-

गलिक एतत्कर्मा एतत्प्रथान एतद्विद्य एतत्समाचारः सुबहु पापकर्मे कल्ठिकछुपं समज्ये सप्न वर्षशतानि परमायुः पाळियित्वा चतुश्याँ

प्रथिज्यामुत्कर्गण द्यसागरोपमस्थितिकेषु नैर्षयेकेषु नैर्यिकतयोपपन्नः

मन्दुगु च मर्जनमेषु चाद्वारेषु च तछन्ति च भुज्ञन्ति च पचन्ति च । तछन्तश्च ३ राजमार्गे धुसि करुपमाना बिह्र्रन्ति । आत्मनापि च

IEIPONEIPONEIPONEIP

| į |   |   |   | _   | _   |            |                          |
|---|---|---|---|-----|-----|------------|--------------------------|
| 3 | - | 7 |   | _   | ver |            | ۸.                       |
|   | ľ | 4 | ÷ | H.  | -4  | <b>,</b>   | $\boldsymbol{\varsigma}$ |
|   | # |   |   | Ť   | Ť   | , r<br>, r | _                        |
|   |   |   |   | *** | -   |            |                          |

चतुथं-पाणि-महाग्रेम समद्र-मद्रा-महान-महान-महान-संवद्हेंति जहा उज्झियए, जाव जम्हा णं अम्हं इमे दारए जायमेत्तर् वेव सगडस्स हेटुओ ठिवते, तम्हा णं होंड णं अम्ह दारए सगडे नामेणं, सेसं जहा उज्झियए। सुभद्दे लवणे० (समुद्दे) कालगओ, मायावि कालगता, सेवि (सयाओ) गिहाओ निच्छूढे। तते णं से सगडे दारए साओ गिहाओ निच्छूढे महा सत्थवाही अण्णया कयातिं णवण्हं मासाणं बहुपडिपुण्णाणं दारगं पयाया, तते णं तं दारगं अम्मा-पियरो जायमेत्तं चेव सगडस्स हेट्टओ ठवेंति २ दोच्चंपि गेण्हावेंति, अणुपुठवेणं सारक्खंति, संगोवेंति, साहंजणीए णयरीए सुभइस्स सत्थवाहस्स भद्दाए भारियाए कुन्छिसि पुत्तत्ताए उववणणे। तते णं सा लिकश्रतुथ्योः प्रथिच्या अनन्तरमुद् युत्येहैय साभाञ्जन्यां नगयों सुभद्रस्य सार्थवाहस्य भद्राया भायांयाः कुक्षौ पुत्रतयोपपन्नः। ततः सा भद्रा सार्थ-वाद्यन्यदा कदाचिद् नवसु मासेषु बहुपरिपूर्णेषु दारकं प्रजाता । ततस्तं दारकमम्बापितरौ जातमात्रमेव शकटस्याधः स्थापयतः २ द्विरपि गृह्यीतः, आनुपूर्येण संरक्षतः, संगोपयतः, संबर्धयतः, यथोष्झितकः, यावद् यसादसाकमयं दारको जातमात्र एव शकटस्याधः दारकः शकटो नाम्ना । शेषं यथोध्झितकः । सुभद्रो छवणे कालगतः । मातापि कालगता । सोऽपि 'सुभहें लवणे काल'ित अयमर्थः-सुभहें सत्थवाहे लवणसमुहे कालधम्मुणा संपउते (संजुते) यावि होत्था' इति ॥ क्षापितः, तसाद् भवत्वसाक (सकाद्) गृहाद् निष्कासितः 967 | F | 1597 | F | 1597 | T | 1 % श्रुत-श्री-विवाके

ततः स शकटो दारकः स्वाद् गृहात्रिष्कासितः सन् यङ्गाटक० तथैव यावत् सुद्गेनागणिकया सार्थं सप्रलम्ब्राप्यभवत्। ततः स समाणे सिंघाडग० तहेब जांब सुद्रिसणाष् गणियाष् सिंहं संपळग्रे यावि होत्था, तते णं से सुसेणे र्साणियं गणियं अञ्मितरयं ठावेति २ सुद्रिसणाए गणियाए सिर्छे उराळाइं माणुस्सगाइं भोगभोगाइं सुद्रिसणाए गिहाओ निच्छूढे समाणे अण्णत्थ कत्थइ सुद्रिसणागणियाए गिहे तेणेव उवा० २ सगडं दारयं सुद्रिसणाए सुपेणोऽमासर्तं शकटं दारकमन्यदा कदाचित् सुदर्शनाया गणिकाया गृहाद् निष्कासयति २ सुदर्शनां गणिकामभ्यन्तरे स्यापयति २ सुदर्शनया गगिक्या सार्षमुदारान्मानुष्यकान् भोगभोगान् मुञ्जानो विहरति । ततः स शकटो वारकः सुद्धेनाया गृहाद् निष्कासितः सन्नन्यत्र कुत्रचित् रतश्च सुपेणोऽमात्यः स्नातो यावद्० विभूपितो मनुष्यवागुरया परिक्षिप्तो यत्रैव सुदर्शनागणिकाया गृईं तत्रैवोपागच्छति २ शकटं दारकं अमचे तं सगडं दारयं अण्णया क्यातिं सुद्रिसणाए गणियाए गिहाओ निच्छुभावेति २ सुद्रिसणं त(सु)तिं वा २ अळभमाणे अण्णया क्याइ रहस्सियं सुद्गिसणागिहं अणुपविसति २ सुद्गिसणाप् स्मृतिं वा २ अरुभमानोऽन्यदा कदाचिद् राहस्यिकं सुदर्शनागृहमनुप्रविशति २ सुदर्शनया सार्धमुदाराम् भोगभोगान् भुङ्गानो विहरति इमं च णं सुसेणे अमचे पहाते जाव० उरालाइं भोगभोगाइं मुंजमाणे विहरति। त्र त्र विहरात, तते णं से सगडे मणुस्तवग्युराष् परिकिखत्ते जेणेव

चतुर्थे-शुकटस्य सुद्र्धे-नाया-कर्य कि एक किए की स्वर्ध है। पुरुपैमोहयति २अस्थि० यावत् ०मथितं करोति २ अवकोटकबन्धनं करोति २ यत्रैव महाचन्द्रो राजा तत्रैवोपा० करतछ० याव-त्वमेव शकट गणिका-खद्ध गोतमा यावत् क्रया च्वछंस्त्रिविकिकां भुकुटि ळळाटे संहत्य सुषणममात्यमेवमवदतः :---सुदर्शनां शकट दारक यावत् विहर्गतं उवा० करयल० जाव एवं वयासी:-राजा दण्डं वर्तय'। ततः स सुषेणोऽमात्यो महाचन्द्रेण राज्ञाऽभ्यनुज्ञातः सन् अमञ य व ण ज दुश्चीणांनां ' २ आसुरने शकटो दारको ममान्तःपुरेऽपराद्धः'। ततः स महाचन्द्रो २ अद्वि स्० ४४ ) सुसेणं पुराणाना पासति गेणहावेति गणिकया सार्धेमुदारान् भोगभोगान् भुञ्जानं पर्यात २ आग्रुक्प्नो त्रा महचंदे विहरति शकटो दारकः मुजमाण याव । तदेव खलु गीतम ! वनिहिं ं दुचिणाणं मोगमोगाइं महचंद सगढ दारगस्स ल छ स्वामिन्। सिंह उरालाइ मेतेन विधानेन वध्यमाज्ञापयति द्रिकस्त सगढस्स देनानुप्रिय । शकटस्य गिलाडे देवमवादीत् ;—'एवं समाणं सगढ दंवाणु० सुद्शेनया ९ श्रुत-स्कन्धः 24-1

प्रभागां गुथिन्यां नैरियकतयोषपत्त्यते । स ततोऽनन्तरसुद्युट्यं राजगृहे नगरे मातङ्गकुले यमलतया प्रद्यायास्यति । ततस्तास्य दारकस्या-सता-गणं वासाइं परमाउं पालियिता अजीव तिभागावितेसे दिवसे एगं महं अओमयं तत्तं समजोइभूयं इत्थि-सगडे णामेणं, होऊ णं दारिया सुद्रिसणा तते णंसे सगडे दारए उम्मुक्कवालभावे जोव्वण० भविस्सति म्पापितरी निर्धेनद्वाद्याह्स्येटमेतद्रपं नामथेयं करित्यतः—भचतु वारकः शकटो नाम्ना, भवतु दारिका सुद्येना नाम्ना । ततः स स्नटो डिमं अवयासाविए समाणे कालमासे कालंकिचा इमीसे रयणप्पमाए पुढवीए णेरइयत्ताए उववज्जि-हिति । से णं ततो अणंतरं उन्बाहिता रायगिहे णगरे मातंगकुलंसि जमलताष् पचायाहिति, तते णं तरस दारगस्त अम्मापियरो गिबत्तवारसाहगस्त इमं एयारूवं गोणणं णामघेजं करिस्संति तं होऊ णं दारष् 'अओमयं'ति, अयोमयीम् 'तत्तं'ति, तप्ताम् कथमित्याह-'समजोइभूयं'ति, समा-तुल्या ज्योतिषा-बिह्ना भूता या सा तथा 'ग्रानटो भगवम् ! वारकः कालगतः कुत्र गमिष्यति कुत्रोपपत्स्यते १' 'गौतम ' शकटो दारकः सप्नपद्धाशतं वर्षाणि परमायुः पाल-यित्वाऽरीय त्रिमागावरोपे दिवसे एका महतीमयोमयां तप्तां ज्योतिःसमभूतां स्रीप्रतिमामवयासितः सन् कालमासे काछं कुत्वाऽस्यां रत्न-ताम् , 'अवयासाविष्'ति, अवयासित-आलिङ्गितः । 'जोबण० भविस्सइ्'त्ति, 'जोबणगमणुपते अलं भोगसमत्ये याति भविस्सइ सगडे णं भंते! दारए कालगते कहिं गाच्छिहिति!, कहिं उनवज्जिहिति?' 'गोतमा! सगडे णं दारए me monoconomiconomiconomiconomiconomiconomiconomiconomiconomiconomiconomiconomiconomiconomiconomiconomiconomiconomiconomiconomiconomiconomiconomiconomiconomiconomiconomiconomiconomiconomiconomiconomiconomiconomiconomiconomiconomiconomiconomiconomiconomiconomiconomiconomiconomiconomiconomiconomiconomiconomiconomiconomiconomiconomiconomiconomiconomiconomiconomiconomiconomiconomiconomiconomiconomiconomiconomiconomiconomiconomiconomiconomiconomiconomiconomiconomiconomiconomiconomiconomiconomiconomiconomiconomiconomiconomiconomiconomiconomiconomiconomiconomiconomiconomiconomiconomiconomiconomiconomiconomiconomiconomiconomiconomiconomiconomiconomiconomiconomiconomiconomiconomiconomiconomiconomiconomiconomiconomiconomiconomiconomiconomiconomiconomiconomiconomiconomiconomiconomiconomiconomiconomiconomiconomiconomiconomiconomiconomiconomiconomiconomiconomiconomiconomiconomiconomiconomiconomiconomiconomiconomiconomiconomiconomiconomiconomiconomiconomiconomiconomiconomiconomiconomiconomiconomiconomiconomiconomiconomiconomiconomiconomiconomiconomiconomiconomiconomiconomiconomiconomiconomiconomiconomiconomiconomiconomiconomiconomiconomiconomiconomiconomiconomiconomiconomiconomiconomiconomiconomiconomiconomiconomiconomiconomiconomiconomiconomiconomiconomiconomiconomiconomiconomiconomiconomiconomiconomiconomiconomiconomiconomiconomiconomiconomiconomiconomiconomiconomiconomiconomiconomiconomiconomiconiconomiconomiconomiconomiconomiconomiconomiconomiconomiconomiconomiconomiconomiconomiconomiconomiconomiconomiconomiconomiconomiconomiconomiconomiconomiconomiconomiconomiconomiconomiconomiconomiconomiconomiconomiconomiconomiconomiconomiconomiconomiconomiconomiconomiconomiconomiconomiconomiconomiconomiconomiconomiconomiconomiconomiconomiconomiconomiconomiconomiconomiconomiconomiconimiconimiconimiconimiconimiconimiconimiconimiconimiconimiconimiconimiconimiconimiconimiconimiconimiconimiconimiconimiconimiconimiconimiconimiconimiconimiconimiconimiconimiconimiconimiconimiconimiconimiconimiconimiconimiconimiconimiconimiconimiconimiconimic

मभाया सप-गतः॥ वतुर्थे-ततः स शकटो दारकोऽन्यदा कदाचित् स्वयमेव क्रुटप्राहत्वमुपसम्पाद्य विहरिष्यति । ततः स शकटो दारकः क्रुटप्राहो भविष्यत्यधा-भिको यावत् दुष्प्रसानन्दः। एतत्कमी सुबहु पापं यावत् समज्ये कालमासे कालं कुत्वाऽस्यां रत्नप्रभायां प्रथिन्यां नैरयिकतयोपपत्रः० पुढवीए णेरइयत्ताए उननण्णे, संसारो तहेन जान पुढवी । से णं ततो अणंतरं उठ्निष्टिता वाणारसीए दारक उन्मुक्तबालमाबो यौवन० भविष्यति । ततः सा सुद्रीनापि दारिकोन्मुक्तवालमावा विज्ञक० यौवनमनुप्राप्ता रूपेण च यौवनेन च लाबण्येन चात्क्रष्टोत्क्रष्टशरीरा भविष्यति । ततः स शकटो दारकः सुदर्शनाया रूपेण् च योवनेन च लावण्येन च मूर्चिछतः ४ सुदर्शनया िजनाणं विहिरिस्सिति, तते णं (तं) से सगडे दारष् कूडग्गाहे भविस्सिति अहिमिष् जाव दुप्प-तष् णं सा सुद्रिसणावि द्रारिया उम्मुक्कबालभावा विणणय० जोठवणगमणुष्पत्ता रूवेण जोठव-डियाणंदे। एयकम्मे सुबहुं पावं० जाव समज्जिणिता कालमासे कालं किच्चा इमीसे रयणप्पभाष (गाहि) नं उनसंप-रूवेण य जोटवणेण य सावण्णेण य मुचिछते ४ सुद्रिसणाए भइणीए सिर्छ उरालाइं मुंजमाणे णेण य लाबण्णेण य डिक्किट्टा डिक्किट्टसरीरया भिवस्सिति । तए णं से सगडे दारए सुद्रिसणाए वेहरिस्साति। तते णं से सगडे दारष् अणणया कयाति सयमेव कुडम्गाह भांगन्या सार्धेमुदारान् भुञ्जानो विहरिष्यति। メ||ま||下364||ま||下364||ま|||下 १ थुत-

नियाके

णयरीए मच्छत्ताए उनविज्जिति, से णं तत्थ मच्छवंधिएहिं विषए तत्थेव वाणारसीए णयरीए सेट्टि-कुलंसि पुत्तताए पच्चायाहिति। बोहि पठ्वज्जा सोहम्मे; महाविदेहे सिडिझहिति निक्खेवो दुहाबिबा-इन्येयं द्रष्टन्यम्। 'तस्स'त्ति, 'तए णं सा' इत्येयं दश्यम्। 'विष्णपय'त्ति, एतदेयं दृश्यम्-'विष्णयपरिणयमेत्ता'। 'निक्खेवो'त्ति, ' एवं खलु जम्यू ! समणेणं भगवया महाबीरेणं चउत्थस्स अज्ज्ञयणस्स अयमङ्के पण्णत्ते' इत्येवंरूपं निगमनं बान्यमिति । शेपभुपयुज्य धेष्ठिक्ते पुत्रनया प्रत्यायास्यति। वीषिः, प्रत्रन्या, सीषमें, महानिदेहे सेत्त्यति ४ निस्रेपः। दुःखिषपाकानां चतुर्थर्याध्ययनस्यायमर्थः प्रजन्नाः॥ संसारखगैय यायत् प्रथिवी। स तनोऽनन्तरमुद्धस्य वाराणस्या नगर्यं मत्स्यतयोपपत्स्यते । स तत्र मत्स्यवन्धकेहेतस्तत्रेच वाराणस्यां नगयां ॥ दृह्वियागाणं चउत्यं अञ्झयणं समत्तं॥ ॥ इति दुःखविषाकानां चतुर्थमध्ययनं समाप्तम् ॥ प्रयमाध्ययनानुसारेण ज्यास्येयमिति ॥ ॥ चतुर्थाध्ययनविवरणं समाप्तम् ॥ गाणं चोत्यस्त अञ्झयणास्स अयमट्ठे पन्नते ॥ (सू० २३) न्यामारकामारकामारक्यामार ॥ अथ बृहम्पतिद्ताष्ट्यं पञ्चममध्ययनम्॥ जति णं भंते!० पंचमस्त अञ्चयणस्त उक्तेवो, एवं खळु जम्बू! तेणं कालेणं! तेणं समएणं कोत्तंबी णामं णगरी होत्था, रिद्ध० बाहिं चंदोतरणे उज्जाणे, सेयभहे जक्ते। तत्थ णं कोसंबीए णग-

ट्नस्य जन्म ॥ रीए सयाणीए णामं राया होत्था, महया०, मियावती देवी। तस्स णं सयाणियस्स पुने मियावतीए अत्तए उद्यणे णामं कुमारे होत्था, अहीण० जुबराया, तस्स णं उदायणस्स कुमारस्स पउमावती णामं पूरोहियस्स वसुद्ता णामं भारिया होत्था, तस्स णं सोमद्तस्स पुते वसुद्ताए अत्तए वहस्सइद्ते सोमद्ते नामं पुरोहिए होत्था, रिउन्नेद्०। तस्स णं सोमद्त्तस्स अथ पश्चमे किंचिछिच्यते। रिउवेय'ति एतेनेदं दश्यम्—'रिउवेयजजुवेयसामवेयअथवणवेयकुसले'ति दश्यं व्यक्तं च।

||8 ||8 ||

नाम पुरोहितोऽभवत् ऋग्वेद्०, तस्य सोमदत्तस्य पुरोहितस्य वसुद्ता नाम भार्योऽभूत्। तस्य सोमद्त्तस्य पुत्रों वसुद्ताया आत्मजो बृहस्पतिद्तो

बत्या आत्मज उद्यनी नाम कुमारोऽभूद्दीन० युवराजः । तस्योद्यनस्य कुमारस्य पद्मावती नाम देन्यभवत् । तस्य शतानीकस्य सोमद्त्तो

यदि भद्नत !पञ्जमस्याध्ययनस्योपक्षेपः।एवं खलु जम्बो!तिसम् कालेतिसम् समये कौशाम्बीनाम नगर्यभवत् ऋङ० । बहिश्चन्द्रा-

नि होत्था, तस्स णं सयाणियस्स ।

१ श्रत-

\*\*-| | 미대화

बतरणमुद्यानम्। रवेतभद्रो यक्षः।तत्र कौशाम्ज्यां नगर्या शतानीको नाम राजाऽभवद् महा०।मृगावती देवी।तस्य शतानीकस्य पुत्रो मृगा-

एगमेगं माहणदारगं, एगमेगं खितियदारगं, एगमेगं वइस्तदारगं, एगमेगं सुद्दारगं गेणहावेति २ तेसि जितग्रवुनोम राजाऽभवत्। तस्य जितग्रत्रो राब्रो महेश्वरद्तो नाम पुरोहितोऽभवद् ऋग्वेद्० यावद्यवेकुराल्ब्राप्यभवत्। ततः स महेश्र-पुरोहिते जितसनुस्त रण्णो रज्जबलविबद्धणद्रयाए कहाकहि दारए होत्या, अहीण०। तेणं कालेणं २ समणे भगवं महावीरे समोत्तरणं। तेणं कालेणं २ अथवणक्रमल राजमागेमवगादः। तथैव पश्यति हस्तिनः, अश्वान्, पुरुषान्, मध्ये पुरुषम्। चिन्ता । तथैव पुच्छति। पूर्वेभवं भगवान् ज्याकरोति,— रद्ताः पुरोहिनो जिनगत्रो राजो राज्यवळिविष्पेनार्थं कल्याकत्य एकैकं बाह्मणवारकम्, एकैकं ख्रान्तियवारकम्, एकैकं बैदयवारकम्, पुच्छति । पुद्यभवं भगवं वागरेति;—' एवं खद्ध गोतमा ! तेणं कालेणं २ इहेव जंबुहीवे दीवे नाम दारकोऽभवद्हीन० । तस्मिन् काले २ श्रमणो भगवान् महाबीरः । समवसरणम् । तस्मिन् काले २ भगवान् गौतमः, तयेव याबद् ' एवं सछ गोतम । तस्मिन् काले २ इहैव जम्बूद्वीपे द्वीपे भारते वर्षे सर्वतोभद्रं नाम नगरमभवद् ऋछ० । तत्र सर्वतोभद्रे नगर् जितसन् णाम । तहेब पासति हत्थी, आसे, पुरिसे मज्झे पुरिसं। रणणो महेसरद्ने नामं पुरोहिए होत्था रिउबेद् जाव णगरे होत्था रिद्धः। तत्थं णं सव्रतोमहे णगरे गोतमे तहेव जाव रायमम्णं ओगाहे। गावि होत्या। तते णं से महेसरदने भारहे वासे सबओभहे णामं <sup>o</sup> होत्था । तस्त णं जितसन्नस्स <sup>:</sup>

d-k

बुज्यस्य शान्ति-होमादि अट्ट २, संबच्छरस्स सोलस २, जाहे जाहोवि य णं जितसनू राया परबलेणं अभिजुज्झाति, ताहे ताहिवि य णं जीवंतगाणं चेव हिययउंडए गेणहाबेति २ जितसतुस्त रणणो संतिहोमं करेति, तते णं से महेसरद्ते पुगोहिते अट्टामिचउइसीसु दुवे २ माहण-खातिय-वेस्स-सुद्द-दारगे, चउण्हं मासाणं चत्तारि २, छण्हं मासाणं

李 第 第 第 第

से महेसरद्ते पुरोहिष् अट्टसयं माहणदारगाणं, अट्टसयं खत्तियदारगाणं, अट्टसयं बहस्सदारगाणं, अट्ट-सयं मुहदारगाणं पुरिसेहिं गिण्हावेति २ तेसिं जीवंतगाणं चेव हियउंडष् गेण्हावेति २ जितसन्तुस्स रण्णो संतिहोमं करेति, तते णं से परबलं खिप्पामेव विद्धंसेति वा पहिसोहिजाति वा॥ सू० २४॥ एकैकं शूद्रदारकं माहयति २ तेषां जीवतामेव हदयमांसिषण्डान् माहयति २ जितरात्रो राज्ञः शान्तिहोमं करोति । ततः स महेश्वरदत्तो ' हिययउंडए ' ति हदयमांसिपिण्डान् ॥

अष्टशतं वैत्यदारकाणाम्, अष्टशतं सूददारकाणां पुरुषेप्रीहयति २ तेषां जीवतामेव हदयमांसिषण्डाम् प्राह्यति २ जितशत्रो राज्ञः शान्ति-

यदापि च जितशत्रू राजा परबलेनाभियुष्यते तदा तदापि च स महेश्वरदत्तः पुरोहितोऽष्टशतं त्राद्यणदारकाणाम्, अष्टशतं क्षत्त्रियदारकाणाम्,

पुरोहितोऽष्टमीचतुर्देशीषु द्वौ २ ब्राह्मण-क्षत्त्रिय-वैत्रय-शूद्रदारकौ, चतुर्धु मासेषु चतुरः २, षट्सु मासेष्वष्ट २ संवत्सरे पोड्य २ । यदा

होमं करोति। ततः स परवरुं स्निप्रमेव विध्वंसयति वा प्रतिषेधति वा। ततः स महेश्वरद्त एतत्कर्मो ४ सुबहु पापं यावत् समज्ये

हितस्स वसुद्ताए भारियाए पुत्तताए उववण्णे। तते णं तस्स दारगस्स अम्मापितरो निव्नचबारसा-हस्स इमं एयारूवं नामधिजं करेंति, जम्हा णं अम्हं इमे दारए सोमद्तस्स पुरोहियस्स पुत्तं वसुद्-विपणयु तीसं वाससयाइं परमाउं पालयिता कालमासे कालं किचा पंचमाए पुढवीए उक्नोसेणं सत्तरससागरो-द्रार् द्रारकस्याम्बा-पितरौ निर्धेतद्वादशाहस्येदमेतद्वपं नामघेयं कुरुतः, यस्मादस्माकमयं दारकः सोमद्तस्य पुरोहितस्य पुत्रो वसुद्ताया आत्मजः, तस्माद् जाव समाजाणिता शृहस्पतिद्त ज्जुक्त्यालभावो योवन० विज्ञक० अभवत् । स उद्यनस्य कुमारस्य प्रियवालवयस्यआष्यभवत् सहजातः सहबुद्धः सह्षांशुक्रीहिकः । मिट्टितिए नरगे उववण्णे। से णं ततो अणंतरं उब्रिटिता इहेव कोसंबीए णयरीए सोमद्नस्स विश्तं वर्षशतानि परमायुः पालयित्वा कालमासे कालं कृत्वा पक्चम्यां प्रथिन्यामुत्कपेण सप्तव्शसागरोपमस्थितिको नरक उपपन्नः भवत्वसमार्के दारको ग्रहस्पतिद्तो नाम्ना । ततः स ग्रहस्पतिद्तो दारकः पञ्चधात्रीपरिगृहीतो यावत् परिवर्धते । ततः स जोबण० म ततोऽनन्तरमुद्धत्येहैव कीशाम्च्यां नगयौ मोमद्त्तस्य पुरोहितस्य वसुक्तायां भायीयां पुत्रतयोपपन्नः । ततस्तस्य पावकस्म ) तते णं से बहस्सतिद्ते उम्मुक्कबालमावे ताए अत्तप्, तम्हा णं होउ अम्हं दारए बहस्सतिद्ने नामेणं। तते णं में तते णं से महेसरद्ते पुरोहिते एयकम्मे० ( १ ) सुबहुं पावं नियातीपरिगाहिते जाव परिवड्डति,

८५८

उद्यक् कुमार-राज्या-भेषेकः॥ कुमारे बहाहें राईसर० जाव सत्थवाहप्पभितीहिं सिद्धिं संपरिवुडे रोयमाणे कंदमाणे विलवमाणे सया-तते णं ते बहवे राईसर० जाव सत्थवाहा उद्यणं कुमारं महया २ रायाभिसेगेणं अभिसिंचाति । तते णियस्स रण्णो महया इड्डिसकारसमुद्युणं णीहरणं कराति २ बहूइं लोइयाइं मयाकिचाइं करेति होत्था। से णं उद्यणस्स कुमारस्स पियबालवयंसे यावि होत्था सहजायष् गिलियए। तते णं से सयाणीष् राया अणणया कयाति कालधम्मुणा उद्यामा रुद्धा मार्टि

18 S णं से उद्यणे कुमारे राया जाते, महया०। तते णं से बहस्सतिद्ते दारष् उद्यणस्स रण्णो पुरोहि-यकम्मं करेमाणे सब्बट्ठाणेसु सब्बभूमियासु अंतेउरे य दिण्णवियारे जाते यावि होत्था, तते णं से ततः स शतानीको राजाऽन्यदा कदाचित् कालघर्मेण संयुक्तः ततः स उद्यनः कुमारो बहुभी राजेश्वर० यावत् सार्थेवाहप्रभृतिभिः सार्थे संपरिद्यतो रुदम् कन्दम् विलपम् शतानीकस्य राज्ञो महता ऋद्धिसत्कारसमुद्येन निस्सरणं करोति २ बहुनि लौकिकानि मृतकुत्यानि करोति। भवत् । ततः स ब्रह्मपतिद्तः पुरोहित उद्यनस्य राज्ञोऽन्तःपुरं वेळासु चावेळासु च काले चाकाले च रात्रौ च विकाले च प्रविशत्रनन्यद्ग ततः स बृहस्पतिद्तो दारक उद्यनस्य राज्ञः पुरोहितकमै कुर्वाणः सर्वस्थानेषु सर्वभूमिकासु अन्तःपुरे च द्ताविचारो जातश्राप्य ततस्ते बहवो राजेश्वर० यावस्सार्थवाहा उद्यनं कुमारं महता २ राजामिषेकेणाभिषिद्धन्ति । ततः स उद्यनः कुमारो राजा जातो महा०

हिस्सतिद्ते पुरोहिते उद्यणस्त रण्णो अंतेउरं बेलासु य अबेलासु य काले य अकाले य राओ य

पासति २ आसुरुने तिबलियं भिउडिं साहहु बहस्सतिद्नं पुरोहितं पुरिसेहिं गिणहाबेति २ जाव एतेणं वियाले य पविसमाणे अण्णया कयाति पउमावतीए देवीए सिंह संपलमे यात्रि होत्था, पउमावतीए विहाणेणं वज्झं आणवेति। एवं खळु गोतमा! वहस्सतिद्ने पुरोहिते पुरा पोराणाणं जाव विहरति। पउमावती देवी तेणेव उवा० २ वहस्सतिदनं पुरोहितं पउमावतीए देवीए सर्छि उरालाइं॰ भुंजमाण देवीए सिंद्धं उरालाइं॰ मुंजमाणे विहराति । इमं च णं उद्यणे राया णहाए जाव विभासिते

मिम्पितो यत्रैय पद्मायती देवी तत्रैबोपागच्छति २ ब्रह्स्पतिद्तं पुरोहितं पद्माबत्या देच्या सार्थमुदारान्० मुझानं पर्यति २ आशुरुप्रसित्र-वित्र मं भुकृष्टि संद्रत्य मुहस्पतिदनं पुरोहितं पुरुपैत्रहिचति २ यावदेतेन विधानेन बध्यमाज्ञापयति एवं खङ् गौतम । बृहस्पतिदन्तः पुरो-म्दाजित् पद्माबस्या देज्या मापै संप्रतमञ्जाष्यभवत् । पद्मावसा देज्या सार्धमुदारान् अञ्जानो विहरति । इतश्रोदयनो राजा स्नातो याबद् हिनः पुरा युराणानां गावद् विहर्ति ।

'बेलास' नि अबरेषु मोजन-ग्यनादिकाले विवस्य थै: । 'अबेलासु' नि अनवसरेषु । 'काले' तृतीयप्रथमग्रहरादौ । 'अकाले' च मध्या-

TANDON CONTRACTOR AND CONTRACTOR AND

त्नादौ । अकालं विशेषणाह-'राओति' रात्रौ । 'वियाले'ति संध्यायाम् । 'संपल्पो'ति आसक्तः ॥इति पञ्जमाध्ययनं समाप्तम्॥

| | | | | शह-स्पति-र्नास्य विस्थि-विस्थि-विस्थि-गोतमा! बहस्सितिद्ते णं दार्ष पुरोहिते चउसिट्टें वासाइं परमाउं पालियिता अज्ञेव तिभागावसेसे दिवसे सूलीयभिणो कते समाणे कालमासे कालं किचा इमीसे रयणप्पभाष्० संसारो तहेव पुढवी। ततो हिस्थणाउरे णगरे मियताष् पचायाइस्सिति। से णं तत्थ वाउरिष्हिं वहिते समाणे तत्थेव हित्थ-हस्तिनापुरे नगरे मुगतया प्रत्यायास्यति । स तत्र वागुरिकेहेतः संस्तत्रैव हस्तिनापुरे नगरे अधिकुले पुत्रतया० वोधिः० सौधर्मे० महा-परमायुः पालयित्वाऽचैव त्रिभागावशेपे दिवसे श्लिभिन्नः कृतः सन् कालमासे कालं कृत्वाऽस्यां रत्नप्रभायां० संसारस्तथैव पृथिवी । ततो 'बृहस्पतिद्त्तो भद्न्त ! पुरोहित इतः कालगतः कुत्र गमिष्यति १ कुत्रोपपत्स्यते १' 'गौतम ' बृहस्पतिद्त्तः पुरोहितश्रद्धःषष्टिं वर्षाणि 'बहस्सतिद्ते णं भंते! दारष् युरोहिते इओ कालगते समाणे कहिं गाच्छाहिति ! कहिं उववज्जिहिति !' णाउरे णगरे सेडिकुळींस युनताए० बोहि॰ सोहम्मे॰ महाविदेहे॰ सिडिझिहिति णिक्खवो ॥ (सू॰ २५) ॥ पंचमं अज्झयणं समत्।॥ ॥ पश्चममध्ययनं समाप्तम् ॥ विदेहे० सेत्स्यति । निस्नेपः ॥ 왕-| विपाके | 왕대-| अस-

पुने गांदिवद्यणे गामं क्रमारे अहीणः जाव जुवराया। तस्त सिरिदामस्त सुवंधू नामं अमचे होत्था सामदंड०। तस्त णं सुवंधुस्त अमचस्त सेरिदामस्त रण्णो चिनं बहुविहं अलंकारियकम्मं करेमाणे सन्बद्धाणेसु सन्बभूमियासु य अंतेउरे य अय पष्टे किचिछिल्यते। 'चिनं बहुविहे'ति आश्रयमूतं बहुप्रकारं चेत्वर्थः। 'अलंकारियकम्मं'ति धुरकमे। 'सन्बहुाणेसु'ति बहुमित्तापुत्ते णामं दारष् होत्था अहीण० तस्स णं सिरिदामस्स रणणो चित्ते णामं अलंकारिष् होत्था श्रत्यास्थानमोजनस्थानमन्त्रस्थानादिषु, आयस्थानेषु वा शुल्कादिषु । 'सन्वभूमियासु'नि प्रासादभूमिकासु सप्तमभूमिकावसानासु, गन्धुशीमोत्यो । पुत्रो नन्दीवर्धनो नाम कुमारः अहीन० यावद् युवराजः । तस्य श्रीदान्नः सुबन्धुनोमामात्योऽभवत् सामद्ग्ट० । तस्य मालंकारिकं कमें कुर्वाणः सर्वस्थानेषु सर्वभूमिकास्त्रन्तःषुरे च द्तविचारआत्यभवत्। तस्मिन् काले २ स्वामी समवस्यतः। परिषद् सुवन्योरमात्यस्य यहमित्रापुत्रो नाम दारकोऽभवदृहीन*ं* । तस्य श्रीदाम्नो राज्ञश्चित्रो नामालंकारिकोऽभवत् । श्रीदाम्नो राज्ञश्चित्रं वहुचिध-तेणं कालेणं २ महूरा णगरी। भंडरी उज्जाणे यिः भव्न्त ! पप्ठस्योपक्षेपः। एवं खळु जम्बो ! तिसम् काले २ मथुरा नगरी । भण्डीरमुचानम् । सुदर्शनो यक्षः श्रीदामा राजा । जित गं भंते !० छट्टस्स उक्खेवो। एवं खिछ जवूं। ने ॥ अथ नन्दिवधनास्यं ह सुद्रिसणे जक्खे। सिरिदामे राया। बंधुसिरी भारिया।

मुहेन गोतमे प्रमाने श्रीक्स्य श्रीक्स्य ランと 314123316123314115 ादेषु वा अमात्यादिषु । 'दिण्णवियारे' ति राज्ञानुज्ञातसंचरणः, अनुज्ञातविचारणो वा । 'फलकलभरिएहिं' ति कलकलायत इति (महया राया ) भिसेऐणं अभि-तजा च निर्गतो यावद् गतः। तस्मिम् काले २ अमणस्य ज्येष्ठो यावद् राजमार्गमवगाढस्तथैव हस्तिनः, अथान्, पुरुषान्, तेपां च पुरुपाणां मध्य-गतमेकं पुरुषं पश्यति यावद् नरनारीसंपरिवृतम्। ततस्तं पुरुषं राजपुरुषाश्चत्वरे तप्नेऽयोमये समज्योतिभूते सिंहासने निषाद्यन्ति । तद्नन्तरं च पुरुपाणां मध्यगतं बहुमिरयःकलशैस्तप्तैः समज्योतिभूतैरप्येके ताम्रभृतैः, अप्येके त्रपुभूतैः, अप्येके सीसकभृतैः, अप्येके कलकलभृतैः गदा अयकलसेहिं तत्तेहिं समजोइभूतेहिं अप्पेगइया तंबमारिएहिं, अप्पेगइया तउचमारिएहिं, अप्पे० र गमारिएहिं, अप्पे० कलकलमारिएहिं, अप्पे० खारतेछभारिएहिं महया ( महया राया ) मिसोऐणं इ दिण्णवियारे यावि होत्था। तेणं कालेणं २ सामी समोसहे। परिसा राया य निग्गओ जाव ग तेणं कालेणं २ समणस्स जेट्टे जाव रायमग्गं ओगाहे तहेव हत्थी, आसे, पुरिसे; तेरिं च णं पुरि मञ्झगयं एगं पुरिसं पासति जाव नरनारिसंपरिष्ठेडं। तते णं तं पुरिसं रायपुरिसा चचरांसि र निवेसावेंति। तयाणंतरं च णं पुरिसाणं मज्झगयं कलकलं चूर्णकादिमिश्रजलं तद्भुतैः । 'ततं अओमयं ' इत्यादिविशेषणं हारं ' पिणद्वंति ' ति परिधापयन्ति । क्षारतैलभुतैमेहामिषेकेणाभिषिख्चन्ति । तद्नन्तरं च तप्तमयोमयं समज्योतिभूतं (अयोमयं) संद्शकं गृहीत्वा अओमयंसि समजोइभूयंसि सिंहासणंसि । विश्वाम विश्व व्याप्त विश्वाम विश्व अ-निपाके १ श्रुत-क्रान्यः

वाला मिन्द्र । सामि सीहरहे णामं राया होत्या । तस्त णं सीहरहस्त रण्णो दुज्जोहणे नामं चारगपाले तेणं कालेणं २ इहेव जंबुहीवे दीवे भारहे वासे सीहपुरे णामं णगरे होरथा रिन्न०। गिर्दिति, पालंग्रं पिणद्विति, कडिसुनयं पिणद्विति " इत्यादि दृश्यम्, त्रिसरकं प्रतीतम्, प्रालम्बो झुम्बनकम्, कटीस्त्रं न्यक्तम् समजोतिभूयं अओमयं संडासगं गहायं हारं पिणद्वीत र्मि कुत्वेत्याह—अयोमपं संदंशकं गृहीत्वेति । तत्र हारोऽष्टाद्शसरिकः । 'अद्धहारं' ति नवसरिकः, यावत्करणात् ' तयाणंतरं च णं अद्धहारं जाच पट्टं मउडं। चिंता तहेव जाव तयाणंतरं च णं ततं अओमयं तत्य णं सीहपुरे णगरे । 'एवं खट्ट गोतमा। 

नाम राजाऽभूत्। तस्य सिद्र्यस्य राजो हुर्योधनो नाम चारकपालोऽभवद्धाभिको यावद् हुष्प्रसानन्दः। तस्य हुर्योयनस्य चारकपाल-' एनंतालु गीतम ! तिसम् काले २ इहेव जम्बूद्वीपे द्वीपे भारते वर्षे सिह्युरं नाम नगरमभूहद्ध० । तत्र सिह्युरे नगरे सिह्युरो तया हि-" न में दिड़ा नरया वा नेरइया वा, अयं पुण पुरिसे निरयपडिरूवयं वेयणं वेएइ " ति; यावत्करणादिदं दक्यम्-पड़ें 'ति ललाटाभरणम्, मुकुटं शेखरकः । ' चिंता तहेव ' ति तं पुरुपं दघ्टा गौतमस्य विकल्पस्तथैवाभूव् यथा प्रथमाष्ययने ते गुप्तयुपकरणम् 'नागरेड़' नि 'कोऽसौ जन्मान्त आसीत ?' इन्येवं गौतमः प्रच्छति, भगवांस्तु न्याकरोति कथयति। 'चारगपाले' ति ग्रुप्तिपालकः। "अहा-पञ्जसं. भन्तपाणं पिट्टमाहेड् २ जेणेव समणे भगवं तेणेव उवागच्छड " इत्यादि वाच्यम् । नद्नन्तरं चाथेत्रं यायत् पट्टं मुक्कटम् । चिन्ता, तथैच यावद् ज्याकरोति;—

माञ्जाना ज्या

अप्येकाः हस्तिमूत्रभूताः, अप्येका ऊष्ट्रमूत्रभृताः, अप्येका गोमूत्रभृताः, अप्येका महिषमूत्रभृताः, अप्येका धावक-मूत्रभूता बहुपरिपूणोसितप्रनित । तस्य दुर्योधनस्य वारकपालस्य बहवो हस्तान्दुकानां च पादान्दुकानां च हडीनां च निगडानां च श्रङ्खलानां दुज्जोहणस्स चारगपालस्स बहवे हत्थंदुयाण य पायंदुयाण य हडीण य नियलाण य संकलाण य स्येद्मेतद्र्ं चारभाण्डमभवत् । तस्य दुर्योधनस्य चारकपालस्य बह्वोऽयःकुण्डवोऽप्येकास्ताम्भताः, अप्येकास्तप्रभताः अप्येकाः सीसकभताः, अप्येकाः कलकलभूताः, अप्येकाः क्षारतैलभूता अभिकाये आहितास्तिष्ठन्ति । तस्य दुर्योधनस्य चारकपालस्य बहुबो घट्योऽश्वमूत्रभूताः, अप्पे० हारियमुत्तमिरियाओ, अप्पे० उद्दमुत्तमिरियाओ, अप्पे० गोमुत्तमिरियाओ, अप्पे० महित्तमुत्तमिरि-याओ, अप्पे अयमुत्तमरियाओ, अप्पे एलमुत्तमरियाओं बहुप्पिडिप्पुण्णाओं चिट्टेति। तस्स णं ' हत्थंदुयाण ' ति अन्दूनि काष्टादिमयबन्धनविशेषाः, एवं पादान्दुकान्यपि । ' हडीण य ' ति हड्यः खोटकाः । होत्था अधिमिए जाव दुप्पिडियाणंदे। तस्स णं दुजोहणस्स चारगपालस्स इमे एयारूने चारग-अप्पे० तडयभरियाओ, अप्पे० सीसगभरियाओ, अप्पे० कलकलमरियाओ, अप्पे० खारतेह्वभरियाओ अगणिकायंति अह्हियाओ चिट्टति। तस्त णं हुजोहणस्त चार्या० बह्वे उद्दियाओ आसमुन्तमिरियाओ, मंडे होत्था । तस्त णं दुर्जोहणस्त चारगपालस्त बहवे अयकुंडीओ अप्पेगतियाओ तंबभरियाओ,

चिट्टाति। तस्त णं दुजोहणस्त चारगपालस्त बहवे वेणुलयाण य वेत्तल-पुजा निक्तासित्विनित । तस्य दुर्योयनस्य बहुनस्तन्त्रीणां च वरत्राणां च वरकरञ्जूनां च वालरञ्जूनां च सूत्ररञ्जूनां च पुजा निकराः पुता निकरात्र संनिधिप्तारितप्तनित । तस्य दुर्योजनस्य नारकपालस्य वहनो नेणुलतानां च वेत्रलतानां च चित्रालतानां च क्षिपाणां । 'तए जंसे' नि एतस्य स्थाने वहने सिलाण य लउडाण य मुग्गराण य कणंगराण य पुंजा णिगरा चिट्टांति। तस्त णं हुज्जो ' वेत्तलयाण य ति । 'कर्णगराण य' ति के पानीये मुद्रराणां च कनङ्गराणां ताडनप्रयोजनानि । तेषां पुझास्तिष्टन्तीति योगः य वालरज्जूण य सुत्तरज्जूण य पुंजा णिगरा तस्त णं दुजोहणस्त वहवे असिपताण य करपताण य खुरपताण य ति श्वश्णचमैकशानाम्। शिलानां न लकुटानां च नि मशिखरी गांशः ' निगर ' नि राशिमात्रम् । ' वेणुलयाण् य ' नि स्थलवंशलतानाम् । निट्रंति। mm mmmi । भुग्मराण य 'ति व्यक्तम् । निअलीकरणपापाणास्ते कनङ्गराः, कानङ्गरा वा ईषञङ्गरा इत्यथंः। ं चिंच ' ति चित्रालतानाषु अभिनलिकाकम्नानाम् । ' छिनाण ' क्जामां च बर्कार्यमीनां च पुजा निकरास्तिष्ठनित । तस्य दुर्योधनस्य चा० बहवः य चिंचा० छिबाण य कसाण य बायरासीण य पुंजा । ' वायरासीण ' नि वल्करत्रमयो चटादित्वङ्मयासिन्द्राणि सिलाण य' नि दपदाम्।' लउडाण य' नि लगुडानाम्। तंतीण य वरताण य नागरज्जूण मेखता चिट्टीते। नद्गारा गोविस्य रमेयष्टिकानाम् ।

पहे-चारक-चारक-पालड़-योंधन-ख वणी-1000 ांनिक्षिप्तास्तिष्ठन्ति । तस्य हुर्योधनस्य बह्वोऽसिपत्राणां च करपत्राणां च कुरपत्राणां च कद्म्वचीरपत्राणां च पुज्जा निकरास्तिष्ठन्ति। तस्य हुर्या-नखच्छेदनानां च दुर्भोणां च पुझा निकरास्तिष्ठन्ति । ततः स दुर्योधनश्चारकपालः सिंहरथस्य राज्ञो बहुश्चौरांश्च पारदारिकांश्च मन्थिभेदांश्च रूचीनां च दम्भनकानां च मुद्रराणां च पुज्जा निकरास्तिष्ठन्ति । तस्य दुर्योधनस्य चारक० बहवः शस्त्राणां च पिष्पळानां च कुठाराणां च धनस्य चारक० वहवो छोहकीछानां च बंशशळाकानां च चमेपट्टानां चाळपट्टानां च पुञ्जा निकरास्तिष्ठन्ति। तस्य दुर्योधनस्य चारक० बहवः कडसनकराण य कोडिलाणं ' ति हस्वमुह्रस्विशेषाणाम् । ' अलाण य' ति अलानां द्यिकपुच्छाकृतीनाम्। ' असिप्ताण य' ति असीनाम्। ' कलम्बचीरपताण य ' ति कदम्बचीरं शक्वविशेषः। तते णं से द्रजोहणे चारगपाले सीहरहस्स रणणो बहवे चोरे य पारदारिए य हिछयणाण य दन्माण य पुजा चार्ग० बहुव लिहिश्यलाकादिमिः परश्ररीरेऽङ्क उत्पाद्यते तानि द्म्भनकानि । ' 'तस्स णं ' ति मन्यामहे, एतस्यैव संगतत्वात्, पुस्तकान्तरे दर्शनाचिति । ' चम्मपट्टाण य ' ति वधाणाम् । सत्थाण य पिष्पलाण य कुहाडाण य ' खुरवताण य ' ति क्षुराणाम्। पह्डाण ताण य पुंजा णिगरा चिट्टांति। सूईण य इंभणाण ति ककचानाम्। िस्त्रीम रिस्त्री स्वास्त्र मिस्त्री 一下の人 स्कृत्यः

बगारी य अणघारए य वालघाती य वीसंभघाती य जूतिकारे य खंडपट्टे य पुरिसेहिं गेण्हावेति २ सा अप्पेगतिए सीसमं पज्जेति, अप्पे० कलकलं प०, अप्पे० खारतेछं प०। अप्पेगतियाणं तेणं चेत्र अभि-सेगं करेति। अप्पे॰ उत्ताणे पाडेति २ आसमुनं पज्जेति, अप्पे॰ हरिथमुनं पज्जेति, जाव एलमुनं पज्जेति। अप्पे॰ हेट्टामुहे पाडेति, घलघलस्स वम्मावेति २ अप्पेगतियाणं तेणं चेव ओवीलं दलयाति। अप्पेगतिष् तउयं पज्जोते, ऋणघारकान् । ' संडपट्टे य ' ति धूननि । ' अप्पेगइए ' ति अप्येककान् कांबिदपीत्यर्थः । ' पजेह ' ति ' पाययति । अप्पेग-इयाणं तेणं नेव ओवीलं दलयति ' तेनेव वान्तेन अवपीडं शेखरं, मस्तके तस्यारोपणात्, उपपीडां वा वेदनां ' दलयइ ' ति य ' ति प्रन्छत्रकानाम् । । ' पिष्पलाण य ' ति हस्बशुराणाम् । कुठारा नखच्छेदकानि । दर्भात्र प्रतीताः । ' अण्याराए ' नि उत्ताणए पाडेति, लोहदंडेण मुहं विहाडेति २ अप्पेगतिए तत्ततंवं पजेति,

राजाप गारिणअ क्रणधारकांश्र वालघातिनश्र विश्रम्मयातिनश्र बूतकारांश्र धूर्तांश्र पुरुपैप्रौहयति, उत्तानाम् पातयति, लोहटण्डेन काम् आरतीलं पाययति । अप्येकेषां तेनैवाभिषेकं करोति । अप्येकानुतानाम् पातयति २ अत्थमूत्रं पाययति, अप्येकाम् इस्तिमूत्रं गुरसुद्वाटयति २ अप्येकांस्तप्रताज्ञं पाययति, अप्येकांक्षपु पाययति, अप्येकान् सीसकं पाययति, अप्येकान् कलकलं पाययति, अप्ये-पाययति यावरेडम्मूतं पाययति । अप्येकानषोमुखान् पातयति, घलघलं वमयति २ अप्येकेषां तेनैबावपीडं दापयति । अप्येकान्

मुहेर-नीन्द-वीस्य सूक-जन्म । पाययति । अप्येकानसिपत्रैश्च यावत् कदम्बचीरप-यावद् बल्करश्मिमिश्च घातयति । अप्येकानुत्तानान् कारयति, उरसि शिलां दापयति २ लकुटं क्षेपयति २ पुरुषेकत्कम्पयति । अप्येकां-हस्तान्दुकैर्बन्धयित, अप्येकान् पादान्दुकैः, अप्येकान् हडिबन्धनान् करोति, अप्येकान् निगडबन्धनान् करोति, अप्येकान् संकोचिताप्रे-डिताम् करोति, अप्येकाम् श्रद्धळावन्धनाम् करोति, अप्येकाँशिछत्रहस्ताम् करोति यावच्छक्षोत्पाटिताम् करोति। अप्येकाम् वेणुलताभिश्च छिणाए करेह ' इत्यत्र यावत्करणादिदं दश्यम्—" पायच्छिन्नए, कन्नच्छिनए,, एवं नक्त-उड्ड-जिब्भ-सीसच्छिन्नए " इत्यादि । ' सत्योवाहिए ' िन शक्षावपाटितान खड्गादिना विदारितान । ' अप्पेगडए वेणलयाहि य ' इत्यत्र यावत्करणात " वेत्तलयाहि अप्पे० हरथंदुयाहिं बंघावेइ, अप्पे० पायंदुयाहिं, अप्पे० हडिबंघणे करेति, अप्पे० नियलवंघणे करेति, अप्पे० संकोडियमोडियए करेति अप्पे० संकलवंघणे करेति, अप्पे हत्थछिणाप् करेति जाव सत्थोवाडिए र चिचालयाहि य " इत्यादि दृश्यम् । ' उरे सिलं दलावेइ ' इत्यादि उरिस पाषाणं दापयिति, तदुपिर लगुर्ड दापयित, ततस्तं दलावेति २ लउलं छुभावेति २ पुरिसोहें उक्कंपावेति । अप्पे० तंतीहि य जाव सुत्तरज्जूहि य हत्थेस य पादेसु य बंधावेति, अगडांसि उच्चूलं बोलगं पज्जेति । अप्पे० असिपतेहि य जाव कलंबचीरपतेहि ं ति संकोटिताश्र संकोचिताङ्गा मीटिताश्र विलिताङ्गा इति द्वन्द्वीऽतस्तान्। ' अप्पेगह्प हत्थ-करेति । अप्पे० नेणुलयाहि य जाव वायरासीहि य हणावेति । अप्पे० उत्ताणाप् कारवेति, उरे रि स्तन्त्रीभिश्च यावत् सूत्ररज्जुभिश्च हस्तेषु च पादेषु च बन्धयति, अवदेऽबचूलं कर्पणं 気に **3**37-**3**37-**3**4-4:1

学電

चडचडमु-दन्मेहि य कुसेहि य उल्लचम्मेहि य वेहा-वैत्रत्र पच्छाद्यति, स्रारतेलेनाभ्यत्रयति । अप्येकेषां छछाटेषु चाबदुसु च कूपेरेषु च जातुषु च गुरुकेषु च छोह्कीलकाम् कंश्रारालाकान्र उच्चूलं बोलगं ' ति अधःशिरस मावाथ: । ' खलुएसु ' ति पादमणिवन्येषु । 'अलए भंजावेइ ' ति श्रश्निककण्टकान् श्रीरे प्रवेश्यतीत्यथैः गपयित, अलानि भस्रयति । अप्येनेपां सूचीख्र दम्भकानि च हस्ताङ्गुलियु च पादाङ्गुलियु च सुद्गरेराखोटयति २ भूमि कण्ड्रययित मिति लैंकिकी भाषा, कार्यतीति तु ,रुपाम्यां लगुडोभयप्रतिनिविष्टाम्यां लगुडमुत्कम्पयति-अतीव चलयति यथाऽपराधिनोऽस्थीनि दल्यन्त इति भावः । णिडालेसु य अबेड्स य काप्परस 'डंभणाणि य' त्ति स्नीप्रायामि डम्भकारकाणि हस्ताङ्गुल्यादिषु । 'कोटिछएहिं 'ति दापयति २ शुष्के ते, इत यावत्करणादिदं दश्यम्-" बरत्ताहि य वागरज्जूहि " इत्यादि । 'अगडांसि ' ति क्ष्पे । ' आतप भित्र नेष्टयति, खाद्यतीत्यादि िंग आस्तोटयति प्रवेशयतीत्यथं: । 'भूमिं कंड्यावेइ ' ति अङ्गुलीप्रवेनि जाव नहच्छेद्णएहिय अंगं पच्छावेइ अप्येगतियाणं कर्पणं ' पजेह ' ति पाययति, य हत्यंग्रलियास य पायंग्रलियास अप्येकेमां साबैश याबद् नखच्छेदनैश्वाङ्गं प्रच्छाद्यति । द्भैश्च ं मोलपा ' वारतल्ल्या नि क्रकाटिकास । सत्येप्हिं य उपारिपादस्य कूपजल Hali: 47 AIRIN

मही-निद-पेशस्य सुरायां चार० एय-आयवंसि दलयति २ सुक्ले समाणे चडचडस्स उप्पाडेति। तते णं से दुज्जोहणे स् रह नवण्ह मासाण से णं ततो अणंतरं उन्नाहना इहेन ग्रेट्डॉस पुननाए उववण्णे । विपाके १ शुत-स्कन्धः। 115311

इ उप पारवङ्गाति । तर्गे गंदिसेणे नामेण । तते णं से णंदिसेणे कु० पंचधातीपरिबुंडे जाव णिटवत् बारसाहं इम एयारूव प गं तस्स दारगस्स अम्मापितरो ।

स ततोऽनन्तरमुद्घुन्येहेव मथुरायां नगर्यां श्रीदाम्नो राज्ञो बन्धुश्रियो देव्याः कुक्षौ पुत्रतयोपपन्नः । ततो बन्धुश्रीमेवमु मासेषु बहु-काल कृत्वा पालियित्वा कालमासे ' दन्मेहि प ' नि दमीः समूलाः । ' कुसेहि प ' नि कुशा निर्मेलाः । त्पाटयति । ततः स दुर्योधनश्चारक एतत्कमो ४ सुबहु पापं समज्यैकत्रिशतं वर्षेशतानि परमायुः ाड्यां प्रथिन्यामुत्कर्षेण द्वाविंशतिसागरोपमस्थितिकेषु नैरथिकेषुपपन्नः रीते कुत्वा भूमिकण्ड्यनं कारयतीति ।

1631 निन्द-रिपूर्णेषु यावद् दारकं प्रजाता । ततस्तस्य दारकस्याम्बापितरौ निष्टेते द्वाद्शाह् इद्मेतद्क्षं नामघेयं क्रुरुतः-भवत्वस्माकं दारको

राणि य छिद्दाणि य विरहाणि य पडिजागरमाणे विहरति । तते णं से णंदिसेणे कुमारे सिरिदामस्त रण्णो अंतरं अलभमाणे अण्णया कयाइ चित्तं अलंका-जिसि किरमाणे पालेमाणे विहरित्तए। तते णं से णंदिसेणे कुमारे सिरिदामस्स रण्णो बहुणि अंत-ततः स नन्दियेषः कुमारः श्रीवाम्नो राजोऽन्तरमलभमानोऽन्यवा कवाचित्रित्रमालेकारिकं सब्द्यति २ एवमवदतः—' त्यं देवातु-क्षीविनास् उथपरीस्य स्वयमेव राज्यश्रियं कार्यम् पाल्यम् विहर्तुम्। ततः म नन्दिषेणः कुमारः श्रीदाम्नो राज्ञो बहुन्यन्तराणि च कुमारे ' ' अंतराणि य ' ति अवसरान् । ' छिदाणि य ' ति अल्पपारेवारत्वानि । ' विरहाणि य ' ति विजनत्वानि । ' एवं सेणे कुमारे उम्मुक्कवालभावे जाव विहरति जाव जुवराया जाते यावि होत्था । तते णं से णंदिसेणे स्यमेव पेणो नाम्ना । ततः म निन्दिपेणः कुमारः पञ्चधात्रीपरिवृतो यावत् परिवर्धते । ततः स नन्दिपेणः कुमार उन्मुक्तवालभावो यावद् विह-रियं सहायेति २ एवं वयासी—' तुमं णं देवाणु० सिरिदामस्स रणणो सन्बद्घाणेसु सन्बभूमियासु रति यात्रद् युपराजो जातश्राप्यभवत् । ततः स नन्दिपेणः कुमारो राज्ये च यावद्न्तःपुरे च मून्छितः ४ इच्छति श्रीदामानं कुमारे रज्जे य जाव अंतेउरे य मुच्छिते ४ इच्छाति सिरिदामं रायं जीविताओं वबरोविता । न्छत्राणि न विरक्षात्र प्रतिजागरयन् विहरति

183 183 मेत्रामि समालं-स्राप्ति प्रति नित्ये-व्यस्य तुमं देवाणुष्पिया ! सिरिदामस्त रण्णो अलंकारियं कम्मं करेमाणे गीवाष् खुरं निवेसीह, तण्णं अहं तुमं अद्धरिज्जियं करिस्सामि, तुमं अम्होहिं सिद्धं उराले मोगमोगे मुंजमाणे विहरिस्सिसि'। तते णं उवा० २ सिरिदामं रायं रहास्त्रयं करयल० जाव एवं वयासी;-' एवं खल्ठ सामी! णंदिसेणे कुमारे तत् त्वं देवानुप्रिय । श्रीदाम्नो राज्ञ आळंकारिकं कमे कुर्वाणो श्रीवायां क्षुरं निवेशय, ततोऽहं त्वामधेराज्यिकं करिष्यामि, त्वमस्माभिः मार्घिष्यति, इति छत्वा भीतो ४ यत्रैच श्रीदामा राजा तत्रैबोपागच्छति, उपागत्य श्रीदामानं राजानं राहस्यिकं करतळ० याबदेवमवा-कारियस्त इमे एया रूने जाव समुप्पिडजत्था-जति णं ममं सिरिदामे राया एयमट्डे आगमेति, ततो चित्रस्यालंकारिकस्यायमेतदूपो यावत् समुद्पद्यत—यदि मम श्रीदामा राजैनमर्थमागच्छति, ततो मम, न ज्ञायते, केनचिद्युभेन कुमारेण अतेउरे य दिण्णवियारे सिरिदामस्त रण्णो अभिक्खणं २ अलंकारियं कम्मं करेमाणे विहरित, तण्णं णं ममं, ण णज्जाति, केणड् असुभेणं कुमारेणं मारिस्सतिति कट्ट भीष् ४ जेणेव सिरिदामे राया तेणेव सार्धमुदारान् भोगान् भुञ्जानो विद्यरिष्यसि '। ततः स चित्र आळंकारिको नन्दिषेणस्य कुमारस्य वचनमेतद्र्भेकं प्रतिश्रुणोति। ततस्तस्य से चित्ते अलंकारिए णंदिसेणस्त कुमारस्त वयणं एयमट्टं पिडसुणेति । तते णं तस्त चित्तस्त अलं-प्रिय ! श्रीदाम्नो राज्ञः सर्वस्थानेषु सर्वभूमिकासु अन्तःपुरे च दत्तविचारः श्रीदाम्नो राज्ञोऽभीक्ष्णम् २ आलंकारिकं कर्मे कुर्वाणो विहरिस, 1200 ₹ श्रत-

'णांदिसेणे कुमारे इओ चुते कालमासे कालं किच्चा कहिं गच्छिहिति ? कहिं उवविज्जिहिति ?' 'से गोतमा ! णांदिसेणे कुमारे सिट्टें वासाइं परमाउं पालियिता कालमासे कालं किच्चा इमीसे रय-णप्पभाए पुढवीए० संसारो तहेव । ततो हरिथणाउरे णगरे मच्छत्ताए उववण्णे । से णं तत्थ मच्छि-बिहारितए '। तते णं से सिरिदामे राया चित्तस्त अलंकारियस्त अंतिए एयमट्टं सोचा निसम्म ४ आसुरने जान साहडु गांदिसेणं कुमारं युरिसेहिं गेण्हानेति २ एएणं विहाणेणं बज्झं आणवेति। तं एवं रूजे जाव मुच्छिते ४ इच्छिति तुच्मे जीविताओ ववरोबेता सयमेव रज्जसिर्धि कारेमाणे पालेमाणे गैन्,—' एवं राखु स्वामिन्! नन्दिपेणः कुमारो राज्ये यावद् मूच्छितः ४ इच्छति युष्माञ्जीविताद् ज्यपरोष्य स्वयमेव राज्यश्रियं नारयन् पालयन् बिहर्तुम् '। ततः स श्रीटामा राजा चित्रस्यालंकारिकस्यानितके एतमधै श्रुत्वा निशम्याशुरुप्तः ४ यावत् संहत्य ननिद्पेणं ' निन्येणः कुमार इतश्च्यतः कालमासे कालं कुत्वा कुत्र गमिष्यति ! कुत्रोपपत्स्यते ! ' स गीतम! बन्दिपेणः कुमारः पष्टि बपीजि परमायुः पालियित्वा कालमासे कालं कृत्वाऽस्यां रत्नप्रभायां प्रथिन्यां० संसारस्तथेव । ततो हस्तिनापुरे नगरे मत्स्यतयोषपन्नः, कृगारं पुरुरोमोह्यति २ एतेन वियानेन वध्यमाज्ञापयति । तदेवं खळ गौतम ! नन्दिपेणः पुत्रो यावद् विहरति । ' खलु गोतमा! गंदिसेणे युत्ते जाब विहरति।'

| क स्थापन<br>स्थापन<br>स्योपसं                                                                                                                                                                                                           |                                                                                                                                                                           | <b>&amp;</b>                                                                                                                                                                                                     |                  | HE SH |  |  |  |
|-----------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|---------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|------------------|-------|--|--|--|
| श्री पहिं बाहिते समाणे तत्थेव सिट्ठिकुले० बोहि० सोहम्मे० महाविदेहे सिन्धिहिति बुन्झिहिति मुन्चि-<br>हिति परिनिव्वाहिति सव्बदुक्स्वाणं अंतं करेहिति'। एवं खद्ध जम्बू! णिक्खेवो। छट्ठस्स अब्झय-<br>णस्स अयमट्टे पण्णतेत्ति बेमि॥ (सू० २७) | सब्छ जंबू ' इत्यादि निक्षेपो निगमनं पष्ठाष्ययनस्य यावत् 'अयमहे ' इत्यादि । बेमि ' ति ब्रवीस्यहं भगवतः समीपेऽधं<br>अ व्यतिकरं विदित्वेत्यर्थः। ।। इति पष्ठाष्ययनविवरणम् ।। | मास्यिकेहैतः संस्तत्रैव श्रिष्ठकुले वोधि तौधमें महाविदेहे सेत्स्यति मोत्त्यते पोह्यते परिनिर्वास्यति सर्वेदुःखानामन्तं करिष्यति '।<br>एवं खलु जम्बो ! निक्षेपः । षष्ठस्याध्ययनस्यायमर्थः प्रज्ञप्त इति त्रवीमि ॥ | अ<br>अ<br>अ<br>अ |       |  |  |  |
| भू-<br>वियाके<br>कम्प्रता<br>।हिथा।                                                                                                                                                                                                     |                                                                                                                                                                           |                                                                                                                                                                                                                  |                  |       |  |  |  |

## ॥ अथ सप्तमम्म्बर्दताष्ट्यमध्ययनम्

जिति णं भंते ! उम्खेनो सत्तमस्स, एवं खट्ट जम्बू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं पाडिलिसंडे

( नाम ) उज्जाणे, उंबरद्ते जक्ते, तत्थ णं पाडलिसंडे णगरे सिष्टत्थे राया, तत्थ णं णगर्। नणसंहे

गडिलिसंडे सागरद्ने सत्यवाहे होत्या अड्डे०, गंगद्ना भारिया, तस्स णं सागरद्नस्स पुने गंगद्नाए

जाव परिसा गता । तेणं कालेणं २ भगवं गोतमे तहेव जेणेव पाडलिसंडे णगरे तेणेव उवा० पाडलि-

भारियाए अत्तए उंबरद्ते नामं दारए होत्या अहीण०।

तिणं कालेणं २ समणस्स भगवओ ।

यज्ञः । तत्र पाद्यक्षिपण्डे नगरे सिद्धायों राजा । तत्र पादिलेपण्डे सागरदृत्तः सार्थवाहोऽभवदाङ्गः । गङ्गदृत्ता भायों । तस्य सागरदृत्तस्य गुरों गर्तार्ताया भार्याया आत्मज उन्वरदत्तो नाम दारकोऽभूद्दीन० । तस्मिन् काले २ अमणस्य भगवतः समबसरणं यावत् परिगद् यति भद्रन्त ! उपस्रेपः मप्तमस्य । एवं खळु जम्त्रो ! तिसम् काले तिसम् समये पाटिलिपण्डं नगरम् । वनपण्डमुद्यानम् । उम्बरद्ती अय सप्तमे किञ्जिष्टिरुपते। ' जह णं मंते ' इत्यादिरुपक्षेपः सप्तमस्याष्ययनस्य बाच्य इति। ' कच्छुछं ' ति कण्डूमन्तम्

गता । गरिमन् काले २ भगवान् गौतमस्तयैव यत्रेय पाटलिपण्डं नगरं तत्रैवोपा० पाटलिपण्डं नगरं पौरस्येन हारेणानुप्रविश्नति । तत्र

डम्बर्-द्वा-ध्ययन-ध्यमेर्ने-ति लालाभिः क्रेदतन्तुभिः प्रगलन्तौ कर्णौ नासा च यस्य स तथा तम् । ' अभिक्तवणं ' ति पुनः पुनः । ' कट्ठाइं ' ति क्रेशहे-तुकानि । ' कलुणाइं ' ति करुणोत्पादकानि । ' वीसराइं ' ति विरूपध्वनीति ' वचनाति ' इति गम्यते । ' क्र्यमाणं ' ति पर्यत्येकं पुरुषं कच्छ्मन्तं कुष्टिकं दकोदरिकं भगन्दरिकम् अर्शं कासिकं श्वासिकं शोफवन्तं शूनमुखं शूनहरतं शूनपादं शदितहरताङ्गु-लिकं शटितपादाङ्गुलिकं शटितकथेनासिकं रसिकया च पूयेन च थिविथिवायमानो जणमुखकुम्युतुद्यमानप्रगलत्पूयक्षिरं लालाप्रगलत्क-माणं केट्टाई कल्लणाई वीसराई क्रुवमाणं मच्छियाचढगरपहगरेणं आणिणज्जमाणमगं फुट्टहडाहडसीसं ' दाओयरियं' ति जलोदारिकम् । ' भगंदिलियं' ति भगन्द्रवन्तम् । ' सोसि ( गि ) छंति ' शोफवन्तम् । एतदेव सविशेष-गलंतपूयकहिरं लालापगलंतकण्णासं अभिक्खणं २ पूयकवले य कहिरकवले य किमियकवले य वम-गुलियं सिडियपायंगुलियं सिडितकणजनासियं रिसियाए य पूष्ण य थिविथिवंतं वणमुहिकिमिउनुयंतपon sometimes and the sometimes are sometimes are sometimes and the sometimes are som गरियं भगंद्रियं अरिसिल्लं कासिल्लं सासिल्लं सोसि(गि)ल्लं सूयमुहं सूयहत्थं सूयपायं सिडियहत्थ-माह—' स्यमुहस्यहत्थं ' ति शूनमुखशूनहस्तं ' थिविथिवंतं ' ति अनुकरणशब्दोऽयम् । ' वणमुहिकिमिउनुयंतपगलंतपूयरुहिरं ' ति वणमुखानि क्रमिभिरुतुद्यमानानि ऊर्ध्वं न्यध्यमानानि प्रगलत्पूयरुधिराणि च यस्य स तथा तम् । ' लालापगलंतकणानासं संडं णगरं पुरिथमिल्लेणं दारेणं अणुष्पविसिति, तत्थ णं पासित एगं पुरिसं कच्छुल्लं कोहियं दाओ-अध्याम स्थिति । स्थिति । **~** %यं-निपाके

आहारं आहारेति' आरमनाऽऽहारमाहारयति; किभूतः सन्नित्याह-पत्रगमूतः नागकल्पो भगवान्, आहारस्य रसोपलम्भाथमचर्वणात्, आलोएति, भत्तपाणं पिंडदंसिति २ समणेणं अन्मणुण्णाते जाव बिलमिव पन्नगभूते अप्पाणेणं आहा-र्णनासममीर्गं २ पूयकवलांघ्र रुधिरकवलांघ्र क्रिकिवलांघ्र वमन्तं कष्टानि करुणानि विस्वराणि कूजन्तं मक्षिकाप्रयानसमूहेनान्वीयमान-प्रतिदर्भयति २ अमणेनाभ्यनुज्ञातो यावद् विलमिवपत्रगभूत आत्मनाऽऽहारमाहारयति, संयमेन तपसाऽऽत्मानं भावयन् विहर्तत । ततः इंडिखंडबस्एां खंडमल्ळखंडघडहत्थगयं गेहे २ देहंबलियाए वित्तिं कप्पेमाणं पासति २ तदा भगवं गोयमे गागै रक्षटितारयर्थशीपै दण्डित्यण्डवसनं सण्डमझिकात्वण्डघटहस्तगतं गेहे २ देहिबलिकया बुत्ति कल्पयन्तं पर्याते २ तदा भगवान् गौतमः भत्तपाण भक्तपान (माहारेइ, संजमेणं तबसा अप्पाणं भावेमाणे विहरति। तते णं से भगवं गोतमे दोचंपि छट्टक्सवमण पडिदंसेइ २ समगेणं भगवया महावीरेणं अञ्भणुण्णाए 'यावत्करणात् "समाणे" इति दश्यम् । ' विलमिव पत्रगभूष् अप्पाणेण क्रजन्तमन्यक्तं भणन्तम्, शेषं सबै प्रथमाध्ययनवत् ; नवरं 'देहंगलियाए ' ति देहि वलि इत्यस्याभिधानं प्राकृतशैल्या देहंग्रिय भनपाणं आलोएइ भनपाण तीए देहंगिलयाए । ' पाडिल ' ति "पाडिलिसंडाओ नगराओ" ' पिडिनि ' ति " पिडिनिस्कमइ " ति दृश्यम् । " नेणेन सम्मे उचनीच० याबद्दति, यथापर्याप्तं गृहाति २ पाटळिपण्डात् प्रतिनिष्कामति २ यत्रैच श्रमणो भगवान्० भक्तपानमाळोचयति, उच्चणीय० जाव अडाते, अहापज्जनं गेण्हाति २ पाडिलि० पाडिनि० जेणेव समणे भगवं० मगरं महावीरे तेणेव उवागच्छह २ गमणागमणाए पिडकमइ " ईर्यापिथिकी प्रतिक्रामतीत्यर्थः।

सप्तमाः ध्ययः नस्योः नहिः स्रातः मन्तं यावत् कल्पयन्तम् । तद्हं द्वितीये० षष्ठ० पारणके दाक्षिणात्येन द्वारेण तथैव । हतीये० षष्ठ० पाश्चात्येन तथैव । ततोऽहं चतुर्थषष्ठ० भद्नत ! षष्ठस्य पारणके यावत् ईरयन् यत्रैव पाटलिषण्डं तत्रैवोपा० २ पाटलिपुत्रे पौरस्त्येन द्वारेणानुप्रविष्टः । तत्रैकं पुरुषं पर्यामि कच्छ् भगवान् गीतमो हितीयेऽपि षष्टक्षमणपारणके प्रथमायां पौरुष्यां यावत् पाटलिषण्डं नगरं दाक्षिणात्येनानुप्रविशति; तमेव पुरुषं प तथैव यावत् संयमेन विहरति । ततः स गौतमस्त्तीयेऽपि षष्ठ० तथैव यावत् पाश्चात्येन द्वारेणानुप्रविशंस्तमेव पुरुषं द्वारेणं अणुप्पविसतिः, तं चंडरथ छट्ट उत्तरेण ार्यति । चतुर्थे० षष्ठ० उत्तरेण० । अयमाध्यात्मिकः ४ समुत्पन्नः—' अहो अयं पुरुषः पुरा पुराणानां याबदेवमवद्त्,;— असंस्पर्शनात, नागी हि विलमसंस्पृश्वातात्मानं तत्र प्रवेशयति, तेणेव उवा० २ पुरिसं पासामि कच्छुछं जाब कप्पेमाणं कच्छु० पासति। पोराणाण जाव द्वितीयां वाराम् जाव पाडलिसंड णगरं जाव मंजमे० विहराति। अणुष्पविसमाणे तं चेव ' होचंपि ' द्विरापि '। तत्थणं एगं । छट्टस्स पारणयंसि जाव । सोपलम्भानपेक्षः सन्नाहास्यतीति । ग्ड्झांत्थेष् ४ समुष्पण्णे— थभूतमाहारम्, विलामेव नरेणमणुप्पविट्टे। क्षा रिक्ट्र | म

> -% %

किन्धः

। चिंता ममं। तम् छट्टं पम्मियमेण तहे न तं अहं चउत्पछट्टं दाहिणिल्ले० दारे० तहेव । तचं० छट्टं० पचित्यमेण तहेव । तं अहं चउत्थछट्टं० णि अणुपत्रिसामि; तं चेव पुरिसं पासामि कच्छुल्लं जाव विसिं कप्पेमाणे विहरति

पुद्यभवपुच्छा। बागरेति;—' एवं खिट्ट गोतमा हैं तेणं कालेणं २ इहेव जंबुहीवे दीवे भारहे वासे विज-यपुरे णामं णगरे होत्था रिद्ध०। तत्थ णं विजयपुरे णगरे कणगरहे णामं राया होत्था। तस्स णं कणगरहस्स रणणे थण्णंतरी णामं वेजे होत्था अङ्गाउठवेद्पाहप्, तं जहा-कोमारिभेचं सलागे सछ-अङ्गाउबेयपादते' नि आयुर्वेदो वैद्यकशास्त्रम् 'कोमारमिचं' ति कुमाराणां 'वालकानां भृतौ पोषणे साधु कुमारभुत्यम् ।

अस्ति। स्टिन्या सिस्ता मार्स्या वास्ति।

शास्त्रं कुमारमरणस्य क्षीरस्य दोषाणां संशोधनार्थं, दुष्टस्तन्यनिमित्तानां न्यायीनामुष्शमनार्थं चेति १ ' सलागे ' ति शलामाः कर्मशालाक्यम् तत्प्रतिषादकं तन्त्रमपि शालाक्यम्।तद्धि ऊर्ध्वजन्तुगतानां रोगाणां अवणवद्नादिसंश्रितानामुष्शमनार्थं २ 'सछ्डते ' एवं मछ गीतम । तिसम् काले २ इहैव जम्बुद्वीपे द्वीपे भारते वर्षे विजयपुरं नाम नगरमभवद्दछ । तत्र विजयपुरे नगरे कनक-नि शल्यस्य हत्या हननमुद्धार इत्यर्थः शल्यहत्या, तत्प्रतिषादकंशास्तं शाल्यहत्यमिति ३ कायं 'चिगिच्छ' नि कायस्य ज्वरादिरो-प्रस्तश्रीरस्य चिक्रित्सा रोगप्रतिक्रिया यत्रामिथीयते तत् कायचिकित्सैय; तत्तन्त्रं हि मघ्पाङ्गसमाधितानां ज्नरातीसारादीनां गरणे उत्तरद्वारेणानुप्रविशामि, तमेच पुरुषं पश्यामि कच्छमन्तं याबद् शुन्ति कल्पयन् विहरति ।चिन्ता ममं ।पूर्वभवपुच्छा । ज्याकरोति;—

रगो नाम राजाऽभूत्। तस्य कनकरथस्य राजो धन्वन्तरिनीम वैद्योऽभवद्धाद्वायुर्वेद्षांठकः, तद्ययाः,—कौमार्भ्यतम्, गांठाक्यम्, शात्यह-

||SS|| त्रम् त्रास्य त्रास्य त्रान् ति आरोग्यकरहस्तः । ' सुहहत्थे ' ति शुभहस्तः प्रशस्तकरः, सुखहेतुहस्तो वा ' लहुहत्थे ' ति दक्षहस्तः । ' राईसर ' इत्यत्र यावत्करणात् " तलवर-माडंबिय-कोडंबिय सेटि " ति दृश्यम् । ' दुष्बलाण य ' ति कृशानां हीनबलानां वा ' गिलाणाण ' क्षीणहर्षाणां शोकजनितपीडानामित्यर्थः । ' वाहियाण ' ति न्याविश्विरस्थायी कुष्ठादिरूपः स संजातो येषां ते न्याधिताः पुरे नगरे कनकरथस्य राज्ञोऽन्तःपुरे चान्येषां च बहूनां राजेश्वर० यावत् सार्थवाहानाम्, अन्येषां च बहूनां दुर्वेळानां च ग्लानानां च हत्ते कायतिगिच्छा, जंगोले, भूयवेजे, रसायणे, वाजीकरणे। सिवहत्ये सुहहत्ये लहुहत्ये। तते णं से योगोपशमनार्थं वेति ५ ' भूयविज ' ति भूतानां निग्रहाथी विद्या, सा हि देवासुरगन्धवेयक्षराक्षसाद्युपसृष्टचेतसां शान्तिकर्मव-तिगापहरणसमर्थं च; तद्भिषायकं तन्त्रमपि रसायनम् ७ 'वाजीकर्णे' ति अवाजिनो वाजिनः करणं वाजीकरणं शुक्रवधेनेनाश्वस्येव सम्, कायचिकित्सा, जांगुलम्, भूतविद्या, रसायनम्, वाजीकरणम् । शिवहस्तः, ग्रुभहस्तः, लघुहस्तः । ततः स धन्वन्तरिवैद्यो विजय-出る。 ग्रमनार्थमिति ४ 'जंगोहे' ति विषविद्यातिकयाभिषायकं जब्गोलमगद्तन्त्रम्, तद्धि सर्पकीटछताद्यष्टविषविनाशार्थम्, विविघविषसं-करणमित्यर्थः; तदमिघायकं शास्त्रं हि अल्पक्षीणविद्युष्करेतसामाप्यायनप्रसादोपजनननिमित्तं प्रहर्पजननार्थं चेति ८। ' सिवहत्थे ' वाहाणं, अपणेसि च बहूणं हुब्बलाण य गिलाणाणय वाहियाण य रोगियाण य सणाहाण य अणाहाण लिकरणादिभिग्रेहोपशमनार्थम् ६ 'रसायणे' ति । रसोऽमृतरसस्तरयायनं प्राप्तिः रसायनम्, तद्धिवयःस्थापनम्, आयुर्मेयाकरम् ध्वणंतरी वेजे विजयपुरे णगरे कणगरहस्स रण्णो अंतेउरे य अण्णेसि च बहुणं राईसर० जाव

> 왕-विपाके 837-अन-

||S

से धण्णंतरी वेजे तेहिं बहुहिं मच्छमंसेहि य जाव मयूरमंसीह य, अण्णेहि बहुहिं य, जलयर-थलयर-गाविता ना उज्णादिमिरमिस्ताः, अतस्तेषाम् । 'रोगियाणं' ति संजातास्थिरस्थायिज्वरादिहोषाणाम् । केषामेनंविधानामित्याह-अयमंसाइं, एवं एळ-रोज्झ-सुयर-मिग-ससय-गो-महिसमंसाइं, अप्पे० तित्तिरमंसाइं वहक-लावक-कवोत-मच्छमंसाई उवदिसति, अप्पे० कच्छममं०, अप्पे० गाहमं० अप्पे० मगरमं० अप्पे० सुसुमारमं०, अप्पे० स्यङ्चर-सचरादीनां मांसान्युपदिशति । आत्मनापि च स धन्वन्तरिवैद्यस्तैबैहुभिर्मत्त्यमांसैश्च यावद् मयूरमांसैश्च, अन्यैश्च बहुभिर्जेलचर— कृषकुड-मधूर०, अण्णोसे च बहूणं जलयर-थलयर-खहयरमादीणं मंसाइं उबदिसति। अप्पणावि य णं 'सणाहाण य' ति सखामिनाम् । 'अणाहाण य'ति निःस्वामिनाम् ।' 'समणाण य' ति गैरिकादीनाम् ।'भिकस्तुयाण य'ति तद-एवमेट-गवय-शुकर-मृग-शशक-गो-महिपमांसानि, अप्ये० तित्तिरिमांसानि वर्तक-लावक-कपोत-कुक्टेट-मयूर०, अन्येषां च बहूनां जलचर— व्यायितानां च रोगिणां च सनाथानां चानाथानां च श्रमणानां च श्राह्यणानां च भिष्ठिकाणां च करोटिकानां च कार्पटिकानां चातुराणां च, न्येपाम् । ' करोडियाण य ' ति कापालिकानाम् । ' आउराण य ' ति चिकित्साया अविषयभूतानाम् । 'अप्पेगङ्याणं मच्छमंसाइं मत्स्याः, कच्छपाः, ग्राहाः, मक्राः, सुसुमारा, अजाः, य समणाण य माहणाण य मिन्खुयाण य करोडियाण य कप्पिडयाण य आउराण य, अप्पेगतियाणं अप्वेकेमां मत्स्यमांसान्युपदिशति, अप्ये० कच्छपमां, अप्ये० याहमां०, अप्ये० मकरमां०, अप्ये० सुसुमार्गमां०, अप्ये० अजमांसानि, उवदिसइ ' इत्येतस्य वाक्यस्यानुसारेणाग्रेतनवाक्यानि अझानि ।

**199** 

||EC| उम्बर्ग द्यारि शृबें-लह्यरमंत्रोह य मच्छरसेहि य जाव मयूररसेहि य सोल्लेहिं तिलिष्हिं भिजिष्हिय सुरं च ५ आसाष्-माणे ४ विहरति । तते णं से घण्णंतरी बेजे एथकम्मे ४ सुबहूं पावकम्मं समजिणिता बत्तीसं वासस-तते णं सा गंगद्ता भारिया जाव णिहुया यावि होत्था । जाता जाता दारगा विणिघायमाव-माणीए अयमेयारूने अज्झारिथए २ समुप्पणणे—एवं खलु अहं सागरद्तोणं सत्थवाहेणं सर्छं बहूइं वासाइं ज्ञांति । तते णं तीसे गंगद्ताए सत्थवाहीएँ अपणया कयाति पुबरतावरत्तकुडुंबजागरियाए जागर-स्यलचर-खचरमांसैश्र, मत्त्यरसैश्र यावद् मजूररसैश्र पक्नैस्तालितैभृष्टेश्र सुरां च ५ आस्वाद्यन् ४ विहरति। ततः स धन्वन्तरिवें यतत्कर्मा ४ वर्षोण्युदारान् मानुष्यकान् मोगमोगान् भुञ्जाना विहरामि, नो चैवाहं दारकं वा दारिकां वा प्रजन्ये; तद् धन्यास्ता अम्बाः सपुण्याः कदाचित् पूर्वेरात्रापररात्रकुटुम्बजागर्यथा जाघता अयमेतद्रुप आध्यात्मिकः ४ समुत्पन्नः–एवं खल्वहं सागरद्तेन सार्थवाहेन सार्थं बहूनि सुबहु पापकमें समज्यें द्वात्रिंशतं वर्षशतानि परमायुः पालयित्वा कालमासे कालं कृत्वा षष्ठयां प्रथिव्यामुत्करेंण द्वाविशतिसागरोपमायुरूपपन्नः। ततः सा गंगद्ता भायौ याबद् निर्हता चाप्यभवत् । जाता जाता दारका विनिघातमापद्यन्ते । ततस्तस्या गंगद्तांयाः सार्थवाह्या अन्यद्ा रलका, रोझाः, श्कराः, मगाः, शशकाः, गावः, महिषाः, तितिराः वर्तकाः, लावकाः, कषोताः, कुककुटाः, मयूराः प्रतीताः ताइंपरमाउं पालियित्ता कालमासे कालं किचा छट्टीष् पुढवीष् उक्कोसेणं बावीससागरोवमाऊ उववण्णे विषाके १ श्रुत-(किन्ध्रः

उरालाई माणुस्सगाइ भोगमोगाइ भुंजमाणी विहरामि, णो चेवणं अहं दारगं वा दारियं वा पयामि; तं ाणाओं णं ताओं अम्मयाओं सपुर्णाओं, कयत्थाओं कयलक्षणाओं, सलद्रे णंतासिं अम्मयाणं माणु-पियाइं थणमूला कक्खदेसभागं आतिसरमाणगाइं मुख्गाइं, पुणो य कोमलकमलोबमोहं हत्येहिं स्सए जम्मजीवियफले, जासिं मण्णे नियगकुन्छिसंभूयाइं थणदुद्धलुद्धगाइं महुरसमुछाव्गाइ मम्मणप्य-' नियगकुच्छिसंभूयाइं ' ति निजापत्यानीत्यर्थः स्तनदुग्घे छुत्रयकानि यानि तानि गिवह ऊप उच्छंगनिवेसियाइं दिंति समुह्यावष् सुमहुरे पुणो पुणो मंजुलप्पमणिते। अहं णं अधणण मणी नि अहमेरं मन्ये। अव्यामाध्यामाध्यामाध्यामाध्यामाध्य

कृतार्थोः कृतलक्षणाः, मुलब्यं तामामम्यानां मानुष्यकं जन्मजीवितफलम्, यासां मन्ये निजकुक्षिसभूतानि स्तनदुग्यलुब्धानं मधुरसमुझा-प्रमणितान्-मञ्जुळानि कोमळानि प्रमणितानि भणनारम्भान् येषु ते तथा तान् । 'अषुण्ण ' ति अविद्यमानपुण्या, यतः-तथा, मधुरसमुखापकानि मन्मनप्रजल्पितानि, स्तममुळात् कश्रादेशभागमभिसर्नित मुग्धकानीति । पुनश्र कोमळं यत् कमछं तैनोपमा ययोस्ते तथा ताभ्यां हस्ताम्यां गृहीत्वा उत्सङ्गनिवेशितानि दद्ति समुछापकान् सुमधुरान् शब्दतः पुनः पुनमञ्जल-अक्तपपुणा ' नि अविहितपुण्या, अथवा ' अपुणा ' नि अपूर्णा, अपूर्णमनोरथत्वात् । ' एतो ' ति एतेषां बालकचेष्टितानाम्, ग्कागि मन्मनप्रजिष्पतानि स्तनमूळात् कक्षादेशभागमतिसरन्ति मुग्धकानि, पुनञ्ज कोमछकमछोपमाभ्यां हस्ताभ्यां गृहीत्बोत्संगनिबेशितानि व्दति समुह्यपन्तान् सुमधुरान् गुनः गुनमंञ्जुलप्रभणितान् । अहमधन्याऽगुण्याऽकृतपुण्येतेपामैकतरमपि न प्राप्ता । तत् श्रयः सन्तु

那一 उम्बर्-इत्तास्य पूर्व-तुरुमं जायं च अकयपुण्णा एत्तो एकतरमावि न पत्ता। तं सेयं खलु ममं कहं जाव जलंत सागरद्ते सत्थ-च्छिता सुबहुं पुष्फवत्थगंधमह्यालंकारं गहाय बहूहिं मित्तणातिणियगसयणसंबंधिपरिज्ञण-फुल्लुप्पलकमलकोमल्राम-जम्बा-दिणयरे जलंते " इत्येतदन्तम्; तत्र प्रादुःप्रभातायां प्रका-। दारक वा दारिकां वा प्रजन्ये, तदाऽहं तुभ्यं यागं च दायं च भागं व्ह्रिमिनित्रज्ञातिनिजकस्वजनसंबन्धिपरिजनम हिळाभिः सार्धं पाटलिषण्डाद् नगरात् प्रतिनिष्कम्य, वहिर्यत्रैवोम्बरदत्तस्य यक्षस्य यक्षायतनं तत्रैवोपागत्य, तत्रोम्बरद्त्तस्य यक्षस्य ः । भाषं च ' दलाना उवाइणित्तए ति " पाउपभायाए स्वर्णाए दानम शनप्रभातायाम्, फुछं विकसितं यदुत्पलं पद्यं तस्य, कमलस्य च हरिणस्य कोमलमकठोरं । ' जायं च ' ति यागं पूजां यात्रां या। दायं च अणुवड्हेस्सामि 'नि कहु ओवाइयं कर्यं यावज्जवलीत सागरद्तं सार्थवाहमाष्ट्रच्छय सुबहु पुष्पवस्नगन्धमार्यालंकारं गृहीत्वा उवागोंच्छता, तत्थ णं उबरद्तस्म जक्खस्म ' कछ ' इत्यत्र यावत्कर्णा छिए अहपंड्ररे पभाए " इत्यादि दृश्यम् " उद्घिए सहस्तरस्तिमि नि क्रत्वा, जानुपाद्पतितयोपयाचितुम्,--' यद्यहं देवानुप्रिय उववाइतए;—'जति णं अहं देवाणुष्पिया दायं च भागं च अक्सवयाणिहि यत्र तत् तथा तत्र, शेषं व्यक्तम आपृच्छिता एगयरमांवे ' ~ श्रुत-1881

तते णं सा गंगद्ता भारिया सागरद्त्तसत्थवाहेणं एतमट्टं अञ्भणुण्णाता समाणी सुबहुं पुष्फ० 'अक्सवयणिहिं च' ति देवभाण्डागारम् । 'अणुवष्टिस्सामि ' ति बुद्धिं नेष्यामि । ' इति कहु ' एवं कृत्वा । ' उवाइयं ' ति उपयाचितम् । उवाहणित्तए ' ति उपयाचितुमिति । ' कयकोउयमंगल ' ति कौतुकानि मपीपुण्डादीनि, मंगलानि दृष्यक्षता-पागच्छति २ सागरदनं सार्थवाहमेवमवादीत्,-' एवं खल्बहं देवानु० युष्माभिः सार्धं यावद् न प्राप्ता, तिहच्छासि देवानु० युष्माभिर-मित्त महिलाहिं सार्द्धे सातो गिहातो पिडिणिक्खमति २ पाडिलिसंडं णगरं मज्झंमज्झेणं निमान्छड २ खळु अहं देवाणु० तुब्मेहिं मर्खि जाव न पत्ता, तं इच्छामि णं देवाणु० तुब्मेहि अब्मणुण्णाता जाव उवाइणित्तए'। तते णं से सागरदत्ते गंगद्तं भारियं एवं वयासि;—'ममंपि य णं देवाणुष्पिए! (ए) नाक्षयनिधि चानुवधिषण्यामि ' इति क्रत्वोपयाचितमुपयाचितुम् । एवं संप्रेक्षते २ कल्यं यावज्जवलि यत्रैव सागरद्ताः सार्थवाहस्तप्रैवो-म्यानुकाला याबदुपयाचितुम्'। ततः स सागरदतो गद्रदत्तां भायमिवमबदत्;-'ममापि च देवानुप्रिये! स एव मनोरथः,—कथं स्वं जाव जलते जेणेव सागरदने सत्थवाहे तेणेव उवागच्छाति २ सागरदनं सत्थवाहं एवं वयासी; एवं सचेव मणोरहे-कहं णं तुमंदारगं वा दारियं वा पयाएजासि'। गंगदनं भारियं एयमट्टं अणुजाणोति गरक ना वारिकां वा प्रजनिष्यसि । गद्भद्तां भायमितद्यंमनुजानाति 

**〒0**9 लोमहत्थएणं पमजाति २ दगधाराए अब्भुक्खोति २ पम्हल० गायलद्वीओ लहोति २ सयाइं नत्थाइं परिहेति, महरिहं पुष्फारुहणं नत्थारुहणं मह्यारुहणं गंधारुहणं चुणणारुहणं करेति २ धूवं दहाति जाणु-स्वाति बस्ताणि परिद्धाति, महाहे पुष्पारोहणं बस्नारोहणं माल्यारोहणं गन्धारोहणं चूर्णारोहणं करोति २ धूपं दहति, जानुपाद्पतितैव-पुष्पवस्त्रगन्धमाल्याछंकारं स्थापयति २ पुष्करिणीमवगाहते २ जलमज्जनं करोति, जलक्रीडां करोति २ स्नाता क्रतकौतुकमैगलाऽऽ-र्रेपटशाटिका पुष्किरिण्याः प्रत्यवतरति २ तं पुष्प० गृह्वाति २ यत्रैवोम्बरद्तास्य यक्षस्य यक्षायतनं तत्रैवोपा० २ उम्बरद्तास्य यक्षस्या-लोके प्रणामं करोति, लोमहस्तं परामुशति, २ उम्बरद्तं यक्षं लोमहस्तेन प्रमाष्टि २ दकधारयाऽभ्युक्षति २ पक्ष्मल० गात्रयष्टी रूक्षयति २ ततः सा गंगद्ता भायी सागरद्तत्तसार्थवाहेनैनमर्थमभ्यनुज्ञाता सती सुबहु पुष्प० मित्र० महिलाभिः सार्थं स्वस्माद् गृहात् दीनि। 'उछपडसाडिय' नि पटः प्रावरणम्। शाटको निवसनम्। 'पम्हल ' नि " पम्हलसुकुमालगंधकासाइयाप् गायलद्वीओ प्रतिनिष्कामति २ पाटलिषण्डाद् नगराद् मध्यमध्येन निर्गेच्छति, यत्रैव पुष्किरिण्यास्तीरं तत्रैवोपागच्छति २ पुष्करिण्यास्तीरे सुबहुं जेणेव पुक्तवारिणीए तीरे तेणेव उवागच्छति २ पुक्तवारिणीए तीरे सुबहु पुष्फवत्थगंधमछालंकारं ठवेति तेणेव उवा० उंबरद्त्तस्त जक्खस्त आलोप् पणामं करेति २ लोमहत्थं परामुसति २ ता, उंबरद्तं जक्खं माडिया पुम्स्वरिणीए पच्छुत्तराति २ तं पुप्फ० गेणहति २ जेणेव उंबरद्त्तस्स जक्खस्स जक्खायतणे र पुक्स्बोरिणी ओगाहोति र जलमज्जणं करेति, जलिकेंड्ड करेति र णहाया कयकोउयमंगला

उवाइणांते २ पूरणाणं अयमेयारूवे डोहले पाउनमूते-धरणाओं णं ताओं जाव फले॰ जाओं णं विउलं असणं ४ युर्ध उचमखडावांति २ वहाहिं मित्त० जाव परिबुडाओं तं विउलं असणं ४ सुरं च ५ पुप्फ० जाव गहाय ततः म धन्यन्तरिवधस्ततो नरकाद्तन्तरमुद्वुस्येहैव पाटिलयण्डे नगरे गंगद्ताया भायांयाः क्रुसी पुत्रतयोपपन्नः । ततस्तस्या गंग-द्वाया मार्गायानिषु मासेषु नहुपरिपूर्णेष्ययमेतदूपो दोहदः प्राहुभूतः;--धन्यास्ता याबत् फले० या विपुळमञ्जं ४ उपस्कारसन्ति २ पाडिलिसंडं नगरं मज्झें मज्झेंणं पिडिनि० जेणेव पुक्खिरिणी तेणेव उवा० २ पुक्खिरिणीं ओगाहीते, णहाया मवादीम् -यगः देवातु० दारकं वा दारिकां वा प्रजन्ये ततो याबद्धपयाचति २ यस्या एव दिशः प्रादुर्भूता तस्या एव दिशः प्रतिगता ग्ण्भिमित्र० गावम् परिग्रतासत् विषुलमञनं ४ सुरां च ५ पुष्प० याबद् गृहीत्मा पाटलिपण्डाद् नगराद् मध्यमध्येन प्रतिमि० तते णं से धणणंतरी वेजे ततो णरगाओं अणंतरं उञ्बाहिता इहेव पाडिलिसंडे णगरे गयपाडिया एवं व॰ जित णं अहं देवाणु॰ दारगं वा दारिगं वा पयामि तो णं जाव भारियाए कुन्छिमि पुत्तनाए उववण्णे । तते णं तीसे गंगद्नाए भारियाए तिण्हं 1 ल्ड्ड " नि द्रष्टन्पम् । ' एवं व 'नि " एवं वयासी " इत्यर्थः । ॥ सप्तमाध्ययनविवस्णम् ॥ जामेवं दिसं पाउञ्जूता तामेव दिसं ।

田井・ でする。 されて でする。 「前・ 田前・ **三** डहति २ TO TO सत्थवाहेणं जेणेव पुक्सवारिणी तेणेव उवागता। तते णं ताओ मित्त० जाव महिलाओ गंगद्तं सत्थं० सठवालंकार-रुकरिणी तत्रेचोपा० २ पुष्करिणीमवगाहन्ते, स्नाता यावत्० प्रायिश्वतास्तद् विपुलमशनं ४ बहुभिभित्रज्ञाति० सार्थमास्वाद्यन्ति ४ उवा० सागरदन सत्थवाह एव दोहदं विनयन्ति । एवं संप्रेक्षते २ कल्यं यावञ्जवलित यत्रैव सागरदत्तः सार्थवाहस्तत्रैचोपा० २ सागरदत्तं सार्थवाहमेवमवादीत्, –, यावद् धन्यास्ता यावद् विनयन्ति, तदिच्छामि यावद् विनेतुम् ' ततः स सागरद्तः सार्थवाहो गंगद्ताया भार्याया एनमर्थमनुजानाति । ततः पुष्प परिमा-आसादेंति ४ दोहरूं विणेति मित्र परिगेणहाविति २ बह्नाहें जाव पहाया कय० जेणेव उंबरद्ताजक्सवाययणे जाव० धृवं सि;- 'धन्नाओ णं ताओ जाव विणेंति, तं इच्छामि णं जाव विणित्तष्'। तते णं से असणं (४) उवम्खडावेति २ तं विउलं असणं (४) सुरं एयमट्टं अणुजाणीति। तते णं सा गंगद्ता सागरद्त्तेणं सा गंगदत्ता सागरदत्तेन सार्थवाहेनाभ्यनुज्ञाता सती विपुलमशनं ४ उपस्कारयति २ तद् विपुलमशनं ४ सुरां ५ सुबहु ततस्ता क्रत० यत्रेबम्बरद्त्तयक्षायतनं यावद् धूपं दहति २ यत्रेव पुष्करिणी तत्रेवोपागता । जाव० पायच्छिताओं तं विउलं असणं ४ बहूहिं मित्तनाति० सागरद्ते सत्थवाहे संपेहोति २ कहं जाव जलंते जेणेव विउलं सत्थवाहे गंगद्ताए भारियाए । समाणी । हमति २ बहुभियानेत् स्नाता अन्मणुजनाया > % 967 m ~ श्रुत्त-स्क्रम्थः निपाके

णगरमाहेलाहें सार्झे तं विउलं अण्णया कयाड सरीरगांस महिला गद्दर्गं सार्थे० सर्वोल्कारभूपितां कुर्वेन्ति । ततः सा गद्दद्ता ताभिभित्रेव अन्याभिश्च बहुभिनगैरमहिलामिः सार्ये तद् विपुत्त-गापटोहन् ४ तं गमें सुन्दं सुदेन परिबहति । ततः सा गंगटता नवसु मासेषु यावत् प्रजाता । रिथति० यावद् नाम—यसमानसम् यथो. 坐 मशन ४ सुरां च ६ आस्वादयन्ती दोह्दं विनयति २ यस्या एव दिशः प्राहुभूता तामेव दिशं प्रतिगता। ततः सा गगदता उम्बरद्तो दारकः पञ्चयात्रीपरिग्रहीतः कत्वा० । गंगद्तापि । उम्बरद्तोऽपि निष्कासितो . किचा०। पचथाताण उपरद नास्स तते यः काल । विजयमिते जाव कालमासे तते णं से उंबरद्ते । ताहिं मिन० अण्णाहि य बहुाहिं ए , तते णं तस्स उंबरद्तस्स ततः स पत्तदोहला (४) तं गन्भं सुहँ ठिइ० जाव नामे-जम्हा क्षाल सागरदनः सार्थवाहो यया विजयमित्रो याकत् मालमासे नामंगं दारक उम्पर्तस्य यक्षस्योपयाचितलञ्घः, तद् भनतु दारक उम्बरद्तो 8 दहिले उचरद्त तत्थवाह रं करीते। तते णं सा गंगद्ता । तते णं से सागरद्ते उवाइयलस्य, तं होउं णं दारए उंनरदत्तीव निच्छते जहा मासाणं जाव पयाया साम

सप्तमे-उम्बर-द्तस्य द्तस्य प्रक्र प्रक्रः॥ स उम्बरद्त्तो दारकः षोडशभी रोगान्तकैरमिभूतः सन् शटितहस्त० यावद् विहरति। ' एवं खछु गौतम! उम्बरद्त्तो दारकः कोहे। तते णं से उंबरदत्ते उम्बर ज्जितकः ततस्तस्योम्बरद्त्तस्यान्यदा कदाचिच्छरीरे युगपदेव षोड्य रोगान्तकाः प्रादुभूताः, तद्यथा—यासः, कासः, यावत् कुष्टः दारको द्वासप्रति वर्षीण परमायुः पालयित्वा कालंमासे कालं कुत्वाऽस्यां रत्नप्रभायां नैरयिकतयोपपन्नः अंसारस्तथेव व थावद् विहरति।'' ततः स० उम्बरद्तो दारकः कालमासे कालं कुत्वा कुत्र गमिष्यति १ कुत्रोपपत्स्यते १'' ॥ सत्तम अव्झयण समत्। क्टा । तहेव पुढवी गौष्ठिकहतस्तत्रैव हस्तिनापुरे श्रेष्ठि० दारए बावत्तारं वासाइ णरइयत्ताष् उववण्णे महियहत्थ० म् १८ हस्तिनापुरे नगरे कुक्टेतया प्रत्यायास्यति । जातमात्र रयणात्पभाष दारष् पुरा जाव विहराति रांगायका जमगसमगमेव सोलस

श्री-विपाके १ श्रुत-किन्धः

॥ सप्तममध्ययनं समाप्तम्

| ॥ अथ गोरिक | इत्। रूचमाष्ट्रममध्ययनम् ॥ |
|------------|----------------------------|
|            | गोरिकदत्तास्व्यमध्रममध्य   |
|            |                            |
|            |                            |

जित णं मंते !० अट्टमस्स उक्लेवो । एवं खळु जम्बू ! तेणं कालेणं २ सोरियपुरं णगरं । सोरि-

सोरिय जक्लो। सोरियद्ते राया। तस्स णं सोरियपुरस्स

यवर्षिसमं उजाणं।

उत्तरपुरिश्यमे दिसीभाए प्रत्थ णं ष्मे मच्छंथपाडप् होत्था। तत्थ णं समुद्दने नामं मच्छंथे परिवसिति

वाहिया

समुह्द्नस्स समुह्द्ना भारिया हारिया अहीण०। तस्स ण समुइदनस्त मच्छंधस्त पुने समुइद्नाए भारियाए अत्तए सोरियद्ने नामं दारए होत्था०।अहीण०।

तेणं कालेणं २ सामी समोसढे जाव गया । तेणं कालेणं २ जेट्रे जाव सोरियपुरे णगरे उचनीय० अहा-

अयाष्ट्रमे किचिछित्वते। ' मच्छेषे ' ति मत्त्वमन्षः

अहोम्मए जाव दुप्पिडियाणंदे। तस्स णं

आत्मातः शीरिकवृत्तो नाम वारकोऽभववृद्दीन० । तिमिन् काले २ स्वामी समयसृतो यावद् गता । तिसिन काले २ ज्येष्टो यावच्छौिन-कर्तो राजा। तरमाच्छोरिकपुराञ्रगराद्रहिरुत्तरपौरस्त्ये दिग्भागेऽत्रैको मस्यवन्यपाटकोऽभवत् । तत्र समुद्रद्तो नाम मस्यवन्यः परिवसत्य-यहि भद्रन्त !० अष्टमस्योपस्रेपः।। गर्व खळु जम्बो! तसिम् काले २ शौरिकपुरं नगरम्। शौरिकावतंमकमुत्रानम्। शौरिको यक्षः। शौरि-पारिको याबद् हुप्प्रत्यानन्दः । तस्य समुद्रद्तास्य समुद्रद्ता भाषोऽभवव्हीन० । तस्य समुद्रद्त्तस्य मत्स्यवन्धस्य पुत्रः समुद्रत्ताया भाषाया

पज्जतं समुदाणं गहाय सोरियपुराओ णगराओ पिडेनिक्खमति २ तस्स भच्छंथपाडगस्स अदूरसामंतेणं शहेवयमाणे महतिमहालियाष् मणुस्सपरिसाष् मज्झगयं ष्गं पुरिसं सुक्खं भुक्खं णिम्मंसं आट्टेचम्मा-िथए ४ पुरा जाव विहरति। एवं संपेहोति २ जेणेव समणे भगवं० जाव पुबभवपुच्छा जाव वागरणं;---उक्कूनमाणं अभिक्लणं २ पूयकवले य रहिरकवले य किमिकवले य वममाणं पासति २ इमे अज्झ-वण छं किडिकिडियाभूयं णीलसाडगानियत्थं मच्छकंटएणं गलए अणुलग्गेणं कट्टाइं कल्वणाइं वीसराइं

' एवं खल्ड गोतमा! तेणं कालेणं २ इहेव जंबुहीवे दीवे भारहे वासे णंदिपुरे णामं णगरे होत्था।

मित्ते राया। तस्त णं मित्तस्त सिरिष् नामं महाणितिष् होत्था। अहम्मिष् जाव दुप्पिडयाणंदे। तस्त

केन गलेऽनुलग्नेन कष्टानि करणानि विस्वराण्युत्कूजन्तमभीक्ष्णं २ पूयकवलांश्च रुधिरकवलांश्च कुमिकवलांश्च वमन्तं पश्यति २ अयमा-महातिमहत्यां मनुष्यपरिषदि मध्यगतमेकं पुरुषं शुष्कं बुसुक्षितं निर्मासमयचमाेवनछं किटिकिटिकाभूतं नीलशाटकनिवसितं मत्स्यकण्ट-कपुरे नगरे उचनीचं० यथापर्याप्तं भेंहयं गृहीत्वा शौरिकपुराड् नगरात् प्रतिनिष्कामति २ तस्य मत्स्यबन्धपाटकस्यादूरासन्ने व्यतिन्रज्ञन्

**三** ' एवं खछ गौतम । तिसमन् काले २ इट्टैव जम्बूद्वीपे द्वीपे भारते वर्षे निन्द्पुरं नाम नगरमभवत्। मित्रो राजा । तस्य श्रीदो नाम ध्यात्मिकः ४ पुरा याबद् विहरति । एवं संप्रेक्षते २ यत्रैव श्रमणी भगवान् यावत् पूर्वभवपृच्छा यावद् व्याकरणम्,—

'सण्हमच्छा' इत्यत्र यावत्करणात् " खबछमच्छा ज्ञगमच्छा विभिधिमङ्गाहितच्छा हिलिमच्छा " इत्यादि " लेमणमच्छा प्रहागा० " इत्येतद्नेतं दश्यम् । मत्त्यमेदाश्रेते रूहिगम्याः । ' अष् य ' इह यावत्करणात् " एलष् य रोज्झे स्र्यरे य मिमे य " णं सिरियस्स महाणसियस्स वहने माच्छ्या य नाग्रुरिया य साउणिया य दिण्णभति॰ कह्याकहं बहवे सण्हमच्छा य जाव पडागातिपडागेय अए य जाव महिसे य तिसिरे य जाव मयूरे य जीविताओ । अपणे य बहवे पुरिसे दिणणभति० ते बहवे तितिरे य जाव मयूरे तते णं से सिरिष् महाणासिष् भाव तितिस अग्णे य से बहवे उचगोति । जीवंतए चेव निष्केंति, सिरियस्स महाणासियस्स उचगिति महाणासियस्स य पंजरिस संनिरुद्धा चिट्टाति। वनरोवाति २ सिरियस्स 4|4|V

' सण्हखंडियाणि इति दश्यम् । 'तित्तिरे य ' इत्यत्र यावत्करणात् " बद्दार य लावार य कवोते य कुक्कुडे य " इति दश्यम् ।

सक्ष्माखण्डीकृतानि ' वह ' ति धनकण्डितानि च ' दीह ' ति दीघैलण्डितानि च ' रहस्स ' ति हस्वलण्डितानि च ' हिम-महानसिकोऽभवद्धाभिको यावद् हुप्प्रत्यानन्दः । तस्य श्रीदस्य महानसिकस्य वहवो मात्सिकाश्च वागुरिकाश्च शाकुनिकाश्च ,दत्तभृति०

कल्याकल्यि वहून् सूक्ष्ममत्त्यांश्र यावत् पताकातिपताकांश्राजांश्र यावद् महिपांश्र तित्तिरींश्र यावद् मयूरांश्र जीविताद् व्यपरीपयन्ति २

श्रीदाय महानसिकायोपनयन्ति । अन्ये च तस्य वहवस्तित्तिरयञ्च यावद् मग्रुराञ्च पञ्जरे संनिरुद्धास्तिष्ठन्ति । अन्ये च वहवः पुरुषा दत्तभृति० तान् बहूरितत्तिरींत्र यावद् मयुरांत्र जीवत एव निष्पक्षयन्ति, श्रीदाय महानसिकायोपनयन्ति । ततः स श्रीदो महानसिको

जलयरथलयरखह्यर० मंसाइं कप्पणीकप्पियाइं करेति, तं जहा;—सण्हखंडाणि य वह-दीह रहस्त० | हिमपक्काणि य जम्मकरित्याणि य हिमपक्काणि य जम्मकरित्याणि य मुहिआ-कविट्ट-दालिमरसियाणि य मच्छरसियाणि य तिलयाणि य मिलियाणि य सिलियाणि य सिलियाणि य उम्बहावेति। अण्णे य बहवे मच्छरसाए य एणेज्जरसाए य तित्तिर० जाव मयूररसाए य, अण्णं च

विपाके

' कालाणि य' ति 'हेरंगाणि य' ति कहिगम्यम् । ' महिड्डाणि य' ति तकसंमृष्टानि । ' आमलरासियाणि य' आमलकरस-पक्ताणि य' ति शीतपक्वाति। ' जम्मपक्ताणि थेगपक्ताणि य' ति रुहिगम्यम्। ' मारुयपक्ताणि य' ति वायुपक्वाति।

|| || || भृष्टानि च पक्कानि चोपस्कारयति। अन्यांश्र हुत्व मत्स्यरसांश्रीणरसांश्र तितिति. यावद् मयूररसांश्र, अन्यच विपुलं हरितशाकमुपस्कारयति २ बहूनां जलचरस्थलचरखचर० मांसानि कत्तीकृत्तानि करोति, तद्यथा,-सूक्ष्मखण्डानि च बृत्त-दीधै-हुस्व० हिमपक्वानि च जन्मधर्भमार्क-तपक्रानि च काळानि च हेरङ्गाणि च ताक्रिकानि चामछकरसिकानि च मद्वीका-कपित्थ-दािडमरसिकानि च मत्स्यरसिकानि तास्रितानि चे लावयरसए य " इत्यादि दश्यम् । ' हरियसागं ' ति पत्रशाकम् । ' जा था सा ' इत्यस्यायमर्थः-- जलयरमंसेहिं थलयरमंसेहिं उन्तै संस्कृताति । ' मजियाणि य ' ति अग्रिना भृष्टाति । ' सोछियाणि य ' ति शूले पक्वाति । ' मन्छरसए य ' मत्त्यमांसस्य संबिधिनों रसान् । ' एणेज्ञरसए य ' ति मृगमांसरसान् । ' तितिर ' ति तितिरसत्करसान्, इह यावत्करणात् " वहुयरसए य संमुष्टानि । ' मुहियारसियाणि य ' नि मुद्दीकारससंमृष्टानि, एवं कपित्थरसिकानि, द्गांडमरसिकानि । तिलतानि तै

य णं से सिरिए महाणिसिए तेसिं च बहुिं जाव ज॰ य॰ ख॰ मंसेहिं स्सप्हिं य हरियसागेहि य सोछिहि य तिलेत-मिजति सुरंच ६ आसादे० ४ विहरति। तते णं से सिरिए महाणिसिए एयकम्मे ४ सुबहुं जाव मित्राय गत्ने भोजनमण्डपे मोजनबेळायासुपनयति । आत्मनापि च स श्रीदो महानसिकस्तेषां च बहुभियाँबज्जछचर-स्थलचरखचर-मासे रसिश्र हरितशानेश्व पनेश्व वित-भृष्ट० सुरां च ६ आस्वादयन् ४ विहरति। ततः स श्रीदो महानसिक एतत्कमो ४ सुबहु यावत् विउलं हरियसागं उवम्बदावेति २ मित्तस्स रणणो भोयणमंडवंसि भोयणवेलाए उवणेड् । अप्पणावि ताओ अम्मयाओ कयत्थाओ " इत्यादिरूपा यथा गंगद्तायाः सप्तमाध्ययनोक्तायाः । ' आपुच्छण ' ति भर्तुराप्टच्छा " तं लह्यसंगेरिहैं ति । 'तिलय मिखय' अयमर्थः—'तिलयहि य' मिखिएहि य'। ' चित ' ति मनोरथोत्पतिविच्या "घन्नाओं ण ' एगडियाहिं ' ति नौभिः । ' दहगलणेहि य ' इत्यादि ' एगडियं भरेति ' इत्येतदन्तं रूदिगम्यं तथापि किचिछिष्यते – हदगलनं तते णं सा समुहद्ता भारिया निह्या याचि होत्था, जाया जाया दारगा विणिघायमावज्ञिति. समजिणिना तेनीसं वाससयाइं परमाउं पालियेना कालमासे कालं किचा छट्टीए युढवीए उववंण्णे इन्छामि णं तुन्मेहि अन्भणुण्णाया " इत्यादिका । ' उबाइयं ' ति उपयाचितं वाच्यम् । दोहदोऽपि गंगदत्ताया इव वाच्य इति समुद्रदत्ता भायी निर्द्वता चात्यभवत्, जाता जाता दारका विनिघातमापद्यन्ते, यथा गंगद्तायाः । चिन्ता । आप्रच्छना रामर्के त्रयक्षिंशतं वर्षेजताति परमायुः पालयित्वा कालमासे कालं क्रत्वा पष्ठवां प्रथिन्यासुपपन्नः ततः सा

ग्रष्टमे-श्रोरिक-रत्तस्य ग्रन्मादि जहा गंगद्ताए चिता। आपुच्छणा। उवातियं। दोहले। जाव दारगं पयाता जाव जम्हा णं अम्हं इमे दारए सोरियस्स जक्खस्स उवाइयलद्धए, तम्हा णं होउ अम्हं दारए सोरियद्ते णामेणं। तते णं से सोरिए दारए पंचथाति० जाव उम्मुक्षबालभावे विण्णयपरिणयमेते जोठवण्० होत्था। तते णं र्गाट्टियाहिं जउणं महाणादिं ओगाहंति २ बहूहि द्हगलणेहि य द्हमलणेहि य द्हमहणेहि य दहम-ग्रौरिकद्त्तो नाम्ना । तत स शौरिको दारकः पञ्चथात्री० याबदुन्मुक्तबालभावो विज्ञकपरिणतमात्रो यौवन० अभवत् । ततः स समुद्रदृत्तो-शौरिकमत्स्यवन्धस्य वहवः पुरुषा दत्तभूति० कल्याकल्यि नौभिर्यभुनां महानदीमचगाहन्ते २ बहुभिहेदगल्नैश्च हद्मलेनैश्च मच्छंथे जाते अधिमिष् दुप्पिंडयाणंदे।तते णं तस्स सोरियमच्छंधस्स बहवे पुरिसा दिण्णभति० कह्याकहं उपयाचितम्। दोहदो यावद् दारकं प्रजाता यावद् यस्माद्स्माकमयं दारकः शौरिकस्य यक्षस्योपयाचितछठधकः, तस्माद् भवत्वस्माकं दारकः अण्णया कयाइ सयमेव मच्छंधमहत्तरगत्तं उवसंपाक्षिता णं विहरति। तते णं से सोरिए दारए ऽन्यद्। कदाचित् कालधमेण संयुक्तः। ततः स शौरिको दारको बहुभिर्मित्त्र० कदम् ३ समुद्रदत्तस्य निस्सरणं करोति २ मृतकृत्यानि करोति । अन्यदा कदाचित् स्वयमेव मत्त्यबन्धमहत्तरत्वमुपसंपद्य विहरति । ततः स शौरिको दारको मत्त्यवन्धो जातोऽधार्मिको दुष्प्रत्यानन्दः । से समुद्दने अणणया कयाइ कालधम्मुणा संजुने। तते णं से सोरिए दारए बहुहिं मिन० रे २ समुद्दनस्स णीहरणं करेति २ मयकिचाइं करेति।

> १ श्रुत-स्कन्धः

विषाके

किवीन्त हणोहि य दहनहणोहि य दहनहणोहि य पयंचुलोहे य पनंपुलेहि य जंभाहि य तिसराहि य भिसराहि वक्षवंधेहि य सुत्तवंधेहि य वालवंधेहि य वहवे सण्हमच्छे य जाव पडागातिपडागे य गेण्हेति २ एग-हदस्य मध्ये मत्स्यादिग्रहणाथं अमणम्, जर्लानःसारणं वाः, हदमलनं हदमध्ये पौनःपुन्येन परिश्रमणम्, जले वा निःसारिते पंक-मदेनम्, हदमदेनं थोहरादिप्रक्षेपेण हदजलस्य विक्रियाकरणम्, हदमथनं हदजलस्य तरुशाखाभिधिलोडनम्; हदबहनं स्वत एव मिहितीभित्र ठिहितीभित्र जालेश्र गुटेपारीश्र वरकवन्येश्र सूत्रवन्येश्र वालवन्येश्र वहून् सूक्षमत्त्यांश्र यावत् पताकातिपताकांश्र हर्वमदेनैत्र हर्वहतैश्र हर्ववहणैश्र प्रवञ्चलेश्र प्रवम्पुलैश्र जुन्मामिश्र त्रिसरामिश्र मिसरामिश्र विसरामिश्र हिहीरीमिश्र ग्रह्मनित २ नावो भरिनत २ कूछं गाहन्ते २ मत्स्यखळानि कुवैन्ति २ आतपे दापयन्ति । अन्ये च तस्य वहवः पुरुषा दत्तभृतिभक्त० दिणणभइभत्त० आयवतत्तपृष्टिं मच्छेहिं सोछेहिं य भजितेहि य रायमगािस विसि कप्पेमाणा विहर्ति हदाअलिनिर्माः; हद्पप्रवहणं हद्जलस्य प्रकृष्टं वहनम् ; प्रपंचुलाद्यो मत्स्यवन्धनाविशेषाः; गलानि बद्धिशानि, सूक्ष्ममत्स्यैयीवत् ट्टियाउ भरोति २ कूलं गाहोति २ मच्छखलए करोति २ आयवंसि दलयंति । अण्णे य से बहुने मत्स्यपुञ्जान् वंयोह य'ति वल्कवन्यनैः, सत्रवन्यनैविक्षिवन्यैति न्यक्तम् ' मच्छखलए करेति ' नि स्थंडिलेषु विहरनित। आत्मनापि च स शौरिको वहुभिः कल्पयन्तो आतपतीमैत्सै: पक्षेत्र भृष्टेत्र राजमार्गे शिंत

मृष्टमे– शौरिक-गल-नल-300 तते णं तस्स सोरियद्तस्स मच्छंथस्स अण्णया कयाति ते मच्छे सोछे यतिछ० भिष्नि० आहा-बहवे वेष्णा य ६ शेडुंबियपुरिसे सहावेति २ एवं बयासि,—' गच्छह णं तुब्से देवा० सोरियपुरे णगरे सिंघाडग० जाव मच्छकंटयं गलाओ नीहरित्तप्, तस्त णं सोरिष् तद् य इच्छति वैद्यो वा ६ शौरिकमात्सिकस्य मत्स्यकण्टकं गळाद् निस्सार्यितुम्, तस्मैशौरिको विपुळमर्थसंप्रदानं दापयति '। ततस्ते कौद्र-ततस्तस्य शौरिकद्तस्य मस्स्यकन्धस्यान्यदा कदाचित् तान् मत्त्यान् पकांश्च तिलेतांश्च भृष्टांश्चाहरतो मस्यकण्टको गले लग्नश्चाप्य-भवत्। ततः स शौरिको महत्या वेदनयाऽभिभूतः सन् कौटुम्बिकपुरुषान् शब्दाययति २ एवमवादीत्,—' गच्छत यूयं देवा० शौरि-रंमाणस्स मच्छकंटए गलए लग्गे यावि होत्था । तते णं से सोरिए महयाए वेयणाए अभिभूते समाणे पहेसु महया २ सहेणं उग्घोसेमाणा २ एवं वयह-एवं खद्ध देवा० सोरियस्स मच्छकंटए गलए लग्गे, कपुरे नगरे श्रङ्गाटक० यावत् पथेषु महता २ शब्देन उद्घोषयन्त एवं वद्त-एवं खछ० देवा० शोरिकस्य मत्स्यकण्टको गले लग्नः, अप्पणाविय णं से सोरिए बहूहिं सुणहमच्छेहिं जाव पडागा० सोछेहिय भ० सुरं च ६ आसादे० विहरति विउलं अत्यसंपयाणं दलयाति '। तते णं ते कोड्डांबियपुरिसा जाव उग्घोसांति । ततो तं जो णं इच्छति वेजो वा ६ सोरियमाच्छियस्स नक्षेत्र मुष्टेश्च सुरां च ६ आस्वादयम् ४ विहरति SA M SEC IT SEC

विपाके

उना० २ नहींहें उप्पत्तियाहि य ४ युद्धीहिं परिणामेमाणा बमणेहि य छडुणेहि य उनीलणाहि य कबलमा हेहि य सल्छुद्धरणोहि य विसाहकरणोहि य इच्छंति सोरियमच्छंधरस मच्छकंटगं गलाओ नीहरित्तपः, नो चेव णं संचाएंति नीहरित्तए वा विसोंहित्तए वा। तते णं ते वहवे वेजा य६ जाहे नो संचाएंति सोरियस्स मत्त्यवनधरतत्रेवोपा० २ वहुभिरौरपातिकीभिञ्च ४ बुद्धिभिः परिणमयन्तो वमनैञ्च छद्नैत्र्यावपीडनैञ्च कवल्यादैञ्च शल्योद्धरणैञ्च विशल्य. अवपीडनं निष्पीडनम् । कवलग्राहः कण्टकापनोदनाय स्थुलकवलग्रहणम् ,मुखविमदैनार्थं वा दंद्नाघः काष्ठखण्डदानम् । शल्योद्धरण् यन्त्रप्रयोगकण्टकोद्धारः, विशल्यकरणम् औपघसामध्यतिति । 'नीहरित्तर्" ति निष्काशयितुम् । 'विसोहित्तर्'ति प्रयाद्यपनेतुम् न्त्रिकपुरुपा याबहुद्घोपयन्ति । ततो बह्वो वैद्याश्च ६ इमामेतद्रुपासुद्घोपणासुद्घोष्यमाणां निशमयन्ति २ यत्रैव शौरिकगृहं यत्रैव शौरिको Ch. करणैत्रेच्छिन्छिन जौरिकमत्त्यवन्वस्य मत्त्यकण्टकं गळाद् निस्सारियुत्म्, नो चैव संशक्तुवन्ति निस्सारियेतुं वा विशोधियेतुं वा। शान्ता यस्या एन इमं एयारूनं उन्योत्तणं उन्योतिज्जमाणं निसामंति २ जेणेव सोरियागिहे जेणेव सोरिए मच्छेषे दिसं पाउचम्या नुस । 'छड़गोहि य' नि छद्ने वचाहि (वाताहि) द्रव्यप्रयोगकतम्। ततसे वहवो वैद्यात्र ६ यदा नो संशक्तुवन्ति शौरिकस्य मत्स्यकंटकं गलाद् निस्सारियतुं वा विशोधियतुं वा, ा मच्छकटमं मळाओं नीहारेत्तप् वा विसोहितप् वा, ताहे संता जामेव ' वमणेहि य'ति वमनं स्वतः संभूतम्। 55-311611

द्चस्य ग्रेक्षिने-तहेब जाब पुढवी । ततो हास्थिणाउरे मच्छत्ताष् उवविज्ञिति। से णं ततो मच्छिष्हिं जीवियाओ बबरो-विते तत्थेव सिटिकलंकि बोबी- मोबरो- कि कि कि कि यावद् याव गोतमा! सत्तरिं वासाइं परमाउं पालयिता कालमासे कालं किचा इमीसे रयणप्यभाष् मंसारो 'शोरिको भद्न्त ! मत्स्यवन्ध इतः काळमासे काळं छत्वा कुत्र गमिष्यति ! कुत्रोपपत्स्यते !' गौतम ! सप्तति वर्षाणि परमायुः ाळियित्वा काळमासे काळं क्रत्वाऽस्यां रत्नप्रभायां० सत्तारस्तथैव यावत् पृथिवी । ततो हस्तिनापुरे मत्स्यतयोपपत्स्यते स । ततो मास्सिकै-'सोरिष् णं भंते! मच्छंथे इओ कालमासे कालं किचा कहिं गच्छिहिति ! कहिं उननजिहिति ! हिशः प्रादुभूतास्तामेव हिशं प्रतिगताः । ततः स शौरिको मत्स्यवन्थो वैद्यप्रतिकारिनिर्विण्णस्तेन दुःखेन महताऽभिभूतः शुष्को पांडिगता । तत णं से सोरिए मच्छंथे वेज्ञपाडियारिनिविषणे तेणं दुक्खेणं महया अभिभूते सुक्खे । निक्खेवो । (सू० २९) जींविताद् न्यपरोपितसत्रैव श्रिष्ठिकुले बोधिः० सौधर्मे० महाविदेहे वर्षे सेत्स्यति । निक्षेपः । ॥ अष्टममध्ययनं समाप्तम् तत्थेव सिट्टिकुलंसि बोही० सोहम्मे० महाविदेहे वासे सिन्झिहित। ! सोारिष पुरा पोराणाणं जाव विहरति।' ॥ अडम अज्झयण समन् ॥ विहरति । एवं खळु गौतम ! शौरिकः पुरा पुराणानां यावद् विहरति । ' विहरति। एवं खद्ध गोतमा क्षामा हिन्द्र । मा हिन्द्र । म

% श्रुत-

श्री-विषक्

जित मं भंते !० उक्लेंबो णवमस्त । एवं खिट्ठ जम्बू ! तेणं कालेणं २ रोहीडए नामं णगरे होत्था ॥ अथ देवदताष्ट्यं नवममध्ययनम्॥

तेणं कालेणं २

तत्थ णं रोहीडए णगरे दने णामं गाहावती परिवसति अड्डे । कण्हासिरी भारिया । तस्स णं दनस्स

भूया कण्हासिरीए अत्तया देवदत्ता नामं दारिया होत्था अहीण० जाव उक्षिट्ठसरीरा । सामी समोसढे जाव परिसा गता। तेणं कालेणं २ जेट्ठे अंतेवासी छट्ठमखमण० तहेव

ओगाहे हत्थी, आसे, पुरिसे पासिति । तेसिं पुरिसाणं मज्झगयं पासिति एगं इत्थियं अवओडगवंधणं

यिहं भद्न्त!० उपक्षेपो नवमस्य । एवं खळु जम्त्रो । तिसम् काले २ रोहीतकं नाम नगरमभूहछ० । पृथिन्यवर्तसकमुद्यानम् । धरणो

यसः । वैश्रमणद्तो राजा । श्रीदेवी । पुष्यनन्दी कुमारो युवराजः । तत्र रोहीतके नगरे दत्तो नाम गाथापतिः परिवसत्याढ्यः । कृष्णश्रीभीयो ।

रिद्धः।पुडिविवरंसाष् उज्जाणे। धरणे जक्खे।वेसमणद्ते राया। सिरी देवी। प्रसणंदी कुमारे जुवराया।

तेपां पुरुपाणां मध्यगतां पर्यत्येकां स्रियमवकोटकबन्धनामुत्कृतक० यावच्छ्ले भिद्यमानाम् । अयमाध्यात्मिकः ३ तथैव निर्गतो याबदेव-

पाबत् परिपद् गता । तस्मिन् काले २ ज्येष्टोऽन्तेवासी पष्टक्षमण० तथेव यावद् राजमार्गमवगाढो हस्तिनः, अश्वान्, पुरुषान् पर्यति तस्य दत्तस्य दुहिता क्रज्णश्रिय आत्मजा देवदत्ता नाम दारिकाऽभूदहीन० यावदुत्क्रप्टशरीरा । तस्मिन् काले २ स्वामी २

समवस्तो

|| || || आत्मजः सिंहसेनो नाम कुमारोऽभवद्हीन० युवराजः । ततस्तस्य सिंहसेनस्य कुमारस्याम्बापितरावन्यदा कदाचित् पञ्च प्रासादावितसक-' एसएणं भंते ! इत्थिया पुटवभवे का आसि ! ' एवं खट्ट गोयमा ! तेणं कालेणं २ इहेव जंबुद्दीवे दीवे भारहे वासे सुपतिट्रे णामं णगरे होत्था रिद्ध० महासेणे राया । तस्स णं महासेणस्स धारिणीपामुक्खं देवीसहस्सं ओराधे यावि होत्था । तस्स णं तस्स सीहसेणस्स क्रमारस्स अम्मापितरो अण्णया कयाति पंच पासायवर्डसगसयाइं करेति अब्मु-मवादीत्,-'एषा भद्नत ! स्त्री पूर्वभवे काऽऽसीत्!''एवं खळु गौतम ! तिसमन् काले २ इहैव जम्बूद्वीपे द्वीपे भारते वर्षे सुप्रतिष्टं नाम नगरममूहद्ध० । महासेनो राजा । तस्य महासेनस्य धारिणीप्रमुखं देवी सहस्रमवरोधे चाप्यभूत् । तस्य महासेनस्य पुत्रो धारिण्या देन्या महासेणस्स पुत्ते धारिणीए देवीए अत्तप् सीहसेणे णामं क्रमारे होत्था अहीण० जुवराया । तते णं दिभवनवर्णकसूत्रं टर्घम् । 'पंचसयओ दाउ'ति हिरण्यकोटि-सुवर्णकोटिप्रभृतीनां प्रेषणकारिकान्तानां पदार्थानां पश्चरातानि सिंह-अथ नवमे किचिछिष्यते। 'अब्धुगय'ति इदमेवं दृश्यम्-" अब्धुगयमूसियपहसिए मिव" अभ्युद्रतोत्ष्छ्रतानि अत्यन्तोचानि ाहसितानीव हासित्यमारब्यानीवेत्यर्थः; "मणिकणगरयणचिते" इत्यादि "एगं च णं महाभवणं करेति अणेगखंभसयसंनिविद्धे" इत्या-उक्खतक जाव सूले भिज्जमाणं (पासाति)। इमे अज्झािथप् (४) तहेव णिग्गते जाव एवं वयासी; .

पाणिमप्राह्यताम् । पद्मशतको दायः । ततः स सिहसेनः कुमारः र्यामाप्रमुखैः पद्मभिदेवीश्तैः सार्धमुपरि० यावद् विहरति । ततः स ततः स सिहसेनो राजा र्यामायां देन्यां मूच्छितः ४ अवशेषा देवीनों आद्रियते, नो परिजानाति । अनाद्रियमाणोऽपरिजानम् तते णं से सीहसेणे राया सामाष् देवीष् मुच्छिते ८ अवसेसाओ देवीओ णो आहाति, णो परिजाणाति । अणाहायमाणे अपरिजाणमाणे विहरति । तते णं तासिं ष्गूणगाण पंचणहं देवीसयाणं शतानि करोस्यभ्युद्गत**े।** ततस्नस्य सिंहसेनस्य कुमारस्यान्यदा कदाचिच्छयामाप्रमुखाणां पञ्चानां राजवरकन्यकाशतानामेकदिवसेन सेनकुमाराय पित्तरो दत्तवन्तावित्यर्थः स च प्रत्येकं स्वजायाम्यो दत्तवानिति। 'महया' इत्यनेन "महयाहिमवंतमल्यमंदरमहिदसारे" इत्यादी राजवर्णको दृश्यः । ' भीया जे ' ति " भीया तत्था जेणेव " इत्यर्थः । ' ओहय जाव ' इति यावत्करणादिदं दृश्यम् मान०। तते णं तस्स सीहसेणस्स कुमारस्स अण्णया क्याइ सामापामोक्स्त्राणं पंचण्हं रायवर्कणण-राया अपणया कयाइ गसयाणं एगाद्वेयसेणं पाणिं गेणहावेंसु । पंचसयओ दाओ । तते णं से सीहसेणे कुमारे क्खेहिं पंचहिं देवीसतेहिं सिंहं उप्पे॰ जाव विहरति। तते णं से महासेणे महासेनो राजाऽन्यदा कदाचित् कालधर्मेण संयुक्तः निस्मरणम् । राजा जातो महा० । कालधम्मुणा संजुत्ते। नीहरणं। राया जाते महया०।

विहरति । ततसासामेकोनानां पञ्चानां देवीजतानामेकोनानि पञ्चमात्रजतान्यनया कथया लञ्घायांनि अवणेन-एवं खळु सिहसेनो राजा

वयासी: जंबुहीचे दीवे भारहे वासे सुपतिट्टे णामं णगरे होत्था मवादीत्,-'एषा भद्न्त! स्त्री पूर्वभवे काऽऽसीत्!''एवं खळु गौतम! तस्मिन् काले २ इहैव जम्बूद्वीपे द्वीपे भारते वर्षे सुप्रतिष्ठं नाम आत्मजः सिंहसेनो नाम कुमारोऽभवद्हीन० युवराजः । ततस्तस्य सिंहसेनस्य कुमारस्याम्बापितरावन्यदा कदाचित् पञ्च प्रासादावतंसक-नगरममूहद्ध० । महासेनो राजा । तस्य महासेनस्य धारिणीप्रमुखं देवी सहस्रमवरोधे चाप्यभूत् । तस्य महासेनस्य पुत्रो धारिण्या देन्या हिरण्यकोटि-सुवर्णकोटिप्रभृतीनां प्रेषणकारिकान्तानां पदाथीनां पश्चश्चतानि जाव एवं सहस्सं ओराधे यावि होत्था। होत्था अहीण० जुनराया पासायवहसगसयाइ । इमे अज्झारिथष् (४) तहेव णिग्गते पितरो अण्णया कयाति पंच ग पुन्वभवं का आसि (पासाति) महासेणस्स पुत्ते थारिणीए देवीए अत्तए अथ नवमे किंचिछिष्ट्यते। 'अन्भुग्य'ित 'पंचसयओ दाउ'ति। सीहसेणस्स कुमारस्स अम्माा उक्षतक् जाब सूले भिष्माणं राया। तस्स प दिभवनवर्णकसूत्रं दृश्यम् । न विद्धा **1** ≥% ८ श्रुत-स्कन्धः विपाके

**デンタ** 

तते णं से सीहसेणे राया सामाए देवीए मुच्छिते ८ अवसेसाओ देवीओ णो आहाति, णो परिजाणाति । अणाहायमाणे अपरिजाणमाणे विहरति । तते णं तासि एगूणगाण पंचण्हं देवीसयाणं राया अण्णया कयाइ पाणिममाहयताम् । पत्रज्ञतको दायः । ततः स सिहसेनः कुमारः र्यामाप्रमुखेः पत्र्वभिदेवीश्तैः सार्धमुपरि० यावद् विहरति । ततः स <u>गतानि करोलभ्युद्रत० | ततस्तस्य सिंहसेनस्य कुमारस्यान्यस् कदाचिच्छयामाप्रमुखाणां पञ्चानां राजवरकन्यकाशतानामेकदिबसेन</u> स सिंहसेनो राजा इयामायां देन्या मूर्ज्ञितः ४ अवशेषा देवीनों आद्रेयते, नो परिज्ञानाति । अनाद्रियमाणोऽपरिज्ञानम् विहरति । ततसासामेनोनानां पञ्चानां देवीशतानामेकोनानि पञ्चमाहशतान्यनया कथया रुञ्चाथोनि श्रवणेन-एवं सङ् सिहसेनो राजा गान०। तते णं तस्त सीहसेणस्स कुमारस्स अण्णया क्याइ सामापामोन्स्वाणं पंचण्हं रायवर्कण्ण इन्यादी राजवर्णको टड्यः । 'भीया जे ' नि "भीया तत्था जेणेव " इत्यर्थः । 'ओहय जाव ' इति यावत्करणादिदं टड्यम् सेनकुमाराय पित्तरौ दत्तवन्तावित्यर्थः स च प्रत्येकं स्वजायाभ्यो दत्तवानिति । 'महया' इत्यनेन ''महयाहिमबंतमलयसंदरमहिंद्सारे' गसयाणं एगादिवसेणं पाणिं गेणहावेंसु । पंचसवओ दाओ । तते णं से सीहसेणे कुमारे मबेहिं पंचिह देबीसतेहिं सिंह उपि० जाव विहरति। तते णं से महासेणे महासेनो राजाऽन्यदा कदाचित् कालघमेण संयुक्तः निस्सरणम् । राजा जातो महा० । राया जाते महया० कालधम्मुणा संजुत्ते । नीहरणं । <u>त</u>

ন

नवमे देवद-नायाः पूर्व-नवः॥ एककूणाइं पंच। माईसयाइं इमीसे कहाए लद्धट्ठाइं सवणयाए—एवं खद्ध सीहसेणे राया सामाए देवीए मुच्छिते ४ (धा ) अम्हं ध्याओं ने आहाति नो परिजाणाति, अणा० विहरति, तं सेयं खद्ध अम्हं सामं देवि अगिष्पओगेण वा विसप्प० सत्थप्प० जीवियाओ ववरोवित्त । एवं संपेहेंति। माईसयाइं इमीसे कहाए लद्धट्राइं समाणाइं अण्णमण्णं एवं व०—' एवं खट्छ सीहसेणे जाव पाडे-जागरमाणीओ विहरति। तं न नज्जति णं ममं केणति कुमारेणं (कुमरणेणं) मारेस्सांति' ति कहु ज्यामायां देन्यां मूस्छितः ४ अस्माकं दुहितूनों आद्रियते. नो परिज्ञानाति, अना० विहरति, तच्छ्रेयः खल्यसाकं ज्यामां देवीमगिनप्र-सामा देवी इमीसे कहाए लद्धट्ठा सवणयाए एवं वयासी;-' एवं खळु ममं पंचण्हं सवतीसयाणं पंच ळच्याथीति सन्त्यन्योन्यमेवमवादिपुः---' एवं खळु सिहसेनो यावत् प्रतिजागरयन्त्यो विहरनित ।' तद् न ज्ञायते मां केनचित् कुमारेण योगेण वा विषप्रयोगेण वा शस्त्रप्र० जीविताद् व्यपरोपयितुम् । एवं सप्रेक्षन्ते । रुयामाया देव्या अन्तराणि च च्छिद्राणि च विरहांश्र सामाए देवीए अंतराणि य छिहाणि य विरहाणि य पिडेजागरमाणीओ २ विहरंति । तते णं सा ततः सा रुयामा देन्यनया कथया लज्याथी अवणेनैवमवादीत्:-'एवं खलु मम पञ्चानां सपत्नीरातानां पञ्च मातृरातान्यनया कथया प्रतिज्ञागरयन्त्यः २ विहरन्ति । 

||SS||

अविकारियां है। असे विकास देविं ओहय० पासाते २ एवं व॰— देवी सीहसेणेणं रण्णा एवं बना कहाए -" ओहयमणसंकप्पा भूमीगयदिष्टिया करतलपल्हत्थमुही अङ्ब्लाणोवगया " इति ' उप्फेणउप्फे(प्फ)णियं ' ति सक्रोपोष्मवचन यथा भनतीत्यथेः, इतोऽनन्तर्याक्यस्यकैकमधरं पुस्तकेषूपलम्यते, तचेवमयगन्तव्यम्—" एवं खळु सामी 1 ममं एकुणगाण पंचण्हं सामाए देवीए संमुच्छिए अम्हं धूयाओं नो आढाइ, नो परिजाणइ, अणाढायमाणे अपरिजाणमाणे विहर् " 'जा ' इति यावत्, एतरकरणाचेदं दश्यम्—"तं सेयं खळु अम्हं सामं देवि अग्गिष्यओगेण वा विसष्यओगेण वा सत्थष्पयोगेण वा जीवियाओ सग्तीसयाणं एम्हणपंचमाइसयाई इमीसे कहाए लद्धडाई सवणयाए अन्नमन्नं सहावेति २ एवं नयासी-एनं खछ सीहसेणे राया ( कुमरणेण ) मारियक्यन्ति ' डित कृत्वा भीता यत्रैव कोपगुई तत्रैवोपा० अपहतठ यावद् ध्यायति । ततः स सिहसेनो राजाऽनया कथया " तत्था तसिया उन्दिग्गा ओहयमणसंकप्पा मम एक्कूण० पंच० सबनीसयाण वयरोवितए; एवं संपेहति, संपेहिता ममं अंतराणि य छिदाणि य विवराणि य पिडजागरमाणीओ विहरंति, तं न नज्जइ णं सामी लञ्याये: मम् यत्रेय कोपगृहं यत्रेव दयामा हेवी तत्रेनोपा० २ रयामां देवीमपहत० पर्यति २ एवमवद्न्;— कि त्वं देवानुष्रिये सीहसेणेणं रचणा एवं राया भीया जे० कोवघरे तेणेव उवा० ओहय० जाव झियाति। तते णं से सीहसेणे समाणा उप्केणउप्कणियं सीहरायं एवं व०-' एवं खळु सामी ! ल छट्टे समाणे जेणेन कोनघरे जे० सामा देनी तेणेन उना० २ सामं झियासि ?' तते णं सा सामा ) मारिस्संतिति कट्ट भीया ८ " यावत्करणात् ' कि णं तुमं देना० ओहय० जाव ममं केणइ कुमारेणं (कुमर्योणं) शान्त्रजामान्य्जामान्य्जामान्य

| नवमे<br>देवद-<br>त्वतः<br>भवः ॥                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                | 118011                                                                                                                                                                                                                                                                               |
|--------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|--------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|
| थ्यां मान्स्याना निस्याना निस्यान                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                              | अ जिल्ला                                                                                                                                                                                                                                                                             |
|                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                | प्रातजागरयन्त्यः २ ष्वहरान्त ।<br>ततः सा क्ष्यामा देज्यनया कथया लज्यायो श्रवणेनेयमवादीन्:-'एवं खळु मम पद्घानां सपत्नीशतानां पद्ध मातृशतान्यनया कथया<br>लज्यायोत्ति सन्त्यन्योन्यमेवमयादिषुः'एवं खळु सित्सेनो यावत् प्रतिजागर्यन्त्यो विह्रान्ति ।' तद् न ज्ञायते मां केनचित् कुमारेण |
| 語<br>  The All | व्यामाध्याम                                                                                                                                                                                                                                                                          |
| श्री-<br>विषाके<br>१ श्रुत-<br>स्कुन्यः॥                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                       |                                                                                                                                                                                                                                                                                      |

**17** | **17** | **17** देवी सीहसेणेणं रण्णा एवं बुत्ता -" ओहयमणसंकप्पा भूमीगयदिष्टिया करतलपल्हत्थमुही अङ्ज्झाणीवगया " इति ' उप्प्रेणउप्पे(प्प)णियं ' ति सकोपोष्मवचनं समाणा उप्प्रेणउप्प्रणियं सीहरायं एवं व०—' एवं खद्ध सामी ! ममं एक्कूण० पंच० सवत्तीसयाणं भीया जे० कोवघरे तेणेव उवा० ओहय० जाव झियाति । तते णं से सीहसेणे राया इमीसे देवी तेणेव उवा० २ सामं देविं ओहय० पासति २ एवं ' कि णं तुमं देवा० ओहय० जाव झियासि ?' तते णं सा सामा लब्द्रे समाणे जेणेव कोवघरे जे० सामा 

सवनीसयाणं एगूणपंचमाइसयाई इमीसे कहाए लद्धडाई सवणयाए अन्नमन्नं सहावेति २ एवं वयासी-एवं खछ सीहसेणे राया यथा भवतीत्यर्थः, इतोऽनन्तरवाक्यस्येकैकमक्षरं पुस्तकेषुपलभ्यते, तचैवमवगन्तव्यम्—" एवं खळु सामी ! ममं एकूणगाण पंचण्हं सामाए देवीए संग्रुच्छिए अम्हं धूयाओ नो आढाइ, नो परिजाणइ, अणाढायमाणे अपरिजाणमाणे विहर् "' ' जा ' इति यावत् । एतत्करणाचेदं दृश्यम्—" तं सेयं खळु अम्हं सामं देविं अग्गिष्यओगेण वा विसप्पथोगेण वा सत्थप्पओगेण वा जीवियाओ वबरोबित्तए; एवं संपेहंति, संपेहित्ता ममं अंतराणि य छिदाणि य विवराणि य पिङजागरमाणीओ विहरंति, तं न नज्जइ णं सामी ( कुमरणेण ) मारथिष्यन्ति ' इति क्रुत्वा भीता यत्रैव कोपगृहं तत्रैवोपा० अपहत०ं यावद् ध्यायति । ततः स सिहसेनो राजाऽनया कथया

यत्रैव रयामा देवी तत्रैवोपा० २ रयामां देवीमपहत०

ल्ड्यार्थः सन् यत्रैव कोपगृह

पश्यति २ एवमवद्त्, — फि त्वं देवानुप्रिये

ममं केणइ कुमारेणं ( कुमरणेणं ) मारिस्संतित्ति कट्टड भीया ४ " यावत्करणात् " तत्था तसिया डिन्यिग्गा ओहयमणसंकष्प

नम् त्रोतः त्रोतः 000 ||फ||रुश्र्य|फ||**र** सहावेति झियामि।' तते णं से सीहसेणे राया सामं देविं एवं व०-'मा णं तुमं देवा० ओहत० जाव झियाहि, ह्यरीरकस्य आवाधा वा प्रवाधो वा भविष्यति। तत्रावाधा ईपत्पीडा, प्रवाधः प्रकृष्टा पीडेव। ' इति कट्ड 'ित एवमभिधाय। 'अणे-एक्कूण० पं० मा० स० इ० क० त० स० अण्णमण्णं सहांबेंति २ एवं व०—एवं खद्ध सी० रा० सा० अहं णं तहा वित्तहामि जहा णं तव नित्थ कत्तोवि सरीरस्त आवाहे वा प(वा)हे वा भविस्तिति ' ति राजा स्थामायां देज्यां मूर्च्छितः ४ अस्माकं दुहितृनों आद्रियते यावटन्तराणि प्रति० विहरन्ति; तद् न ज्ञायते० भीता ४ यावद् ध्या-भीया ८ जाव र्मुमीगयदिष्टिया " इत्यादि टक्यम् । 'वतीहामि 'ति यतिष्ये । 'निष्य 'ति न भवत्ययं पक्षो यदुत 'कतोह् 'ति कुतिश्चिद्पि अपहत० यावद् ध्यायमि १' ततः सा श्यामा देवी सिहसेनेन राज्ञैवमुका सत्युत्फेनोत्फेनितं सिहराजमेवमवादीत्;--'एवं खछ स्वामिन् ! ममैकोनपछ्यसपत्नीशतानामेकोनामि पञ्च मातुशतान्यनया कथया लञ्बाथोनि अवणेनान्योन्यं शब्दाययन्ति २ एवमवद्न्–एवं खळु सिह्सेनो यामि ।' ततः म सिहसेनो राजा रुयामां देवीमेवमवटत्; ' मा त्वं देवा० अपहत० यावद् ध्याय० अहं तथा वर्तिष्ये यथा तव नास्ति कद्दु ताहि इट्टाहिं ६ समासासिति । ततो पिडिनिक्खमित । पिडिनिक्खमिता कोइंचियपुरिसे । ताभिरिष्टाभिः ६ समात्रासयति । ततः ्० मु० ४ अम्हं ध्रयाओ गो आहा० जा० अंतराणि पांडि० विहरंति; तं ण णज्जाति० : वा भिवष्यति ' गरीरस्यायाया वा प्रवाधा 4 F 654 H 654 M 654 H 654 H स्किन्धः

एगूणाई पंच माइसयाई आमंतिति। तते णं तासिं एगूणगाणं पंचण्हं देत्रीसयाणं प्गूणगाई पंच माइ-सयाई सीहसेणेणं रण्णा आमंतियाई समाणाइं सन्बालंकारिबभूसिताइं जहाविभवेणं जेणेव सुपइट्ठे २ एवं व०-'गच्छह णं तुब्भे देवाणु० सुपइट्टस्स नगरस्स बाहिया एगं महं क्रुडागारसालं करेह अणेगखंभ० पच्चत्थिमे दिसीमागे एगं महं कूडागारसालं जाव करेंति अणेग० पासा० २ जेणेव सीह० राया तेणेव उवा० २ तमाणतियं पच्च०। तते णं से सीहसेणे राया अषणया कयाइ एग्नुणगाणं पंचण्हं देवीसयाणं पासा० २ एयमट्टं पच०।' तते णं ते कोडुंबियपुरिसा करतऌ० जाव पडि० २ सुपइट्टियनगरस्स बाहिया

णगरे जेणेव सीह० राया तेणेव उवागच्छंति । तते णं से सीहसेणे राया ष्गूणगाणं पंचदेवीसयाणं प्रतिनिष्कम्य कौटुम्बिकपुरुपाम् शब्दाययति २ एवमवादीत्,——'गच्छत यूय देवानु० सुप्रतिष्ठाद् नगराद् वहिरेकां महतीं कूटा-

तानामेकोनानि पञ्ज मातुअतानि सिंहसेनेन राज्ञाऽऽमन्त्रितानि सन्ति सबोलंकारविभूपितानि यथाविभवं यत्रैव सुप्रतिष्टं नगरं यत्रैव

स सिहसेनो राजान्यदा कदाचिद्देकोनानां पञ्चानां देवीशतानामेकोनानि पञ्च माहशतान्यामन्त्रयति । ततस्तासामेकोनानां पञ्चानां देवीश-

गारशाङां कुरुतानेकस्तम्म० प्रासा० एतमर्थं प्रत्यपेयत । ' ततस्ते कौद्धम्तिकपुरुपाः करतछ० यावत् प्रति० २ सुप्रतिष्ठितनगराद् बहिः पश्चिमे दिग्माग एका महती कूटागार्गाळां यावत् कुर्वन्त्यनेक० प्रासा० ४ यत्रैव सिंहसेनो राजा तत्रैवोपा० तामाज्ञपि प्रत्यपैयन्ति । ततः

सिहसेनो राजा तत्रेबोपागच्छन्ति। ततः स सिहसेनो राजैकोनानां पञ्चदेवीशतानामेकोनानां पञ्चमानुशतानां कृटागार्शालामावसथं सहावेति २ एवं वयासी;-' गच्छह णं तुब्भे देवा० विउलं असणं ४ उवणेह, सुबहु पुष्फवत्थगंधम-प्गूणगाणं पंचमाइसयाणं कूडागारसालं आवसहं दलयति। तते णं से सीहसेणे राया कोडुंबियपुरिसे ब्लालंकारं च कूडागारमालं साहरह । ' तते णं ते कोडुंबिया तहेब जाब साहराति । तते णं तासिं एगूणगाणं पंचणहं देवीसयाणं एगूणगाइं पंच माइसयाइं जाव सठ्वालंकारिवभूसियाइं तं त्रिपुलं असणं 8 सुरं च ६ आसादेमाणाइं ४ गंधट्येहि य नाडएहि य उवगिडजमाणाइं विहरंति। तते णं से सीहसेणे राया अड्डरनकाळसमयंसि बहूहिं पुरिसेहिं सिद्धिं संपरिबुडे जेणेव क्रुडागारसाला तेणेव पुष्पवस्तरान्धमाल्यालंकारं च क्रुटागारशाळां संहरत'। ततस्ते कौदुम्बिकास्तथेव यावत् संहरन्ति। ततस्तासामेकोनानां पञ्चानां देवीशतानामे-कोनानि पञ्च मातृशतानि यावत् सर्वोलंकारिवभूपितानि तद् विपुलमशनं ४ सुरां च ६ आस्ताद्यन्ति ४ गान्धवेश्च नाटकैस्रोपगीयमानानि विहरन्ति। ततः स सिहसेनो राजाऽर्थरात्रकालसमये बहुभिः पुरुपैः सार्धं संपरिवृतो यत्रैव कूटागारशाला तत्रेवोपागच्छति २ कूटागारशालाया 

श्री-विपाके

आलीवियाइं समाणाइं रोयमाणाइं २ अताणाइं असरणाइं कालधम्मुणा संजुत्ताइं । तते णं से सीहसेणे राया एयकम्मे ४ सुबहुं जाव समन्जिणिता चोत्तीसं वाससयाइं परमाउं पालयिता कालमासे कालं किचा छट्टीए पुढवीए उक्कोसेणं बावीससागरोवमट्टिती उववण्णे । सुक-सीह० रपणा सिंहसेनेन राज्ञाऽऽदीपितानि सन्ति क्दन्ति ३ अत्राणानि अग्ररणानि कालधर्मेण सयुक्तानि। ततः स सिंहसेनो राजैतक्तमो ४ सुबहु यावत् द्वाराणि पिद्धाति २ क्रुटागारशालायाः सर्वतः समन्ताद्गिनकायं दापयति। ततस्तासामेकोनानां पञ्चानां देवीशतानामेकोनानि पञ्च मानुशतानि से णं ततो अणंतरं उन्बद्दिना इहेब रोहीडए णगरे द्तस्स सत्थवाहस्स कण्हांसरीए भारियाए अगणिकायं स ततोऽनन्तरमुद्युच्येहैव रोहीतके नगरे दत्तस्य सार्थवाहस्य कृष्णिश्रया भायोंयाः कुस्रो दारिकतयोपपन्नः । ततः सा कृष्णश्रीनेबम्च मासेषु यावद् दारिकां प्रजाता सुकुमालसुरूपाम् । ततस्तस्या दारिकाया अम्वापितरौ निर्धेतद्वाद्याहिकाया विपुल्जमशनं ४ यावद् मित्त्र० कुन्छिमि दारियत्ताए उननण्णे। तते णं सा किण्हिसिरी णनण्हं मासाणं जान दारियं पयाया समज्ये चतुन्त्रिशतं वर्पशतानि परमायुः पालयित्वा कालमासे कालं कृत्वा पष्टयां प्रथिन्यामुक्तपेण द्वाविंशतिसागरोपमस्थितिरूपपन्नः समता पंचमाइसयाइ सब्बता रलयति । तते णं तासिं एग्रुणगाणं पंचणहं देवीसयाणं एग्रुणगाइं दुवाराइं पिहोति २ क्रुडागारसालाष उवागच्छति २ कूडागारसालाए

नस्य देवदे-नारवेन नामधेयं कुरुतः—भवतु दारिका देवद्ता नाम्ना । ततः सा देवद्ता पञ्चयात्रीपरिगृहीता यावत् परिवधेते । ततः सा देवद्ता दारिकन्सि-मालसुरूवं। तते णं तीसे दारियाए अम्पापितरो निन्वत्तवारसाहियाए विउलं असणं ४ जाव मेत्त० विभूपितोऽश्वमारोहति २ बह्वभिः पुरुपैः सार्थं संपरिबुत्तोऽश्वबाहनिकया निर्योत् दत्तस्य गाथापतेगेहस्यादूरासन्ने ज्यतित्रज्ञति । ततः स लावण्यन जाव अतीव यावद् विभूपिता बहुभिः कुञ्जाभियवित् परिक्षिप्ता उपयोकाशतले कनककन्दुकेन कीडन्ती विहरति। इतश्र वैश्रमणद्तो राजा स्नातो यावद् णहाया क्तवालभावा यौबनेन रूपेण लावण्येन यावदतीबोत्क्रष्टोत्क्रप्रशरीरा जाता चाप्यभून् । ततः सा देवद्ता दारिकाऽन्यदा कदाचित् स्नाता संपरिवुडे आसवाहणियाष् णिज्जायमाणे दत्तरस गाहावइस्स गिहस्स अदूरसामंतेणं वीतीवयति । वेसमणद्ते राया णहाते जाव विभूसिते आसं दुरूहति २ वहूहिं पुरिसेहिं नामघेडजं करेंति-होउ णं दारिया देवद्ता नामेणं। तते णं सा देवद्ता पंचधातिपरिगाहिया वैश्रमणो राजा यावद् व्यतित्रजन् देवद्तां दारिकामुपयोकाशतले यावत् पर्यति २ देवद्ताया दारिकाया रूपेण च यौवनेन च ाक्केट्टा उक्किट्टसरीरा जाया यावि होत्था। तते णं सा देवद्ता दारिया अपणया कयाइ विभूसिया बहूहिं खुजाहिं जाव परिकिलता उप्पं अगगसतलगंसि कणगतिंद्रसप्णं जोठ्यणेण रूबेण लाबपणेण रिवड्डित । तते णं सा देवद्ता दारिया उम्मुक्कवालभावा |बहरात | | K X 18 15€ १ श्रुत-निपाके स्किन्धः

यति २ एवमवादीत्,-गच्छत यूर्यं देवा० दत्तस्य दुहितरं क्रष्णिश्रय आत्मजां देवद्तां दारिकां पुष्यनन्दिनो युवराजस्य भार्यातया बुणी-च यौवनेन च लावण्येन चोत्क्रघोत्क्रघ्रारीरा '। ततः स वैश्रमणो राजाऽश्ववाहिनिकातः प्रतिनिष्टताः सन्नभ्यन्तरस्थानीयाम् पुरुषान् शब्द-गखंभ 'ति अनेकस्तम्भशतसंनिविष्टामित्यर्थः । ' पासा ' इत्यनेन " पासाइयं दरिसणिजं अभिरूवं पिडरूवं " इति दृश्यम् । ' जइवि ततस्त कोटुम्बिका वैश्रमणराजं करतळ० एवमवादिषुः-' एपा स्वामिन् ! दत्तस्य सार्थवाहस्य दुहिता क्रष्णश्यात्मजा देवदत्ता नाम दारिका रूपेण धूयं कणहासिरीए अत्तयं देवद्त्तदारियं पूसणंदिस्स जुवरणणो भारियत्ताए वरेह, जइवि य सा सयंरज्जसुंका'। रूनेण य जोटनणेण य लानपणेण य उिक्कट्रा उिक्कट्रसरीरा ।' तते णं से वेसमणे राया अस्सवाहिणियाओ पिंडिणियत्ते समाणे अन्भितरद्वाणिज्जे पुरिसे सहाविति २ एवं वयासी—'गच्छह णं तुन्भे देवां० द्त्तरस करतळ० एवं वयासि;—'एस णं सामी! दत्तस्स सत्थवाहस्स ध्या कण्हसिरीअत्तया देवद्ता णामं दारिया याए रूबेण य जोटबणेण य लावण्णेण य जायविम्हए कोडुंबियपुरिसे सहावेति सहावेता एवं वयासी;− णं से वेसमणे राया जाव बीतीवयमाणे देवद्तं दारियं उष्पिआगासतलगंसि जाव पासति २ देवद्ताए दारि-च जातविस्सयः कौद्रुम्बिकपुरुपान् शब्द्यति, शब्द्यित्वैवमवादीत्;—' कस्य देवानुप्रियाः ' एपा दारिका १ का च नामघेयेन १'ं ' कस्स णं देवाणुष्पिया ! एसा दारिया ? किं च नामधिष्जेणं ?' तते णं ते कोडुंबिया 

|| || || नवमे देवद-नायाः ध्रुवराज भायाः-नम् सत्तद्वपयाइं अञ्मुग्गते आसणेणं उवनिमंतेति । उवनिमंतेता ते पुरिसे आसत्ये वीसत्ये सुद्दास-णवर्गते एवं वयासि—' संदिसंतु णं देवाणु० किमागमणपओयणं ?' तते णं ते रायपुरिसा दत्तं सत्थ-एयं पिडसुणांति २ पहाया जाव सुद्धप्पवेसा संपरिबुडा जेणेव दत्तरस गिहे तेणेव उवागया। तते णं से दत्ते सत्थवाहे ते पुरिसे एज्जमाणे पासित । पासित्ता हट्ट० आसणाओ अब्सुट्टेति राज वाहं एवं वयासि 'अम्हे णं देवा० तव धूयं कणहािसारिअत्तयं देवद्तं दाारियं घूत्तणांदिरत्त जुवरणणो य सा सयरञ्जसुंक 'ित यद्यपि सा स्वकीयराज्यशुल्का-स्वकीयराजलभ्येत्यर्थः ' जुतं व' ति संगतम् । ' पतं व'ित पात्रं वा, ध्वम्, यद्यपि च सा स्वराज्यशुरुमम् '। ततस्तेऽभ्यन्तरस्थानीयाः पुरुषा भेश्रमणराजेनैवमुक्ताः सन्तो हष्ट० करतछ० याबदेतत् प्रतिश्ट-ण्बन्ति २ स्नाता यावच्छुद्धप्रवेषाः संपरिष्टता यत्रेय टत्तस्य गृहं तत्रैयोषागताः। ततः स द्तः सार्थवाहस्तान् पुरुषानायतः पर्यति । द्रष्टा हुष्ट० आसनाद्रभ्युत्तिष्टति । सप्ताष्टपदान्यभ्युद्रत आसनेनोपनिमन्त्रयति । उपनिमन्त्र्य तान् पुरुपानाश्वस्तान् विश्वस्तान् सुखासनवरगतान् एबमवादीत्,–' सदिशन्तु देवानु० किमागमनप्रयोजनम् १' ततस्ते राजपुरुपा दत्तं सार्थवाहमेत्रमवादिपुः—' वनं देवा० तव दुहितर हट्ट० कर्यल० समाणा बुत्ता तते णं ते अन्भितरद्वाणिजा पुरिसा वेसमणरणणा एवं 41 E POST 16 POST 16 POST 16 POST 16 \*\*-| |라다

पान् विपुलेन पुष्पबन्धगन्धमाल्यालंकारेण सत्कारयति ३ प्रतिविस्जति । ततस्ते स्थानपुरुषा यत्रैव वैश्रमणो राजा तत्रैबोपा० २ वैश्रम-निवेद्ति । तते णं से द्ते गाहावती अण्णया कयाइ सोहणंसि तिहिकरणदिवसणम्खनमुहुत्ति विउलं सहशो वा संयोगः, तदा दीयतां देवदत्ता पुष्यनिदिने युवराजाय, भण देवानु० किं दापयामः शुरुकम् ? ततः स दत्तरतानभ्यन्तरस्था-णाय राज्ञ एनमर्थं निवेद्यन्ति । ततः स द्तो गाथापतिरन्यदा कदाचिच्छोमने तिथिकरणदिवसनक्षत्रमुहूने विपुलमशनं ४ उपस्कार्यति अवसरप्राप्तं वा । 'सलाहणिजं व 'ति स्वाध्यमिदम् । 'सिरिसो व 'ति उचितः संयोगो वधूवरयोरिति । 'आयंते 'ति आचान्तो कुष्णश्यात्मजां देवद्तां दारिकां पुष्यनन्दिनो युवराजस्य भायतिया कृणीमहे, तद् यदि जानासि देवा० युक्तं वा पात्रं वा स्शायनीयं वा, नीयान् पुरुपानेवमवद्त्,—-' एतदेव देवानुप्रियाः ! मम शुरुकं यद् वैश्रमणद्तो राजा मां दारिकानिमित्तेनानुगृह्वाति '। ताम् स्थानपुरु-दारियाणिमित्तेणं अणुगिणहङ् 'ा ते ठाणपुरिसे विउलेणं पुष्फवत्थगंधमल्लालंकारेणं सक्कारेति २ ता दिज्जउ णं देवद्ता घूसणंदिस्स जुवरण्णो, भण देवाणु० किं दलयामो सुंकं ?' तते णं से दसे ते अङभंतरद्वाणिजे पुरिसे एवं व॰-' एतं चेव णं देवाणुष्पिया ! ममं सुंकं जं णं वेसमणद्ते राया मम भारियत्ताए बरेमो, तं जति णं जाणिस देवा० जुत्तं वा पत्तं वा सळाहणिजं वा सिरिसो वा संजोगो, ••••••

A BID FRENT FRENT FRENT FRENT IN

नवमे देवद-वायाः तिषय-तसमा-हममः ॥ गाइयरवेणं रोहीडमं णगरं मच्झं २ जेणेव वेसमणरणणों गिहे जेणेव वेसमणे राया तेणेव उवागच्छति इत्यत्र यावत्कर-जलग्रहणात्, 'चोक्त शैत चोक्षः सिक्थलेपाद्यपनयनात्, किम्पक्तं भगति 'परममुइभूए'ति अत्यन्तं ग्रुचीभूत इति । 'ण्हायं ' विभूसियसरीरं पुरिससहस्तवाहिणिं सीयं दुरूहोति २ सुवहुमित्त० जाव सिंखें संपरिबुढे सिवबङ्वीए जाव ४ उवक्खडावेति २ मित्तनाति० आमंतेति । णहाते जाव० पायिच्छिते सुहासणवरगते तेणं णात् " णियगसयणसंबंधिपरिजणेण "ति दृश्यम् । ' सन्बिद्दीए ' इत्यत्र यावत्करणादिदं दृश्यम्–" सन्बज्जईए " सर्वेद्यत्याऽऽ इत्यत्र यावत्करणादिदं दृश्यम्-" कयबलिकम्मं कयकोउयमंगलपायिन्छतं सन्बालंकार-"ति । ' सुबह्मित मिं संपरिवुडे तं विउलं असणं ४ आसादे० ४ एवं च णं विहरति। प्रायंते ३ तं मिचणाइ० विउलगंधपुप्फ० जाव अलंकारेणं सक्कारेति २ देवद्तं असमा H FRESID FRESID FRESIDENTE

श्री-विपाके १ श्रुत-स्कन्धः

एवं च विहरति । जिमितभुक्रतोत्तरागत आचान्तः ३ तं मित्त्रज्ञाति० विषुरुगन्धपुष्प० यावद्रुंकारेण सत्कारयति २ देवद्तां दारिकां २ मित्त्रज्ञाति० आमन्त्रयति । स्नातो यावन्० प्रायध्रित्तः सुखासनवरगतस्तेन मित्त्र० सार्थं संपरिष्ठतस्तद् विपुलमशनं ४ आस्वाद्यम् भरणादिसंबन्धिन्या, सर्घेषुक्त्या वा उचितेषु वस्तुघटनालक्षणया, " सन्ववकेण " सर्वेसैन्येन " सन्वसमुद्षण " पौरादिमीलनेन,

रोहीतकं नगरं मध्यं २ यत्रेच वैश्रमणराजस्य गृहं, यत्रेव वैश्रमणो राजा तत्रैबोपागच्छति २ करतऌ० यावद् वर्धयति २ वैश्रमणराज्ञे देवदत्तां स्नातां यावद् विभूपित्तशरीरां पुरुपसहस्रवाहिनीं शिविकामारोहयति २ सुबहुमित्त्र० यावन् साधै संपरिष्ठतः सर्वेद्धां यावद् नादितरवेण

**高** 2

" सन्वायरेण " सवीचितक्रत्यकरणरूपेण, " सन्वविभूईष् " सर्वसंपदा, " सन्वविभूसाष् " समस्तशोभया, " सन्वसंभमेण " प्रमोदकृतौत्सुक्येन, " सन्वपुरफ्रगंधमछालंकारेण " " सन्वतूरसहसंनिनाष्ण " सर्वतूर्यज्ञानां मीलने यः संगतो नित्रां नादो समुदएणं महता बर्तुरियजमगसमगपवाइएणं " 'जमगसमग' नि युगपत् , एतदेव विशेषणाह—" संखपणवपडहभेरिझछिरिख-समुहिहुङुक्तमुरवमुइंगदुदुहिनिग्घोसनाइयरवेणं " तत्र शंखादीनां नितरां घोषो निघोषो महाप्रयत्नोत्पादितः शब्दः, नादितं घ्वनि-यति यावत् सत्कारयति २ पुष्यनन्दिकुमारं देवद्तां दारिकां पट्टमारोहयति २ येतपीतैः कलशैर्मज्जयति २ वरनेपथ्यौ करोति २, अप्नि-मायाभने यावि दारिकामुपनयति। ततः स वैश्रमणो राजा देवद्तां दारिकामुपनीतां हष्ट्रवा हष्ट० विपुलमशनं ४ उपस्कारयति २ मित्त्रज्ञाति० आमन्त्र २ कर्यछ० जाव बद्धावेति २ वेसमणर्पणो देवद्तं दारियं उवणेति। तते णं से वेसमणे राया देवद्तं दारियं उवणीतं पासित्ता हट्ट० विउलं असणं ४ उवक्खडावेति २ मित्तनाति० आमंतेति जाव संकारेति २ पूसणंदि-कुमारं देवद्तं दारियं पद्दयं दुरहोति २ सेयापीतेहिं कलसेहिं मजावेति २ वरनेवत्थाइं करेति, २ अग्गिहोमं महान् घोषस्तेनेत्यर्थः; अल्पेष्नापि ऋद्यादिषु सर्वशब्दप्रधत्तिदेष्टा, अत आह—" महता इद्दीए महता छुईए महता बलेणं महता करेति। यूसणंदिकुमारं देवद्ताष् पाणि गिण्हावेति। तते णं से वेसमणद्ते राया पूसणंदिस्स कुमारस्स देव-मात्रम्, एतद्द्रयलक्षणो यो रवः स तथा तेनेति । 'सेयापीएहिं 'ति रजतसुवर्णमयैरित्यर्थः । 'सिरीए देवीए ।

होमं करोति । पुष्यनन्दिकुमारं देवदतायाः

564 H 1064 W 1064 H 1066 H

यानद्

पाणि याह्यति। ततः स वैश्रमणद्तो राजा पुष्यनन्दिनः कुमारस्य देवदत्तया सवैद्यो

सबमे-थिमण-सङ्गः काल-वर्मः।। होत्य ' नि श्रिया देन्या ' माता ' इति बहुमानबुद्धा भक्तो मातृभक्तशान्यभूत् । ' कल्लाकल्ठं ' ति प्रातः प्रातः । ' गंघबङुष्णं ' ति तते णं स प्रूसणंदिकुमारे देवद्ताए दारियाए सिर्झं उप्पं पासाय० फुद्द० वत्तीस० उवगेज जाव विहरति । तते णं से वेसमणे राया अण्णया कयाइ कालधम्मुणा संजुत्ते । नीहरणं जाव राया जाए पूसणंदी। तते णं से पूसणंदी राया सिरीए देवीए मायाभते यावि होत्था। कल्लाकल्लं जेणेव सिरी देवी तेणेव उवा० २ सिरीए देवीए पायवडणं करेति। सतपागसहस्सपागेहिं तेल्लेहिं अब्भंगावेति। द्ताए सविबद्दीए जाव रवेणं महया इड्डिसक्कारसमुद्एणं पाणिग्गहणं कारवेति २ देवद्ताए अम्मापियरो मित्त० जाव परियणं च विउछं असणं ४ वस्थगन्धमह्ळालंकारेण य सक्कारेति २ पडिविसड्जेति । श्री-विषाके १ श्रुत-स्क्रन्यः।

गन्धकुणेन । 'जिमियभुचुत्तरागयाए 'ति जेमितायां कृतमोजनायां तथा भुक्तोत्तरमागतायां स्वधानमिति भावार्थः; उदारान्

रवेण महता ऋद्धिसरकारसमुद्येन पाणिप्रहणं कारयति २ देवद्ताया अम्यापितरौ मित्त्र० यावत् परिजनं च विपुत्राजन० ४ बस्रगन्धमा-

याबद् विहरति । तनः स वेश्रमणो राजाऽन्यदा कदाचित् कालधर्मेण सयुक्तः । निस्तरणं याबद् राजा जातः पुष्यनन्दी ।ततः स पुष्य-नन्दी राजा श्रियो देव्या मात्रभक्तआप्यभवत् । कल्याकत्यि यत्रैव श्रीदेवी तत्रैवोपा० २ श्रिया देव्याः पाद्पतनं करोति । श्रतपाकसह-

三 三 三 三

। विउल सपाकाभ्यां तैलाभ्यामङ्गयति । अस्थिमुखया मांस० त्वक् ० चम्मै० रोममुखया चतुविधया संवाहनया संवाहमति । मुरभिणा गंधवर्तकेनो-द्वतैयति २ त्रिभिषदकैमेज्जयति, तद् यथा—उच्णोदकेन, शीतोदकेन, गन्धोदकेन । विपुलमशनं ४ मोजयति श्रियां देव्यां स्नातायां यावत् सुराहेणा गन्धवह-कुदुम्बजागयेया० अयमेतदूप आध्यारिमकः ४---एवं खलु पुष्यनन्दी प्रायिश्वतायां याविजिमितभुक्तोत्तरागतायां ततः पश्चात् स्नाति वा भुड्कते वा, उदाराम् मैानुष्यकाम् भोगभोगाम् भुञ्जानो विहरति । (जिमियभुत्तुत्तरागयाए सिरीए देवीए माइभने जाव विहरति, तं एएणं कुडुबजागार् मजावीय ' नि । पीतमद्या । ' विरहियसयणिज्जंसि ' नि विरहिते विजनस्थाने शयनीयं विरहितशयनीयं तत्र । संवाहावेति ' पुन्नरतावरत ' ति पूर्वरात्रापररात्रकालसमये रात्रेः पायि छिताष् जाव पुठवरत्तावरत्त उद्पृष्टिं मज्जावेति, तं जहा-उसिणोद्ष्णं अद्विसुहाए मंस० तया० चम्म० रोमसुहाए चउठिवहाए संवाहणाए क्याङ राव माणुस्तगाइ ततस्तस्या देवद्ताया देव्या अन्यदा कदाचित् पूबेरात्रापररात्र देनीए अण्णया णहाति वा भंजति वा, उरालाइं अज्झारिथते ४-एवं खद्ध पूसणंदी राया तते णं तीसे देवद्ताए मनोंहान् भोगान् भुञ्जानो विहर्गत एणं उञ्बहाबेति २ तिहिं असणं ४ मोयावेति 122 A THE SECTION OF THE

देवदन्ता कृत-श्रीदेवी-मारण-संकल्पः नवम् मुंजमाणी विहरित्तए। एवं संपहेति २ सिरीए देवीए अंतराणि य २ पहिजागरमाणी २ विहरीत । तते णं सा सिरी देवी अण्णया कथाति मजावीता विरहियसयणिजंसि सुहप्पसुत्ता जाया यावि होत्या। इमं च णं देवदत्ता देवी जेणेव सिरी देवी तेणेव उवागच्छति २ सिरि देवीं मजावीतं विरहियसय-णिज्जंसि सुहप्पसुत्तं पासति २ दिसालोयं करेति २ जेणेव भत्तवरे तेणेव उवा० २ लोहदंडं परामुसित २ लोहदंडं तावेति २ तत्तं समजोतिभूतं फुल्लिकंसुयसमाणं संडासएणं गहाय जेणेव सिरी देवी तेणेव राजा श्रिया देन्या मातुभक्तो यावद् विहरति, तदेतेनावश्लेपेण नो संशक्नोम्यहं पुष्यनिद्ना राज्ञा सार्धमुदाराम् भुज्ञाना विहर्तुम् । तत् रुवं संप्रेक्षते २ श्रिया देव्या अन्तराणि च २ प्रति जागरयन्ती २ विहरति । ततः सा श्रीदेवी अन्यदा कदाचिद् मद्यपीता विरहितशयनीये २ दिगाङोकं करोति २ यत्रैव भक्तगृहं तत्रवोपा० २ लोहदण्डं परामुश्ति २ लोहदण्डं तापयति २ तपं ज्योतिःसमभूतं फुझिकिशुकसमानं मुखप्रमुप्ता जाता चाप्यभवत् । इतश्च देवदत्ता देवी यत्रैव श्रीदेवी तत्रैवोपागच्छति २ श्रियं देवीं मद्यपीतां विरहितशयनीये मुखप्रमुप्तां पर्याति श्रेयः खळु मम श्रियं देवीमग्नित्रयोगेण वा शस्त्र० विषप्रयोगेण वा जीविताद् ज्यपरोप्य पुष्यनदिना गज्ञा सार्थेमुदारान् मुङ्जानाया विहर्तुम् मंचाएमि अहं पूसणांदिणा रणणा सिद्धि उरा० मुंजमाणी विहरित्तए। तं सेयं खद्ध ममं त्राभिष्यओष्ण वा सत्थ० 1 200-3 (E) X THE SENT THE SENT HIS SENTE शी-विपाके १ श्रुत-स्कन्धः

जेणेव पूसणंदी राया तेणेव उवा० २ पूसणंदिरायं एवं वयासी;—' एवं खद्ध सामी! सिरी देवी देव-दत्ताए देवीए अकाले चेव जीवियाओ ववरोविया'। देवी तेणेव उवा० २ देवदनं देविं ततो अवक्कममाणि पासंति । जेणेव सिरी देवी तेणेव उवा० २ सिरिं देविं निष्पाणं निचेट्टं जीवविष्पजडं पासंति, हा हा अहो अक्ज्जमिति कद्दु रोयमाणीओ २ मुलाति। 'समजोइभूयं' ति समस्तुल्यो ज्योतिषाऽप्रिना भूतो जातो यः स तथा तम्। 'रोयमाणीउ' ति अश्रविमीचनात् ; इहा-देवि निष्पाणं निचेट्टं जीवविष्पज्ञहं पासंति, हा हा अहो अक्ज्जमिति कट्टु रोयमाणीओ २ सदंशकेन गृहीत्वा यत्रैव अहिंबी तत्रैवोपा० २ श्रिया देव्या अपाने प्रक्षिपति। ततः सा श्रीदेवी महता २ शब्देनारस्य कालधर्मेण संयुक्ता। अम्मुणा संजुत्ता । तते णं तीसे सिरीष् देवीष् दासचेडीओ आरिसयसहं सोचा निसम्म जेणेव सिरी उवा० २ सिरीए देवीए अवाणंसि पिम्बवेति । तते णं सा सिरी देवी महता २ सहेणं आरिसता काल-न्यद्पि पद्द्रयमध्येयम्, तद्यथा-" कंदमाणीओ " आकन्द्शब्दं कुवैत्यः " विलवमाणीउ " ति विलापान् कुवैत्यः ।

ततस्तस्या श्रियो देन्या दासचेट्य आरस्तितशन्दं श्रुत्वा निराम्य यत्रैव श्रीदेवीतत्रैवोपा० २ देवद्तां देवीं ततोऽपकामन्तीं पर्यन्ति। यत्रैव

तिहेंबी तत्रैबोपा० २ शियं देवी निष्पाणां निस्रेष्टां जीबविप्रहीणां पर्यन्ति २ हा हा अहो अकायोमिति कृत्वा रुद्याः २ यत्रैव पुष्यनन्दी

२ पुष्यनिन्दराजमेत्रमत्त्र, -- एवं खळु स्वामिन्। श्रीदेंनी देवद्ताया देञ्या अकाल एव जीविताद् ज्यप्रोपिता ।।

राजा नत्रैनोपा०

ननमें देवत-नायाः खः। र निद्धि रोयमाणे र सिरीष् देवीष् महता इड्हीसक्कारसमुद्षणं नीहरणं करेति २ आमुरुते ४ वदनं देवि पुरिसेहिं गेण्हावेति २ एतेणं विहाणेणं वज्झं आणावेति । तं एवं खछु गोतमा ! देवद्ता ष्सणंदी राया मुहुनंतरेणं आसत्थे समाणे बहुहिं राईसरं० जावसत्थवाहोहिं मित्त० जाव परियणेण तते णं से प्रसणंदी राया तासि दासचेडीणं अतिए एयमट्टं सोचा निसम्म महया मातिसोएणं गर्मुनियत्ते विव चंपगवरपायवे थसेति धरणीयलंसि सब्बंगेहिं सिणिणपिंडिते। तते णं रेनी पुरा जान विहराति। अच्फुण्णे समाणे THE COURT FOR THE PORT HE PORT HE श्री-विपाके १ श्रुत-स्क्रन्थः।

ततः स पुष्यनन्दी राजा तासां वासचेटीनामन्तिक एतमथै श्रुत्वा निशम्य महता मातृशोकेनाऽकान्तः सन् परश्चनिक्रत इव चम्पक-वरपादपो घसिति घरणीतछे सर्वाङ्गेः संनिपतितः । ततः स पुष्यनन्दी राजा मुहूर्तान्तरेणाश्वस्तः सम् बहुभी राजेश्वर० यावत् सार्थवा-हैर्मित्त्र० यावत् परिजनेन च सार्थं त्दन् २ श्रियो देन्या महता ऋद्धिसत्कारसमुद्येन निस्सरणं करोति २ आसुरोक्तः ४ देवद्तां देवीं

'आसुरुते ' ति आशु शीघं रुप्तः कोपेन विमोहितः; इहान्यद्षि पद्चतुष्कं टक्यम्, तद्यथा—"रुट्टे" ति उदितरोषः, "कुविए" ति

**9**2

प्रबुद्धकोपोद्यः, " चंडिक्किए " ति प्रकटितरौद्ररूपः " मिसिमिसीमाणे " ति कोपाणिनना दीप्यमान इव निवमाष्ययनविवर्णम् ॥

गुरुषेत्रोहयति २ एतेन विधानेन वध्यामाज्ञापयति । तदेवं खळु गौतम । देवदत्ता देवी पुरा यावद् विहरति

उविजाहिति। संसारो वणस्तति । ततो अणंतरं उन्बद्दिना गंगपुरे णगरे हंसनाष् पन्चायाहिति । से णं तत्थ साउाणिष्विहें बहिते समाणे तत्थेव गंगपुरे सेट्ठि० बोही० सोहम्मे० महाविदेहे सिन्झि-'गोतमा ! असीतिं बासाइं परमाउं पालियित्ता कालमासे कालं किच्चा इमीसे रयणप्पभाष् पुढवीष् कालमासे काळं ऋत्वाऽस्यां रत्नप्रभायां प्रथिन्यामुपपत्स्यते । संसारो वनस्पति० । ततोऽनन्तरमुद्बुत्य गङ्गापुरे नगरे हंसतया प्रसाया-' देवद्ता भद्न्त ' देवी इतः कालमासे कालं छत्वा कुत्र गमिष्यति ! कुत्रोपपत्त्यते ! ' ' गौतम ' अशीति वर्षाणि परमायुः पालयित्वा ' देवद्ता णं भंते ! देवी इतो कालमासे कालं किच्चा कहिं गमिहिति ! कहिं उवविज्जिहिति !' स्यति । स तत्र शास्त्रनिकेहतः संस्तत्रैन गद्गापुरे श्रेष्ठि० नोषिः० सौधर्मे० महाविदेहे सेत्स्यति० । निक्षेपः । ॥ दुहविवागस्स णवमं अज्झयणं समतं ॥ ॥ दुःखांवेपाकस्य नवममध्ययन समाप्तम् ॥ हिति । णिक्खेबो ॥ ( स् ॰ ३१ )

अथ-अञ्जु॰सुताच्य दश्ममध्ययनम् ॥

श्री-विवाके १ अत-

स्कर्धः

निगं कालेगं २ वह-

्यम् ध्यय् नस्य नस्य प्रार

जाति णं भंते समणेणं भगवता॰ दसमस्स उक्खेवो । एवं खद्ध जम्बू ! तेणं कालेणं २ वद्ध-माणपुरे णामं णगरे होत्था । विजयवङ्हमाणे उज्जाणे । माणिभहे उक्खे । विजयिमिते राया । तत्थ गं धणदेव नामं सत्थवाहे होत्था अद्दे । पियंगू भारिया । अंजू दारिया जाव सरीरा । समोसरणं

ग्रीसा जाव गया । तेणं कालेणं २ जेट्टे जाव अडमाणे विजयमित्तस्स रण्णो गिहस्स असोगवणियाष्

गिलेसाङगणियत्थं कट्टाइं कल्वणाइं वीसराइं क्रुवमाणि । पासित्ता चिता । तहेव जाव एवं वयासी;-अदूरसामंतेणं वीड्वयमाणे पासति एगं इत्थियं सुक्लं भुक्लं निम्मंसं किडिकिडिभूयं अट्विम्मावणद्धं

यिह भइन्त । अमणेन भगवता० दश्मस्योपक्षेपः। एयं खछ जम्बो । तिसमम् काले वर्धमानपुरं नाम नगरमभूत्। विजयवर्थमा-नमुद्यानम् । माणिभद्रो यक्षः । विजयमित्त्रो राजा । तत्र धनदेवो नाम साथैवाहोऽभवदाह्यः प्रियङ्गूभौयी।अञ्जूदोरिका यावत् शरीरा।

30 Ja | 12 Sec | 13 | 15 Sec | 13 Sec |

समवरसणम् । परिषद् यावद् गता । तस्मिन् काले २ ज्येघ्रो यावद्टम् विजयमित्त्रस्य राज्ञो गृहस्याशोकवनिकायां अदूरासन्ने ज्यतित्रजन् पर्यत्येकां-स्रियं शुष्कां बुभुक्षितां निभौतां किटिकिटीभूतामस्थिचमोवनद्धां नीलशाटकनिवसितां कष्टानि करणानि विस्वराणि क्रजन्तीम्।

₹ | |-

वर्णकः। ततः सा प्रथिवीश्रीगीणकेन्द्रपुरे नगरे वहून् राजेश्वर० यावत् प्रभृतीम् चूर्णप्रयोगैश्च यावद्भियोज्योदाराम् मानुषभोगमोगान् मुज्जाना काछं कृत्वा षष्टयां प्रथिच्यामुत्कर्षेण ० नैरयिकतयोपपन्ना। सा तत उद्बृत्येहैव वर्धमाने नगरे धनदेवस्य सार्थवाहस्य प्रियङ्गूभायीयाः कुक्षौ विहरति । ततः सा प्रथिवीश्रीगैणिकैतत्कभैतत्समाचारा सुबहु पापं यावत् समज्यै पद्धत्रिशत् वर्षेशतानि परमायुः पालर्थित्वा कालमासे 'एवं खुछ गौतम! तिसम् काले २ इहैव जम्बूद्वीपे द्वीपे भारते वर्षे इन्द्रपुरं नाम नगरम्। तत्रेन्द्रद्तो राजा। प्रथिवीश्रीनोम गणिका०। पणतीसं वाससताइं परमाउं पालियिता कालमासे कालं किच्चा छट्टीए पुढर्वीए उक्कोसे॰ णेरइयताए विहरति। तते णं सा पुढिविसिरी गणिया एयकम्मा एयसमा० (४) सुबहुं पावं जाव समज्जिणिना 'सा णं मंते ! इत्थिया पुठवभवे का ?' वागरणं;—— ' एवं खळु गोतमा! तेणं कालेणं २ इहेव जेबुहीं व्होंवे मारहे वासे इंदपुरे णामं णगरे। तत्थ णं इंदद्ते राया। पुढिनिसिरी णामं गणिया०। वणणओं। तते णं सा पुढिनिसिरी गणिया इंदपुरे णगरे बहुने <u> पियंगू मारियाए</u> एईसर० जाव प्पभियओ चुण्णप्यओगेहि य जाव अभिओगित्ता उरालाई माणुसभोगभोगाई भुंजमाणी उनवण्णा। साणं तओं उन्बद्दिता इहेव बद्धमाणे णगरे धणदेवस्स सत्थवाहस्स ां द्धा चिन्ता । तथैव यावदेवमवादीत्,--- सा भद्न्त ! स्ती प्रनेभवे का ! ' व्याकरणम्, , management of the second of

三 三 三 三 द्यम् इतिम् स्रोतेन सिंघा० जाव एवं वयह;—एवं खलु देवाणु० अंजुए देवीए जोणिसूले पाउच्भूते, जो णं इच्छिति वेजो अथ दशमे किचिछिच्यते। 'बहा तेतिलि' ति ज्ञाताधर्मकथायां यथा तेतिलिमुतनामाऽमात्यः पोडिलामिधानां कलान्यां स्थेष्ठिमुतां याचयित्वाऽऽत्मनैव पिरेणीननान तते णं तीसे अंजूए देवीए अण्णया कयाति जोणीसूले पाउब्भूते यावि होत्था । तते णं से ए राया कोइंबियपूरिसे सदावेति २ एवं वयासी;—गच्छह णं देवाणुप्पिया ! बह्यमाणपुरे णगरे अंजू सिरी। सेसं जहा देवदत्ताए। तते णं से विजंए राया आसवा० जहेव वेसमणदत्ते तहेव अंजुं पासाति, णवरं अप्पणो अट्टाए वरेति, जहा तेतली, जाव अंजूए दारियाए सिर्छ उपिं० जाव विहरति। ारिकातयोपपन्ना। ततः साप्रियंगूर्भोयो नवसु मासेषु दारिकां प्रजाता। नाम अञ्जूः। शेपं यथा देवद्तायाः। ततः स विजयो राजाऽश्ववाह-एबमबादीत्;–गच्छत देवानुप्रियाः । वर्षमानपुरे नगरे সृद्घाटक० यावदेवं वदत,–एवं खछ देवानु० अञ्ज्वा देव्या योनिश्रलं प्रादुभूतम्, य निकया यथैव वैश्रमणद्त्तस्तथैवाञ्जू पर्यति, केवलमात्मनोऽर्थाय यृणीते, यथा तेतछिः, यावदञ्ज्वा दारिकया साधुमुपरि० यावद् विहरति ततस्तस्या अञ्ज्वा देग्या अन्यदा कदाचिद् योनिशूलं प्रादुर्भूतं चात्यभूत्। ततः स विजयो राजा कौदुन्विकपुरुषाम् शृब्दाययति २ णवण्हं मासाणं दारियं प्याया । ॥ द्शमाध्ययनविवर्णं समाप्तं, तत्समाप्ते च समाप्तं प्रथम् अतरकन्धविवरणमिति॥ क्रिडिंडास दारियताष् उववणणा। तते णं सा पियंगूभारिया ~ %<del>31</del>-

देवीए जोणिसूळं उवसामित्तए, ताहे संता तंता परितंता जामेव दिसं पाउच्मता तामेव दिसं पांडिगता। तते णं सा अंजू देवी ताए वेयणाए अभिभूया समाणी सुक्का भुक्खा निम्मंसा कट्टाइं कछुणाइं वीसराइं विळपति। एवं खळु गोतमा! अंजू देवी पुरा जाव विहरति।' अंजू णं भते। देवी इओ काळमासे काळं किच्चा कहिं गच्छिहिति ! कहिं उवविज्ञिहिति ! भिरौत्पातिकीभिर्यावद् बुद्धिभिः परिणमयन्त इच्छन्त्यञ्ज्वा देव्या योनिशूळमुपरामयितुम् , नो संशक्तुवन्त्युपशमयितुम्। ततस्ते बहवोवैद्या ६ यदा नो सशक्तुवन्त्यञ्ज्वा देव्या योनिशूळमुपशमयितुम्, तदा श्रान्तास्तान्ताः परितान्ता यस्या एव दिशः प्रादुर्भुस्तातामेव दिशं प्रतिगताः । इच्छति बैद्यो वा रे आवदुद्घोपयन्ति। ततस्ते बह्बो बैद्या वा ६ इमामेतदूपां श्रुत्वा निराम्य यत्रैव विजयो राजा तत्रैबोपा० अञ्चा देन्या बहु-तेणेव उवा० अंजूए देवीए बहाहें उप्पत्तियाहिं बुद्धीहिं परिणामेमाणा इच्छति अंजूए देवीए जोणिसूळं उवसामित्तए, नो संचाएंति उवसामित्तए। तते णं ते बहवे वेजा य ६ जाहे नो संचाएंति अंजूए ' अञ्जूभेदन्त ' देवी इतः काळमासे काळं कुत्वा कुत्र गमिष्यति ! कुत्रोपपत्स्यते ! ' ' गौतम ' अञ्जूहेंवी नवति वर्षाणि परमायुः वा ६ जाव उग्घोसेंति। तते णं ते बहवे वेजा वा ६ इमं एयारूवं सोंच्चा निसम्म जेणेव विजए राया ततः साऽञ्जूरेंनी तथा वेदनयाऽमिभूता सती शुष्का बुभुक्षिता निमौसा कष्टानि करुणानि विस्वराणि विरुपति। एवं खलु गौतम अञ्जूरेंनी पुरा यावद् निहरति। '

**₹** अञ्ज-देव्याः स्म-क किर्याम किर्या के विद्या हो नत्थेव सञ्बओभड़े णगरे सेट्रिकुलंसि पुनेताए पञ्चायाहिति । से णं तत्थ उम्मुक्क तहारूवाणं थेराणं मंतिए केवलं बोहिं बुज्झिहितिः, पञ्चजाः, सोहम्से ।' 'ततो देवलोगाओ आउम्बएणं कहिं गच्छिहिति !' गोतमा ! अंजु णं देवी नउई वासाइं परमाउं पालियित्ता कालमासे कालं किच्चा इमीसे रयणप्पभाष गुढवीष् णेरइयत्ताष् उववण्णा । षवं संसारो जहा पढमो तहा णेयव्वं जाव वणस्सती । सा णं ततो प्रणंतरं उव्वाद्दिता सब्वओभहे णगरे मधूरताष् पच्चायाहिति । से णं तत्थ साउणिष्हिं वधिते समाणे 'गोतमा! महाविदेहे, जहा पढमे जाव सिन्झिहाति जाव अंतं काहिति।' ' एवं खळु जबूं! जाव समणेणं जाव संपत्तेणं दुहविवागाणं दसमस्स अज्झयणस्स अयसट्टे पण्णते ' '४ सेवं भंते!' २ ( सू० ३२ ) सा ततोऽनन्तरमुद्बुत्य सवेतोभट्रे नगरे मयूरतया प्रत्यायास्यति । स तत्रोन्मुत्क० तथारूपाणां स्थविराणामन्तिके केवळे बोधि मोत्स्यते; गलियित्वा कालमासे काले कुत्वास्यां रत्नप्रभायां पृथिन्यां नैर्रिकतयोषपत्रा । एवं संसारो यथा प्रथमस्तथा जातन्यो यथा वनस्पतिः प्रज्ञा; सीयमें '। ततो देवलोकादायुः क्षयेण कुत्र गमिष्यति !'' गौतम । महाविदेहं, यथा प्रथमो यावत् सेत्स्यति यावदन्तं करिष्यति । ' एवं खछ जम्बो । यावत् श्रमणेन यावन् संप्राप्तेन दुःखविपाकानां द्रामस्याध्ययनस्यायमथैः प्रज्ञप्त.। ' ' तदेवं भद्न्त । दुह्विवागेसु दस्सु अन्त्रयणेसु प्रमो सुयम् वंयो समतो ॥ द्राखिषानेषु द्शस्वध्ययनेषु प्रथमः श्रतस्त्रन्यः समाप्तः श्री-विपाके १ श्रुत-

11801

स्क्रिन्धः

तेणं कालेणं २ रायगिहे णगरे गुणासिलए चेइए सुधम्मे समोसहे । जंबू जाव पञ्जुवासाति, एवं वयासी;-' जइ णं भंते! समणेणं जाव संपत्तेणं दुहविवागाणं अयमट्टे पण्णत्ते, सुहविवागाणं भंते كالربي الربي الربي الربي الربي الربي الربي الربي الريق الريق الريف الربي الربي الربي الربي الربي الربي الربي الربي الربياء الا ार्च्यं प्रथममध्ययनम् ॥ हास्यान्तात्तात्तात्तात्ता बीयसुयक्तंयो औ सुबाहुकुमाराष्ट्यं प्रथममध्ययनम् ॥ のあっていっていていているというできょうできょうできょう

समणेणं जाव संपत्तेणं के अट्टे पण्णते !' तते णं से सुहम्मे अणगारे जंबूं अणगारं एवं वयासी;-' एवं खलु जंबू ! समणेणं जाव संपत्तेणं सुहविवागाणं द्स अज्झयणा पण्णता, तं जहा;-सुबाहू १ महनंदी य २ सुजाए ३ वासवे ४ तहेव जिणदासे ५। तिसमन् काले २ राजगृहे नगरे गुणिशिले चैत्ये सुधमी समबसृतः । जम्बुयीवत् पर्युपारते, एवमवादीत्,---'यिद भद्नत ! श्रमणेन यावत् संप्राप्तेन दुःखविपाकानामयमथेः प्रज्ञाप्तः, सुखविपाकानां भद्न्त । श्रमणेन यावत् संप्राप्तेन कोऽर्थः प्रज्ञप्तः १'ततः स सुधमोऽनगारो जम्बुमनगारमेवमवद्त्,-' एवं खळु जम्बो ! श्रमणेन यावत् संप्राप्तेन सुखविपाकानां द्शाध्ययनानि प्रज्ञप्नानि, तद्यथा,---

१-'सुमिह्रि १ महनदी २ य, सुजाए ३ य सुवासने ४। तहेन जिणदासे ५, घणपतो य ६ महन्वछे ७ ॥१॥ महनदी ८ महचदे ९ वरदते १०॥' एवमपि प्रखन्तरे ॥ सुबाहुः १ भद्रमन्दी च २ सुजातः ३ वासवः ४ तथैव जिनदासः ५। धनपतिश्च ६ महाबलः ७ भद्रमन्दी ८ महचन्द्रः ९ वरद्ताः १०॥१॥

बयासी;-' एवं खळु जम्बू! तेणं कालेणं २ हाथिसीसे णामं णगरे होत्था रिद्ध०। तस्स णं हाथि-सीसस्स णगरस्स बहिया उत्तरपुरत्थिमे दिसीभागे एत्थ णं पुप्फकरंडए णामं उज्जाणे होत्था सब्बो-देवीसहस्सं 'यदि भद्न्त! अमणेन यावत् संप्राप्तेन सुखविपाकानां द्शाष्यनानि प्रज्ञप्नानि, प्रथमस्य भद्न्त! अध्ययनस्य सुखविपाकानां यावत् संप्राप्तेन अज्झयणस्स सुहविवागाणं जाव संपत्तेणं के अट्टे पण्णते !' तते णं से सुहम्मे जंबू अणगारं एवं अथ द्वितीयश्रुतस्कन्यस्य प्रथमाध्ययने किंचिष्टिष्यते। 'सन्बोडय' ति इद्मेवं दृश्मेवं सन्बोडयपुरफफलसमिद्धे स्मो कोऽथैंः प्रज्ञप्तः थे' ततः स सुधर्मो जम्बुमनगारमेवमवादीत्,,—'एवं खछ जम्बो ! तस्मिन् काळे २ हस्तिशीपं नाम नगरमभूटद्भ० । तस्माद् हस्तिशीषोंद् नगराद् बहिरुत्तरपौरस्त्ये दिग्भागेऽत्र पुष्पकरण्डकं नामोद्यानमभवत् सर्वेतुंक० । तत्र क्रतवनमालिप्रियस्य यक्षस्य यक्षायतनमभूद् उय०। तत्थ णं कयवणमार्र्जापयस्त जम्खस्त जम्खायतणे होत्था दिञ्वे। तत्थ णं हात्थिसीसे णगरे जाति णं भंते! समणेणं जाव संपत्तेणं सुहाविवागाणं दस अञ्झयणा पणणता, पढमस्स णं भंते दिन्यम् । तत्र हस्तिशीपे नगरेऽदीनग्रनुनाम राजाऽभूद् महा० । तस्यादीनशत्रो राज्ञो धारिणीप्रमुखं देवीमहस्रमवरोधे चाप्यभवत् अद्गिणसन् नामं राया होत्था मह्या०। तस्स णं अद्गिणसन्तुस्स रण्णो धारिणीपामोक्खं भगपती य ६ महब्बलो ७ महनंदी ८ महचंदे ९ बरदते १० ॥ १ ॥ विपाके

पियरो पंच पासायवर्डसगसयाइं कारेंति अब्सुगयं० भवणं, एवं जहा महब्बलस्स रणणो, णवरं पुप्फ-श्रोत्र २ चुछ २ घ्राण २ रसना १ त्वब् १ मनो १ लक्षणानि सुप्तानि सन्ति प्रतिवोधितानि यौवनेन यस्य स तथा, "अट्टारस-सुबाहुकुमारे जाव अलंभोगसमस्यं वावि जाणेंति २ अम्मा-यावि होत्या। तते णं सा घारिणी देवी अण्णया कयाइ तंसि तारिसगंसि वासभवणंसि सीहं मेहजम्मणं 'ति ज्ञाताधमेकथायां प्रथमाध्ययने यथा मेवकुमारस्य जन्मवक्तव्यतोक्ता, एवमत्रापि सा बाच्येति, नवरमकालमेघ-दोहदवक्तञ्यता नास्तीह । 'सुबाहुकुमारे' इह यावत्करणादिदं हत्यम्–''बाबत्तरीकलापंडिए नवंगसुत्तपडिचोहिए" नवाङ्गानि किंभूतानीत्याह-'अब्भुगय'ति " अब्भुगयमूसियपहसिए" इत्यादि । 'भवण'ति एकं च भवनं कार्यन्ति । अथ प्रासाद-भवनयोः इह च प्रासादा पंच प्रासाद्मवतंसकश्तामि कार्यन्ति ततः सा थार्रणी देव्यन्यदा कदाचित् तरिमस्ताद्दशे वासभवने सिहं स्वप्ने० यथा मेघजन्म तथा भणितव्यम् । सुवाहुकुमारो राजलोकोचिते वासगृहे इत्यर्थः। देसीभासाविसारए" इत्यादि यावद् "अर्लभोगसमत्थे जाए यावि होत्था, तएणं तस्स सुबाहुस्स कुमारस्स अम्मापियने र प्रतिविशेषः ? प्रासादः स्वगतायामापेक्षयां द्विगुणीच्छायः, भवनं तु आयामाषेक्षया पादोनसमुच्छ्यमेवेति । नंदणवणप्पगासे पासाइए ४ "। 'तंसि तारिसगंसि वासभवणंसि ' इति तरिंमस्ताद्ये न बावनरीकलांगेडियं जाव अलंगोगसमत्थं साहिसयं वियालचारिं जाणेति जाणिता" तहा भाणियवं। स्रमिणे० जहा मेहजम्मणं 人一等

यावद-छंगोगसमर्थै चापि जानीतः २ अम्बापितरौ पञ्च प्रासादावतंसकशतानि कारयतः, अभ्युद्गत० भवनम्, एवं यथा महाबर्छस्य राज्ञः,

| प्रथमे                                      | मुख्यात-                           | स-त-<br>स-त-                                | H H                                                    | ्री<br>माहोः<br>नाहोः                                             |
|---------------------------------------------|------------------------------------|---------------------------------------------|--------------------------------------------------------|-------------------------------------------------------------------|
| गिद्वसेणं पाणिं गेण्हावेति, तहेव पंचसइओ दाओ |                                    | परिसा निग्गया। अद्गिणसन् निग्गते जहा कृणिए। | भवनवर्णको विवाहबक्तव्यता च यथा भगवत्यां महाबलस्योक्ता, | ह तु 'पुष्पचूलाप्रमुखाणाम्' इति वाच्यम् । एतदेव दशैयत्राह—        |
| चूलापामोक्स्वाणं पंचण्हं रायवरकणणगसयाणं ष   | जाब उप्पासायबरगते फुट० जाव विहरति। | तेणं कालेणं २ समणे भगवं० । समोसरणं ।        | वधूनिमित्, भवनं च कुमाराय । 'एवं जहा महाबलस्स'ति भवन   | एवमस्यापि वाच्याः केवलं तत्र 'कमलश्रीप्रमुखाणाम्' इत्युक्तम् , इह |
|                                             | विपाके वि                          |                                             | स्कर्षः                                                | ा १<br>।।<br>१                                                    |

इत्यादि दानं वाच्यम्; इह यावत्करणादेवं टश्यम्—"तए णं से सुवाहुकुमारे एगमेगाए भारियाए एव मेगं हिरण्णकोर्डि दलयति" 'नवर' इत्पादि । 'तहेब'ति यथा महाबलस्येत्यथः। 'पंचसह्आं दाआं'ति ''पंच स्याहं हिरणाकोडीण, पंच स्याहं सुवण्णकोडीण'

केवळं पुष्पचूलाप्रमुखाणां पञ्चानां राजवरकन्यकाशतानामेकदिवसे पाणि माहयतः, तथैव पञ्चशतिको दायो यावदुपरिप्रासादवरगतः स्फुट यावद्

विहरति। तस्मिम् काले २ श्रमणो भगवान्०। समवसरणम्। परिषद् निगेता। अदीनराज्ञनिगेतो यथा क्रणिकः। सुबाहुरपि यथा जमालिस्तथा

द्वात्रिंशत्पात्रनिबद्धः' इत्यन्ये ''उविभिज्जमाणें उवलालिज्जमाणे माणुस्सए कामभोगे पचणुरुभवमाणे''ति । 'जहा क्रणिए'ति यथौप-

उप्पि पासायवरगए' प्रासादवरस्योपिर स्थित इत्यर्थः । 'फुट्ट' इह यावत्करणादिदं हत्यम्-''फुट्टमाणेहिं मुइंगमत्थएहिं" स्फुट-

क्रिमेदंगमुखपुटैरतिरमसास्कालनादित्यर्थः ''वरतरुणीसंपङनेहिं" वरतरुणीसंप्रयुक्तेः ''वतीसइवद्वेहिं नाडपहिं" द्रात्रिशद्भक्तिनिबद्धेः

इत्यादि वाच्यं, यावत् " अझं च विषुळं घणकणगरयणमणिमीतियसंखसिलप्यालमाइयं दलयइ; तष् णं से सुबाहुकुमार्''ति ।

पातिके कूणिको राजा भगवद्वन्दनाय निर्भेच्छन् वर्णितः, एवमयमि वर्णियत्व्य इति भावः। सुवाहृति जहा जमाली तहा रहेणं निम्मओ'नि अयमर्थः येन मगवतीविणितप्रकारेण जमाली भगवद्धागिनेयो भगवद्वन्दनाय रथेन निर्भितः, अयमिप तेनैव प्रकारेण निर्मित इतिः इह यावत्करणादिदं हर्यम्—" समणस्स भगवओ महावीरस्स छत्ताहछनं पडागाइपडागं विज्ञाचारणे जंभए य देवे ओवयमाणे उप्पयमाणे प पासिते, पासिता रहातो पचोरुहति २ ता समणं भगवं महावीरं वंदह्रं इत्यादि। 'हर्द्वाने "हर्द्वाने अतीव हृष्टः तुष्टः। " उद्घापंति " उद्घाप् उद्देह " इह यावत्करणादिदं हर्यम्—"उद्दिता समणं भगवं महावीरं वंदह नमंसह २ ता" इति। सहहामि णं भेते। निग्गथं, इत्यादि यत् सत्र पुस्तके हर्यते तद् वस्यमाणवाक्यानुसारेणावगनतच्यम्, तथाहि 'सहहामि णं भेते। निग्गंथं पावयणं, पत्तियामि णं भेते। निग्गंथं पावयणं, पत्तियामि णं भेते। निग्गंथं पावयणं, विष्यामि णं भेते। सुबाहू कुमारे समणस्त भगवओ अंतिष् धम्मं सोचा निसम्म हट्ट॰ उट्टाष्ट॰ जाव ष्वं वयासी;— 'सहहामि णं भंते! निग्गथं पावयणं॰ जहा णं देवाणुप्पियाणं अंतिष् बहवे राईसर॰ जाव नो खल्छ अहं॰, अहं णं देवा॰ अंतिष् पंचाणुबतियं सत्तिमक्खावतियं (दुवालसिवहं) गिहिधम्मं परिवज्जामि'। याबड़ेवमबादीत्—'श्रद्द्यामि भदन्त । नैर्थन्थं प्रवचनं० यथा देवानुप्रियाणामन्तिके बहवो राजेश्वर० यावद् नो खल्वहं०, अहं देवा० गता। तते णं से हष्ट० उत्थाय० निगैतो यावद् धमेः कथितः । राजा परिषद् गता । ततः स सुबाहुः कुमारः अमणस्य भगवतोऽन्तिके धमै श्रुत्वा निश्नम्य सुबाह्नावे जहा जमाली तहा रहेणं णिग्गते जाव धम्मो कहिओ। राया परिसा 3 DE AID 

प्रथमे इन्द्रभूति भगवतः सुवाहु-सम्बन्धी प्रभः ॥ 118311 'अहासुहं, मा पडिबंधं॰'। तते णं से सुबाहू समणस्स अंतिष् पंचाणुबतियं सत्तसिक्खावतियं गिहि-धम्मं पडिबज्जति । तमेव रहं दुरूहति । जामेव दिसं पा॰ ता॰ पंडिगते । तेणं कालेणं रजेट्टे अंतेवासी इंदभूती जाव एवं व॰—'अहो णं भंते! सुवाहुकुमारे इट्टे इट्टरूबे, संचाएमि पब्बइतए; अहं णं देवाणुष्पियाणं आंतिए पंचाणुब्बह्यं सत्तिसिक्तावह्यं गिहियम्मं पर्डिबज्ञामि"। 'अहासुहं देवाणुष्पिया! मा पर्डिबंधं करेह'ति भगवद्यचनम् । 'तमेव' इर्मेवं दब्यम्—"तमेव चाउग्वंटं आसर्ह"। 'जामेव' इत्यादि त्वेवं दक्यम्—"जामेव दिसं पाउञ्जूष तामेत्र दिसं पिडेगए"नि । इंदभूई' इत्यत्र यात्रक्षणात् "णामं अणगार् मोयमगोत्तेण" इत्यादि दक्यम् । 'इहे' इष्यते समेतीष्टः । स च क्रतिविवक्षितकार्यापेक्षयापि स्यादित्याह्-इष्टक्ष इष्टस्वरूष इत्यर्थः । इष्ट इष्टरूपे वा कारणवज्ञाद्षि स्यादि-तिसम् काले २ ज्येघोऽन्तेवासीन्द्रभूतियांवदेवमवादीत्,—'अहो भद्न्त! सुवाहुकुमार इष्ट इष्टरूपः, कान्तः २, प्रियः २, मनोज्ञः २, राईसरतलबरमाडंवियकोडुंवियसेडिसेणाबइसत्थवाहपिययो मुंडा भविता अगाराउ अणगारियं पञ्चयंति, नो खलु अहं तहा अन्तिके पञ्चाणुत्रतिकं सप्रशिक्षात्रतिक गृहितमै पतिषये । 'यथासुलं, मा प्रतियन्यम्' ततः स सुयाहुः अमणन्यान्तिके पञ्चाणुत्रतिकं सप्तिक् कंते २, पिए २, मणुण्णे २, मणोमे २, सोमे सुभगे पियदंसणे सुरूने; बहुजणस्त्ति य णं भंते ! त्याह-कान्तः कमनीयः, कान्तरूपः कमनीयस्वरूपः, शोमनः शोमनस्वभावश्रेत्यर्थः। एवंविघोऽपि कश्चित् कमदीपात् परेषां क्षात्रतिक गृहिषम् प्रतिपद्यते । तमेव रथमारोहति । यन्या एव दिगः प्रदुभूतस्तामेव दिशं प्रतिगतः। 4 15-64 14 15-64 14 15-64 14 15-64 14 15-64 14 15-64 14 15-64 14 15-64 14 15-64 14 15-64 14 15-64 14 15-64 14 15-64 14 15-64 14 15-64 14 15-64 14 15-64 14 15-64 14 15-64 14 15-64 14 15-64 14 15-64 14 15-64 14 15-64 14 15-64 14 15-64 14 15-64 14 15-64 14 15-64 14 15-64 14 15-64 14 15-64 14 15-64 14 15-64 14 15-64 14 15-64 14 15-64 14 15-64 14 15-64 14 15-64 14 15-64 14 15-64 14 15-64 14 15-64 14 15-64 14 15-64 14 15-64 14 15-64 14 15-64 14 15-64 14 15-64 14 15-64 14 15-64 14 15-64 14 15-64 14 15-64 14 15-64 14 15-64 14 15-64 14 15-64 14 15-64 14 15-64 14 15-64 14 15-64 14 15-64 14 15-64 14 15-64 14 15-64 14 15-64 14 15-64 14 15-64 14 15-64 14 15-64 14 15-64 14 15-64 14 15-64 14 15-64 14 15-64 14 15-64 14 15-64 14 15-64 14 15-64 14 15-64 14 15-64 14 15-64 14 15-64 14 15-64 14 15-64 14 15-64 14 15-64 14 15-64 14 15-64 14 15-64 14 15-64 14 15-64 14 15-64 14 15-64 14 15-64 14 15-64 14 15-64 14 15-64 14 15-64 14 15-64 14 15-64 14 15-64 14 15-64 14 15-64 14 15-64 14 15-64 15-64 14 15-64 14 15-64 14 15-64 14 15-64 14 15-64 14 15-64 14 15-64 14 15-64 14 15-64 14 15-64 14 15-64 14 15-64 14 15-64 14 15-64 14 15-64 14 15-64 14 15-64 14 15-64 14 15-64 14 15-64 14 15-64 14 15-64 14 15-64 14 15-64 14 15-64 14 15-64 14 15-64 14 15-64 14 15-64 14 15-64 14 15-64 14 15-64 14 15-64 14 15-64 14 15-64 14 15-64 14 15-64 14 15-64 14 15-64 14 15-64 14 15-64 14 15-64 14 15-64 14 15-64 14 15-64 14 15-64 14 15-64 14 15-64 14 15-64 14 15-64 14 15-64 14 15-64 14 15-64 14 15-64 14 15-64 14 15-64 14 15-64 14 15-64 14 15-64 14 15-64 14 15-64 14 15-64 14 15-64 14 15-64 14 15-64 14 15-64 14 15-64 14 15-64 14 15-64 14 15-64 14 15-64 14 15-64 14 15-64 14 15-64 14 15-64 14 15-64 14 15-64 14 15-64 14 15-64 14 15-64 14 15-64 14 15-64 14 15-64 14 15-64 14 15-64 14 15-64 14 15-64 14 15-64 14 15-64 14 15-64 14 15-64 14 15-64 14 15-64 14 15-64 14 15-64 14 15-64 14 15-64 14 15-64 14 15-64 14 15-64 14 15-64 14 15-64 14 15-64 14 15-64 14 15-64 15-64 15-64 15-64 15-64 15-64 15-64 15-64 15-64 15-64 15-64 15-64 15-64 15-64 15-64 15-64 15-64 15-64 15-64 15-64 15

प्राप्ता-उपाजिता सांते प्राांत्रेमुपगता । ' किण्णा अभिसमण्णाग्य ' ति प्राप्तापि सती केन हेतुना आभिमुख्येन सांगत्येन चोपा-ति इयं प्रत्यक्षा, एतदूषा उपलभ्यमानस्बरूषेव अक्रत्रिमेत्यर्थः । 'किण्णा लद्ध'ति केन हेतुनोपार्जिता। 'किण्णा पत्त'ति केन हेतुना । एवंविधश्र लोकरूढितोऽपि स्यादित्यत आह-मनोज्ञः मनसाऽन्तःसवेदनेन शोभनतया ज्ञायत इति मनोज्ञः, एवं मनोज्ञरूपः । एवंविधश्रकदापि स्यादित्यत आह-'मणामे' ति मनसा अम्यते गम्यते पुनः पुनः संस्मरणतो यः स मनोमः, एवं मनोमरूपः । एतदेव प्रपञ्चयन्नाह-'सोमे'त्ति अरौद्रः, सुभगो सुबाहुणा भंते! कुमारेणं इमा प्यारूवा उराला माणुसरिद्धी किण्णा लद्धा, किण्णा पत्ता, किण्णा त्यत आह–'बहुजणस्त्रवि ' इत्यादि । एवंबिघश्र प्राक्रुतजनापेक्षयापि स्यादित्यत आह–'साहुजंणस्तवि' इत्यादि । ' इमा एयारूव' मनोमः २, सोमः सुभगः प्रियद्शेनः सुरूपः, बहुजनस्यापि च भद्न्त । सुबाहुः कुमार इष्टः ५ सोमः ४; साधुजनस्यापि च भद्न्त सुवाहुकुमारे इट्टे ५ सोमे ४; साहुजणस्तिवि य णं भंते ! सुवाहू कुमारे इट्टे इट्टरूवे ५ जाव सुरूवे व्छमः । 'पियदंसणे'ति प्रेमजनकाकारः किमुक्तं भवति 'मुरूवे'ति शोभनाकारः सुस्मावी वेति । एवंविधश्रैकजनापेक्षयापि स अभिसमण्णागया ? क वा एस आसि पुद्यभवे ? जाव समण्णागया ? श्रीति नोत्पाद्येदित्यत आह-प्रियः प्रेमोत्पाद्कः, प्रियरूपः प्रिय (प्रीति) कारिस्वरूपः । 

सुबाहुः कुमार इष्ट इष्टरूपः ५ यावत् सुरूपः। सुबाहुना भदन्त 'कुमारेणेयमेतदूपा मानुपर्दिः केन ळच्या, केन प्राप्ता, केनाभिसमन्वागता

को बैष आसीत् पूर्वभवे ? यावत् समन्वागता ? '

मथमे-मुबाहोः सूर्व-मवः ॥ ' एवं ख़ि गोतमा! तेणं कालेणं २ इहेव जंबुहीवे २ भारहे वासे हिस्थिणाउरे णामं णगरे गा० दूइज्ज० जेणेव हारिथणापुरे णगरे जेणेव सहसंबवणे उज्जाणे तेणेव उवा० २ अहापिडेरूवं उग्गहं कयरंसि वा गामंसि वा, संनिवेसंसि वा, किंवा दचा, किं वा मोचा, किं वा किचा, किं वा समायरिता, कस्स वा तहारूवस्स समणस्स वा, माहणस्स वा अंतिष ष्गमिव आरियं सुवयणं सोचा निसम्म सुवाहुकुमारेण इमा ष्यारूवा उराला माणुसिड्डी ड़ांते टरपम्, द्रवन्तो गच्छन्त इत्यथे: । 'जहा गोयमसामि ' ति द्वितीयाष्ययनद्धिंतगौतमस्वामिभिक्षाचयन्यियोयेनायमपि मिक्षा-संपरिवुडा युठवाणुयुठिव चरमाणा नाण-दंसण-चरित्त-लज्ञा-लाघवसंपन्ना उयसी तेयसी वचंसी जसंसी " इत्यादि । ' गा०दूइज्ज ' ति " गामाणुगामं दूइज्जमाणा " ' एकं खछ गौतम । तस्मिन् काले २ इहैव जम्बूद्वीपे २ भारते वर्षे हस्तिनापुरं नाम नगरमभूहद्ध०। तत्र हस्तिनापुरे नगरे सुमुखो नाम गाथापतिः परिवसलाढयः । तसिमन् काले २ धर्मघोषा नाम् स्थविरा जातिसंपन्ना यावत् पञ्चभिः अमणशतैः सार्धं संपरिष्ठता 'को वा एस आसि पुवभवे' इह यावत्करणादिदं हरयम्-" किंनामए वा, किं वा तत्रैवोपा० २ यथाप्रतिरूपमनप्रहमव० जाइसंपना र इह यावत्करणादिदं हरुयम्—" कुलसंपना बलसंपना रूबसंपना । गाहावती परिवसति समणसतेहिं सिं इ पूर्वोतुपूर्व चरन्तः यामा० द्रवन्तो यत्रैव हस्तिनापुरं नगरं यत्रैव सहसाम्रवणमुद्यानं यम्मघोसा णामं थेरा जातिसंपण्णा जाव पंचहिं ग़ित्था रिद्ध०। तत्थ णं हरिथणाउरे णगरे जनस्य च पश्चाद् भोग्यताम्रुपगतेति। लद्धा पत्ता अभिसमन्नागय " नि । '

२ श्रुत-

श्री-विपाके

आदक्षिण० वन्दते नमस्यति २ यत्रैव भक्तगृहं तत्रैबोपागच्छति, उपागत्य स्वहस्तेन विपुलेनारानपान० ४ प्रतिलम्भयिष्यामीति तुष्टः ३ । हष्टतुष्ट आसनादभ्युत्तिष्ठति २ पादपीठात् प्रत्यवरोहति २ पादुके मुख्रति २ एकशाटकमुत्त० सुद्तमनगारं सप्ताष्टपदानि प्रत्युहच्छति, त्रिः टनसामाचारीं प्रयुक्त इत्यर्थः। ' सुहम्मे थेरे ' ति धर्मधोषस्यविरानित्यर्थः, धर्मशब्दसाम्याच्छब्दद्वयसाप्येकार्थत्वात । पिड-मासं क्षममाणो विहरति । ततः स सुद्तोऽनगारो मासक्षमणपारणके प्रथमपौक्ष्याः स्वाध्यायं करोति, यथा गौतमस्वामी तथैव, सुध-तपसाऽऽत्मानं भावयन्तो बिहरन्ति । तस्मिन् काले २ धर्मघोषाणां स्थविराणामन्तेवासी सुद्त्तो नामानगार उदारो यावत् ०लेरयो मासं थेरे आपुच्छाते, जाव अडमाणे सुमुहस्स गाहावतिस्स गिहं अणुपविट्ठे। तते णं से सुमुहे गाहावती २ पाउयाओ मुयति २ एगसाडियं उत्त० २ सुद्तं अणगारं सत्तद्रपयाइं पच्चुग्गच्छति, २ तिक्खुत्तो उ० संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणा विहरंति । तेणं कालेणं २ धम्मघोसाणं थेराणं अंतेवासी सुद्ते नामं अणगारे उराले जाव० लेस्से मासं मासेणं खममाणे विहराति । तते णं से सुद्ते अणगारे ) मैणः स्थिविरानाप्टच्छते, यावद्टम् सुमुखस्य गाथापतेर्गृहमनुप्रविष्टः । ततः स सुमुखो गाथापतिः सुद्तमनगारमायन्तं पर्यति, सुद्तं अणगारं एजमाणं पासति, पासिता हट्दुट्टे आसणाओ अब्भुट्टेति २, पायपीहाओ मासखमणपारणगंसि पढमपोरिसीए सज्झायं करेति, जहा गोतमसामी तहेव, सुहम्मे 

सुबाहो: पूर्व-मव: ॥ आया० बंद्रति नमंसति २ जेणेव भत्तवरे तेणेव उवागच्छति २ ता सयहत्थेणं विउलेणं असणपाण० य से इमाइं पंच दिन्बाइं, पाउन्मूताइं, तं जहा;—वसुहारा बुट्टा, दसम्बनण्णे कुसुमे निवातिते, चेल्ट-क्लेवे कते, आहताओ देवदुंदुमीओ, अंतरावि य णं आगासंसि अहो दाणे २ घुट्टे य । हरिथणाउरे नि उक्तलक्षणप्रकारत्रययुक्तेनेति । 'तिकरणसुद्धेणं' ति मनोवाकायलक्षणकरणत्रयस्य ततस्तेन सुमुखेन गाथापतिना तेन द्रव्यशुद्धेन ३ त्रिविधेन चिकरणशुद्धेन सुद्तेऽनगारे प्रतिछम्भिते सिति संसारः परीचीक्रतः, मनुष्यायु-हिस्तिनापुरे श्रद्धाटक० यावत् पथेषु बहुजनोऽन्योऽन्यमेनमाख्याति;—धन्यो देवा० हस्तिशीषेके निबद्धम् । गृहे च तस्येमानि पञ्ज दिञ्यानि प्रादुभूतानि, तद्यथा,-बसुधारा बृष्टा, दशाधेनणै कुसुमं निपातितम्, चेलोत्क्षेपः कृतः, आहता "गाहगमुद्रेण दायगमुद्रेण" ति दृश्यम् ; तत्र ग्राहकशुद्धं यत्र यहीता चारित्रगुणयुक्तः, दायकशुद्धं तु यत्र दाता गुणान्वितः । अत एवाह- 'तिविहेणं' ति उक्तलक्षणप्रकारत्रययुक्तेनेति । 'तिकरणसद्धेणं' ति मनोग्राक्तायत्रत्राणः । 'तेन' इत्यश्नादिदानेन 'दबसुद्धेणं' नि द्रन्यतः शुद्धेन प्रासुकादिनेत्यर्थः, कुरवृहैव, मणुस्ताउए निबद्धे गाहाबइस्त तेणं दञ्बसुद्धेणं पालयति २ कालमासे कालं लाहिस्सामीति तुडे ' इहेदं द्रएव्यम्-" पिडलामेमाणे तुडे पिडलामिए वि तुडे " नि । ' तस्त सुमुहस्त ' वि mmmmm सुमुखो गाथापतियोंनत् तद् धन्यः ५ । स सुमुखो गाथापतिबेहूनि वर्पशतान्यायुः तिकरणसुद्धेणं सुद्ते अणगारे पडिलाभिते समाणे संसारे । तते णं तस्स रैंचदुन्दुभयः, अन्तरापि चाकाशेऽहो दानं २ घुष्टं च। तेन 'समुहेन' इति द्रष्टन्यम् विपाके स्कर्म

दायकसंवन्धिनो विशुद्धतयेत्यर्थः । ' एवं आहक्खह ' ति सामान्येनाच्छेः इह चान्यद्षि पद्त्रयं द्रष्टन्यम्—'' एवं मासह " ति विशेषत आच्छे, ''एवं पण्णवेह एवं परूवेह " एतच पूर्वोक्तपद्द्यस्यैव क्रमेण न्याख्यानार्थं पद्द्यमवगन्तन्यम्; अयं (अथ) वा ) णं सुमुहस्स गाहावतिस्स ( जम्म ) जीवियफले, जस्स णं इमा एयारूवा उराला माणुसिङ्घी लद्धा पत्ता आभिसमण्णा-असं-आस्यातीति तथैव, भाषते न्यक्तवचनैः, प्रज्ञापयतीति युक्तिभिबोधयति, प्ररूपयति तु मेदतः कथयतीति । 'धने णं देवाणुष्पिया ! सुमुहे अण्णमण्णस्त एवं आइक्खइ;—धण्णे णं देवा० सुमुहे गाहावती जाव नगरेऽदीनशत्रो राज्ञो थारिण्या देन्याः कुक्षौ पुत्रतयोपपत्रः । ततः सा धारिणी देवी रायनीये सुप्तजागरा निद्रान्ती २ तथैन सिंह पर्यति । गाहावती ' इत्यत्र यावत्करणादिदं दुरुयम्—" पुने णं देवाणुपिया ! सुमुहे गाहावती " एवं " कयत्थे णं कयत्रक्तवणे । गरिणी ट्रेवी सयाणिङजंसि सुत्तजागरा ओहीरमाणी २ तहेव सीहं पासति । सेसं तं चेव जाव गय " ति । 'तं घणो णं देवाणुप्पिया ! समुहे गाहावती ' इत्यादि पूर्वप्रदर्शितमेवेह पदपश्चकं निगमनतयाऽवसेयम् । ं क्रिंड्डिसि युत्तनाष् उननणो । पासादे विहरति । तं एवं खळु गोतमा ! सुबाहुणा इमा एयारूवा मणुस्सरिद्धी लद्धा ३ ' पालेति २ कालमासे शेषं तदेव यावदुपारिप्रासादे विहरति । तदेव खळु गौतम । सुवाहुनेयमेतदूपा मनुष्यर्धिरुघ्धा ३ । ' गाहावता बहुई वाससताई आउयं रण्णो धारिणीए देवीए हिथिसीसए णगरे अदीणसनुस्त सिंघाडग० जाव० पहेसु बहुजणो तं घण्णे ५। से सुमुहे ग (सुद्धे)

सुवाह-कुमा-रस्य प्रौषध-'पभू णं भंते! सुबाहुकुमारे देवाणु॰ आंतिष् मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वहृत्तप् १' 'हंता पभू'। तते णं से भगवं गोयमे समणं भगवं वंद्ति नमंसति २ संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरति। तते णं से समणे भगवं अण्णया क्याइ हिथिसीसाओ णगराओ पुष्फ॰ उज्जा-पुष्प० उद्यानात् क्रतवनमालयक्षायतनात् प्रति० यहिजेनपदं विहरति । ततः स सुवाहुकुमार. श्रमणोपासको जातोऽभिगतजीवाजीवो चाउहसद्रमुहिद्रपुण्णमासिणीसु जेणेव पोसहसाला तेणेव उवा० २ पोसहसालं पॅमर्ज्जति २ उच्चार-दन्तं दृश्यम् । चाउद्तद्वमुद्दिष्ठपुण्णमासिणीसु " ति अत्रोद्धा अमावास्या । 'गामागर्' इह यावत्करणात् '' नगरकत्रवसंडे-अमणं भगवन्तं वन्दते नमस्यति २ संयमेन तपसाऽऽत्मानं भावयन् विहरति । ततः स श्रमणो भगवन्नन्यदा कदाचिद् हस्तिशीर्षोद् नगरात् जीवाजीवे इह यावत्करणात् " उवलद्भुनपावे " इत्यादिकं " अहापरिग्गहिएहिं तवोकम्मेहिं अप्पाणं भावेमाणे विहर् " इत्येत-' प्रमुभैद्नत ! सुवाहुकुमारो देवातु अन्तिके मुण्डो भूत्वाऽगाराद्नगारतां प्रव्रजितुम् १' ' हन्न प्रभुः'। ततः स भगवाम् गीतमः यावत् प्रतिलम्भयम् विहरति । ततः स सुवाहुः कुमारोऽन्यदा चतुर्देरयष्टम्युदिष्टापौर्णमासीपु यत्नेव पौषषशाला तत्नेवोपा० २ पौषधशालां गाओ कतवणमालजक्षवायतणाओ पांडे० २ बहिया जणवयं विहरति । तते णं से सुवाहू कुमारे समणोबासए जाते आभगयजीवाजीवे जाव पिडेलामेमाणे विहराति। तते णं से सुवाहुकुमारे अण्णया (日本の)(日本の)(日本の)(日本の)(日本の)(日本の)(日本の)(日本の)(日本の)(日本の)(日本の)(日本の)(日本の)(日本の)(日本の)(日本の)(日本の)(日本の)(日本の)(日本の)(日本の)(日本の)(日本の)(日本の)(日本の)(日本の)(日本の)(日本の)(日本の)(日本の)(日本の)(日本の)(日本の)(日本の)(日本の)(日本の)(日本の)(日本の)(日本の)(日本の)(日本の)(日本の)(日本の)(日本の)(日本の)(日本の)(日本の)(日本の)(日本の)(日本の)(日本の)(日本の)(日本の)(日本の)(日本の)(日本の)(日本の)(日本の)(日本の)(日本の)(日本の)(日本の)(日本の)(日本の)(日本の)(日本の)(日本の)(日本の)(日本の)(日本の)(日本の)(日本の)(日本の)(日本の)(日本の)(日本の)(日本の)(日本の)(日本の)(日本の)(日本の)(日本の)(日本の)(日本の)(日本の)(日本の)(日本の)(日本の)(日本の)(日本の)(日本の)(日本の)(日本の)(日本の)(日本の)(日本の)(日本の)(日本の)(日本の)(日本の)(日本の)(日本の)(日本の)(日本の)(日本の)(日本の)(日本の)(日本の)(日本の)(日本の)(日本の)(日本の)(日本の)(日本の)(日本の)(日本の)(日本の)(日本の)(日本の)(日本の)(日本の)(日本の)(日本の)(日本の)(日本の)(日本の)(日本の)(日本の)(日本の)(日本の)(日本の)(日本の)(日本の)(日本の)(日本の)(日本の)(日本の)(日本の)(日本の)(日本の)(日本の)(日本の)(日本の)(日本の)(日本の)(日本の) २ श्रुत-विपाके स्कर्धः

। पोसहसा-जहा पढमं ' ति यथेहैवाध्ययने प्रथमं जमालिनिदर्श डिसर० जे ण समणस्स आंतेष पचाणुबातिय जाव र द्वमसंथारं संथारेइ, द्वमसं० दुरूहाति । अट्रमभत्तं पगेण्हति । मुबाहु स्स ' राईसर् ' इहेन टरुयम्–'' राईसरतलवरमाडिचियको मिन्ता अगाराउ अणगारियं" ति। एतारूवं अज्झांत्थतं ३ ध्यवधा विहरति: हर्यमु-" दुइअमाणे " नि । बखेडदोणमुहपट्टणनिगमआसमसंबाहसंनिवेसा " इति दुरुयम्। पुठवरतावरत्तकाले धम्मजागारियं जागरमाणस्स -" चरमाणे गामाणुगामं गेसहं समण अंतिए मुंडा जाव पबयंति, जत्थ प पिल्लेहोति नइसत्थवाहपमियउ " नि । सांगिणवेसा, यावत्करणादिदं हरुयम् पासवणभांमें। 4 (E) PSS (E) PSS (E) 

मुण्डा यावत् प्रवजनित, धन्यास्ते राजेश्वर० ये श्रमणस्यान्तिके पक्काणुत्रतिकं यावद् गृहिधमै प्रतिपद्यन्ते, धन्यास्ते राजेश्वर० ये श्रमण-प्रमाष्टिं २ उचारप्रस्रवणभूमि प्रतिलेखयति २ दमेसस्तारं संस्तृणोति, दमेसं० आरोहति। अष्टमभक्तं प्रगृङ्गाति। पौषध्यातायां पौषधिकोऽष्ट-राजेश्वर वे श्रमणंखान्तिके नगराड् विनिगत इति वाच्यम्, उभयत्र समानी वर्णकप्रन्थ इति भावः। ' ईरियासिमिए सुवाहोः कुमारस्य पूर्वरात्रापररात्रकाले धर्मजागयेया जायतोऽयमेतद्रुप

पौपधं प्रतिज्ञागरयम् २ विहरति । ततस्तस्य

गामाकर० यावत्

त्मकः ३—' धन्यास्त

मभोक्कः

निर्गतोऽयमुक्तस्तथाद्वितीयनिर्गमेऽयंः

संनिवेशाः, यत्र श्रमणो भगवान् महावीरो विहरति, धन्यास्ते

प्रवच्याः तते णं समणे भगवं महावीरे सुवाहुस्स कुमारस्स इमं एयारूवं अज्झारिथयं जाव वियाणित्ता पुठ्वाणुपुठिंव दूइज्जमाणे जेणेव हरिथसीसे णगरे, जेणेव पुरफ० उज्जाणे, जेणेव कयवणमार्लिपयस्स ाहिबज्जंति, घणणा णं ते राईसर० जे णं समणस्त अंतिए धम्मं सुणेंति; तं जङ् णं समणे भगवं गहाबीरे पुठवाणुपुठिंव जाव दूड्जमाणे इहमागच्छेजा जाव विहरिजा, तते णं अहं समणस्स अंतिष् सुंडे गतो तते णं से सुबाहू कुमारे समणस्स भगवओ अंतिए थम्मं सोच्चा निसम्म हट्ट० जहा मेहो तहा तते णं तस्स सुबाहुस्स कुमारस्स तं महया० जहा पढमं तहा निग्गओ। धम्मो कहिओ। परिसा राया जक्षक्त जक्षायतमे तेमेत्र उत्रा० अहामिडि० उग्ग० संजमेण जात्र विहराति । परिसा राया निग्गते। मिनेता जाव पञ्वएजा '। श्री-विवाके

|Se स्यान्तिके धमै श्रणवन्ति, तद् यि अमणो भगवान् महावीरः पूर्वानुपृत्यी यावद् इविज्ञागन्छेद् यावद् विहरेत्, ततोऽहं अमणस्या-तनः अमणो भगवान् महावीरः सुवाहोः कुमारस्येममेतदूपमाध्यात्मिकं यावद् विज्ञाय पूर्वानुपूर्यां द्रवन् यत्रेव हस्तिशीषै नगरं, यत्रेव पुष्प० उद्यानं, यत्रेत क्रतवनमालप्रियस्य यक्षस्य यक्षायतनं तत्रेवोपा० य्याप्रतिह्मपमत्रमहं० संयमेन यावद् विहरति। परिषद् राजा निर्गतः

न्तिके मुण्डो भूत्वा यावत् प्रज्ञेयम् '।

दिकमंद्रच्यनिर्जेग्णेन । ' ठिइक्खएणं ' ति आयुष्कादिकमे-ततस्तस्य सुवाहोः कुमारस्य तद् महा० यथा प्रथमं तथा निगेतः। थमेः कथितः । परिपद् राजा गतः । ततः स सुवाहुः कुमारः श्रमणस्य मगवतोऽन्तिके धर्मै श्रुत्वा निराम्य हष्ट० यथा मेघस्तथाऽम्बापितरावाषुच्छते । निष्कमणामिपेकस्तथैव यावद्नगारो जात ईयोसिमो भक्ता-न्यनश्नया छेद्यित्वाऽऽछोचितप्रतिक्रान्तः समाधि प्राप्तः काळमासे काळं कृत्वा सौधमें कल्पे देवतयोपपन्नः। स ततो देवछोकादायुःश्चयेण तहारूवाणं थेराणं अंतिष् सामाइयमाइयाइं पावद् बहाचारी । ततः स सुवाहुरनगारः श्रमणस्य भगवतो महावीरस्य तथारूपाणां स्थविराणामन्तिके सामायिकादीन्येकाद्शाङ्गन्यधीते । णिक्खमणाभिसेओ तहेव जाव अणगारे जाते इरियासामिते जाव बंभयारी यावत्करणादिदं दृश्यम्-' भासासमिए ४ एवं २ मणगुत्ते २ गुत्तिदिए गुत्ते गुत्तवंभयारी " ति ' आउक्सवएणं महुभिश्चतुर्थे० तपोविधानैरात्मानं भावयित्वा बहूनि वर्षाणि श्रामण्यपर्यायं पालयित्वा मासिक्या संलेखनयाऽऽत्मानं जोषयित्वा पष्टि माणुसं विग्गहं लभिहिति २ केवलं दनलायाउ वासाङ् सामण्ण 100 संलेहणाए अप्पाणं झूसिता सर्डि भत्ताइं अणुसणाए गेहिं अप्पाणं भावेता सोहम्में कप्पे देवनाए उववण्णे। चडता समणस्स भगवओं महावीरस्स ' भवक्खएणं 'ति देवगतिनिवन्धनद्वगत्या एकारस अंगाइं आहिजाति बहाहिं चउत्थ० तवोविहाएँ अणतर चय समाहिं पने कालमासे कालं किचा ं भवम्बएणं ठितिम्बएणं अम्मापियरो आप्रच्छति । डिणिता मासियाए आयु कमें द्र च्यानिजेरणेन । क्रवाएग इत्यत्र 12 PS 

मन-संख्या निर्माण बुिझाहिति २ तहारूवाणं थेराणं अंतिष् मुंडं जाव पठ्वइस्ताति।सेणं तत्थ बहूइं वासाइं सामण्णं पाडाणि-लोए।माणुस्सं महासुक्कं माणुस्सं आणए [आरणे] माणुस्सं आरणे, माणुस्सं सब्बद्दसिन्धे। से णं ततो अणं-तरं उज्बाहिता महाविदेहे, जाव अड्ढाइं जहा द्ढपतिण्णे, सिस्झिहिति ५। तं एवं खळु जंबू! समणेणं जाव हिति २ आलोइयपडिक्रंते समाहिकालगते सणंकुमारे कप्पे देवत्ताष् उववण्णे, ततां माणुस्स, पवजा, बभ-7 5 | 29 | H | 29 | M | 29 | H | 29 | विपाके

' अणंतरं चयं चइत ' ति देवभवसंबन्धिनं देहं त्यकत्वेत्यर्थः, अथवा अनन्तर्मायुःश्रयाद्नन्तरं ' चयं ' ति मबक्षयेण स्थितिक्षयेणानन्तरं चयं त्यक्त्वा मानुपं वित्रहं छप्त्यते २ केवळं वोधि मोत्स्यते २ तथारूपाणां स्थविराणामन्तिके मुण्डो यावत् संपत्तेणं सुहविवागाणं पढमस्स अज्झयणस्स अयमट्टे पण्णात्ते। (सू० ३३) इति पढमं अज्झयणं समतं। च्यवनं 'चइत्' ति च्युत्वा । 'महाविदेहे' इह यावत्करणात् ''वासे जाइं इमाइं कुलाइं भवंति अङ्काइ अपरिभूयाइं'' इत्यादि हरुयम् द्वितीयश्रुतस्कन्धे प्रथमाध्ययनांवेवरणम् ॥ इति।

प्रजिष्यति । स तत्र बहूनि वर्षाणि श्रामण्यं पालयिष्यति २ आलोचितप्रतिकान्तः समाधिकालगतः सनत्कुमारे कल्पे देवतयोपपन्नः, ततो

स्यायमधः प्रज्ञप्तः

मानुष्यम् , प्रबन्या, ब्रह्मलोके । मानुष्यम् , महाशुक्रे । मानुष्यम् आनते (आरणे) मानुष्यम् , आनते । मानुष्यम् , सर्वार्थसिद्धे । स ततोऽनन्तर-मुद्धत्त्यमहाविदेहे यावदाढ्यानि यथा दृढ्यतिहाः, सेत्स्यति ५ । तदेवं खल्ड जम्बो ! अमणेन यावत् संप्राप्तेन सुखविपाकानां प्रथमस्याध्ययन-॥ इति प्रथममध्ययनं समाप्तम् ।

द्वितीयस्योपक्षेपः । एवं खळु जम्बो ! तिसम् काले तिसम् समये वृषभपुरं नगरम् । स्तूपकरण्डकमुद्यानम् । धन्यो यक्षः । धनावहो त्तिगणी णगरी। विज्ञाप कुमारे। जुगवाह्न तिरथंगरे पहित्याभिते मणुरसाउए बद्धे। इह उप्पणो। सेसं जहा सु-बाहुस्स जाव महाविदेहे सिज्झिहिति, बुझिहिति मुचिहिति, परिणिठवाहिति, सञ्बदुक्खाणमंतं करेहिति॥ सिरिदेवीपामोक्खाणं पंच सया। सामिस्स समोसरणं, सावगधम्मं०। पुरुवभवपुरुछा। महाविदेहे पुंड-बितियस्त उक्लेवओ । एवं खट्ट जंबू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं उसभपुरे णगरे । यूभकरंडगं कलाओ य, जोठवणं, पाणिग्गहणं, दाओ, पासाद० भोगा य, जहा सुबाहुस्स; नवरं भहनंदी कुमारे, उज्जाणं । घण्णो जक्त्वो । घणावहो राया । सरस्सती देवी । सुमिणदंसणं, कहणा, जम्मं, बालतणं, ॥ बितियं अञ्झयणं समत् ॥

केवलं भद्रनन्दी कुमारः, अदिवीप्रमुखाणा पञ्च शतानि । स्वामिनः समबसरणम्, शावकधमी० । पूर्वेभवपुच्छा महाविदेहे पुण्डरीकिणी नगरी राजा। सरस्वती देवी स्वप्रद्शेनम्, कथनम्, जन्म, बाळत्वम्, कलाश्च, यौवनम्, पाणिप्रहणम्, दायः, प्रासादभोगाश्च, यथा सुबाहोः,

मेर्कम् मनिजिन्नीयम् मनेट्रक्तानामनं करिष्यति ॥ द्वितीयमध्ययनं समाप्तम ॥

विजयः कुमारः । युगबाहुस्तीर्थंकरः प्रतिलिम्भितः मनुष्यायुर्वेद्धम् । इहोत्पन्नः । रोषं यथा सुबाहोयीवद् महाविदेहे सेत्स्यिति, मीत्स्यते,

| 4 4 4 4 4 4 4 4 4 4 4 4 4 4 4 4 4 4 4                                                                                                                                                                                                                                                           | 4                                                                                                                                                                                                                                                                                                                               |                                                                                                                                                                                                                                                                        |
|-------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|---------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|
| त्रमस्म उक्लेवओ । वीरपुरं णगरं । मणोरमं उज्जाणं । वीरकण्हमित्ते राया । सिरी देवी । मुजाए कुमारे । बलसिरिपामोक्खाणं पंच सया । सामी समोसारिते । पुठवभवपुच्छा । उसुयारे णगरे । उस-भद्ते गाहावती । पुष्फद्ते अणगारे पडि॰ । इह उष्पणे जाव महाविदेहे सिडिश्चिहिते ॥ ॥ सुहविवागे तियं अञ्झयणं समत्तं ॥ | एवमुत्तराणि नवाप्यनुगन्तव्यानीति।।। समाप्तं विपाकश्रुताच्यैकाद्याङ्गप्रदेशविवरणम्।।<br>इहानुयोगे यद्युक्तमुक्तं तद् धीधना द्राक् परिशोधयन्तु। नापेक्षणं युक्तिमदत्र येन जिनागमे भक्तिपरायणानाम्।। १।।<br>क्रतिरियं संविग्नमुनिजनप्रधानश्रीजिनेश्वराचार्यवरणकमलच्यारीककल्पर्य श्रीमद्भयदेवाचार्यस्येति।श्रीरस्तु।ग्रंथाग्रः॥९००॥ | हतीयस्योपक्षेपः । वीरपुरं नगरम् । मनोरममुखानम् वीरकुष्णमित्रो राजा । श्रीदेवी । सुजातः कुमारः । वरुश्रीप्रमुखाणां पञ्च शतानि । स्वामि समवस्वतः । पूर्वभवपुच्छा । इक्षुकारं नगरम् । ऋपभद्तो गाथापतिः । पुष्पदन्तोऽनगारः प्रति० । इहोत्पन्नो यावद् महाविदेहे सेत्स्यति । |
|                                                                                                                                                                                                                                                                                                 | F                                                                                                                                                                                                                                                                                                                               | 1 500 10 1000                                                                                                                                                                                                                                                          |
| श्री-<br>विपाके<br>श्रुत-<br>स्कन्थः<br>॥९९॥                                                                                                                                                                                                                                                    |                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                 |                                                                                                                                                                                                                                                                        |

| #  <b> </b> \\\\$\\$4<br> | i                                                   | . I                                        |                           |
|---------------------------|-----------------------------------------------------|--------------------------------------------|---------------------------|
| जन्मे।                    | कोसंबी                                              | •                                          |                           |
| असोगो                     | पुत्रभवे।<br>-                                      | <b>=</b>                                   |                           |
| उज्जाणं । असोगो जक्तो     | या जाव                                              | <u>ए</u><br>ल                              |                           |
| गोरमं )                   | गं पंच स                                            | 3cdaal                                     |                           |
| ( मत                      | क्तिवाप्<br>                                        | 10/                                        | मतं =                     |
| नगरं । नंदणवणं (मणोरमं)   | सुवासवे कुमारे। भद्दापामोक्खाणं पंच सया जाव पुबभवे। | मिह् अणगार पाढलामित । इह उपण्ण जाव ।सद्ध ॥ | ॥ चउत्थं अब्झयणं समत्तं ॥ |
| नगरं                      | क्रमारे                                             | ागार प                                     | उत्थं अ                   |
| विजयपुरं                  |                                                     | मणभहं अण                                   | <u>व</u> ं<br>=           |
| उक्खेवओ ।                 | कणहा देवी                                           | राया । वस                                  |                           |
| चउत्थस्स                  | वासवद्ते राया। कणहा देवी                            | गगरा । धणपाळ राया । बंसमण                  |                           |
| J.Javanias p              | 10                                                  | ٠                                          |                           |
| The Call                  |                                                     | 케팅                                         | يح                        |

चतुर्थस्योपक्षेपः। विजयपुरं नगरम्। नन्दनवनं(मनोरमं)ज्यानम्। अस्रोको यक्षः। वासवदत्तो राजा। क्रष्णा देवी। सुवासवः

पंचमस्त उक्लेवओ । सोगांधिया णगरी । णीलासोगे उज्जाणे । सुकालो जक्लो । अपडिहओ

राया । सुकणहा देवी । महचंदे कुमारे । तस्स अरहदत्ता भारिया । जिणदासो पुत्तो । तित्थगरागमणं

25 H 25 M

जिणदासपुटवभवो। मज्झिमया णगरी। मेहरहे राया। सुधम्मे अणगारे पिडेलाभिते जाव सिद्धे

कुमारः । भद्राप्रमुखाणां पछ्च शतानि यावत् पूर्वभवः । कौशाम्बी नगरी । धनपालो राजा । वैश्रमणभद्रोऽनगारः प्रतिलम्भितः । इहोत्पन्नो

यावत् सिद्धः ॥

॥ चतुथेमध्ययनं समाप्तम् ॥

| <u> </u>   | 4 4 4 4 4 4 4 4 4 4 4 4 4 4 4 4 4 4 4 | क्रिसम्<br>अर्थान्यय-                                                             |                                                                                        |                                                                                  |
|------------|---------------------------------------|-----------------------------------------------------------------------------------|----------------------------------------------------------------------------------------|----------------------------------------------------------------------------------|
|            | ॥ पंचमं अष्झयणं समतं ॥                | छट्टस्स उक्खेवओ । कणगपुरं णगरं । सेतासोयं उज्जाणं । वीरभहो जक्खो । पियचंदो राया । | सुभहा देवी । वेसमणे कुमारे जुबराया । सिरीदेवीपामोक्खाणं पंच सया । तित्थगरागमणं । थणवती | जनरायपुत्ते जाव पुरुवभवे। मणिचइया णगरी। मित्ते राया। संभूयविजाए अणगारे पडिलाभिते |
| <b>1</b> 0 | G Id                                  | -110                                                                              | וות ג                                                                                  | 5  >                                                                             |

२ श्रुत-

- विक्व

1800

\*\*-미리하

॥ छट्ट अज्झयण समत्।

सत्तमस्स उक्लेवओ । महापुरं णगरं। रत्तासोगं उज्जाणं। रत्तपाओं जक्लो। बले राया । सुभद्दा देवी। महब्बले कुमारे। रत्तवतीपामोक्खाणं पंच सया। तित्थगरागमणं जाव पुब्वभवो। मणिपुरं णगरं।

श्रीदेवीप्रमुखाणां पद्ध शतानि । तीर्थकरागमनम् । धनपतिर्युवराजपुत्रो यावत् पूर्वभवः । मणिचिषका नगरी । मित्रो राजा संभूतविज-षष्ठस्योपक्षेपः । कनकपुरं नगरम् । श्वेताशोकमुद्यानम्। वीरभद्रो यक्षः । प्रियचन्द्रो राजा । सुभद्रा देवी । बेश्रमणः कुमारो युवराजः प्रतिलिम्मतो यावत् सिद्धः।

॥ पद्धममध्ययन समाप्तम् ॥

तस्याहें इत्ता भायी । जिनदासः पुत्रः । तीर्थकरागमनम् । जिनदासः । पूर्वभवः । मध्यमिका नगरी । मेघरथो राजा । सुधर्माऽनगारः

पञ्चमस्योपक्षेपः । सौगन्धिका नगरी । नीळाशोकमुद्यानम् । सुकालो यक्षः । अप्रतिहतो राजा । सुक्रष्णा देवी । महचन्द्रः कुमारः

1002

गद्रनन्दी कुमारः । श्री देवीप्रमुखाणां पद्ध शतानि यावत् पूर्वेभवः महाघोषं नगरम् । धमेषोषो गाथापतिः । धमेसिहोऽनगारः प्रति-सिद्धः । ॥ सप्रममध्ययनं समाप्तम् ॥ अष्टमस्योपक्षेपः । सुघोषं नगरम् । देवरमणमुद्यानम् । वीरसेनो यक्षः । अर्जुनो राजा । तत्त्ववती देवी । सप्तमस्योपक्षेपः । महापुरं नगरम् । रक्ताशोकमुद्यानम् । रक्तपादो यक्षः । बलो राजा । सुभद्रा देवी । महाबलः कुर्मारः । रक्तवती-प्रमुखाणां पद्ध शतानि । तीर्थकरागमनं यावत् पूर्वभवः मणिपुरं नगरम् । नागद्तो गाथापतिः । इन्द्रद्तोऽनगारः प्रतिलम्भितो यावत् णवमस्स उक्लेवओ । चंपा णगरी । पुण्णमहे उज्जाणे । पुण्णमहे जक्ले । दूते राया । रत्तवती ॥ पष्टमध्ययनं समाप्तम् । नु नु जम्मवा । अज्जुणां णागद्ने गाहावती । इंदद्ने अणगारे पडिलाभिते जाव सिद्धे । ॥ सत्तमं अज्झयणं समत्तं ॥ तत्तवती देवी । महनंदी कुमारे । सिरिदेवीपामोक्खाणं पंच सया जाव पुठवभवे । धम्मघोसे गाहावती । धम्मसीहे अणगारे पडिलाभिते जाव सिछे । देवी। महचंदे कुमारे जुव०। सिरिकंतापामोक्खाणं पंच सया जाव पुरुवभवो अट्टमस्स उक्खेवओ सुघोसं णगरं। देवरमणं उज्जाणं। वीरसेणो ॥ अट्टम अञ्झयणं समत्। योऽनगारः प्रतिलिम्भितो यावत् सिद्धः

यक्षः । मित्रमन्त्री राजा । श्रीकान्ता देवी । वरद्ताः कुमारः । वरमेनाप्रमुनाणा पत्र देनीनां अतानि । तीर्थकरानम् । आवक्षमै । पूर्वेमवः-( प्रच्छा मतुष्यायुनियद्धे ) शतद्वारं नगरम् । विमन्यशह्नो राजा । धर्मिनचिरनगारः ( भमेनिनानामनमनगारमायन्तं पश्यति | यहि० डामम्योपश्रेपः। एवं नालु जन्यो ! तिसम् कि तिसम् समये नाक्षेतं नाम नगरमभूत । उत्तर्रकुर्वेगानम् । पाजामुनो श्रीकान्ताप्रमुखाणां पद्ध जताति यात्रत् पूर्वभतः । तिणिन्छा नगरी । जितजतू राजा । यीवीवेंडिनगारः प्रतिष्ठम्मितो यावत् सिद्धः । ॥ नत्रममध्यत्रनं नमाप्रम् ॥

18081

देखद-ज्ञा क्रमारस्स । चिंता, जाव पठवजा । कप्पंतरे । ततो जाव सठवद्रसिद्धे । ततो महाविदेहे तिण्णे जाव सिन्धिंसिहित ५॥

एवं खद्ध जंबू ! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव संपत्तेणं सुहविवागाणं दसमस्स अञ्झयणस्स अय-। 'सेवं भंते ! सेवंभंते! सुहविवागा' ॥ (सू० ३४) ॥ दसमं अज्झयणं समत् ॥१०॥ अज्झपण्णते

॥ एकारसमं अंगं समनं

टङ्गा ) प्रतिलिम्भितः । मनुष्यायुर्वेद्धम् । इहोत्पत्रः । शेषं यथा सुवाहोः । चिन्ता, यावत् प्रवज्या । कल्पान्तरे । ततो यावत् सर्वाथिसिद्धे ततो महाविदेहे यथा हदप्रतिह्यो यावत् सेत्स्यति ५

एवं खळु जम्बो ! अमणेन मगवता महावीरेण यावत् संप्राप्तेन सुखिवपाकानां दशमस्याध्ययनस्यायमर्थः प्रज्ञप्तः । ' तदेवं भर्दन्त तद्वेंभद्न्त ! सुखविपाकाः '।

॥ एकाद्शमङ्ग समाप्तम् ॥ ॥ दशममध्ययनं समाप्तम् ॥

電電 द्स अज्झयणा एककसरगा दससु चेव दिवसेसु उदिसिब्बाति। एवं सुहविवागेवि। सेसं जहा आया-नमो सुयदेवयाए-विवागसुयस्स दो सुयक्खंबा-दुहविवागो य सुहववागो य । तत्थ दुहविवागे रस्स ॥ इति एकारसमं अंगं सम्मत्तं ॥ ११ ॥ घन्थायं–१२५० ॥

विपाकश्रुतस्य हो श्रुतस्कन्धो-दुःखविपाकः सुखविपाकश्च । तत्र दुःखविपाके दशाध्ययतान्येकसदशानि दशस्वेव दिवसेपूरियन्ते

18081

स्कन्धः

एवं सुखविषाकेऽपि । शेषं यथाऽऽचारस्य ॥ इत्येकाद्शमङ्गं समाप्तम ॥ ११ ॥ समाप्तोऽयं प्रन्यः ॥

ला. श्री यन्द्रसागर सूरिष्ट. मान लंडार, अन्य नं... ...

THE SAIDING TO THE POST OF THE

१४०२।

| °-8-°                      | श्रीपाल चरित्रमाकृत सावचुर्णिक | ठ० द० ला० धमेशाळा, गोपोपुरा–सुरत.                   | 011       | 17 , 4                       |
|----------------------------|--------------------------------|-----------------------------------------------------|-----------|------------------------------|
| ×1010                      | सबोधा समाचारो                  | भाह्मलाल                                            | 0-8-0     | <b>अ</b>                     |
| u ,                        | कल्पसंत्र सर्वोधिका            |                                                     | ~-0-0     | योग                          |
| <b>%</b> -0-0              | विश्वति स्थानक पद्मकद्ध        | मासिस्थान:-                                         | 2-0-0     |                              |
| <b>?o</b>                  | तंदुल वैयालीय पयनो सटीक        |                                                     | )         | रायप्रमेकी                   |
| 100                        | भवचन सारोद्धार सटीक पूर्वार्ध  |                                                     | N-0-0     | भाषाच्या गुजराती             |
| 20-0-0                     | स्क सकावली                     |                                                     |           | विरापावस्यक भाष्य म्ल)       |
| 0-88-0                     | श्रीपाळचोरत्र संस्कृत          |                                                     | 0-%×-0    | थमंबिंदु प्रकर्ण             |
| ×1-0-0                     | जबुद्धाप महाप्प सटाक उत्तराध   |                                                     | 0-8-0     | गत्र्छाचार पयन्नो .          |
| ?-??-o                     | आवश्यक टीप्पण                  | H.                                                  | 0-4-0     | विषयाकारादि क्रम             |
| ?-0-0                      | सन मश्च (प्रश्नोत्तर् रत्नाकर) |                                                     |           | विशेषांब्ह्यक गाथा           |
| ×-0-0                      | श्रीद्धं मातक्रमण सूत्र        | )                                                   | 0-0<br>N  | ्रियावळी सूत्र ०             |
| ति क्षेत्र ०- <u>८</u> २-० |                                |                                                     | 0-2-0     | विचारसार् भकरण               |
|                            |                                | स्थापनाः-श्रीमङीतीर्थे बीर स० २४५१ माघ्यक्रटगम्याम। | w-x-0     | भगवनीस्त्र तृतीयभाग          |
| # 6<br>-0 .                | t                              |                                                     | 8-0-0     | ं स्थानागः उत्तराधे          |
| ८ सं ०-१२-०                | आनंद काच्य म० मो० ४            |                                                     | 2-2-0     | अनुयागद्धार                  |
| <b>इना यथो</b> .           | शंह दे लां जि पुर फहना प्रथी.  |                                                     | 0-8-c     | ने के बिल्<br>इस्त्री स्थापन |
| ,                          | 7                              | श्रीमज्जैनसिध्यान्तवाचनाप्रकाजनमारिक्ता             | । ग्रंथो. | ्र अगमोदय समितिना ग्रंथो     |